विश्व विख्यात युगपुरुष दादा साधु टी.एल.वास्वाणी



डॉ. दयाल आशा

युगपुरुष साधु टी एल वास्वाणी के उत्तराधिकारी श्री जशन वास्वाणी



स्नेह के सागर, विश्व शान्ति के उपासक, करुणा के अवतार दादा जशन वासवाणी उनके मुख से प्रवाहित होती है, अमृत तुल्यवाणी, जो तप्त हृदयों को शीतल करती है। उनका दर्शन मन को प्रसन्न करता है। वे प्रथम भारतीय हैं, जिन्हें यू थांट शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया।

युग पुरूष
दादा साधु टी. एल. वासवाणी

* लेखक *
प्राचार्य डॉ. दयाल कोटूमल धामेजा "आशा"
एम. ए., पीएच. डी., डी. लिट्ट

स्वामी शांतिप्रकाश निवास,
निजधाम मार्ग,
उल्हासनगर ४ २ १ ० ० ५.

मूल्य ५० रूपये   .२५ नवम्बर २००१

* प्रकाशक *
श्री चन्द्रू सखराणी
सेंट थामस

पुष्पांजलि

संतों का जीवनचरित्र पावन गंगा सरीका है, जिसके पढ़ने, श्रवण, चिंतन एवं मनन करने से मन निर्मल होता है , भटके हुए जीव को मार्गदर्शन मिलता है ।

दादा साधु वासवाणी न केवल सिंध के किन्तु भारत के महान संत थे । उनकी ख्याति सारे विश्व में फैल गई । वे आधुनिक युग के ऋषि थे, महापुरूष थे, जिन्होंने दरिद्रनारायण में प्रभु का साक्षात्कार किया । वासवाणी अर्थात् जिसकी वाणी वास अर्थात् सुगंधयुक्त हो । उनकी वाणी सुनकर प्रेमी मंत्रमुग्ध हो जाते थे । उन्होंने अपने नाम को चरितार्थ किया । ऐसे महापुरूष को कोटि-कोटि प्रणाम ।

स्वामी शान्ति प्रकाश महाराज

आशीर्वाद

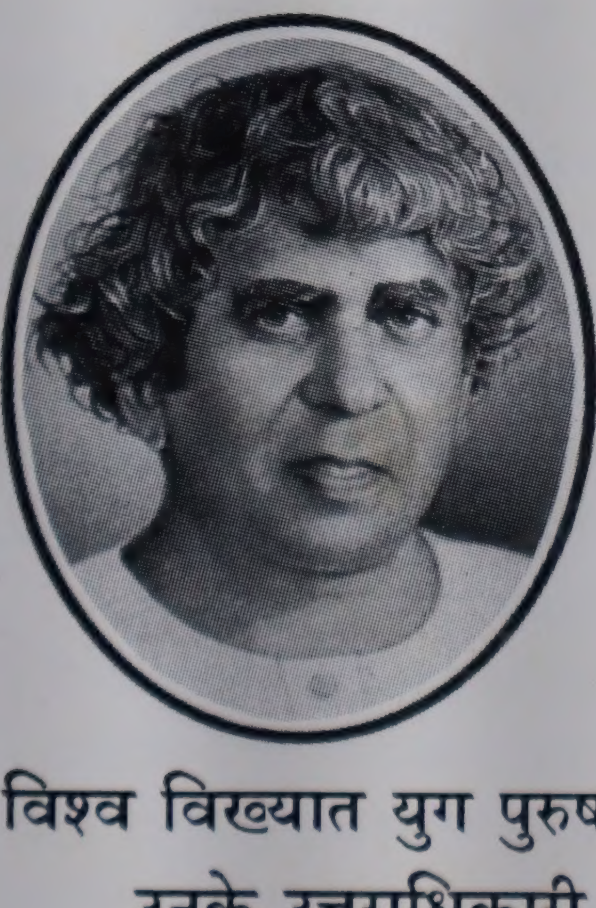
साहित्य सिन्धोरधिकानि रत्ना,न्यादाय भाषा शुचि सिन्धु देशात् ।
ग्रन्थो दयालु कवि प्रणीतः, सदा समाजस्य हिताय भूयात् ।।
सिन्धी भाषा महारत्नं, हिन्दी भाषा ऽऽ मयायुतम् ।
भारतांगण सौलभ्यात् लोक मौलिषु राजते ।।

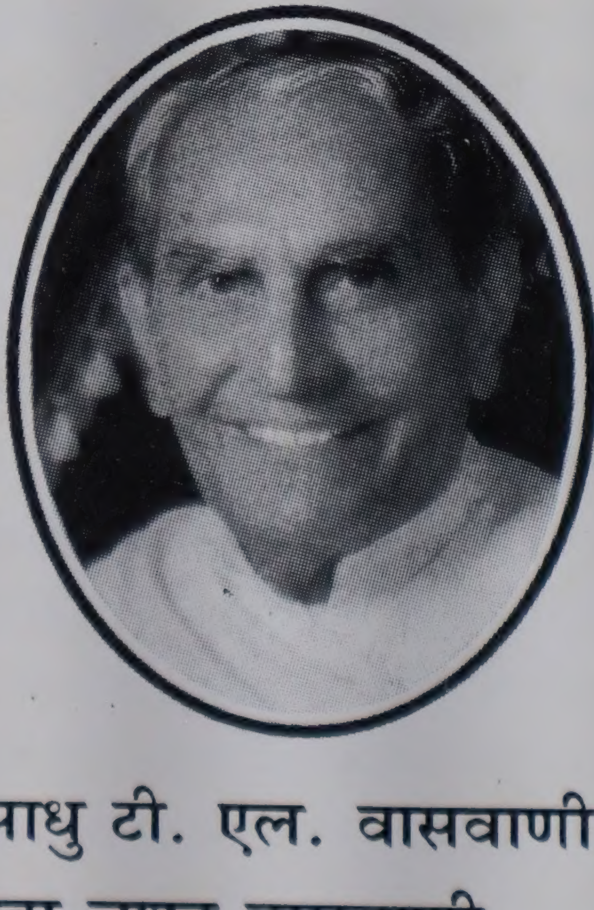
महामण्डलेश्वर श्रीस्वामी विद्यानन्दजी महाराज उदासीन

डी. टी. पी. :- श्रीमती वर्षा अशोक आहूजा
ब्लॉक सी ४९/९७ कुर्ला कॅम्प, उल्हासनगर - ४२१ ००४.
फोन : ०२५१ - ५२५९८२ / ५२६९७३.
प्रिंटेड बाय :- राम लालचन्दाणी (आर्ट स्पॉट) मुम्बई.
फोन : ४४६६३४८ - ४४६५९७२.



साधु टी. एल. वासवाणी की माताश्री
वराँबाई लीलाराम वासवाणी





विश्व विख्यात युग पुरुष साधु टी. एल. वासवाणी,
उनके उत्तराधिकारी दादा जशन वासवाणी

आमुख

प्राचार्य दादा जे. पी वासवाणी

कई बार जब मैं दादा (साधु वासवाणी) के समीप आया तब मुझे ऐसा लगता था कि उनके वस्त्रों के छोर को छूने से परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है। उनका जीवन गुलाब के फूल की महक और चहकते हुए पक्षी का आशीर्वाद था।

एक समय था जब वे देश के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। उन दिनों उनका नाम रविबाबू एवं महात्मा गांधी जैसे महान नेताओं के साथ जुड़ा हुआ था। उन्होंने स्वयं को निष्काम भाव से गरीबों की सेवा में अर्पित कर दिया। सदैव उन के हृदय से दया की धारा प्रवाहित होती रहती थी। कभी भी उन्होंने किसी दुखी व्यक्ति को निराश नहीं किया।

दरिद्रनारायण की सेवा ही उनके लिए प्रभु की उपासना थी। प्रतिदिन दादा वृक्षों की छाया में बैठकर दीन-दुखियों अपाहिजों को पैसा देते थे, इन्हें खाना खिलाते थे, उनमें वस्त्र बाँटते थे; इनसे अधिक वे उन्हें अपना हार्दिक आशीर्वाद देते थे।

जीवन के अंतिम दिवस तक वे गरीबों की सेवा करते रहे। दादा ने उन दुखियों-दरिद्रों में प्रभु का दर्शन किया। उनकी दृष्टी में प्रत्येक प्राणी परमात्मा की प्रतिमा थी। भूखों और पीड़ितों के जीवन में आनंद का संचार करना उनके जीवन की अभिलाषा थी।

एक दिन एक व्यक्ति दादाजी के पास आया और उसने रूपयों की थैली दादाजी को देते हुए कहा, ये रूपये आप के मंदिर के लिए हैं। दादाजी ने क्या किया ? उन्होंने वे पैसे गरीबों को खाना खिलाने में खर्च किये और कहा कि गरीब जिस को खाना मिलता है और वह

नाम का स्मरण करता है उसका दिल ही भगवान का पवित्र मंदिर है।

एक दिन हम दादाजी के साथ मीरा कॉलेज के प्रांगण में वृक्षों की छाया में बैठे थे, तो कुछ संन्यासी लोग दादाजी के साथ मिलने आये। उन्होंने जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होने की बातें कही। उनके जाने के पश्चात् दादा ने कहा, मुझे मुक्ति की आकांक्षा नहीं। मैं तो परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे बार - बार इस दुखमय दुनिया में पैदा करें, ताकि मैं भगवान का हथियार बनकर दुखियों का दुख दूर करने में सहायक बनूँ।

जेब की खर्ची भी गरीबों के लिए : दादाजी बचपन में ही अन्य बच्चों से भिन्न थे। उनको जो प्रतिदिन खर्ची मिलती थी उस में से बचाकर आटा खरीदकर चपातियाँ बनाकर रास्ते में बैठे हुए लंगड़ो, गूंगो, सुरदासों को खिलाते थे, और प्रसन्न चित्त देखते थे। वे जानते थे कि गरीबों, अपाहिजों की सेवा ही प्रभु की भक्ति है। जब वे खाना खाने के लिये बैठते तब भी अगर किसी फकीर की पुकार सुनते तो उठकर अपना खाना उसे खिला देते थे। बचपन से ही वे दया व करूणा की मूर्ति थे।

पहले से ही दादाजी का मन प्रभुप्रेम से ओत-प्रोत था। वे परमात्मा और परमात्मा की संतति की सेवा में जीवन समर्पित करना चाहते थे। उन्होंने अपने सामने एक फकीर का आदर्श रखा। उन्हों ने सांसारिक पदार्थों का परित्याग कर प्रभु की शरण ली, परन्तु अपनी माताजी को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने नौकरी भी की, विभिन्न कॉलेजों के प्राचार्य के पद पर रहे। उनका भविष्य अत्यंत उज्ज्वल था परन्तु उन्हें पद की कोई लालसा नहीं थी। वे विद्यार्थियों के लिए एक महान् आदर्श थे। उन्होंने माताजी के देहांत के बाद नौकरी का भी त्याग किया। वे भारतीय संस्कृति एवं भारतीय ऋषियों का संदेश संसार को देना चाहते थे।

दादाजी ने देश के स्वतंत्रता-संग्राम में भी भाग लिया। वे महात्मा गांधी के समर्थक थे। महात्मा गांधी ने जब "यंग इंडिया" पत्रिका का संपादन किया तब "यंग इंडिया" के प्रथम अंक के मुख पृष्ठ पर दादाजी का लेख प्रकाशित किया। भारतीयों में स्वदेश-प्रेम और आजादी के प्रति चेतना लाने के लिए दादाजी ने अंग्रेजी में कई

पुस्तकें लिखी, जिन में मुख्य हैं, 'मेरी मातृभूमि.' 'हिन्दुस्तान जाग उठा,' 'जागो युवा भारत,' 'एशिया का रहस्य' इत्यादि।

दादाजी ने जाति को शक्तिशाली बनाने के लिए युवा केंद्र स्थापित किये। जहाँ जवानों के चरित्र निर्माण और शारीरिक-शक्ति के विकास पर बल दिया जाता था। उन्होंने राजपुर में शक्ति आश्रम की स्थापना की। दादाजी कहते थे कि ये नौजवान नये भारत के निर्माता और नेता होंगे। उन्हें ऐसा प्रशिक्षण मिलना चाहिये जैसे वे देश की बागडोर अच्छी तरह संभालें।

दादाजी के विचारों के अनुसार आधुनिक विद्यालय एवं विश्व विद्यालय जेल की कोठड़ियाँ थी जहाँ विद्यार्थियों को भारतीय आदर्शों एवं भारतीय संस्कृति से दूर रखा जाता है। इस लिये दादाजी ने महसूस किया कि नयी विद्या की अत्यंत आवश्यकता है। 'नयी विद्या' सम्बंधी विचारों को कार्यान्वित करने के लिए दादाजी ने सन १९३३ में 'मीरा हलचल' आरंभ की, जिस द्वारा हजारों विद्यार्थियों को भारतीय सिद्धांतो भारतीय संस्कृति, एवं अध्यात्म का ज्ञान दिया जाता था। भारत की राजनैतिक एवं सामाजिक मुक्ति के लिये ऐसी विद्या की अत्यंत आवश्यकता थी। दादाजी के सिद्धांतोनुसार विद्या और ज्ञान का ध्येय गरीबों की, पीड़ितों की सेवा थी।

दादाजी का सिद्धांत था कि जीवन देने के लिये है नहीं लेने के लिये। गरीबों को खिलाओ, पिलाओ और उन्हें अपना प्यार दो। भगवान कहीं एकांत स्थल पर विराजमान नहीं, वह तो जीवन के संघर्ष, दुखियों के आँसुओं में दृष्टिगत होगा। वह आप को मंदिरो में नहीं दीन-दुखियों की झोपड़ियों में मिलेगा।

दादाजी आध्यात्मिक-मार्गदर्शक थे। हज़रों लोग, जो अज्ञान एवं माया की आसक्ति के कारण दुखमय जीवन बिता रहे थे, दादाजी ने उन्हें आध्याात्मिक प्रकाश देकर उनके जीवन में सुख का संचार किया। 'नाम' का मंत्र देकर उनके जीवन की नैया इस भवसागर से पार लगाई। दादाजी का यही संदेश था कि प्रतिदिन प्रभु के प्यार में आँसू बहाओ। उनका स्मरण करो और दुखियों की सेवा करो। इस में ही मानव जीवन का रहस्य एवं सफलता है।

दादाजी उन गूंगो की ज़बान थे,जिनको प्रतिदिन कत्ल किया जाता है। उनके मन में न केवल मानव मात्र के लिए, परन्तु सभी प्राणियों के प्रति प्यार था। इसलिए उन्होंने जीवदया की ज्योति जगाई। दादाजी के.इस विचारधारा से प्रभावित होकर कई लोगों ने मांस-भक्षण का परित्याग किया।

दादाजी विनम्रता केअवतार थे। उनके आचार और विचार से नम्रता झलकती थी। वे राष्ट्र के महापुरूष होते हुए एक महान दार्शनिक एवं ओजस्वी लेखक होते हुए भी साधारण व्यक्तियों से भी ऐसा नम्रता के साथ व्यवहार करते थे कि उनकी नम्रता देखकर आँसू आ जाते थे। एकबार जब बम्बई के पत्रकारों ने दादाजी की प्रशंसा करते हुए लिखा कि उनकी आँखों में आध्यात्मिक चमक है, वे महान तत्त्वज्ञानी एवं प्रतिभासंपन्न कवि हैं। तब दादाने नम्रता के साथ कहा कि इन लोगों ने मुझे नहीं समझा, मुझ में तो ऐसा एक भी गुण नहीं है, मैं तो प्रभु का भक्त होना चाहता हूँ। उसी समय दादाजी ने कहा, छोटा बनो, विनम्र बनो, अहंकार का त्याग करो तब तुम प्रभु के नजदीक आ सकते हो। विनम्रता जीवन का आभूषण है।

मुझे प्रसन्नता है कि प्रो दयाल 'आशा' द्वारा लिखित युग पुरूष दादा साधु वासवाणी" पुस्तक मेरे प्यारे चन्द्रू सखराणी पूज्य माता पिता एवं भ्राता की पावन स्मृति में प्रकाशित कर रहे हैं। यह जीवन चरित्र पढ़कर पाठक गण अवश्य ही लाभान्वित होंगे। आशा है की हजारों पाठक इस संजीवनी सदृश जीवनी से प्रेरणा प्राप्त कर लाभान्वित होंगे।

मेरे प्यारे डॉ. दयाल आशा विद्वान हैं किन्तु विनम्र हैं। वे दादा वासवाणी के भक्त हैं उन्हें विभिन्न पुस्तकों पर कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वे संतो महात्माओं के संदेश वाहक हैं। मुझे आशा हैं कि दयाल आशा और भी ऐसी पुस्तकें लिखेगा, जो मानव मात्र का मार्गदर्शन करेंगी।

युग पुरूष
साधु टी. एल. वासवाणी

सिन्ध की पावन भूमि जहाँ वैदिक संस्कृति पल्लवित पुष्पित हुई, जहाँ अनेक संतों-महात्माओं ने वेदान्त और आत्मज्ञान का उपदेश दिया, जहाँ सूफियों ने तसव्वुफ और प्रेम का पैग़ाम दिया, वहाँ १९ वीं शती के उत्तरार्ध में ज्ञान-भक्ति-प्रेम और करूणा के चन्द्र का उदय हुआ, जिस ने न केवल सिन्ध भूमि को अपने प्रकाश से आलोकित किया परन्तु विश्व को अपनी ज्योति और सुधा से विभोर किया। वे चाँद थे श्री थांवरदास लीलराम वासवाणी जो दादा साधु वासवाणी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

साधु वासवाणी का जन्म २५ नवम्बर सन १८७९ इ. में कार्तिक एकादशी के पवित्र दिन हैदराबाद सिंध में हुआ। उनके जन्म का नाम 'थांवर' था। थांवर का अर्थ है स्थिर चित्त। वासवाणी का अर्थ है, जिसकी वाणी में सुरभि हो, माधुर्य हो। आगे चलकर उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया।

उनके पिता श्री लीलाराम वासवाणी देवी माता के अनन्य भक्त थे और माता वराँबाई ईश्वर आराधिका थी। उसे श्री जप साहब और श्री सुखमनी साहब कंठस्थ थे। वह प्रातःकाल उठकर श्री गुरू नानकदेव महाराज का ध्यान करती थी। वह गुरूवाणी का जाप भी करती थी और घर का कामकाज भी करती थी। घर में और बड़ा भाई श्री पहिलाजराय थे, जो राम भक्त थे। ऐसे धार्मिक वातावरण में दादाजी का पालनपोषण हुआ।

माताश्री का प्रभु प्रार्थना में पूर्ण विश्वास था।बालक वासवाणी जब स्कूल जाने लगे तब माँ ने आज्ञा की, "स्कूल में जाने से पहले प्रार्थना करो, पूजा पाठ करो, बाद में नाश्ता खाओ।" तब बालक

दादा ने पूछा यदि नाश्ता तैयार न हो तो नाश्ता किएं बिना ही स्कूल में जाऊँ ? माता ने कहा, "बेटा, अगर नाश्ता तैयार न हो तो नाश्ता किए बिना स्कूल में जाओ, परन्तु प्रार्थना के बगैर नहीं। पूजा-पाठ और प्रार्थना करने के पश्चात् स्कूल में जाओ। दादाजी ने माँ की इस आज्ञा का पूरा पालन किया।

स्वभाव में बालक दादा अन्य विद्यार्थियों से भिन्न थे। उनको जो पैसे खर्ची के लिए मिलते थे, उन में से थोड़ा कुछ खर्च कर शेष पैसे अपाहिजों में बाँट देते थे। किसी से अधिक बातचीत नहीं करते थे। वे शान्त चित्त और हंसमुख थे। वे पढ़ने-लिखने में भी प्रवीण थे। गुरूजनों के लिए भी इनके मन में आदर की भावना थी, इसलिए गुरूजन भी इनको प्यार करते थे।

एक बार प्रभात को बालक थांवर वासवाणी आकाश की ओर देख रहे थे। तब उनके माताश्री ने पूछा बालक आकाश की ओर क्या देख रहे हो ? बालक ने कहा, "माँ ! मैं आकाश में तारों की आँख मचोली देख रहा हूँ, तारे देखते देखते गायब हो जाते हैं, ऐसा क्यों?" माताजी ने कहा, "बेटा ! आकाश में एक तारा भक्त ध्रुव का प्रतीक है, वह गायब नहीं होता परन्तु अन्य तारे देखते देखते गायब हो जाते हैं। यह प्रकृति का चक्र है।" फिर बालक वासवाणी ने पूछा कि ध्रुव तारा अटल क्यों हैं ? माँ ने कहा, "कि बालक ध्रुव ने भगवान की निष्ठा के साथ भक्ति की। बालक होकर भगवान के प्रति इतनी श्रद्धा व निष्ठा, भक्ति भावना के कारण स्वयं भगवान ने उस बालक को वरदान दिया कि तुम सदैव आकाश में चमकते रहोगे।" तब बालक वासवाणी ने कहा, "तब तो मैं भी ध्रुव की भाँति भक्ति करूँ, तारा बन जाऊँ !" माताजी ने कहा, बेटा तू एक दिन तारा नहीं चाँद बनकर संसार को शीतलता व प्रकाश प्रदान करेगा।"

माताश्री की भविष्य वाणी साकार हुई। आगे चलकर श्री टी एल. वासवाणी ने हजारों प्रेमियों को प्रेम व ज्ञान का प्रकाश दिया।

बालक वासवाणी जब प्राथमिक शाला में पढ़ते थे तब वे प्रति रविवार अपने अध्यापक के घर में जाकर उनकी सेवा करते थे। उनके घर के गेहूँ पिसाकर आते थे, उनके पाँव दबोचते थे, और भी

सेवा करते थे, यह उनका नियम बन गया। एक रविवार को वे अपने अध्यापक के घर जा रहे थे, तो उसी समय गली से एक पठान गुजर रहा था। उसने बालक वासवाणी का अपहरण करने के लिए उन्हें सलवार में छुपा दिया। बालक डर के मारे, सलवार के अंदर प्रार्थना करने लगा, "प्रभु मेरी सुरक्षा करो।" उसी समय किसी व्यक्ति के आने की आहट आई और वह पठान बालक वासवाणी को सलवार से निकाल कर स्वयं तीव्र गति से चला गया। ईश्वर की अनुकम्पा से बालक वासवाणी अपहरण से बच गया। प्रभु की प्रार्थना का प्रभाव देखकर उनका परमात्मा में विश्वास बढ़ा।

एक दिन साँझ को बालक वासवाणी एकांत में बैठे, शायद प्रार्थना कर रहे थे। वहाँ उनकी माता भी आयी। माताजी ने उनसे कहा " बेटा ! हमारे एक सगे वाले की नौकरी चली गई है। उसे बाल बच्चे हैं, तुम प्रभु से प्रार्थना करो कि फिर उसे नौकरी मिल जाये।" बालक ने पूछा , "माँ उसे कितनी तनख्वाह मिलती थी?" माताश्री ने कहा, "बेटा ! उसे चालीस रूपये मासिक तनख्वाह मिलती थी।"

माताश्री अपने काम काज में व्यस्त हो गई। बालक वासवाणी ने श्रद्धा से सगेवाले की नौकरी के लिए प्रभु से प्रार्थना की। बालक सबेरे व साँझ को सात दिन यही प्रार्थना करते रहे जैसे उस गरीब की समस्या का समाधान हो जाये। परमात्मा हृदय की पुकार सुनते हैं। आठवें दिन जैसे बालक प्रार्थना कर रहे थे, तब उनकी माँ ने उन्हें आकर कहा, "बेटा ! सगे वाले को नौकरी मिल गई और तनख्वाह भी चालीस रूपये है।"यह सुनकर बालक वासवाणी खुश हुए और प्रभु का आभार मानने लगे। बालक के मन में ईश्वर के प्रति आस्था बढ़ी।

दादाजी बाल्यावस्था में भी माँ-बाप की सेवा करते थे। प्रभात को माँ के साथ गुरूवाणी का उच्चारण करते थे। उन दिनों उनके घर में पानी का नल नहीं था । दादाजी घर के लिए बाहर से पानी भरकर ले आते थे। स्कूल एवं घर का कामकाज पूरा करके बालक दादा घर के ऊपर एकांत में बैठकर संतों-महात्माओं के जीवनचरित्र पढ़ते थे। कहते हैं जब दादा आठ वर्ष के थे तो उन्हें ज्योति का दर्शन हुआ और आवाज़ आई "हे बालक, तुम्हें इस संसार में बड़ा काम करना है।" दादाजी ने

आत्म-कथा में लिखा है कि उनका सच्चा जन्म तो उसी रात्रि को हुआ जिस रात्रि को उन्हें दिव्य ज्योति का दर्शन हुआ। उस घटना के बाद वे संतों-महात्माओं के संसर्ग में आये।

मांस का त्याग : एक दिन बालक दादा स्कूल जाते हुए रास्ते से गुज़रते हैं तो देखते हैं कि कुछ दुकानों पर मांस के टुकड़े लटके हुए हैं और उनमें से रक्त की बूंदे नीचे गिर रही हैं। दादाजी साथियों से पूछते हैं कि यह क्या है ? सहपाठी उनके इस प्रश्न पर हँसते हुए उत्तर देते हैं कि ये मांस के टुकडे हैं, बकरियों को मार काटकर उनका मांस निकालकर वे कसाई लोग बेचते हैं। लोग इस मांस को खरीदकर घर में इस को भुनकर नमक मिर्ची डालकर खाते हैं। तुम भी तो खाते होंगे? क्या तुम्हें यह जानकारी नहीं ? यह सुनकर दादाजी की आँखों में आँसू आ गए, हमदर्दी के आँसू, करूणा के आँसू, पश्चानुत्ताप के आँसू।

स्कूल से लौटते ही बालक दादाजी ने रोते हुए माँ से कहा, "माँ, भविष्य में मुझे मांस मत खिलाना। मैं मांस कभी नहीं खाऊँगा।"

माँ का भ्रम था कि अगर उनका बेटा मांस भक्षण नहीं करेगा तो वह कमजोर हो जायेगा। इसलिए उसने मांस से कीमे की भाजी बनाकर बेटे से कहा, यह पेठे की भाजी है। बालक ने वह भाजी खाई।दो-तीन बार माँ ने ममता वश ऐसा किया परन्तु तीसरी बार भोजन करते हुए दादाजी को दात में एक हड्डी का टुकड़ा लगा। बस! बालक दादा ने खाना वहाँ का वहाँ रखकर रोते हुए माँ से कहाँ, "अब मैं कोई भी भाजी नहीं खाऊँगा। रूखी रोटी खाऊँगा। माँ ! मोहवश तू ने मुझे मांस खिलाकर मेरी प्रतिज्ञा भंग की है। बालक दादा रोते रहे। माँ का मन भर आया और उसने बेटे को वचन दिया कि भविष्य में वह कभी उसे मांस नहीं खिलाएगी। एक दिन पिताश्री लीलाराम वासवाणी बेटे थांवर को काली माता के मंदिर में ले गये। पूजा उपासना के पश्चात् पूजारी ने उन्हें मांस का प्रसाद दिया। बालक वासवाणी ने उसका तिरस्कार किया। उन्होंने इसके पूर्व प्रतिज्ञा की थी कि वे आजीवन निरामिष होकर रहेंगे, तो अब वे पुजारी से मांस का प्रसाद

कैसे लें ! पिताश्री ने क्रोधित होकर बेटे थांवर को थफड़ मारते हुए कहा कि तुमने पुजारी का अपमान किया है, काली माता भी अप्रसन्न होगी।

जब बालक वासवाणी को पिताजी ने थफड़ मारी तो बालक की आँखो से आँसू टपक पड़े। उन्होंने नम्रता से पुजारी के सामने वहाँ कहा, काली माता तो जगत् जननी है। सब पशु पक्षी, प्राणी उसकी संतान हैं। एक मासूम बकरी को कालीमाता के सामने बलि चढ़ाया जाये तो काली माता कैसे प्रसन्न होगी ! वह तो अत्यन्त अप्रसन्न होगी। आप मुझे इसका उत्तर दें। इस प्रश्न का उत्तर न तो पुजार नहीं पिताश्री दे सके। फिर तो पिताश्री का मन पिघल गया। उन्होंने बेटे से कहा की मैं भविष्य तुम्हें एसे मंदिरों में नहीं ले जाऊँगा जहाँ मांस का प्रसाद बाँटा जाता हो । बालक वासवाणी अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। उन्होंने न केवल स्वयं आजीवन अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया परन्तु जीवदया की ज्योति जगाई, कई लोगों को शाकाहारी बनाया।

दादाजी के घर में जो सफाई करने आता था उसका नाम ओका था। उन दिनों सफाई करने वालों को इतना तो हेय दृष्टि से देखा जाता था कि यदि चलते फिरते उसका स्पर्श हो जाता था तो नहाकर वस्त्र बदलने पड़ते ते। इस लिए सफाई करने वालों को 'अछूत'कह कर पुकारते थे। आगे चलकर महात्मा गांधी ने अछूत उद्वार का कार्यारंभ किया और अछूतों को हरिजन के नाम से सम्बोधित कर तिरस्कार की भावना मिटाई। बालक दादाजी कभी कभी ओका के बेटे से खेलते थे। एक दिन माताजी ने बालक दादाजी को अछूत ओका के बेटे से खेलते देखकर उसे शीघ्र ही नहलाकर उसे दूसरे वस्त्र पहनाये और उसे कहा "बेटा अछूत के बच्चों से खेलना उचित नहीं है। बालक दादाजी ने कहा क्या ओका हमारा भाई नहीं ? उसके बेटे से मैं क्यों नहीं खेलूँ ? वह भी तो मुझ जैसा ही बालक है। मैं तो सब को प्यार करता हूँ। हम सब एक परमात्मा की संतान हैं। फिर यह भेद भाव क्यों !

एक बार पिताश्री लीलाराम वासवाणी बेटे को शिवरात्री के मेले में ले गये। वहाँ खाने पीने की विभिन्न वस्तुएं एवं खिलौने थे। कुछ बच्चे खिलौने खरीद रह थे, तो कुछ बालक खाने की वस्तुएं

खाने में व्यस्त थे। पिताजी ने बालक से पूछा, तुम्हें क्या चाहिए ? बालक ने कहा और तो कुछ नहीं चाहिए एक फुगा ही मुझे लेकर दें। पिताजी ने एक फुगा लेकर बालक को दिया। बालक जैसे ही उसे फूंकता गया वैसे वह खुश होने लगा। थोड़े ही समय के पश्चात् बालक ने जब उसे अधिक फूँका तो वह फट गया ! यह देखकर बालक उदास हुआ। पित्ताजी ने कहा "बेटा ! उदास मत बनो ! इस संसार की सब वस्तुएं उस फुगा जैसी नश्वर हैं, देखते देखते नष्ट हो जाती हैं। ये केवल दृश्यमान हैं, उनका कोई अस्तीत्व नहीं है। पुज्य पिताजी का उत्तर सुनकर वे विचार में पड़ गये।

एक दिन विद्यार्थी वासवाणी अपने वर्ग में किसी बात पर थोड़ा सा हँस पड़े। उसी समय नया अध्यापक पढ़ा रहा था। उसने उनसे हँसने का कारण पूछा। वे मुस्कराते रहे। अध्यापक ने क्रोधित होकर उनके निकट जाकर उन्हें थफड़ मारी, फिर भी वे मुस्कराते रहे। उसी समय विद्यार्थी वासवाणी ने मन में संकल्प किया कि जब वे बड़े होंगे तब वे ऐसे विद्यालय की स्थापना करेंगे जहाँ विद्यार्थियों को स्नेह व सहानुभूति के साथ विद्या दी जाये। आगे चलकर उनका यह स्वप्न साकार हुआ।

एक दिन बालक थांवर पूज्य पिताजी के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में पिताश्री एक पैसे के चने लेकर खाने लगा। बेटे ने पूछा, पिताश्री! आप चने क्यों चबाते हैं, खाना क्यों नहीं खाते ! पिताश्री ने कहा, बेटा, फसिल अच्छी नहीं हुई है, आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं, परिवार के बच्चों को खाना पूरा मिलना चाहिए मैंने और कुछ खाकर जीवन निर्वाह किया तो चलेगा ! पिताजी का उत्तर सुनकर बालक थांवर का मन भर आया। वे श्रद्धा व लगन के साथ पिताश्री की सेवा करने लगे। रात को स्वयं सोने के पूर्व वे माँ-बाप के पाँव दबोचते थे। उनकी आज्ञा श्रोधार्य करते थे। माता व पिताजी बेटे की सेवा भावना से बहुत ही प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देते थे।

बचपन में जब वे घर में भोजन खाते थे, तब यदि वे किसी भिक्षुक या गरीब की पुकार सुनते थे, तब वे अपना भोजन छोड़कर उन्हें अपना खाना खिलाते थे।

ठंडी की मौसम में रात को कभी कभी माताश्री उन्हें जागते देखकर प्यार से पूछती थी, "बेटा ! क्या तुम्हें ठंडी के कारण नींद नहीं आती ? वे उत्तर देते थे, माताश्री ! मैं उन निराश्रय लोगों का विचार करता हूँ जो ऐसी ठंडी में बाहर सोए हूए हैं ! उनके दुख का अहिसास करते हुए मेरी आँखों की नींद चली जाती है।"

बालक वासवाणी बाल्यावस्था में ही पर पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर उसे दूर करने का प्रयास करते थे। उन्होंने कभी स्वयं को दीन दुखियों से दूर नहीं समझा।

कुछ बालक मन बहलाव के लिए पक्षियों को पत्थर मारते थे, तो यह दृश्य देखकर बालक वासवाणी का मन भर आता था। पक्षियों को पिंजरे में बंद देखकर उनकी आँखों में सहानुभुति के आँसू आ जाते थे। वे प्रति दिन पंछियों को दाना खिलाते व पानी पिलाते थे। उनकी सेवा करने से उनका हृदय हर्षित होता था। वे पक्षियों का मधुर स्वर सुनकर प्रसन्न होते थे। बचपन से उन्हें प्राकृतिक दृश्य प्रिय लगते थे। चाँदनी रात को एकांत में बैठकर वे चाँद व तारों को देखते रहते थे। सूर्योदय समय भी वे प्राकृतिक दृश्य देखकर आनंद का अनुभव करते थे। वे बाग बगीचों में जाकर फूलों की महक से प्रभावित होते थे। वे कभी नदी के किनारे तो कभी वृक्षों की छाया में बैठकर प्रकृति की महिमा गुनगुनाते थे।

विद्यार्थी जीवन : प्राथमिक सिंधी शिक्षण के पश्चात् बालक दादा अंग्रेजी स्कूल में दाखिल हूए जहाँ साधु हीरानंद आडवाणी जैसे महान समाज सुधारक, शिक्षाशास्त्री और निष्काम सेवक का गुरू रूप में उन्हें सान्निध्य प्राप्त हुआ। उनके विचारों और ऋषितुल्य जीवन का भी उन के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

एक दिन दुपहर को बालक वासवाणी को जैसे ही स्कूल से छुट्टी मिली तो वे घर जाने लगे। अचानक श्री हीरानंद ने उनकी लाल लाल आँखे देखकर कहा "बेटा ! ऐसी धूप में यदि तुम घर जाओगे तो तुम्हारी आँखे अधिक खराब हो जायेंगी। तुम मेरे पास ठहरो, शाम को घर चले जाना।" बालक ने कहा , "गुरूजी ! यदि मैं समय पर घर में नहीं जाऊँगा तो माताश्री चिन्तित होगी।" श्री हीरानंद ने उसे कहा

बेटा ! तुम घबराओ नहीं, मैं चपरासी द्वारा तुम्हारी माताश्री को तुम्हारे यहाँ रूक जाने का संदेश भेजता हूँ। श्री हीरानंद बालक को अपने कार्यालय में लेकर आये और बालक वासवाणी को अपने हाथों से खाना खिलाया और विश्राम करने के लिए कहा, दुपहर के बाद उसे घर भेजा। मुख्याध्यापक श्री हीरानंद का ऐसा व्यवहार देखकर वे बहुत ही प्रभावित हुए। आज देश को ऐसे आदर्श अध्यापकों की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों की इतनी देखभाल करें और शुभ संस्कारों का संचार करें।

साधु हीरानंद न केवल एक आदर्श अध्यापक थे किन्तु वे समाज सुधारक भी थे। विद्यार्थियों में शुभ संस्कार डालने व शुभ कार्य करने के लिए उन्हों ने "आस की टोली" स्थापित की। विद्यार्थियों की इस संस्था में उनकी बहुत ही आशाएं थी। विद्यार्थी वासवाणी भी उस में सक्रय थे। साधु हीरानंद ने शराब के विरूद्ध आंदोलन चलाया। विद्यार्थियों की वह टोली हैदराबाद की गली गली में जाकर शराब के विरूद्ध नारे लगाती थी, पोस्टर लगाती थी। समाज सेवा व सुधार के संस्कार विद्यार्थी वासवाणी को अपने मुख्याध्यापक साधु हीरानंद से प्राप्त हुए। आगे चलकर वे स्वयं महान समाज सुधारक व दीन दुखियों, पशु पक्षियों के मसीहा बने।

विद्यार्थी वासवाणी पढ़ने में भी प्रवीण रहे। वे परीक्षा में सदैव प्रथम श्रेणी में प्रथम आते थे। व्याख्यान प्रतियोगता हो या कविता पाठ हो,वे स्कूल के इन कार्यक्रमों में भाग लेते थे। इस उपलक्ष में उन्हें विद्यार्थी जीवन में कई पुरस्कार प्राप्त हुए। उनकी प्रवीणता और स्वभाव के कारण न केवल मुख्याध्यापक साधु हीरानंद किन्तु अन्य अध्यापक भी उन्हें प्यार करते थे।

बालक वासवाणी से सहपाठी बार बार खेलने कूदने के लिए कहते थे। एक दिन उन्होंने सहपाठियों से कहा कि मैं तुम्हें नया खेल खेलना सिखाता हूँ। हम सब को प्रतिदिन खर्ची मिलती है, एक दिन वह खर्ची बचाकर उन पैसों से आटा व तेल खरीद कर माताश्री से चपातियां बनवाकर और पकोड़े लेकर गरीबों को खिलायें । साथी सहपाठियों ने एक दिन स्वयं की खर्ची बचाकर बालक वासवाणी को

दी। उन्होंने आटा व तेल खरीद कर माताश्री से कहा कि चपातियां बनाकर दें। माताश्री ने उन्हें चपातियाँ बनाकर दी। वे साथियों को लेकर फुलेली नदी के किनारे की ओर चल पड़े। रस्ते से उन्होंने पकोड़े भी खरीद किये। रास्ते में वे अपने सहपाठियों के साथ राम नाम की धुनि लगाते फूलेली नदी के किनारे आये जहाँ कई दीन दुखी बैठे थे। बालक वासवाणी ने साथी सहपाठियों से कहा कि अब आप एक एक दुखी व्यक्ति को चपाती व पकोड़े खिलाएँ और उन्हें पानी पिलाएँ फिर उनकी आँखों की ओर देखें।आज हम सब मिलकर यह नया खेल खेल रहे हैं। सब ही विद्यार्थियों ने प्रेम से अपाहिजों,मूक बहरों बीमारों को खिलाया। वे उन्हें दिल की गहराई से आशीर्वाद देने लगे। सब ही विद्यार्थियों ने भूखों को खिलाने में आनंद का अनुभव किया। फिर तो प्रति सप्ताह बालक वासवाणी के साथ उनके सहपाठी कुछ खान पान की वस्तुए लेकर दुखियों को खिलाते थे। बचपन में ही बालक वासवाणी के मन में दया के बीज बोए हुए थे, जो आगे आगे चलकर वटवृक्ष के रूप में विकसित हुए।

श्री लीलाराम वासवाणी को खेती बाड़ी की जमीन थी। उससे जो कुछ आय होती थी, उसीसे वे परिवार का पालन पोषण करते थे। उन्हें एक सुपुत्री व तीन सुपुत्र, श्री पहिलाजराय, श्री थांवरदास और मंघाराम थे। सुपुत्री पिपुर को 'किकी' कह कर सम्बोधित करते थे। उनके सुपुत्र श्री पहिलाजराय एवं श्री थांवरदास लिखने पढ़ने में प्रवीण थे और आज्ञाकारी थे। पिताश्री की उन में बहुत आशाएं थी। परिवार के सब सदस्य सादगी से जीवन बिताते थे। बालक वासवाणी आठवीं कक्षा में पढ़ते थे,तब दिवाली के दिनों में अचानक पिताश्री लीलाराम ज्वर से पीड़ित हुए। उनका उपचार किया गया किन्तु स्थिति गंभीर होती गई। भगवान से उनके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की गई, किन्तु स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। दिवाली की रात को उनके तीनों बेटे श्री पहिलाजराय, श्री थांवरदास, व श्री मंघाराम उनकी सेवा में बैठे थे। भीगे नयनों से पिताश्री ने अपने तीनों हाथ दोनों सुपुत्रोंके सिरपर रखकर, आशीर्वाद देते हुए कहा बेटा! जीवन में कभी घबराना नहीं प्रभु आपकी सुरक्षा करेगें, तुम्हारी माता अब तुम्हारी देखभाल

करेगी। तुम छोटे भाई मंघे और बहिन पिपुर का ख्याल करना तुम्हारा नाम विश्व में चमकेगा। ऐसा कहते कहते दिवाली की रात को दीप बुझ गया। किन्तु उसका प्रकाश साधु टी. एल. वासवाणी एवं दादा जशन वासवाणी के रूप में विश्व को आलोकित कर रहा है।
बालक वासवाणी के पिताजी श्री लीलाराम वासवाणी ब्रह्मलीन हुए। पिताजी के ब्रह्मलीन होने के कारण बालक वासवाणी का मन बहुत ही उदास हुआ। काल के आगे मनुष्य कुछ नहीं कर सकता!

राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कहु नानक कुछ थिर नहीं सपने ज्यों संसार।।

अब परिवार की पालना का उत्तरदायित्व माता वराँबाई एवं बड़े भाई पहिलाजराय के कंधों पर पड़ा। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण दादाजी के बड़े भाई श्री पहलाजराय कालेज छोड़कर नौकरी करने लगे और दादाजी की पढ़ाई और पालन-पोषण की पूरी देखभाल करने लगे। माताश्री भी परिश्रम कर घर की गाड़ी चलाने लगी और संतान को भी सांतवना देकर अध्ययन के लिए उत्साहित करती रही। घर की आर्थिक परिस्थितियाँ ठीक नहीं होते हुए भी माताश्री साहस व धीरज से संतान की देखभाल करती रही और संतान की उन्नति के लिए श्री गुरू नानकदेव महाराज को प्रार्थना करती रही।

उन दिनों सिन्ध में ईसाई धर्म का प्रचार चल रहा था। वरिष्ठ विद्वान समाज सुधारक ऋषि दयाराम गिदूमल शहाणी ने इस धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए एनी बेसंट को सिन्ध में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। एनी बेसंट ने हैदराबाद सिन्ध में विभिन्न स्थानों पर विद्वतापूर्ण व्याख्यान देते हुए हिन्दुओं से अनुरोध किया कि सनातन हिन्दू धर्म प्राचीन धर्म है। वह भारत के महान ऋषि मुनियों की परम्परा से जुड़ा हुआ है। आप प्रलोभन वश धर्म परिवर्तन नहीं करें। आप भाग्यशाली हैं कि आप का जन्म परम पावन भारत भूमि में हुआ है। अपने धर्म, संस्कृति व सभ्यता को नहीं भूलें। विद्यार्थी वासवाणी एनी बेसंट का ज्ञान गर्भित व ओजस्वी व्याख्यान सुनकर बहुत ही प्रभावित हुए। उनके व्याख्यान में वृचस्वता थी, भाषा भी प्रभावोत्पादक थी।

विद्यार्थी वासवाणी ने मन में संकल्प किया कि वे भी ऐसी व्याख्यात कला प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। उन्होंने घर में आकर ऐसी विद्वता व वृचस्वता के लिए माँ सरस्वती से प्रार्थना की -:

सरस्वती माता विद्या का दान दो,
अपने चरणों की भक्ति और ज्ञान दो।
वीणवादिनी माँ तेरी है जयजयकार,
वंदना माता करूँ वरदान दो।
तू विद्या की देवी तुझको नमस्कार,
मैं अज्ञानी तेरा बालक भान दो।
शक्ति दो जीवन में नहीं बनूँ मैं निराश,
माँ! मुझे फूलों जैसी मुस्कान दो।

सरसवती माता की कृपा व साधना से आगे चलकर श्री वासवाणी का स्वप्न स।कार हुआ। वे फुलेली नदी के किनारे जाकर लहरों के सामने व्याख्यान देनेका अभ्यास करते रहे। वे स्कूल में व्याख्यान प्रति योगता में भाग लेने लगे। इस संम्बध में उन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हुए। साधु हीरानन्द के स्कूल, युनियन ऐकेडिमी में विद्यार्थी वासवाणी ने सिंन्धी , अंग्रेजी का अभ्यास किया, किन्तु संस्कृत भाषा भी सीखी। श्री हीरानन्द ने उसी स्कूल में संस्कृत पढ़ाने की भी व्यवस्था की थी। हमारे प्राचीन ग्रंथ वेद शास्त्र उपनिषद् देववाणी संस्कृत में ही लिखे हुए हैं। नई पीढ़ी को सत्मार्ग बताने के लिए इन शास्त्रों में समाहित शिक्षा का संदेश देना आवश्यक है। साधु हीरानन्द ने ऐसी शिक्षा देने के लिए ब्रहमो समाज के सहयोग से कलकत्ता से आदर्श संस्कृत अध्यापकों को आमंत्रित किया। विद्यार्थी वासवाणी ने ऐसे एक विद्वान से संस्कृत सीखकर उपनिषद् का अभ्यास किया। फिर उन्होंने श्रीमद् भगवद् गीता एवं अन्य शास्त्रों का भी अध्ययन किया।

श्री वासवाणी के अग्रज श्री पहिलाजराय को कराची में नौकरी मिली। वे अपने अनुज श्री थांवरदास को भी कराची ले गये, और उनकी पढ़ाई की व्यवस्था भी वहाँ एन. जी. वी. हायस्कूल में की गई। उनकी प्रवीणता के कारण उन्हें स्कूल में छात्र वृत्ति मिली। वे अध्ययनशील एवं परिश्रमी थे। पूज्य पिताजी के वियोग के कारण

उनके मन में संसार की नश्वरता संम्बंधी विचार उत्पन्न होते रहे, और प्रभु के प्रति प्यास उत्पन्न हुई। किन्तु माताश्री को प्रसन्न करने के लिए वे दत्तचित्त होकर विद्याध्ययन करते रहे और छोटे छोटे सेवा के कार्य भी करते रहे। वे पाठ्य पुस्तकों के साथ ईश्वर भक्तों, देश भक्तों के जीवन चरित्र एवं धार्मिक शास्त्रों का अभ्यास भी करने लगे। वे कुछ समय एकांत में बैठकर भगवद् स्मरण भी करते थे। स्कूल की ओर से आयोजित व्याख्यान प्रतियोगता में भी वे सक्रय रहे, कई बार इन प्रतियोगिताओं में प्रथम क्रम आने के उपलक्ष में उन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हुए। वे स्वभाव के विनम्र थे, अध्यापकों को आदर देंते थे। अध्यापक गण भी उन्हें प्यार करते थे। एक बार ठंडी की मौसम में वे स्कूल के निकट एक अध्यापक के साथ खड़े थे। वहाँ एक गरीब व्यक्ति ने चिलाते हुए कहा,“ है कोई दातार जो मुझे एक कंबल दे, मैं ठंडी से कांप रहा हूँ”। दुखी व्यक्ति की दर्द भरी आवाज़ सुनकर उन्होंने उसे कहा कि आप कृपया यहाँ ठहरें, मैं घर जाकर आपके लिए कंबल ले आता हूँ। उसी समय अध्यापक ने उन्हें कहा कि तुम घर कंबल लेने के लिए क्यों जाते हो ? उसे एक रूपया दे दो वह स्वयं जाकर कंबल खरीद करेगा। श्री वासवाणी ने अध्यापक की आज्ञानुसार उस दुखी व्यक्ति को कंबल खरीद करने के लिए एक रूपया दे दिया। वह व्यक्ति आभार मानते चला गया। अध्यापक अपने विद्यार्थी की ऐसी सहानुभूति की भावना देखकर प्रसन्न हुआ और उन्हें आशीर्वाद दिया।

रात को जब विद्यार्थी वासवाणी बिस्तर में सो रहा था।तब उनकी आँखों के सामने सुबह वाले व्यक्ति का चित्र आ गया। वे सोचने लगे की काश मैं ने उस दुखी व्यक्ति को कंबल खरीदकर दिया होता, किन्तु अध्यापक की आज्ञा टाल नहीं सकता था। आज उस व्यक्ति ने कंबल खरीद किया या नहीं। रात को कितनी ठंडी है। मुझे घर में इतनी ठंडी लगती है, निराश्रय को कितनी न ठंडी लगती होगी! श्री वासवाणी के मन में विद्यार्थी जीवन से ही दीन दुखियों , पीड़ितों के प्रति स्नेह,सेवा व सहानुभूति की भावना थी।

श्री वासवाणी मैट्रिक की परीक्षा में बैठे। उनके अग्रज श्री

पहिलाजराय वासवाणी टीचर्स ट्रेनिंग कालेज हैदराबाद में नियुक्त हुए। इसलिए वे अपने अग्रज के साथ फिर हैदराबाद में लौटकर आये। परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। श्री थांवरदास वासवाणी मैट्रिक परीक्षा में सारे सिन्ध प्रदेश में प्रथम श्रेणी में प्रथम क्रम आये। यह गौरव की बात थी। इस उपलक्ष में उन्हें मेकलियुड स्कॉलरशिप प्राप्त हुई। वे इस शुभ समाचार की तार माताश्री के पास लेकर आये और उनके पाँव छुए। माताश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा, "बेटा ! मैं चाहती हूँ कि तुम उच्च विद्या प्राप्त कर बड़ा पद प्राप्त करो, खूब धन कमाओ।" बेटे वासवाणी ने कहा "माँ ! मैं तो प्रभु का प्यासी बनना चाहता हूँ। छोटी-मोटी नौकरी कर ३० - ३५ रूपये महीने में कमा कर १५ रूपये तुम्हें दूं जैसे तुम अच्छी तरह निर्वाह कर सको। मैं शेष समय प्यारे प्रभु की खोज करूँ और दीन दुखियों की सेवा करूँ।"बेटे का यह उत्तर सुनकर माताश्री की आँखो में आँसू आगये। बेटे ने माताजी के आँसू पोछते हुए उन्हें सांतवना देते हुए कहा कि जैसा आप कहेंगी मैं वैसा ही करूँगा।

सन १८९६ में श्री वासवाणीजी डी. जी. सिन्ध कालेज कराची में दाखिल हुए। तत्कालीन समय में सिन्ध प्रदेश में केवल वह एक ही कालेज था। वे श्री मेठाराम छात्रावास में आकर ठहरे। कालेज के प्राचार्य एक अंग्रेज मिस्ट्र हैज़किट थे। अपनी प्रवीणता और नम्रता के कारण श्री वासवाणी प्राध्यपकों एवं प्राचार्य के प्रिय विद्यार्थी बने। वे कालेज की सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेने लगे। वे जब व्याख्यान प्रतियोगता में व्याख्यान देते थे, तब तो न केवल विद्यार्थी गण किन्तु प्राध्यापक भी उनकी प्रशंसा करते थे। उनकी अंग्रेजी भाषा में प्रवाह था, वाणी में वृचस्वता थी।

एक बार कालेज के प्राचार्य ने प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों से एक विषय पर निबंध लिखने के लिए कहा। प्राचार्य स्वयं इन निबंधों की निरीक्षक थे। जब उन्होंने श्री वासवाणी का निबंध पढ़ा तब उन्हें ऐसा लगा कि वासवाणी ने वह निबंध किसी पुस्तक से उतारा है। उस निबंध की भाषा एवं शैली एनी बेसंट जैसी थी। प्राचार्य ने विद्यार्थी वासवाणी को बुलाकर पूछा, तुमने यह निंबध कहाँ से कापी किया

है ? मुझे आश्चर्य लगता है कि तुम जैसा विद्यार्थी कापी करता है ! विद्यार्थी वासवाणी ने सादर उत्तर देते हुए कहा, मैनें यह निंबध कहीं से उतारा नहीं। आप अभी भी मुझे कोई नया विषय दें तो मैं निबंध लिखकर दिखलाऊँ। प्राचार्य ने उन्हें कार्यालय में बिठाकर कहा कि तुम अमुक विषय पर निबंध लिखो, मैं देखूँ तू किस प्रकार लेख लिख रहे हो।

प्राचार्य की आज्ञानुसार श्री वासवाणी ने उसी समय ही निबंध लिखा। प्राचार्य उनका वह निंबध पढ़कर फूले नहीं समाये। उन्होंने श्री वासवाणी की विचार धारा, भाषाशैली देखकर उसकी प्रशंसा की और उन्हें पुरस्कार प्रदान किया। कालेज की ओर से प्रति वर्ष सिन्धी व अंग्रजी में वार्षिक पत्रिका प्रकाशित की जाती थी। श्री वासवाणी का अंग्रेजी एवं सिन्धी भाषा पर नियंत्रण था, और उनके लिखने की शैली भी प्रशंसनीय थी। उन्हें विद्यार्थियों की ओर से कालेज वार्षिक पत्रिका का सम्पादक चुना गया। श्री वासवाणीजी सिन्धी एवं अंग्रेजी कवियों एवं लेखकों के साहित्य का अध्ययन करते थे। इस लिए उनके लेख एवं कविताएं प्रभावोत्पादक थे। वे कालेज पत्रिका का सम्पादन अच्छी तरह करते रहे।

ईर्ष्या-द्वेष की भावना यत्रतत्र और यदाकदा होती है। कालेज में कुछ विद्यार्थी श्री वासवाणी की प्रशंसा सुनकर ईर्ष्या करने लगे। उन्होंने उन्हें पथ भ्रष्ट करने के लिए षडयंत्र रचा। उन्होंने एक दिन श्री वासवाणी से कहा कि आज हम कहीं घूमने जाते हैं, तुम भी हमारे साथ चलो। उनके आग्रह पर वे उनके साथ गये। वे उन्हें एक ऐसे स्थल पर लेकर छोड़ गये जहाँ लड़कियाँ नृत्य कर पथ भ्रष्ट करती थीं। एक युवती नृत्य करती श्री वासवाणी के सामने आकर नृत्य कर उन्हें फंसाने का प्रयास करती है। श्री वासवाणी उस युवती से कहता है, "बहिन ! भगवान ने यह मनुष्य जीवन सत्कर्म करने के लिए दिया है, तुम क्यों ऐसा अमूल्य जीवन कीचड़ में गंवा रही हो ? आओ तो मिलकर प्रभु से प्रार्थना करें, उसके गुण गाएं।"

श्री वासवाणी आँखे मूंद कर प्रभु की प्रार्थना गाते हैं। वह युवती भी उनके साथ प्रार्थना गाती है। ईर्ष्यालु विद्यार्थी यह दृश्य

देखकर आश्चर्य में पड़ गए। श्री वासवाणी का उस युवती पर इतना तो प्रभाव पड़ा कि उसके जीवन में अचानक परिवर्तन आ गया। वह पश्चानुत्ताप के आँसू बहाती, निर्मल हो जाती हैं।

संत बड़े परमार्थी शीतल जॉके अंग।
तपत बुझावन ओर की देकर अपना संग।।

जिन विद्यार्थियों ने श्री वासवाणी को युवती द्वारा पथ भ्रष्ट करना चाहा वे लज्जित होते हैं। श्री वासवाणी ने छात्रावास में गीता व सुखमनी किलास आरंभ कर सह पाठियों में शुभ विचारों व धार्मिक भावना का संचार कर भक्तिमय वातावरण बना दिया। मधुर भाषी वासवाणी ने अपने विचारों व व्यवहार से सब का मन मोह लिया। उन्होंने सहपाठियों में सेवा की भावना भी उत्पन्न की।

श्री वासवाणी प्रतिभासंपन्न,परिश्रमी विद्यार्थी थे। उच्चस्तरीय विद्याध्ययन करते हुए, पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का भी अच्छा अध्ययन किया, सिन्धी संतों व सूफियों की ज्ञान गर्भित वाणी का भी अभ्यास किया। वे सन् १८९८ में इंटर की परीक्षा देने के लिए मुम्बई में आये। उन्हें परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई। उनकी इच्छा थी कि बी. ए. परीक्षा में दक्षणा फेलोशिप प्राप्त हो जाये तो अधिक अध्ययन के साथ शिक्षण का कार्य भी कर सकें। वे बी. ए. परीक्षा देने के लिए सन् १९०० ई में मुंम्बई में आये। परीक्षा के पश्चात् वे हैदराबाद सिन्ध में लौट आये।दो महीने के बाद परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। वे बी. ए. परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए और अंग्रेजी विषय में मुम्बई विश्व विद्यालय में प्रथम क्रम आये। सिन्ध के लिए यह गौरव की बात थी। इस सफलता के उपलक्ष में उन्हें एल्स स्कालरशिप प्राप्त हुई और उनकी चाहनानुसार उन्हें दक्षणा फेलोशिप भी मिली। उन्होंने जब यह शुभ समाचार माताश्री को सुनाया तब वे फूली नहीं समाईं। उन्होंने बेटे वासवाणी को चूमते हुए आशीर्वाद दिया और कहा,"बेटा ! तुम उन्नति की शिखर पर पहुँचेगा। जगत् में तुम्हारा नाम चमकेगा। आज मेरा स्वप्न साकार हुआ। मुझे आशा है, कि अब तू बड़ा पद प्राप्त कर खूब पैसा कमायेगा, तुम्हारा विवाह होगा और तुम सुखमय जीवन बिताना।"

माताश्री के आशीर्वाद वचन सुनकर उन्होंने नम्रता से कहा, "माँ ! मैं पद एवं पैसों के प्रलोभन में फंसना नहीं चाहता, मैं तो फकीर, संत बनना चाहता हूँ। गृहस्थ की कीचड़ में नहीं फंसूगा। कंचन कामनी तो अवनति की ओर ले जाते हैं, मुझे तो प्यास है प्रभु मिलन की।" सुपुत्र की यह बात सुनकर माताश्री बहुत ही उदास हुई, उनकी आँखों में आँसू आ गये। बेटे वासवाणी ने माताजी को सांतवना देते हुए कहा कि मैं अध्यापन कार्य करूँगा किन्तु संसार के परपंच में नहीं फंसूगा।

श्री वासवाणी बचपन में साधु हीरानन्द के यूनियन अकादमी हैदराबाद में पढ़े थे, वहाँ ही उन्होंने अध्यापन कार्य आरंभ किया। अध्यापन कार्य करते हुए उन्होंने विद्यार्थियोंकों न केवल पुस्तकीय ज्ञान दिया किन्तु उनमें शुभ संस्कारों का संचार किया। जो कुछ वेतन उन्हें मिलता था, वे वह वेतन माताश्री के चरणों में अर्पण करते थे। माताश्री ने विचार किया अब बेटे को नौकरी भी है, तो उसका विवाह भी करवा दूँ। प्रत्येक माता की यह इच्छा होती है कि वह अपनी आँखों से अपनी बहू को देखे और घर में झूला झूलते देखे। युवा वासवाणी तो एक चरित्रवान, आदर्श उच्च उपाधियाँ प्राप्त युवक थे, इस लिए माताश्री को विभिन्न घरों से लड़कियों वालों ने विनय की। घर में जब श्री वासवाणी की मंगनी की बात निकलती थी, तब श्री वासवाणी कोई न कोई बहाना बनाकर बात टाल देते थे, क्योंकि उनका मन साँसारिक परपंच में फँसने का नहीं था। माता वराँबाई बार बार उन्हें मंगनी के लिए आग्रह करने लगी।

अपनी प्रतिभा व प्रवीणता के कारण श्री वासवाणी डी. जी. सिन्ध कालेज कराची में व्याख्यान दाता नियुक्त हुए। बी. ए. में विशेष सफलता प्राप्त होने के कारण उन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हुए। वे कालेज में सप्ताह में चार पीरड लेते थे, और उन्हें २० रूपया वेतन मिलता था। उनके पढ़ाने का ढंग भी प्रभावोत्पादक था। प्रभु ने उन्हें व्याख्यान देने की कला प्रदान की थी। कराची में वे ब्रह्मो समाज के संपर्क में भी आए। ब्रह्मो समाज वाले उन्हें व्याख्यान देने के लिए निमंत्रण देते थे। उनके व्याख्यान में एक अजीब सी तासीर थी, जादू का असर था।

लोग उनका व्याख्यान सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे।

वे छुट्टियों के दिनों में हैदराबाद माताश्री के पास चले जाते थे। उन्होंने नई पीढ़ी में शुभ संस्कार एवं धार्मिक विचार धारा का संचार करने के लिए सुखमनी व गीता वर्ग प्रारंभ किये।वे श्री सुखमनी एवं भगवद् गीता की व्याख्या करते मार्गदर्शन करते थे। उनके व्याख्यान प्रभावोत्पादक थे, कई युवक भाई-बहिने उनका व्याख्यान श्रवण करने के लिए आते थे। कराची की विभिन्न संस्थाएं समय समय पर उन्हें व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करती थी।

अध्यापन कार्य के साथ साथ उन्होंने एम. ए. की परीक्षा देने के लिए दत्तचित्त होकर अध्ययन किया। सन् १९०२ में उन्होंने इतिहास एवं दर्शन में परीक्षा देकर मुम्बई विश्व विद्यालय से एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। उनकी सफलता सुनकर माताश्री बहुत ही प्रसन्न हूई। उन्होंने बेटे वासवाणी से कहा कि अब तुम विधि की परीक्षा उत्तीर्ण कर वकील बनों। हमारे सम्बंधी श्री टेकचन्द जैसा प्रसिद्ध वकील होकर खूब पैसे कमा कर मेरी इच्छा पूरी करो। सुपुत्र वासवाणी ने नम्रता से कहा, "माताश्री ! वकील तो अधिकतर झूठ बोलते हैं, मैं सत्य के मार्ग का पथिक हूँ। मैं वकील बन कर झूठ का पेशा नहीं करूँगा। मैं अध्यापक बनकर सत्य की कमाई करूँगा, पैसों के प्रलोभन में नहीं फंसूगा।

ब्रह्मों समाज के साथ अच्छे सम्बंध होने के कारण श्री वासवाणी को तार आई कि वे कलकत्ता के विद्यासागर कालेज में इतिहास एवं तत्वज्ञान के प्राध्यापक नियुक्त किये गये हैं। वे इस नियुक्ति का समाचार सुनकर प्रसन्न हुए और माताजी से कहा, कि माँ ! मुझे कलकत्ता जाने की आज्ञा दें, वहाँ मैं प्राध्यापक बनकर आपको वेतन भेजूँगा। माताश्री सुपुत्र वासवाणी को अपनी आँखो से दूर रखना नहीं चाहती थी, किन्तु श्री वासवाणी मंगनी से मुक्त होने के लिए दूर दूर कलकत्ता जाने के लिए उत्सुक थे।

उन्होंने अपने अग्रज श्री पहिलाजराय से विनय की कि वे माताजी की आज्ञा दिलवा दें, क्यों कि वह बड़े बेटे की बात मान जायेगी। श्री पहिलाजराय ने अपने अनुज को कलकत्ता जाने के लिए उत्साहित करते हुए कहा कि वे माताश्री को उनकी यह बात मनाएंगे।

माताश्री ने शर्त डाली कि उन्हें सारा वेतन मुझे भेजना पड़ेगा। बेटे वासवाणी ने माता की शर्त स्वीकार की।

सन् १९०३ में वे कलकत्ता गये। उन्होंने अपने व्याख्यान से न केवल विद्यासागर कालेज के विद्यार्थियों को विमुग्ध कर दिया परन्तु वे अपनी विद्वत्ता एवं आदर्शों के कारण कलकता के कोने कोने में प्रसिद्ध हुए। दादाजी के मन में सब ही धर्मों, अवतारों व महापुरूषों के प्रति श्रद्धा थी। वे सब को समान रूप में प्यार करते थे। वे समन्वयवादी थे।

कई लोग उनका प्रवचन सुनने के लिए आते थे। माताजी के स्नेह और ममतापूर्ण कई पत्र इनके पास आते रहे परन्तु दादाजी अपनी साधना में तल्लीन रहे।माँ नहीं चाहती थी कि उनके जीते जी उसका बेटा (दादाजी) साधु का भेष धारण करे।

श्री वासवाणी के अग्रज श्री पहिलाजराय वासवाणी विद्वान, शिक्षा शास्त्री, परोपकारी, निष्काम निष्ठावान समाज सेवक, सुधारक व राम भक्त थे। उन्होंने प्रेम मंडली की स्थापना कर कई सेवा के कार्य किये। वे कराची जेल में कैदियों के पास जाकर उन्हें शिक्षा देकर उनका हृदय परिवर्तन करते थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों को दूर करने का भी प्रयास किया। उन्होंने विद्या के क्षेत्र में भी प्रशंसनीय कार्य किया। वे सत् साहित्य का सृजन भी करते रहे। उनके जीवन में स्मरण-सेवा की सुरभि थी। श्री वासवाणी के जीवन पर उनके अग्रज श्री पहिलाजराय के शुभ गुणों का भी प्रभाव पड़ा।

कालेज की छुट्टियों में वे हैदराबाद सिन्ध में लौट आये। उन्होंने माताश्री एवं अग्रज को प्रणाम किया। माताजी बहुत दिनों के बाद बेटे का मुखड़ा देखकर अत्यंत प्रसन्न हुई। माताजी की इच्छा थी अब कैसे भी बेटे की मंगनी हो जाये। उन्होंने स्वयं एवं सगे सम्बंधियों द्वारा उन्हें विवाह करने के लिए प्रयास किया। किन्तु श्री वासवाणी ने नकारात्मिक उत्तर देते हुए कहा "आखियाँ हरिदर्शन की प्यासी, मैं गृहस्थ जीवन में प्रवेश नहीं करूंगा, मैं तो संत बनना चाहता हूँ।"माँ बेटे का उत्तर सुनकर रोने लगी और कहने लगी, बेटा ! तुमने मेरा स्वप्न साकार नहीं किया मेरी बहुत ही आशाएँ थी कि तुम बड़े होकर बड़ा पद प्राप्त कर

विवाहित जीवन में प्रवेश कर घर का नाम रोशन कऐंगे। तुमने मेरी उमीदों पर पानी फेर लिया। अब तुम वचन दो कि जब तक मैं ज़िंदह हूँ तुम संत नहीं बनेगा। श्री वासवाणी ने माताजी के आँसू पोछते हुए उन्हें आश्वासन दिया कि "जब तक आप हैं तब तक मैं संत नहीं बनूँगा।"

माताजी का आशीर्वाद लेकर वे फिर कलकत्ता में आये। वे वहाँ पढ़ाते हुए कई विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन करते रहे। वे, उनके मन में सेवा, सादगी, सत्य स्नेह सहानुभूति, संयम के बीज बोते रहे। उन्होंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, श्री केशबचन्द्र सेन के जीवन चरित्रों का अभ्यास किया था। वे उनकी जन्म भूमि में किसी महापुरूष की खोज में थे, जो उनका आध्यात्मिक उन्नति के लिए मार्गदर्शन करे, प्रभु मिलन की राह बताए। एक दिन वहाँ उनकी यह प्यास पूरी हुई। श्री केशवचन्द्र सेन के भतीजे, महान विद्वान व भक्त श्री परमोथोलाल सेन जो 'नालूदा' के नाम से प्रसिद्ध थे, उन्हें गुरू रूप में प्राप्त हुए। श्रद्धालु उन्हें नालूदा कहते थे किन्तु वे कहते थे कि मैं गुरू नहीं हूँ। वे बड़े ही विनम्र थे। उन्होंने श्री वासवाणी पर दया दृष्टि कर मार्गदर्शन किया। उनके मन मैं गुरू के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। जैसे जैसे वे गुरूदेव के निकट हुए उनकी गुरू भक्ति की भावना बढ़ती गई। गुरूदेव श्री परमोथलाल कम बोलते थे, बहुत समय एकांत में रहते थे, किन्तु उनमें अध्यात्मिक आकर्षण था। उनके मधुर व स्नेहयुक्त वचन सुनकर श्रोताओं को आनंद प्राप्त होता था। प्रो वासवाणी भी गुरूदेव की स्नेह की सरिता में स्नान करते थे। वे अपने निवास स्थान से पैदल गुरू के स्थान पर जाते थे। वे पैदल जाते भी दिल में गुरू का ध्यान करते थे। वे गुरू द्वारा दिये मंत्र की निष्ठा से साधना करने लगे। कालेज के अध्यापन कार्य करने के पश्चात् वे गुरूदेव के स्थान पर जाकर संकीर्तन में सम्मिलित होते थे। गुरूदेव के समक्ष सब ही श्रद्धालु प्रेमी भगवद् कीर्तन करते हुए तल्लीन हो जाते थे। प्रो वासवाणी ऐसे भक्तिमय वातावरण में गुरू के सान्नध्य में आनंद का अनुभव करते थे। भगवान भी श्री नारद से कहते हैं -

नाहं वसामी वैकुण्ठे, योगीनाम ह्दये न च-

यत् मद् भक्ता गायन्ती तत्र तिष्ठामि नारद !

प्रो वासवाणी गुरूदेव की छत्र छाया में इतने तो आनंद में रहे कि वे कालेज की छुट्टियों में भी हैदराबाद सिन्ध में नहीं गए। वहाँ माताश्री बेटे से इतना समय दूर रहकर चिन्तित हुई। उन्होंने सुपुत्र वासवाणी को पत्र लिखवाया कि तुम अब यहाँ आ जाओ,अपना मुखड़ा दिखाकर जाओ, मैं अब विवाह के सम्बंध में तुम्हें कुछ नहीं कहूँगी। तुम घबराओ नहीं; अपनी राह पर चलते रहो, मैं बाधा नहीं डालूगीं। माताश्री का पत्र पढ़कर प्रो वासवाणी की आँखो में स्नेह के आँसू आ गये। वे गुरूदेव से आज्ञा लेकर हैदराबाद सिन्ध में आये। उन्होंने माताश्री एवं अग्रज श्री पहिलाजराय को नतमस्तक प्रणाम किया। वे उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। माताजी ने जब प्यार से उन्हें गले लगाया तो उनकी आँखो से स्नेह की अश्रुधारा प्रवाहित हुई। माता की ममता व प्रेम का सजीव चित्र देखकर बेटे वासवाणी की आँखे भीगी हो गई।

छुट्टियों के बाद फिर वे कलकत्ता गये,कालेज जाने के पहले वे अपने गुरूदेव के पास आये। उनका आशीर्वाद प्राप्त कर कालेज में अध्यापन कार्यारंभ किया। प्रो वासवाणी को पढ़ाने की अपनी शैली थी। विद्यार्थीगण तन्मय होकर शिक्षा ग्रहण करते थे। कभी कभी अन्य वर्गों के विद्यार्थी भी उनका व्याख्यान श्रवण करने के लिए उनके वर्ग में आकर बैठते थे। उनके विचारों एवं व्यवहार में अपना पन था। वे विद्यार्थियों को न केवल पुस्तकीय ज्ञान देते थे, किन्तु उनमें देश भक्ति एवं ईश्वर भक्ति के संस्कार भी डालते थे।

प्रो वासवाणी जी छुट्टियों के दिनों में एक बार शिमला गये। वहाँ उनके गुरू श्री नालूदा भी आये हुए थे। उन्हें वहाँ गुरू का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ और प्रकृति का संग भी मिला। वे प्रकृति के पुजारी थे। वे एकांत में प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करते करते प्रभु के ध्यान में मग्न हो जाते थे। शिमला में वे गुरूदेव से ज्ञान-गोष्ठी भी करते रहे। वे शिमला से हरिद्वार गये। वहाँ उन्होंने गंगा मैया की पावन गोदी में बैठकर शीतलता व आनंद प्राप्त किया। वे वहाँ कई संतों महात्माओं से मिले। दादाजी अमृतसर, ब्रज भूमि एवं अन्य तीर्थ स्थलों पर गये।

कलकत्ता में एक बार प्रो वासवाणी विद्यार्थियों को गंगा

नदी के उस पार बेलूर गांव के एक बगीचे में परिभ्रमण कराने के लिए ले गये। वे नाव में बैठकर लहरों के साथ नाचते गंगा के उस पार आ गये। वे विद्यार्थियों के साथ सारा दिन उस बगीचे में, प्रकृति की गोद में आनंद मनाते रहे। संध्या को लौटते समय वे विद्यार्थियों के साथ नौका में बैठे तो अचानक तेज तूफान के साथ वर्षा आई। नदी के प्रवाह में तेजी आगई और नाव के डूबने की सम्भावना थी। ऐसा दृश्य देखकर दादाजी ने विद्यार्थियों से कहा, प्रेम के साथ प्रभु से प्रार्थना करें तो यह विपदा टल जाएगी। सब विद्यार्थी दादाजी के साथ परमात्मा से प्रार्थना करने लगे -:

लगाओ नैया हमारी पार
प्रभुजी तुम हो प्राणा धार।
चारों ओर अंधेरा छाया,
वर्षा आई तूफाँ आया,
डूब रही मझधार में नैया,
इक तू ही हो खेवनहार।
लगाओ नैया हमारी पार।

तेरे चरनों में ही सुख है,
और जगह पै दुख ही दुख है,
सबुह के भूले भटके हैं हम,
आए शाम को तेरे द्वार।
लगाओ नैया हमारी पार।

हम बालक तू पिता हमारा,
तेरे बिना नहीं कोई सहारा,
तुम करूणा के सागर हो,
है तेरा अनोखा प्यार.,
लगाओ नैया हमारी पार।

आंधी टल गई, सबी विद्यार्थी विस्मय में पड़ गये। डूबने का भय चला गया। उन्हें नया जीवन मिल गया। उनका प्रार्थना में विश्वास दृढ़ हुआ।

कलकत्ता में उन्होंने कई परिवारों से स्नेह सम्बंध जोड़ा। वे परिवार वाले भी उन्हें अपने परिवार का सदस्य समझकर व्यवहार करते थे। वहाँ ब्रह्मों समाज एवं अन्य संस्थाएं उन्हें व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करती थी। श्रोतागण उनका व्याख्यान सुनकर मंत्र मुग्ध हो जाते थे। वे न केवल कालेज में लोकप्रिय हुए किन्तु नगर में भी उनका नाम हुआ।

गुरूदेव रविन्द्रनाथ ठाकुर ने भी प्रो वासवाणी का नाम सुना था। वे दोनों कवि थे, लेखक एवं दार्शनिक थे दोनों ईश्वर भक्त व देश भक्त थे, विद्वान थे। एक दिन गुरूदेव रविन्द्रनाथ जी प्रो: वासवाणीजी से मिलने के लिए उनके निवास स्थान रामपुरमें आये। प्रो वासवाणी को जैसे ही यह ज्ञात हुआ तो वे शीघ्र ही बाहर निकल आये। दोनों विभूतियों ने एक दूसरे को गले लगाया। उसी समय ऐसा लगा कि दो महान विरही आत्माओं का संगम दृश्यमान था। दोनों महापुरूषों ने आपस में ज्ञान गोष्ठी की। प्रो वासवाणी ने उन्हें नम्रता से कहा, मेरी आँखे आपके दर्शन की प्यासी थीं, आज घर बैठे आपने दास को दर्शन दिया, यह आपकी महानता है। ऐसा कहते कहते उनकी आँखो से आँसुओं की धारा प्रवाहित हुई। प्रेम के आँसू ,जो हीरों मोतियों से भी अधिक मूल्यवान हैं।

कलकत्ता में प्रो: वासवाणी का महान राष्ट्रभक्त, निडर निष्ठाषान नेता श्री लोकमान्य तिलक से भी मिलन हुआ। उनके मन में श्री तिलक के प्रति अगाध श्रद्धा थी।कलकत्ता में स्वदेशी सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसका उद्‌घाटन करने के लिए श्री लोकमान्य तिलक कलकत्ता में पधारे। प्रो: वासवाणी उनका दर्शन करने के लिए व व्याख्यान सुनने के लिए स्वदेशी सम्मेलन में सम्मिलित हुए। श्री सुरेंद्रनाथ बैनरजी की अध्यक्षता में सम्मेलन हुआ। जब राष्ट्र नायक श्री लोकमान्य तिलक ने शेर की तरह गर्जना करते हुए स्वदेशी आंदोलन का संदेश दिया, तब श्रोताओं के रोंगटे खड़े हो गये। उन्होंने कहा कि भारत माता को परतंत्रता से मुक्त कराना हमारा कर्तव्य है। स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, वह हम अवश्य प्राप्त करेंगे।

अधिकार खोकर बैठे रहना यह महादुष्कर्म है।

न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है। (गुप्तजी)

प्रो: वासवाणी श्री लोकमान्य तिलक के भाषण से इतने तो प्रभावित हुए कि उन्होंने उसी समय स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने के लिए संकल्प किया। उनके मन में देश भक्ति की चिंगारी धधक उठी। वे स्वदेशी आंदोलन से इतने तो प्रभावित हुए कि उन्होंने आजीवन खादी की सादी पोशाक पहनने का संकल्प किया, न केवल इतना आगे चलकर उन्होंने स्वयं इस आंदोलन में सक्रय भाग लिया।दादा वासवाणी ने शराब एवं विदेशी वस्तुओं के विरूद्ध प्रचार किया।

कलकत्ता की उत्तर दिशा की ओर गंगा नदी के किनारे दक्शनेश्वर मंदिर है। राणी रसमणिने इस मंदिर का निर्माण किया था। इस मंदिर में कालीमाता, रसेश्वर भगवान श्री कृष्ण एवं भगवान शंकर भोलानाथ की सुंदर प्रतिमाएं हैं। यह मंदिर महान विभूति स्वामी रामकृष्ण परमहँस का लीलास्थल है। यहाँ ही उन्होंने कालीमाता की उपासना कर आध्यात्मिक सफलता प्राप्त की। यहाँ ही स्वामी विवेकानन्द , स्वामी ब्रह्मानंद, श्री केशपचन्द्रसेन, श्री विद्यासागर एवं अन्य स्वामी रामकृष्ण के सम्पर्क में आये और उनसे ज्ञान की प्राप्ति की। प्रो : वासवाणी ने इस मंदिर के सम्बंध में बहुत कुछ सुना व पढ़ा था। कई दिनों से उनकी इच्छा थी कि वे इस मंदिर का दर्शन करें। एक दिन वे इस इतिहासिक मंदिर में गये। भगवान एवं कालीमाता की मूर्तियों को उन्होंने नतमस्तक प्रणाम किया और कुछ समय वहाँ ध्यानावस्था में बैठे रहे।

उसी मंदिर में प्रो : वासवाणी से एक संत ने पूछा कि आप कहाँ से आये हैं ? उन्होंने कहा कि वे हैदराबाद सिन्ध से आये हैं। हैदराबाद सिन्ध का नाम सुनकर उसी संत ने कहा कि साधु हीरानन्द भी तो हैदराबाद सिन्ध में रहते थे। जब वे कलकत्ता में थे, तब वे यहाँ स्वामी रामकृष्ण का दर्शन करने आते थे। जब उन्हें पत्ता पड़ा कि स्वामी रामकृष्ण बहुत ही अस्वस्थ हैं, तब वे यहाँ आये और उनकी बहुत सेवा की। यह सुनकर प्रो : वासवाणी वहाँ शांतचित्त होकर प्रार्थना करने लगे । वे सन्त उन्हें स्वामी रामकृष्ण की कुटिया में लेकर आये। कुटिया में प्रवेश करते ही उन्होंने आनंद का अनुभव किया। कुटिया

में स्वामी रामकृष्ण की मूर्ति के सामने दीप प्रज्ज्वलित था। प्रोफेसर वासवाणी नतमस्तक होकर प्रार्थना करने लगे।

प्रो वासवाणी को कलकत्ता में अध्यापन कार्य करते पाँच वर्ष बीत गये। बड़े भैया श्री पहिलाजराय ने उन्हें हृदय स्पर्शी पत्र लिखा, " मेरे प्यारे भाई ! अब डी. जे. सिन्ध कालेज कराची में दर्शन के प्राध्यापक की आवश्यकता है, तुम वहाँ पत्र लिखो तो तुम्हें वहाँ नौकरी मिल जायेगी। तुम बहुत समय पूज्य माताजी एवं मुझ से दूर रहे हो, इतने दिन दूर रहना ठीक नहीं है।" इस पत्र के सम्बंध में उन्होंने अपने गुरू श्री नालुदा से बातचीत की। गुरू ने उन्हें आज्ञा नी कि यदि उन्हें कराची कालेज में नौकरी मिल जाय तो अच्छी बात है। प्रो: वासवाणी को केवल लिखने की आवश्यकता थी। भगवद् कृपा से उन्हें डी.जे. कालेज कराची से नियुक्ति पत्र आया। वे गुरू से आशीर्वाद लेकर सिन्ध में लौट आये। माता वराँबाई एवं बड़े भाई पहिलाजराय उन्हें देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्हें गर्व था कि उनके घर के चिराग ने प्रतिभा व विद्वता से वासवाणी परिवार का नाम रोशन किया है।

जननी जने तो हरि जन जने या दाता या सूर

सन् १९०८ में प्रो वासवाणी डी.जी. कालेज में दर्शन के प्राध्यापक नियुक्त हुए। वे कालेज में विद्यार्थियों को न केवल पुस्तकीय ज्ञान देते थे, किन्तु उनके चरित्र निर्माण एवं स्वास्थ्य की ओर भी ध्यान देते थे। उनके साथ अपनेपन का व्यवहार करते थे। उनके पढ़ाने की शैली प्रभावोत्पादक थी, कभी कभी अन्य वर्गों के विद्यार्थी भी उनके वर्ग में बैठकर उनका व्याख्यान श्रवण करते थे। वे अंग्रेजी एवं इतिहास में भी परिपक्व विद्वान थे। यद्यपि वे कालेज में दर्शन के प्राध्यापक थे किन्तु अपनी प्रवीणता के कारण उन्हें अंग्रेज़ी एवं इतिहास विषय पढ़ाने का कार्य भी कभी कभी सौंप दिया गया। वे बड़े अध्ययनशील थे। कालेज में पढ़ाते वे नई नई प्रकाशित पुस्तकों का भी अभ्यास करते रहे। प्रो वासवाणी ने विद्यार्थियों को भारतीय ऋषि-मुनियों का संदेश देने के लिए डी. जे. सिन्ध कालेज में गीता वर्ग आरंभ किया। उन दिनों इन्कलाबी देश भक्त गीता साथ में रखते थे। प्राचार्य फैरल ने

प्रो वासवाणी को बुलाकर कहा "यह कालेज है, यहाँ गीता पढ़ाने की आवश्यकता नहीं। यह गीता वर्ग बंद करो।" प्रो वासवाणीने बिना तर्क वर्ग बंद किया। कुछ दिनों के पश्चात् प्राचार्य फैरल के पास विदेश से एक महिला अतिथि होकर आई। उसने प्रो वासवाणी का नाम सुना था, वह उनका व्यख्यान सुनने के लिए उत्सुक थी। उसने प्राचार्य से कहा कि वह प्रो: वासवाणी का व्यख्यान सुनना चाहती है। दो दिन के बाद किसी संस्था ने प्रो वासवाणी का व्याख्यान आयोजित किया। प्राचार्य फैरल उस विदेशी महिला को उस कार्यक्रम में ले गये। उसी समय प्रो वासवाणी श्रीमद् भगवद् गीता के सम्बंध में व्याख्यान दे रहे थे। विदेश से आई हुई महिला एवं प्राचार्य फैरल प्रो वासवाणी का व्याख्यान सुनकर इतने तो प्रभावित हुए कि प्राचार्य ने दूसरे दिन प्रो वासवाणी को अपने कार्यालय में बुलाकर कहा, "गीता के सम्बंध में आपका व्याख्यान सुनकर मैंने ऐसा महिसूस किया है कि गीता हम सब का मार्गदर्शन करती है। तुम कालेज में गीता वर्ग चला सकते हो। कालेज के प्राचार्य डॉ. जैक्सन स्वयं भी विद्वान थे, वे प्रो वासवाणी की योग्यता का कद्र करते थे। प्रो वासवाणी विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा देकर उनका भविष्य उज्ज्वल बनाने का प्रयास करते रहे। विद्यार्थी उनकी पढ़ाई, व्यवहार और प्यार से प्रभावित होकर अपनी समस्याओं का समाधान कराने के लिए उनके पास जाते थे।

कराची में विभिन्न धर्मों व मतों के महापुरूषों के कार्यक्रम होते थे। प्रो वासवाणी को अधिकतर इन कार्यक्रमों में अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया जाता था। वे इन उत्सवों में व्याख्यान देकर श्रोताओं को प्रभावित करते थे। कभी नेताएं या अन्य विद्वान कराची में आते थे। प्रो वासवाणी का उन से सम्पर्क होता था। वे उनसे विचार विमर्ष करते थे।

सन् १८९३ में चिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन आयोजित किया गया था, जिस में विभिन्न देशों से भिन्न भिन्न धर्मों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। उसी सम्मेलन में भारत से स्वामी विवेकानन्द सम्मिलित हुए थे। वहाँ उन्होंने अपने ज्ञान गर्भित व्याख्यानों द्वारा विदेशियों को भारत के ऋषिमुनियों का संदेन सुनाकर विमुग्ध कर

दिया था। सन् १९१० में द्वतीय विश्वधर्म सम्मेल ब्रलन में आयोजित किया गया, जिस में भारत के चार विद्वान महापुरूषों को आमंत्रित किया गया। उन चार विद्वानों में से दो थे प्रो: वासवाणी के गुरूदेव श्री प्रेमोथोलाल सेन नालूदा एवं प्रो: वासवाणी । प्रो वासवाणी को जब यह निमंत्रण मिला तो वे प्रसन्न हुए कि ऐसा स्वर्ण अवसर खोना नहीं चाहिए। फिर उन्होंने विचार किया कि उन्हें यह योग्यता नहीं कि वे विदेश जाकर विदेशियों को शिक्षा दें। वे द्वन्द में पड़ गये। जब उनके गुरूश्री नालूदा ने पत्र लिख ा कि मुझे विश्वधर्म सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण आया है, तुम्हें भी निमंत्रण प्राप्त हुआ है। तुम भी मेरे साथ अवश्य सम्मेलन में सम्भिलित हो। गुरू की आज्ञा आँखों श्रोधार्य कर उन्होंने माताश्री एवं दादा पहिलाजराय से अनुमति लेकर सम्मेलन में सम्मिलित होने की स्वीकृति आयोजकों को भेजी।

श्री वासवाणी की माताश्री एवं अग्रज श्री पहिलाजराय व सिन्ध के लिए यह गर्व की बात थी कि २९ वर्ष की युवावस्था में उन्हें विश्व धर्म सम्मेलन में सम्मिलित होने का निमंत्रण प्राप्त हुआ। प्रो वासवाणी पूज्य माताश्री एवं अग्रज श्री पहिलाजराय जिन्हें वे दादा कहकर सम्बोधित करते थे, उनसे आशीर्वाद लेकर सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए कराची से मुबई में आये। प्रो वासवाणी के आध्यत्मिक गुरू श्री नालूदा भी विदेश जाने के लिए कलकत्ता से मुम्बई आए। शिष्य ने गुरू को प्रणाम करते हुए आशीर्वाद लिया। दोनों सत्पुरूषों ने विश्व धर्म सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए पानी के जहाज़ द्वारा जरमनी जाने के लिए मुम्बई से प्रस्थान किया। प्रो वासवाणी प्रकृति के प्रेमी व पुजारी थे। प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करना उनके मन को भाता था। इस लिए वे जहाज के डेक पर बाहर जाकर बैठते थे। असीम सागर की लहरों को देखकर उनके मन में भी विचार तरंगे उत्पन्न होती थीं।वे जहाज़ में सफर करते दिन में सात आठ बार एकांत में बैठकर भगवद् स्मरण करते थे। वे जहाज में अपने गुरू की सस्नेह सेवा करते थे। अधिक समय डेक पर बैठने के कारण एक बार उन्हें बुखार आ गई। दो चार दिन वे अस्वस्थ रहे। उनके गुरूदेव उनकी देखभाल करते रहे।

जहाज़ में यात्रा करते, उनके मन में जो विचार उत्पन्न होते थे, वे एक नोटबुक में लिखते रहते थे। सम्मेलन में व्याख्यान देने के लिए उन्हें अपना व्याख्यान लिखत रूप में आयोजकों को भेजना था। समय के अभाव के कारण वे लेख तैयार नहीं कर सके। वे जहाज़ में सफर करते अपने व्याख्यान के विषय के सम्बंध में चिन्तन कर कुछ टिपणियाँ लिखते गये। वे जहाज़ में यात्रा करते भी प्रात: काल को उठकर पूजा प्रार्थना करते थे।

जहाज़ पहले अदन नगर में आता है, फिर वह सुईज़ कैनाल में पहुँचता है। जहाज़ फिर रोम में ठहरता है। कुछ यात्री रोम घूमने के लिए जाते हैं किन्तु प्रो वासवाणी, जिनके मन में श्री ईषा के लिए श्रद्धा थी वे बड़ी देवल में जाकर श्री ईषा की मूर्ति को प्रणाम करते हैं। फिर जहाज़ इटली में आता है। जहाज़ इटली से होकर जुलाई सन १९१० को जहाज जरमनी में पहुँच जाता है। कार्यक्रम के दो दिन पूर्व श्री नालूदा एवं उनके शिष्य प्रो वासवाणी ब्रलनि में पधारे। प्रो वासवाणी ने अपना व्याख्यान लिखकर टाईप करने के लिए भेजा।

जुलाई सन १९१० ई में जरमनी की राजधानी ब्रलन में विश्व धर्म सम्मेलन का शुभारंभ हुआ, जिस में विभिन्न देशों से विभिन्न धर्मों के विद्वान एवं धार्मिक नेताएं सम्मिलित हुए । मंच पर वरिष्ठ विद्वान दार्शनिक एवं धार्मिक नेताएं बैठे थे। आयोजकों एवं श्रोताओंने सब का हार्दिक आभिनंदन किया। श्री नालूदा ने अपने ज्ञान गर्भित विचार व्यक्त किये।

३० वर्ष के युवा प्रो टी. एल. वासवाणी भारतीय वेशभूषा पहने व्याख्यान देने के लिए मंच पर आये। उन्होंने जब अंग्रेजी में आदरणीय भाइयो व बहिनों (Respected Brothers & Sisters) शब्दों से सम्बोधित किया तब श्रोतागण आश्चर्य में पढ़ गये, क्यों कि प्रो वासवाणी के पूर्व सब ही व्याख्यान दाताओं ने (Ladies & Gentleman) शब्दों से सम्बोधित किया था। प्रो वासवाणी के भाई बहनों शब्दों में अपनेपन का आकर्षण था। प्रो वासवाणी ने व्याख्यान आरंभ करने के पहले निम्न प्रार्थन की :-

असतो मा सत् गम्य
तमसो मा जोतिर्गम्य
मृत्युर्मा अमृतं गम्य।

भारत के ऋषि परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। कि हमें असत् से निकाल कर सत् मार्ग पर चलाएं, अज्ञान अंधकार से मुक्त कर प्रकाश अर्थात् ज्ञान के पथ पर चलाएं, मृत्युकूप से निकाल कर आध्यात्मिक आनंद का अमृत पिलाएं।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! हम असत् जगत् और जगत् के नश्वर पदार्थों को सत् समझकर सत्य स्वरूप, ज्योति स्वरूप ब्रह्म को भूल गयें हैं। भौतिक उन्नति को सच्ची प्रगति समझकर भगवान को भूल गये हैं। अज्ञान अंधकार के कारण हमारी यह दशा हुई है ! धर्म व सम्प्रदायों के नाम कितने झगड़े व लड़ाइयाँ होती हैं ! यह कहाँ तक उचित है? कोई भी धर्म, मज़हब वैर वैमनस्य, द्वेष, ईर्ष्या घृणा नहीं सिखाता। धर्म तो प्रेम, मैत्री व दया भावना सिखाता है। दया प्रत्येक धर्म का मूल है। भारत के महान राम भक्त कवि संत तुलसीदास ने कहा है -:

दया धर्म का मूल है नर्क मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए जब लग घट में प्रान।।

धर्म के नाम क्या नहीं किया जाता है ! हम बाह्य आडंबर में फंस कर धर्म के मूल तत्वों को भूल गये हैं। प्रलोभन देकर या गलत बातें बताकर लोगों का धर्म परिवर्तन किया जाता है, यह कहाँ तक उचित है! जिसका जिस धर्म में जन्म हुआ है उसे उसी धर्म के नियमों का पालन करने दो। भारत के ऋषि मुनियों ने विश्व बंधुत्व का संदेश दिया। हम न केवल पड़ोस को, नगर को, देश को किन्तु सारे विश्व को अपना परिवार मानते हैं।

अयं निजो परोवेति गणनाचेतसां।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

भारत विश्व-कल्याण की कामना करता है। यदि सब ही देश इस विचार धारा को कार्यान्वित करें तो सारे संसार में शांति व स्नेह का वातावरण उत्पन्न हो जाये। हमारे वेदांम्त का यह सिद्धांत है-

'एको ब्रह्म द्वितीयोनस्ति'

न केवल मानव मात्र किन्तु चलचर, नभचर, थलचर सभी

प्राणियों में एक ही आत्मा विद्यमान है, एक आत्मा का प्रकाश प्रज्ज्वलित है। हम ने ही द्वेत की भावना पैदा की है। भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण बहुत ही विशाल है।

मेरे भाइयो व बहिनों ! सच्चा धर्म तो सात्त्विक प्रवृत्तियों को जन्म देता है , अहिंसा, स्नेह सहानुभूति सत्य, सहयोग,सौहार्द, दया परोपकार की भावना को परिपुष्ट करता है। किन्तु आज हम परंपरागत गरिमापूर्ण धर्म व मज़हब के मूल सिद्धांतो को भूल गये हैं। स्वामी रामतीर्थ एवं स्वामी विवेकान्द ने भी यहाँ आकर यही संदेश दिया।

यहाँ के प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानी विद्वान कवि ने भी यही संदेश दिया कि आत्मा अमर है। श्रीमद् भगवद् गीता का भी यही संदेश है। भगवान श्री कृष्ण श्री अर्जुन से कहते हैं।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक् :।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषति मारूत : ।।

आत्म को न कोई शस्त्र काट सकता है, न अग्नि जला सकती है, न जल द्वारा डूब सकता है, न वह वायु द्वारा सुखाया जा सकता है। आत्मा अजर अमर है। यही आत्मा सब प्राणियों में विद्यमान है। फिर भी हम भय की दुनियाँ में रहते हैं।

आत्मा ब्रह्म का ही अंश है उसे पहचाने,आप शरीर नही हैं, आत्म स्वरूप हैं। कवि गेटे ने अपने गीतों द्वारा भी यह कहा है कि प्रत्येक प्राणी के लिए श्रद्धा व प्रेम होना चाहिए क्यों कि सब में वह एक ही शक्ति आत्मा विद्यमान है। प्रत्येक मनुष्य को परमात्मा से नाता जोड़ना चाहिए। हम भगवान के सम्बंध में बहुत कुछ कहते हैं किन्तु उसे प्राप्त करने का प्रयास नहीं करते हैं, वह तो यत्र तत्र व्यापक है, हमारी दोष दृष्टि है कि हम उसे देख नहीं सकते । इस लिए बाह्य दुनिया से दूर होकर भीतर जाने का प्रयास करें। मेरे भाईयो व बहिनों ! आप भीतर जाने का प्रयास करें ,यह साधना करते एक दिन आप साक्षात्कार करेंगे। फिर आप सर्वत्र सब ही प्राणियों में एक ही ज्योति का दर्शन करेंगे और चारों ओर शांन्ति व मैत्री का वातावरण हो जायेगा। भगवान श्री कृष्ण, भगवान श्री राम, श्री ईषा, श्री गौतम बुद्ध ने प्रेम व दया का संदेश दिया। सारे संसार को प्रेम की अत्यंत आवश्यकता

है। आओ आज हम सब मिलकर यहीं संकल्प करें कि हम अपने अपने देश में शांन्ति, प्रेम दया, अहिंसा का संदेश देकर मानव मात्र को नई दिशा दिखायेंगे।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् भाग्भवेत ।।

प्रो वासवाणी का प्रभावोत्पादक व्याख्यान सुन कर न केवल श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो गये किन्तु विद्वान भी प्रभावित हुए। उनकी अंग्रेजी भाषा शैली एवं विचार धारा ने बहुत लोगों को ही प्रभावित किया। कुछ श्रोताओं ने उनसे प्रश्न पूछे। प्रो वासवाणी ने मुस्कराते मुस्काराते हुए उनकी शंकाओं का समाधान किया। कार्यक्रम के पश्चात् कई लोगों ने उनसे सम्पर्क किया। वे सब से प्रेम से मिले। कुछ पत्रकारों ने उनसे भेंट की और कुछ पत्रकारों ने उनसे फोटो भी मांगे। उन्होंने अपना फोटो देने से इन्कार किया। वे विदेश में किसी भी पत्र में अपना फोटो छपाने में संकोच करने लगे। कार्यक्रम के दूसरे दिन वहाँ के किसी समाचार पत्र में उनके व्याख्यान के साथ प्रो तेजासिंध का फोटो छप गया और उसे फोटो के नीचे लिखा था , प्रो वासवाणी अपने सुपुत्र के साथ , भूल में प्रो वासवाणी के व्याख्यान के साथ तेजासिंघ की फोटो छप गई। वासत्व में प्रो वासवणी अपने फोटो व प्रसिद्धि के विरूद्ध थे। वे सरल चित्त संत थे।

वहाँ किसी पत्रकार ने उनसे पूछ कि आपके देश को 'भारत' के नाम से क्यों सम्बोधित किया जाता है। उन्होंने उस पत्रकार को भारत का ऐतिहासिक महत्त्व बताते हुए 'भारत' की प्राचीन सभ्यता पर प्रकाश डाला।

ब्रलन के पश्चात् प्रो वासवाणी वेल्स में गये। ब्रस्टल में वे एक धनवान व्यापारी के घर में ठहरे। उस परिवार का उनके साथ स्नेह सम्बंध हो गया। उन्होंने वहाँ विभिन्न स्थानों पर ज्ञान गर्भित व्याख्यान देते हुए मार्गदर्शन किया।

प्रो वासवाणी ने योरूप के विभिन्न नगरों में भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं ऋषि मुनियों, संतो का संदेश दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा अज्ञानी लोगों को अविद्या की नींद से जगाकर उनके मन में प्रभु

के प्रति प्यास पैदा की। उन्होंने वहाँ व्याखयान देते हुए कहा कि अधिकतर लोग मानव जीवन के मूल्य को भूल गये हैं। वे रात दिन भौतिक उन्नति के लिए दौड़ रहे हैं। संसार के भोग रोग पैदा करते हैं। बाह्य सुख नश्वर हैं, भौतिक उन्नति दुखदाई है। आध्यात्मिक उन्नति ही सच्ची व सुखदाई है। मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! आप अपने अमूल्य श्वास धन-पदार्थ संग्रह करने में मत खोएं। आप आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होने के लिए प्रयास करें, स्वयं का साक्षात्कार करें। भारत के राजा महाराजा अपना शासन त्याग कर संतों के चरणों में आकर बठते थे और सत् ज्ञान प्राप्त करते थे। यदि साँसारिक भोग पदार्थों व वैभव में सच्चा सुख होता तो वे एश्वर्य व भोगों का त्याग क्यों करते ! जिस परमात्माने आपको यह मानव तन व सुख पदार्थ दिये हैं, उसके आभार मानें, उसका चिन्तन करें। आप अपना तन मन धन परोपकार के कार्यों में सफल करें दीन दुखी दरिद्र, पशु पक्षी उनकी सेवा करें, जीवन और धन की सार्थकता इसी में ही है।

प्रो वासवाणी ने विदेश के विभिन्न नगरों में भारत के ऋषि मनियों का संदेश दिया और लोगों के मन में प्रभु के प्रति प्रेम की भावना उत्पन्न की। वे रटन करते पैसे खर्च करते गये। अब उन्होंने भारत लौटने की तैयारी की। उन्हें लौटने का टिकट खरदि करने के लिए इतने पैसे नहीं थे। उन्होंने मन ही मन प्रभु से प्रार्थना की कि समस्या का समाधान हो जाये। वहाँ लंडन में कूच बिहार की रानी आई हुई थी। उसने वहाँ प्रो वासवाणी के सम्बंध में अखबारों में पढ़ा । उसने भारतीय होने के नाते उन्हें अपने यहॉ आने का निमंत्रण दिया। वे रानी का निमंत्रण स्वीकार कर उसके पास आये । दोनों ने अपास में विचार विमर्ष किया। रानी उनकी विचारधारा व व्यवहार से बहुत ही प्रभावित हुई। बातें करते करते रानी ने उन्हें कहा कि आप के लौटने का टिकट मैं लेकर भेजती हूँ। आप कृपया मेरी यह उपहार स्वीकार करें। प्रो वासवाणी यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गये। दूसरे दिन ही रानी ने भारत लौटने के लिए टिकट की व्यवस्था कर प्रो वासवाणी को भेजी। जब दूसरे दिन प्रो वासवाणी को टिकट मिला तो उनकी आँखो से भगवान एवं उस रानी के प्रति आभार के आँसू टपक पड़े ।

वे पानी के जहाज द्वारा भारत लौट रहे थे तो उनके मन में विचार आया कि उनके सम्बंध में विदेश के पत्रों ने उनकी जो प्रशंसा की है वह भविष्य में उनके मन में अभिमान की भावना पैदा कर सकती है। इस लिए ये समाचार पत्र समुद्र में ही फेंक दे तो अच्छा है। उसी समय ही उन्होंने सब समाचार पत्र निकालकर सागर में फेंक दिये। सुप्रसिद्धि के अहम् भाव को मिटाने के लिए उन्होंने ऐसा किया।

प्रो वासवाणी विदेश की यात्रा समाप्त कर कराची में आए और भ्राताश्री पहिलाजराय से मिले और उन्हें विदेश यात्रा का समाचार सुनाया। वहाँ से वे हैदराबाद सिन्ध में आये और पहले माताश्री के पास गये। उन्होंने माताश्री और बहिन को प्रणाम किया। माँ ने बेटे को गले लगाया , उसकी आँखो से प्यार के आँसू छलक पड़े। माताजी ने उनके स्वास्थ्य एवं विदेश यात्रा के सम्बंध में पूछा। वे हैदराबाद से फिर कराची में आए। उन्होंने कालेज में अध्यापन कार्यारंभ किया। वे कालेज में पढ़ाते विद्यार्थियों में सत्य, स्नेह सहानुभूति, स्मरण सादगी व प्रार्थना के बीज बोते रहे । एक दिन किसी विद्यार्थी ने उनसे प्रार्थना के सम्बंध में पूछा । उन्होंने उसे उत्तर देते हुए कहा कि प्रभु को प्रेम से, दिल की गहराई से, श्रद्धा व विश्वास के साथ प्रार्थना करें तो वह आपकी प्रार्थना अवश्य सुनेगा।

सन् १९१२ में दादाजी को लाहोर के दयालसिंघ कालेज के प्राचार्य के पद के लिए विनय की गयी। उन्होंने यह निमन्त्रण स्वीकार किया। उन्होंने पद लालसा के लिए यह पद ग्रहण नहीं किया, परन्तु वे चाहते थे कि भारत के विभिन्न प्रांतों एवं नगरों में प्रभु के प्रेम का पैगाम दें। दयालसिंघ कालेज में प्राचार्य के पद पर रहते हुए उन्होंने अपनी विद्वता, वर्चस्वता, प्रतिभा और प्रभु प्रेम का परिचय दिया। न केवल कालेज के विद्यार्थी उनके व्यक्तित्व एवं विचारधारा से प्रभावित हुए किन्तु कई श्रोता भी प्रभावित हुए । जब दादाजी वहाँ श्रीगुरू ग्रंथसाहब के वाणी का विवेचन करते थे, तो पंजाबी लोग भी चकित हो जाते थे।

प्राचार्य वासवाणी को लाहोर में कालेज की ओर से रहने के लिए एक बंगला दिया गया। वे अपनी माताजी व बहिन को भी वहाँ

लाये। वे अपने सुपुत्र वासवाणी को प्राचार्य के पद पर देखकर प्रसन्न होती थी। माताश्री की सेवा के लिए कालेज का चपरासी था किन्तु प्राचार्य वासवाणी स्वयं माताजी की सेवा करते थे। माताजी कभी कभी नौकर को काम करने के लिए बुलाती थी, यदि उसी समय श्री वासवाणी निवास स्थान पर होते थे वे स्वयं आकर माताजी की सेवा करते थे और उसे कहते थे, "माँ ! में आपका नौकर हूँ , आपने मेरी कितनी न सेवा की है, मेरी देखभाल व पालन पोषण किया है। मुझे वो दिन याद हैं जब में बी. ए. परीक्षा के लिए फार्म भर रहा था तब आपने अपने स्वर्ण का गहना किसी के पास रखकर उस से ५० रूपया मुझे लेकर परीक्षा शुल्क भरने के लिए दिया था। मैं आपके आभार कभी भूल नहीं सकता, आप का ऋण कभी भी चुका नहीं सकूंगा। मैं भी आपका नौकर हूँ।"

प्राचार्य वासवाणी कालेज जाने के पूर्व प्रति दिन पहले माताजी के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेते थे। वे कालेज में विद्यार्थियों प्राध्यापकों एवं चपरासियों से भी प्यार का व्यवहार करते थे। वे रविवार के दिन कालेज के चपरासियों को अपने निवास स्थान पर बुलाकर उनके साथ खाना खाते थे। वे खाना भी स्वयं बनाते थे । चपरासी उनका ऐसा अपने पन व प्रेम का व्यवहार देखकर आश्चर्य में पड़ते थे।

प्राचार्य वासवाणी सबेरे और सॉझ को टहलने जाते थे। टहलते टहलते किसी एकांत स्थल पर आँखे मूंद कर चिन्तन करते थे। जब किसी फुलवाड़ी में जाते थे तो प्राकृतिक सुंदरता का अवलोकन करते रहते थे। निवास स्थान पर सब सुविधाएं होते हुए भी वे नीचे बैठकर भोजन ग्रहण करते थे, और नीचे सोते थे। एक कमरे में वे एकांत में बैठकर प्रभु का चिन्तन व ध्यान करते थे।

प्राचार्य वासवाणी विद्यार्थियों को भी बहुत ही प्यार करते थे। वे उन्हें कभी नदी के किनारे तो कभी नगर से बाहर बगीचे में घुमाने के लिए जाते थे। वे उनके साथ कभी कभी खेलते कूदते भी थे। विद्यार्थियों को भय होता था, कि प्राचार्य महोदय को कभी बाल नहीं लग जाये, इस लिए वे संभल संभल कर खेलते थे। वे विद्यार्थियों से कहते थे कि तुम डरें नही, मैं भी तुम्हारे सरीका एक विद्यार्थी हूँ । प्रभु

के विद्यालय में मिलकर भगवद् गीता भी पढ़ेगे और खेलेगें भी। वे उनके साथ मिलकर प्रभु से प्रार्थना भी करते थे। विद्यार्थी गण प्राचार्य का ऐसा प्रेममय व्यवहार देखकर प्रसन्न होते थे। कालेज में प्राचार्य वासवाणी गरीब विद्यार्थियों की ओर विशेष ध्यान देते थे। वे उनकी आर्थिक समस्या का समाधान करते थे , क्यों कि वे स्वयं ऐसी परिस्थितियों से गुज़र चुके थे। वे उन्हें पुस्तकों और कालेज शुल्क आदि की सहायता भी करते थे। वे कुछ सहायता कालेज की ओर से तो कुछ सहायता अपनी वेतन से करते थे। प्राचार्य वासवाणी विद्यार्थियों के चारित्रक, मानसिक शारीरिक एवं शैक्षणिक उन्नति की ओर ध्यान देते थे। वे एक आदर्शी प्राध्यापक एवं प्राचार्य थे।

एक बार वे कुछ विद्यार्थियों को लेकर लाहोर नगर के बाहर एक महंत के आश्रम ले जाते हैं। महंत साहब अंदर एक कमरे में बैठे थे। चौकीदार ने उस संत को जाकर बताया कि कुछ लोग आपका दर्शन करना चाहते हैं। महंत ने कहा कि उन्हें यहाँ लेकर आओ। प्राचार्य वासवाणी विद्यार्थियों के साथ उस संत के पास आये और उन्हें प्रणाम किया। संत ने प्राचार्य वासवाणी से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? श्री वासवाणी अपना नाम बताना नहीं चाहते थे, वे शान्त में रहे। उत्तर न मिलने के कारण महंत गुस्से में आकर फिर पूछता है कि तुम कौन हो? श्री वासवाणी ने कहा कि "मैं सिन्धी हूँ।" वह संत क्रोधित होकर कहने लगा कि सिन्धी लोग माँस भक्षण करते हैं। अब तुम सब लोग बाहर जाओ। ऐसा लगा कि उस संत को सिन्धी जाति से घृणा थी।

प्राचार्य वासवाणी विद्यार्थियों के साथ बाहर आए। चपरासी ने किसी विद्यार्थी से सुना कि वे साधारण व्यक्ति नहीं किन्तु प्राचार्य वासवाणी हैं। वह चपरासी दौड़कर उस महंत के पास गया। महंत ने प्राचार्य वासवाणी के सम्बंध में बहुत कुछ सुना था, वे शीघ्र ही बाहर आए और वे फिर प्राचार्य वासवाणी एवं विद्यार्थियों को अपने कमरें में ले गये। उन्होंने बड़े प्रेम के साथ उनसे बातचीत की और प्रसाद दिया। लौटते समय प्राचार्य वासवाणी ने विद्यार्थियों से कहा मेरे प्यारे विद्यार्थियो! आपने जो संत का दृश्य देखा उससे शिक्षा ग्रहण करें।

महंत जी पहले छोटी सी बात पर कितने न क्रोधित हो गये और घृणा की दृष्टि से देखने लगे ! जब उसे मेरा नाम मालूम हुआ तो वे प्रेम सी मीठे बातें करने लगे। आप अपने जीवन में सब से प्यार का व्यवहार करें। ऐसा न हो कि किसी धनवान या प्रसिद्ध व्यक्ति को सन्मान व स्नेह दें और गरीब या हेय जाति वाले को घृणा से देखें। सब ही प्राणियों में एक ब्रह्म व्यापक है। रंक हो राजा, बूढ़ा हो या बालक, स्त्री हो या पुरूष सब को एक सरीका प्यार दें, सन्मान दें किसी से घृणा न करें। सब से मधुरता से बोलें।

प्राचार्य वासवाणी छुटियों में कुछ तीर्थ स्थलों पर गये। तीर्थ यात्रा करते हुए उन्होंने अनुभव किया कि धार्मिक स्थलों पर भी वातावरण पवित्र व शुद्ध नहीं है । बहुत से लोग बाह्य पूजा उपासना करते हैं, पाखंड का बोल बाला है। ऐसे महान पवित्र पावन स्थानों पर तन मन की शुद्धि एवं सत् विचारों एवं पवित्रता का वातावरण होना चाहिए। प्राचार्य वासवाणी ने दयाल सिंघ कालेज में पवित्रता, प्रेम का वातवारण पैदा किया। इस लिए कालेज के सब कर्मचारी , विद्यार्थी, एवं विद्यार्थियों के सम्बंधी न केवल संतुष्ट थे किन्तु उनकी प्रशंसा करते थे।

सन १९१५ में फिर दादाजी को कूच बिहार के विक्टोरिया कालेज के प्राचार्य होने के लिए विनय की गई। दादाजी ने अब विक्टोरिया कालेज के प्राचार्य का पद ग्रहण किया। वहाँ भी उन्होंने प्रेम भक्ति का वातवरण पैदा किया। कूच बिहार के महाराजा ने दादाजी की ख्याति सुनकर उन्हें अपने यहाँ पधारने का निमंत्रण दिया। उस समय यह प्रथा थी कि अगर कोई राजा से मिलने आये तो रथपर चढ़कर आए। दादा तो सरल प्रकृति वाले मनुष्य थे। वे सादे लबास में पैदल ही महाराजा के यहाँ पधारे। दरबानों ने उन्हें साधारण व्यक्ति समझकर अंदर जाने के लिए रोका, इतने में महाराजा के मंत्री उन्हें लेने के लिए आए। दादाजी मुस्कराते हुए उनके साथ महाराजा के पास आए। दरबान डरने लगे कि ये व्यक्ति महाराजा से हमारी शिकायत करेंगे परन्तु दादाजी तो क्षमा की मूर्ति थे।

कूच बिहार में प्राचार्य वासवाणी के साथ उनकी माताजी एवं

बहिन रहती थीं। उनके भाई मंघाराम कभी कभी माताश्री के पास आकर रहते थे। श्री मंघाराम वासवाणी भी आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

श्री वासवाणी उनकी अच्छी तरह देखभाल करते थे। सन् १९१६ ई. में फिर प्राचार्य वासवाणी को महेंद्र कालेज पटियाला के प्राचार्य पद के लिए विनय की गयी। प्राचार्य वासवाणी अब पटियाला में आ गये। वहाँ भी उन्होंने सेवा स्मरण एवं भारतीय सिद्धांतों का संदेश दिया।

प्राचार्य वासवाणीजी बचपन से ही सत्य के मार्ग पर चलते रहे, एक बार पटियाला के महाराजा ने उन्हें किसी कार्य के लिए किसी और नगर में भेजा। उनके लौटने के बाद राजाने कहा कि आप आने जाने व रहने के खर्च का बिल बनाकर दें। उन्होंने जो ६० रूपये खर्च किये थे उसका बिल बनाकर राजा को दिया। राजा ने कहा "आप ने क्यों इतना थोड़ा खर्च लिखा है। मैं तो आपको एक हजार रूपया देना चाहता हूँ।" श्री वासवाणी ने कहा " मैं आपके अधिक पैसे क्या करूँगा ! जितना खर्च किया है उतना ही लूँगा।" प्राचार्य वासवाणी का यह उत्तर सुनकर राजा बहुत ही प्रभावित हुए। जो सत्य के मार्ग चलता है वह माया के प्रलोभन में नही फंसता।

पटियाला में उन्होंने न केवल कालेज के विद्यार्थियों किन्तु अन्य लोगों को भी अपने व्याख्यानों द्वारा परमात्मा की ओर आकर्षित किया। उन्होंने भक्ति, ज्ञान व कर्म का संदेश दिया। उन्हें बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से भी एक विशेष नियुक्ति का निमंत्रण आया किन्तु उनका मन नहीं लगा। वे काशी नहीं गये। उन दिनों उनकी माता व बहिन कराची में थे। अचानक उन्हें कराची से तार आया कि यहाँ पिलेग की बीमारी फैल गईं है और माताश्री अत्यंत अस्वस्थ है। तार पढ़कर उन्होंने कराची सिन्ध के लिए शीघ्र ही प्रस्थान किया।

श्री वासवाणी कराची में माताश्री के पास आये। माता अपने संत सुपुत्र का मुखड़ा देखकर बहुत ही प्रसन्न हुई। वे रात दिन माताश्री की सेवा करते हैं। उनके सम्बंधी उन्हें कहते है कि आप इतना समय माताजी के निकट रह कर बीमार हो जाओगे। श्री वासवाणी उनकी बात टालकर माताश्री की श्रद्धा से सेवा करते रहे और उनकी आशीर्वाद

लेते रहे। एक दिन उन्होंने माताजी की सेवा करते हुए कहा, माँ मैं विवाह करने की, आपकी इच्छा पूर्ण नहीं कर सका, आपकी इस आज्ञा का पालन नहीं कर सका, इस लिए मुझे क्षमा करें। आपके आभार मैं जीवन भर नहीं भुला सकता, आपका ऋण चुका नहीं सकता। माँ ने बेटे को गले लगाते हुए कहा "बेटा! मुझे अब यह दुख नहीं कि तुमने शादी नहीं की। तुम प्रति मास वेतन भेजते रहे, मेरी देखभाल करते रहे, इसी लाइलाज बीमारी में भी मेरी सेवा करते रहते हो, विश्व में तुम्हारा नाम अलोकित होगा। तुम जैसे सतोगुणी सुपुत्र घर घर में हों तो संसार स्वर्ग बन जाये। मैं तो तुम्हारी शान मान देखकर गौरव करती हूँ। मैं सुखी होकर अब संसार से जा रही हूँ। तुम कभी प्रभु को नहीं भूलना, परमात्मा सदैव तेरे साथ है, तुम्हारी रक्षा करेगा।"

सन् १९१८ अक्षतीज के पावन दिन माता वराँबाई संसार से चल बसी। प्रत्येक प्राणी को जीवन लीला समाप्त करनी है।

जग रचना सभ झूठ है, जानि लेहु रे मीत।
कह नानक थिरू ना रहे, जिउ बालू की मीत॥

माताश्री की अंतिम क्रिया की तैयारी की गई। माताजी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् प्राचार्य वासवाणी ने प्राचार्य के पद का त्याग पत्र पटियाला के महाराजा को भेज दिया। उन्होंने अब खादी के वस्त्र धारण कर पूर्व के वस्त्र गरीबों में बाँट दिये। उनके जीवन में परिवर्तन आ गया। वे बाह्य शान मान का त्याग कर स्मरण सेवा के मार्ग में समर्पित भाव से आगे बढ़ते रहे।

उनके मन में भगवान श्री श्याम सुंदर के दर्शन की प्यास बचपन से रही। उस प्यास को बुझाने के लिए वे ब्रज भूमि एवं अन्य तीर्थ स्थलों पर जाते हैं, कई संतों महात्माओं का संग करते हैं। उनकी एक ही आशा, एक ही अभिलाषा श्री कृष्ण मिलन की। मीरा की भाँति उनके मन में रसेश्वर भगवान श्री कृष्ण के दर्शन की तीव्र उत्कंठा थी। वे प्रेम के आँसू बहाते हुए प्रभु को बार बार पुकारने लगे :-

तेरे कमल चरन मेरी मथुरा काशी,
तेरे नाम निधान अलख अविनाशी।
क्या करूँ मंदिर, क्या करूँ माला!

मैं तो मोहन, तेरी प्रेम प्यासी।
क्या करूँ खाना, क्या करूँ पीना !
दम दम दयालु, मैं तेरी आसी ।
क्या करूँ दुनियाँ के माल खज़ाने !
चाहता हूँ इक रहिम की रासी।
नूरी निमाणी है इश्क इयानी,
हरिदम सजना तेरे दर की दासी।

उन्होंने लोक - कल्याण के लिए उपासना वर्ग आरंभ किया, साथ साथ न्युटाईम्स पत्रिका का प्रकाशन किया। इस पत्रिका में विशेषकर धार्मिक लेख दिये जाते थे। दादाजी अलग अलग स्थानों पर ज्ञान-भक्ति कर्म इत्यादि विषयों पर व्याख्यान देकर लोगों का मार्गदर्शन करने लगे। उन्होंने कई साधकों को आत्मोन्नति-पथपर अग्रसर किया और प्रभु प्राप्ति के लिए पथ प्रदर्शित किया।

पत्र के प्रकाशन में उनके किसी मित्र ने ही हेरा फेरी की, इस लिए उनकी सारी पूंजी खत्म हो गई। उनके पास केवल तीन चार सौ रूपये बचे। उन्हें सक्खर से निमंत्रण आया। वे तीन दिन के लिए वहाँ गये। वहाँ उन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा लोगों को इतना तो प्रभावित किया कि प्रेमियों के आग्रह पर उन्हें वहाँ ठहरना पड़ा। उन्होंने प्रेमियों से कहा कि वे सक्खर में अधिक समय रहने के लिए तैयार हैं किन्तु वे कमरे का किराया देंगे और खाने के लिए भी पैसे देंगे। आयोजकों को यह बात ठीक नहीं लगी, किन्तु उन्हें प्रसन्न करने के लिए सेठ घनश्याम दास ने कहा कि आप तीन रूपया मासिक किराया देना। उस घर के निकट मुखी केवलराम का घर था। वहाँ भोजन की व्यवस्था हो गई। भोजन के लिए ढ़ाई रूपये मासिक देने के लिए तय हुआ। वे सक्खर में विभिन्न स्थानों पर अपने प्रवचन द्वारा अज्ञान की नींद में सोए हुए लोगों को जाग्रत् करने लगे।

मकान मालिक घनश्यामदास तन मन से श्री वासवाणी की सेवा करते रहे। श्री वासवाणी प्रतिमास डाकघर से दस रूपया निकाल कर गुज़ारा करते थे। किसी धनवान ने उन्हें डाकघर से दस रूपये निकालते देखा। वह व्यक्ति आश्चर्य में पड़ गया कि श्री वासवाणी

जो महानमुर्ति हैं उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी है ! उस व्यक्ति ने श्री वासवाणी के अग्रज श्री पहिलाजराय को इस सम्बंध में पत्र भेजा। भ्राताश्री ने उन्हें शीघ्र ही पॉच सौ रूपये भेजे और बहिन भी उन्हें प्रति मास पैसे भेजने लगी। उन्होंने सादर पैसे उन्हें लौटाते हुए लिखा, मुझे तो आपका आशीर्वाद चाहिए, पैसे मैं क्या करूँगा ! वे बहुत सादगी से रहते थे। श्री वासवाणी ने नौजवानों में भी नया उत्साह जगाया और उनका सही मार्गदर्शन किया। उनकी प्रेरणा से सक्खर में युवकों की एक टोली बनी जो उनकी आज्ञा के अनुसार दीन दुखियों अपाहिजों की सेवा करने लगी। सक्खर में एक मंदिर की देखभाल एक महंत करता था। उसके व्यवहार से लोग परेशान थे। सक्खर वासियों ने उस महंत को मंदिर से चले जाने के लिए भी कहा किन्तु माया के मद व पद के कारण वह मंदिर नहीं छोड़ना चाहता था। प्रेमियोंने श्री वासवाणी से आग्रह किया कि वे ही मंदिर की देखभाल करें। एक दिन कुछ प्रेमी उन्हें मंदिर में ले गये। श्री वासवाणी को युवकों के साथ देखकर महंत घबरा गये। श्री वासवाणीजी ने उनसे कहा कि "आप ! डरें नहीं, हम सब आपके भाई हैं। यह प्रभु का घर है , पवित्र स्थान है। आप यहाँ के शुभ वातावरण को दूषित नहीं करें।" डर का मारा वह महंत उस मंदिर से चला गया। लोग आश्चर्य में पड़ गये । उन्होंने श्री वासवाणी से कहा कि आप ही अब इस मंदिर की देखभाल करें।श्री वासवाणी ने प्रेमियों से कहा कि आपस में मिलकर उस मंदिर की सेवा करें। सच्चे संत की मंदिर या माया में आसक्ति नहीं होनी चाहिए।

स्वतंत्रता संग्राम में भाग :

सारे देश में आज़ादी का आंदोलन जोरशोर से चल रहा था। अब दादाजी न केवल भक्ति के क्षेत्र में परन्तु राष्ट्र की सेवा के लिए भी तत्पर हुए। देश के स्वतंव्रता संग्राम में उन्होंने सक्रय भाग लिया। वे राष्ट्र नायक श्री लोकमान्य तिलक एवं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की विचारधारा से अत्यंत प्रभावित हुए। सन् १९२० में महात्मा गांधी ने असहकार आंदोलन आरंभ किया। दादाजी ने अपने लेखों एवं व्याख्यानों द्वारा लोगों में आज़ादी के प्रति जागृति पैंदा की एवं उनमें राष्ट्रीय चेतना फूंकी। उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया

और स्वदेशी-वस्तुओं का प्रचार किया।श्री लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जब सिंध में आये तब उन्होंने कराची के खालिकडिने सभाग्रह में अत्यंत उत्साहवर्धक व्याख्यान दिया। उस सभा के अध्यक्ष भी दादाजी थे। दादाजी ने वहाँ श्री लोकमान्य तिलक का हार्दिक स्वागत करते हूए उनकी अमूल्य राष्ट्रीय सेवाओं का उल्लेख किया और देशवासियों को स्वतंव्रता संग्राम में जुट जाने के लिए प्रोत्साहित किया। दादाजीने स्वयं खादी के वस्त्र पहने और आजीवन खादी की पोशाक पहनते रहे। दादाजीने अपनी सिंधी एवं अंग्रजी कविताओं द्वारा भी भारतीयों में राष्ट्रभक्ति की भावना फूंकी। वे बंग-भंग के विरूद्ध चलाये गये आंदोलन से भी सम्बद्धित थे। उन्होंने भारत के भिन्नभिन्न नगरों में जाकर भारतीयों को राष्ट्रीयता और निर्भयता का संदेश दिया।

उनके नेतृत्व में एक स्वराज्य टोली की स्थापना भी हूई। दादाजी ने उस टोली के सदस्यों को आज्ञा दी कि किसी के विरूद्ध कटु वचन मत बोलें और नारे लगाते हुए भी खराब शब्दों का प्रयोग मत करें। जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सिंध में आए तब वे दादाजी के साथ अत्यंत प्रेम के साथ मिले। बापूजी ने दादाजी के संबंध में बहुत कुछ सुना और पढ़ा था। उनके मन में दादाजी के प्रति श्रद्धा थी। महात्मा गांधी ने जब "यंग इंडिया" पत्रिका का संपादन किया तब उसके प्रथम अंक के मुखपृष्ठ पर उन्होंने दादाजी का लेख प्रकाशित किया। दोनों महापुरूषों के विचारों में समानता थी।

दोनों ही सत्य अहिंसा,श्रीमद्भगवद्गीता एवं रामायण के उपासक थे। दोनों ही राम और कृष्ण के भक्त थे। दोनों ही राष्ट्र भक्त एवं राष्ट्रसेवी थे। दोनों ही मानव मात्र के हितकारी और परोपकारी पुण्यात्मा थे। दोनों का जीवन कुरबानी का जीवन था। दोनों के दिल में दुखियों दरिद्रों के प्रति सहानुभूति थी।

जब बापूजीने 'अछूत उद्धार' हलचल शूरू की तब दादाजी ने भी उस हलचल मे सक्रय भाग लिया।सखी सत्संग की ओर से अछूत बालकाओं और बहिनों को सत्संग में आमंत्रित किया गया, उन्हें प्रसादी दी गई। दादाजी ने अछूत उद्धार पर कई बार व्याख्यान भी दिये और जनता से अनुरोध किया कि वे अछूत नहीं ये हरिजन है, प्रभु के

प्यारे हैं। इन के लिए न केवल मंदिरों के दरवाजे खोल दो, किंतु अपने दिलके द्वार भी खोल दो। प्रभु जाति पाति नहीं देखता, वह देखता है प्रेम। हमने लाखों हिंदू भाइयों को अछूत कहकर उनका तिरस्कार किया है। आओ आज उन्हें अपने गले लगाएं। बापूजी को इस हलचल में पूर्ण सहयोग दें।

कर्मयोगी ऋषीतुल्य जीवन :

दादाजी के ऋषितुल्य जीवन के कारण जनता में इनके प्रति श्रद्धा व प्रेम बढ़ता गया और जनता ने उन्हें 'दादा वासवाणी' और 'साधु वासवाणी' शब्दों द्वारा संबोधित किया। महर्षि कर्वे जब सिंध में आये तब एक उत्सव का आयोजन किया गया, उस उत्सव की अध्यक्षता भी दादाजी ने की।

दादाजी को अब सिंध के विभिन्न नगरों से निमंत्रण आए कि वे वहाँ जाकर प्रेमियों को नाम रूपी अमृत का पान कराएँ। कुछ दिनों के लिए दादाजी सक्खर नगर में आए। उन्होंने अपने प्रवचनों द्वारा लोगों को भक्तिमार्ग में आकर्षित किया, उन्हें स्मरण एवं सेवा का संदेश दिया। सक्खर से वे रोहड़ी नगर में जाकर, बेदिल बेकस, संत पारूशाह, साईवसण घोट एवं अन्य संतों के स्थानों पर जाकर दरवेशों की वाणी सुनते थे। जोहरी हीरों का मूल्यांकन कर सकता है। दरवेशों फकीरों की वाणी सुनकर दादाजी स्वयं तल्लीन हो जाते थे। अब दादा सिंध के अन्य नगरों कराची, लाड़काणा, एवं शिकारपुर में गए। शिकारपुर में सिख सम्मेलन हुआ। दादाजी उस सम्मेलन के अध्यक्ष थे। दादाजीने वहाँ व्याख्यान देते हुए कहा, सिख हिंदुओं से भिन्न नही हैं। हिंदुओ की रक्षाके लिए श्री गुरू गोबिदसिंघ ने सिख सम्प्रदाय की स्थापना की। सिख हैं शक्ति और भक्ति के प्रतीक। दादा ने सिखों को संबोधित करते हुए कहा कि गुरूओं की अमूल्य शिक्षा को अपने जीवन में उतारें।

देश के आज़ादी आंदोलन के समय दादा वासवाणी ने अपने व्याख्यानों एवं रचनाओं द्वारा जनता को जाग्रत् करने का प्रयास किया। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द की भाँति भारतीय युवकों को नई दिशा दिखाई। विभिन्न पत्रकाओं में उनके लेख अंग्रेजी व सिन्धी भाषा में

प्रकाशित हुए। इस सम्बंध में अंग्रेजी भाषा में उनकी निम्न पुस्तकें प्रकाशित हुई :-

(1) India Arisen (2) Awake Yong India
(3) India's Adventure (4) India in Chains
(5) The Secret of Asia 6) My Mother land
(7) Builders of Tomorrow (8) Apostles of Freedom

सक्खर में दादाजी का श्री साधुबेला महंत स्वामी हरिनामदास महाराज से सम्पर्क हुआ। दोनों महापुरूषों की विचार धारा में साम्य था। दोनों ईश भक्त एवं देश भक्त थे। दोनो समाज सुधारक व दीन दुखियों के प्रति सहानुभूति रखते थे। समय समय पर दोनों महापुरूष आपस में ज्ञान गोष्ठी करते थे। दादा वासवाणी प्रकृति के पुजारी थे। वे श्री साधु बेला के प्राकृतिक दृश्य देख कर प्रसन्न होते थे। वे नाव में चढ़कर लहरों से खेलते श्री साधुबेला में आते थे। वहाँ एकांत स्थल पर बैठकर भगवद् भजन भी करते थे। उन्होंने पूज्य स्वामी हरिनाम दासजी महाराज से श्रीमद भगवद् गीता एवं अन्य शास्त्रों के सम्बंध में विचारों का आदान प्रदान किया। दोनों सत् पुरूष एक दूसरे को श्रद्धा व सन्मान की दृष्टि से देखते थे।

एक दिन साधु वासवाणी ने सक्खर में श्रीमद भगवद् गीता के सम्बंध में व्याखयान देते हुए कहा कि भगवान श्री कृष्ण ने गीता के ज्ञान द्वारा श्री अर्जुन को मोह की नींद से जाग्रत् किया। श्री अर्जुन ने स्वयं को एवं अपने सगे सम्बंधियों को, जिन से उन्हें युद्ध लड़ना था, शरीर समझा।आसक्ति के कारण अपने सौतेले भाइयों, निकट के सम्बंधियो, गुरूजनों के साथ लड़कर वे राज्य प्राप्त करना नहीं चाहते थे। वे अपने सगे वालों के वंशो को नष्ट करना नहीं चाहते थे। श्री कृष्ण ने उसे सत् ज्ञान देते हुए कहा कि तुम मोह-वश जो युद्ध नहीं करने का निर्णय करता है वह ठीक नहीं।शरीर तो नश्वर है। सब में एक ही आत्मा है, वह अजर अमर है। तुम मोह्वश अपने कर्तव्य से विमुख होते हो। अन्याय-अत्याचार करने वाले को दंड देना धर्म है। तुम नपुसंकता व दुर्बलता के भाव को त्याग कर युद्ध करने के लिए तैयार हो जाओ।

क्लैव्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोतिष्ठ परन्तप।।

साधु वासवाणी के व्याख्यान की शैली भी निराली थी। एक दिन उन्होंने सक्खर में प्रवचन करते हुए कहा, "डूब मरो ! डूब मरो ! प्रेमा भक्ति के सागर में डूब मरो।" श्रोतागण पहले डूब मरो डूब मरो वचन सुनकर आश्चर्य में पड़ गये कि यह कैसा सतं यहाँ आया है जो हमें अप शब्द कह रहा है। जब साधु वासवाणी ने कहा कि प्रेमा भक्ति के सागर में डूब जाओ। तब श्रोता शान्त हो गये।

सक्खर एवं रोहड़ी के विभिन्न स्थानों पर दादा वासवाणी ने प्रवचन करते हुए लोगों को जाग्रत् किया। वे रोहड़ी में साईं बेदल-बेक्स के स्थान, साई पारूशाह, साई वसण शाह के आसाऊ तड़, एवं संतों व सूफियों से ज्ञान गोष्ठी करते थे। वे शाहलतीफ भटाई, सचल सरमस्त, बेदल-बेक्स, सामी साहब एवं अन्य संतों दरवेशों फकीरों की वाणी सुनकर आनंद विभोर हो जाते थे। रोहड़ी में भगवानदास मनचुंडिया उनके परम भक्त बन गये।

दादाजी को लाड़काणा नगर से निमंत्रण आया। वहाँ भी कई श्रोता दादाजी के प्रवचनों से प्रभावित हुए। श्री रीझोमल लाहोरी एवं श्री शान्ति शहाणी उनके बहुत ही निकट रहे। श्री शान्ति शहाणी दादाजी की बड़ी श्रद्धा से सेवा करते रहे।

दादाजी का पूर्ण विश्वास था कि युवक ही भारत की तसवीर बदल सकते हैं। युवा पीढ़ी को नई दिशा दिखाने के लिए उन्होंने विभिन्न नगरों में 'भारत युवक संघ' स्थापित किए। इस उद्देश्य को कार्यान्वित करने के लिए उन्होंने राजपुर में शक्ति आश्रम की स्थापना की, राजपुर हिमालय की गोद में एक रमणीक स्थान है। वहाँ शक्ति आश्रम में दादाजी प्रति दिन युवकों को भारतीय प्राचीन संस्कृति व सभ्यता के सम्बंध में व्याख्यान देते हुए मार्गदर्शन करते थे , उन्हें त्याग तपस्या का जीवन बिताने की शिक्षा देते थे। वहाँ युवापीढ़ी के शारीरिक,मानसिक विकास के लिए भी शिक्षा दी जाती थी, जैसे भारत के जवान नेक नागरिक बनें, देश के हित के लिए कुछ कार्य करें। आश्रम निवासी प्रभात को ५ बजे मिलकर प्रार्थना करते थे, भजन गाते थे। ६ बजे से ७

बजे तक व्यायाम एवं योग एवं प्राणायाम करते थे। सुबह ८ बजे से एक घंटे के लिए सब हाथों से परिश्रम का काम करते थे। १० बजे दादाजी प्रवचन करते थे। दुपहर तीन बजे संगीत वर्ग, चार बजे प्रश्न उत्तर होते थे। रात को ९ बजे प्रार्थना के पश्चात् सब विश्राम करते थे। रविवार के दिन सब मिलकर किसी न किसी गाँव में जाकर ग्रामीणों की सेवा करते थे। प्रदुषण मुक्त वातावरण में दादा वासवाणी तपस्वी जीवन बिताते युवकों को सत् मार्ग बताते रहे।

५ अप्रैल सन् १९२९, दादाजी को सेंटजान कालेज आगरा में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। वे ३ अप्रैल आगरा में पहुँच गये। ४ अप्रैल उन्हें कराची से तार आया कि आपके अग्रज श्री पहिलाजराय अत्यन्त अस्वस्थ हैं। भ्राता के बीमारी का तार पढ़कर तत्काल ही वे कराची पहुँच गये और अग्रज को देखकर प्रसन्न हुए। उन्होंने बड़े भाई श्री पहिलाजराय की तन मन से सेवा की। वे उन्हें प्रति दिन संतों की वाणी पढ़कर सुनाते थे। भाई पहिलाजराय स्वयं भी आध्यात्मिक विचार धारा वाले समाज सेवक, शिक्षा शास्त्री, सुधारक व साहित्यकार थे। दादाजी ने अच्छी तरह उनका उपचार किया, किन्तु काल के आगे किसकी नहीं चलती। १७ अप्रैल सन् १९२९ राम नवमी के पावन दिन साँझ को रामभक्त श्री पहिलाजराय ब्रह्मलीन हुए। कराची में ग़म की घनघोर घटाएं छा गईं। १८ अप्रैल कराची के सभी स्कूल श्री पहिलाजराय वासवाणी के देहावसान के कारण बंद किये गये।

पानी केरा बद्बुदा इस मानुस की जात।
देखत ही छुप जायेगा तारा ज्यों प्रभात।।

ब्रह्मलीन होने के पूर्व श्री पहिलाजराय ने बड़ी बेटी, हरी देवी एवं बड़े बेटे जशन के हाथ, भाई थांवरदास वासवाणी को सौंपते हुए कहा था कि इन्हें विद्या देने का प्रयास करना। अब मैं जीवन यात्रा समाप्त करने वाला हूँ, तुम ही संतान की देखभाल करना। मेरे प्यारे भाई ! तुझ पर मुझे गर्व है, तू न केवल वासवाणी परिवार किन्तु सिंन्ध का नाम रोशन करेगा। मेरे जाने के पश्चात् परिवार का कोई भी सदस्य आँसू नहीं बहाए। यह शरीर, जगत् सब नश्वर है , इस लिए आप लोग

चिन्ता नहीं करें । मैं तो परमधाम जा रहा हूँ।

पूज्य भ्राता श्री पहिलाजराय की अंतिम क्रिया के पश्चात् वे १२ दिन वहाँ ठहरे तत्पश्चात् वे हैदराबाद लौट आये। वे वहाँ काका मंघनमल के मकान में आकर ठहरे। कुछ दिनों के बाद ऋर्षि दयाराम गिदूमल के सुपुत्र श्री केवलराम शहाणी उन्हें बिन्दु आश्रम में लेकर आये। वे स्वयं भी वहाँ ही रहते थे।

साधु वासवाणी की राजनीति क्षेत्र में भी प्रतिष्ठा व मान्यता देखकर कुछ सिन्धी काँग्रेस नेताओं के मन में उनके प्रति ईर्ष्या भावना उत्पन्न हुई। संतोषी मनुष्य ऐसे वातवरण से दूर रहना चाहते हैं। दादा वासवाणी यत्र तत्र श्रोताओं में अपने व्याख्यान व रचनाओं द्वारा देश भक्ति की भावना का संचार तो करते रहे, किन्तु राजनीति से हट गये और वे शिक्षा, समाज सुधार और आध्यात्मिक कार्यों में जुट गये।

दादा वासवाणी ब्रह्मो समाज मंदिर में नियमित रूप से व्याख्यान देते हुए लोगों का मार्गदर्शन करते रहे। कभी कभी वे गुरूसंगत हीराबाद में भी प्रवचन करते थे। उनके प्रवचन प्रभावोत्पादक थे। कई भाई बहिने बड़ी उत्कंठा से उनके प्रवचन श्रवण करने आते थे। वे भाईं ईसरदास के मंदिर एवं थियासाफीकल लाज में भी ज्ञान गर्भित व्याख्यान देते हुए सत् मार्ग बताते थे। बहिन पार्वती मलकाणी, बहिन सती थधाणी, बड़ी शान्ति, डाँ हीरानन्द हाथी रामाणी, उनकी सुपुत्रियाँ देवकी और रत्ना, एवं अन्य कुछ भाई बहिने दादाजी के अति निकट आए। दादाजी ने सब को अपने प्यार की डोरी में बांध लिया। वे भागवद् एवं अन्य शास्त्रों के दृष्टांत सुनाकर मंत्र मुग्ध कर देते थे।

दादा वासवाणी सुबह एवं साँझ फुलेली के किनारे या बगीचों में टहलने जाते थे। प्राकृतिक सौदर्य से उनका विशेष लगाव रहता था। दादाजी पुष्पों वक्षों को बहुत ही प्यार करते थे, इस लिए उनकी बहिन ने एक छोटासा बगीचा दादाजी के लिए खरीदिने का विचार किया। दादाजी को जब यह पता पड़ा तो उन्होंने बहिन से कहा कि बगीचा खरीदने के लिए उसके पास जितने पैसे हैं वे पैसे उन्हें दे दे तो वे दीन दुखियों की सेवा में वह माया सफल करेंगे। उन्हें अपने सुख की चाहना नहीं थी।

अप्रैल सन् १९३० ई में दादाजी कुछ प्रेमियों के साथ शक्ति आश्रम राजपुरा में पधारे। आश्रम निवासी बड़े आदर व स्नेह के साथ उन से मिले। उन्होंने देश विदेश से आये युवकों को जीवन एवं राष्ट्रीय उपयोगी विषयों पर प्रबोध दिये। वे वहाँ से हरिद्वार एवं ऋषिकेश भी गये। वहाँ कई संतों महात्माओं से उनकी मुलाकत हुई। डिवाईन लाई सोसायटी के संस्थापक स्वामी शिवानन्द सरस्वती महाराज से भी उन्होंने ज्ञान गोष्ठी की। वे सप्ताह में एक दिन मौन धारण करते थे और साथ उपवास भी रखते थे। शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक बल एवं उन्नति के लिए मौन एवं उपवास का बड़ा महत्व है। दादाजी शक्ति आश्रम में इसी नियम का पालन करते रहे और आश्रम निवासियों को भी मौन धारण करने के लिए एवं उपवास रखने के लिए प्रेरित करते रहे। वहाँ एक युवक जगदीश पंजाबी, जो एम.ए. पढ़ा हुआ था, दादाजी कि विचार धारा से बहुत ही प्रभावित हुआ था,वह दादाजी के साथ रहना चाहता था। दादाजी ने उसे कहा कि अब नहीं, समय आयेगा तब तुम मेरी सेवा में आकर रहना।

दादाजी को हैदराबाद सिन्ध से पार्वती मंघनमल एवं अन्य प्रेमियों के पत्र आये कि तीन महीने बीत गये हैं, आपके दर्शन की प्यास लगी है, आप शीघ्र लौट आएं। दादाजी ने प्रमियों के प्रेमवश राजपुरा से प्रस्थान किया। वे तीन महीने की यात्रा के पश्चात् हैदराबाद सिन्ध में लौट आये, जहाँ प्यासी आखियाँ उनके दर्शन की प्रतीक्षा कर रही थी। वे प्रति बुधवार ब्रह्मो समाज में गीता वर्ग में श्रीमद् भगवद् गीता के सम्बंध में प्रवचन करते थे। वे गुरू संगत, भाई ईसरदास के मंदिर में नियमित रूप से प्रवचन करते रहे। कई भाई-बहिने उनके व्याख्यान व व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। बालिका शान्ति भी उनके सत्संग में आती रहती थी।

संतों को हमारे पैसे पदार्थ व सेवा की आवश्यकता नहीं है, उन्हें तो प्यासी दिलें चाहिए। एक दिन हैदराबाद में दादा वासवाणी एक फुलवाड़ी में बैठे थे। अचानक उसी समय उन्होंने कहा, "मुझे बहुत प्यास व भूख लगी है।" उसी समय एक प्रेमी पानी व खाने की वस्तु ले आने के लिए उठता है। दादा वासवाणी उसे कहता है, "मुझे

प्यास व भूख है प्यासी दिलों की, जिनके मन में प्रभु के प्रति प्रेम की प्यास हो। उसी समय एक बालिका साधु वासवाणी के चरणों को स्पर्श कर कहती है," मुझे कई दिनों से आपके दर्शन की प्यास थी। मेरी माताजी घर के काम काज में व्यस्त रहती है, और पिताश्री को भी समय नहीं, अकेली आपके पास आजाऊँ यह अनुमति भी नहीं मिलती। आज पिताश्री इस ओर आ रहे थे, मैं उनके साथ आई हूँ, मुझे आपके दर्शन व प्रभु मिलन की प्यास है। 'हेरी मैं तो प्रेम दिवानी मेरे दर्द न जाने कोई' मीरा के गीत की यह पंक्ति गाते गाते उस बालिका की आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित हुई। दादा वासवाणी ने उसके आँसू पोछते हुए आशीर्वाद दिया, फिर तो उस बालिका का दादाजी से अटूट सम्बंध हो गया।

छोटी शान्ति माखीजाणी ११ वर्ष की बाल्यावस्था में ही ब्रहमो समाज के मंदिर में दादाजी का व्याख्यान सुनने आती रही। वह उनका दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न होती थी। वह धीरे-धीरे दादाजी के इतना तो निकट आई कि वह दादाजी को पूज्य पिता समझकर उनके साथ रहने लगी। आगे चलकर वह स्वयं को शान्ति. टी. वासवाणी कहलाने लगी। वह समर्पित भाव से दादाजी की सेवा करती रही। जब जीव का भाग्योदय होता है तब संतों का संग मिलता है। बड़ी शान्ति के पिता श्री मंघनमल ने हैदराबाद में अपने मकान के कुछ कमरे बिना किसी कराये सत्संग के लिए दिये। बहिनों के आग्रह पर सन् १९३१ ई जन्माष्टमी की पवित्र प्रभात् को दादाजी ने वहॉ सखी सत्संग का श्री गणेश करते हुए कहा कि आज के पावन दिन आप सब सबेरे उठकर यहाँ सत्संग में सम्मिलित हुई हैं, वैसे प्रति दिन अमृतवेले नींद से जागकर नाम चिंतन करें। श्री गुरू नानकदेव महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं -

अमृत बेला सचना वडियाई विचार

प्रभात के अमूल्य समय एक परमात्मा की महिमा गाएं, नींद में व्यर्थ श्वास मत गंवाएं। जागो! जागो! नींद से जागो! जब मैं देखता हूँ कि हमारे भाई बहिने नींद से सबेरे नहीं उठते तो मुझे बहुत दुख होता है। जो सोया सोया उसने खोया जो जागा जागा उसने पाया।

आज भगवान श्री कृष्ण श्याम सुंदर का जन्म दिन है। वे प्रेम के अवतार थे। कृष्ण शब्द का अर्थ है, जिस में आकर्षण हो। उन्होंने प्रेम की बांसुरी द्वारा लाखों लोगों का मन मोह लिया। ग्वाल बाल, गोपियॉ व गायें भी उनके बांसुरी की तान सुनकर दौड़ दौड़ आते थे। उनका दर्शन करने से अद्वितीय आनंद की उपलब्धि होती थी। उनकी मधुर मुस्कान और मुरली की तान ने लाखों प्रेमियों को वश में किया। आप आज भी यदि एकांत चित्त होकर उनका ध्यान व चिन्तन करें तो आनंद की प्राप्ति होगी। सखी सत्संग में केवल बहिने व लड़कियां ही सम्मिलत हो सकती थीं। दादाजी उन्हें भारतीय नारियों के जीवन चरित्र सुनाकर उनका मार्गदर्शन करते थे। उनका यही आदर्श था -:

यत्र नारियस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता

जहाँ नारियों की पूजा होती है, सन्मान होता है वहां ही देवता निवास करते हैं।

दादाजी ने नारी जाति में सामाजिक चेतना भी उत्पन्न की और प्रभु के प्रति प्रेम भी पैदा किया। सती बगोमल थधानी भी दादाजी के सत्संग में आने लगी। कुछ वर्षों के पश्तात् बहिन सती ने स्वयं को गुरूदेव साधु वासवाणी के चरणों में समर्पित किया। वह उनके लिए भोजन तैयार करती थी, उनकी देख भाल करती थी। दादाजी के प्रवचनों का सारांश लिखकर पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजती रही। आगे चलकर उसने 'श्याम' सिन्धी साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन किया, जिस में दादा वासवाणी के लेख एवं गीत प्रकाशित होते रहे।

छोटी शान्ति की बहिन नेणी एवं अन्य युवतियां सत्संग में आकर लाभान्वित होती रही।

सबेरे बहिनें प्रभात फेरी निकाल कर संकीर्तन करती, भजन गाती सखी सत्संग में आजाती थीं। दादाजी उनका उत्साह व लगन देखकर प्रसन्न होते थे।

सबरे दादाजी पहले यह प्रार्थना करते थे -:

असतो मा सत् गम्य,,
तमसो, मा ज्योतिर्गम्य,
मृत्युर्मा अमृतं गम्य।

इस प्रार्थना के पश्चात् दादाजी कभी श्री सुखमनि साहब या कभी श्री जपजी साहब से वचन पढ़कर उसकी व्यारव्या करते थे। एक दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज श्री सुखमनि में फरमाते है :-

रत्न त्याग कोडी संग रचै,
साच छोड झूठ संग मचै।

प्रभु का नाम जो सत् है सुखदाई है, हम उस से सम्बंध नहीं जोड़ते, माया और माया के विभिन्न पदार्थ, जो असत्य नश्वर हैं, दुखदाई हैं, उनके पीछे अपने श्वास व्यर्थ गंवाते हैं। हम लोग संसार के पद-पदार्थ के प्रलोभन में प्यारे प्रभु को भूल गये हैं। मेरी बहिनों! आप घर का काम काज करती सदैव परमात्मा का स्मरण करें नाम को कभी नहीं भूलें।

स्मरो स्मर स्मर सुख पावउ।

बहिन पार्वती सखी सत्संग की मंत्री थी। एक दिन दादाजीने उसे कहा कि एक टोली बनाकर सेवा कार्यारंभ करें। दादाजी ने संत माला का सम्पादन भी आरंभ किया। इस मासिक पुस्तक में वे विभिन्न भक्तों, संतो व सूफियों के जीवन चरित्र लिखते थे। दादाजी ने बहिनों से कहा कि सेवा के साथ साथ घर घर में संत माला का भी प्रचार करें। संत माला द्वारा सत् विचारों का संदेश सुनायें। जो दीन दुखी, बीमार, अपाहिज हैं, उनकी सहायता व सेवा करें।

एक दिन दादाजी बाजार से गुजर रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक दुकानदार अपने एक गरीब नौकर को अपशब्द बोलते पीट रहा है। वह नौकर बार बार चिलाता है कि उसने क्या गुनाह किया है? मालिक फिर उसे कहता है कि बकवास बंद करो, तुम मेरे नौकर हो। उस गरीब ने कहा मैं आपका नौकर हूँ लेकिन आप मेरी बेटी में बुरी नजरें नहीं रख सकते हैं, मैं अब ऐसी बात सहन नहीं कर सकता। अब मैं यहाँ नहीं रहूंगा। आप यह बात याद रखें कि आपको अपने कर्म का फल भुगतना पड़ेगा। वह गरीब नौकर दादाजी को खड़ा देकखर उनके पास आकर रोने लगा और उसने अपना दुखदर्द सुनाया। दादा ने उसके आँसू पोछते हुए उसे सांतवना दी कि वे उसे और कोई नौकरी लेकर

देंगे। दादाजी किसी का दुखदर्द, अत्याचार सहन नहीं कर सकते थे। उन्होंने उसे गले लगाया।

एक दिन दादाजी ने सखी सत्संग में बालिकाओं व बहिनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सखी सत्संग के आदर्श हैं, सत्संग, सेवा, सादगी, स्नेह सहानुभूति, सत्य, पवित्रता व प्रार्थना। आप इन आदर्शों के अनुसार चलने का प्रभास करें। सच्ची सुंदरता गुणों में समाहित है। आप गुणवान बनें, बाह्य सुंदरता का त्याग करें, सादगी का जीवन बितायें, इन आदर्शों को अपना कर आप अपने घरों में नया वातावरण उत्पन्न कर सकती हैं। व्यर्थ पैसे खर्च नहीं करें, पैसे बचाकर दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें। फेशन का त्याग करें, अन्धानुकरण नहीं करें। आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी ये बातें अत्यन्त आवश्यक हैं। आप सीता, सावित्री, मीरा के पदचिन्हों पर चलने का प्रयास करें।

दादाजी के इस उपदेश का बड़ा प्रभाव पड़ा। कई बालिकाओं व बहिनों ने रेशम के रंग बिरंगी वस्त्रों का त्याग कर सादी सफेद पोशाक पहनी।

दादाजी ने सखी सत्संग एवं अन्य स्थानों पर व्याख्यान करते दहेज एवं अन्य सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध सचेत किया। दादा वासवाणी के ऐसे प्रवचनों से कई बालिकाएं, बहिनें व भाई प्रभावित हुए। दादाजी ने सखी सत्संग में गीता वर्ग भी आरंभ किया। वे श्रीमद भगवद् गीता की शिक्षा सरल भाषा में देते हुए भार्गदर्शन करते थे। एक दिन उन्होनें प्रवचन करते हुए कहा कि आप अपने विचार, व्यवहार और आहार पर नियन्त्रण रखें। अपने मन में अशुभ विचार को नहीं आने दें। आपके विचार, व्यवहार आहार शुद्ध होने चाहिए । आप में से कई लोग मांस भक्षण करते हैं, यह उचित नहीं। निर्दोष पशु पक्षियों को कटवाकर, मुरदा का मांस क्यों खाते हैं ! इस से आपका तन मन विचार अपवित्र होते हैं। ये पशु पक्षी भी प्रभु की संतान हैं। आप प्रभु की संतान को कटवाकर खाते हैं, परमात्मा कितने न अप्रसन्न होंगे ! आपको एक दिन इस कुकर्म का फल भुगतना पड़ेगा।

दादा वासवाणी के इन विचारों का कई श्रोताओं पर प्रभाव

पड़ा, उन्होंने मास भक्षण का परित्याग किया।

दादा वासवाणी न केवल स्वयं दीन दुखियों की सेवा करते थे किन्तु दूसरों को भी सेवा करने के लिए प्रेरित करते थे। एक दिन उन्होंने सखी सत्संग में उपदेश देते हुए कहा कि आप जिस दिन किसी की सेवा नहीं करते, सहायता नहीं करते वह दिन आपका व्यर्थ गया। आप स्वयं छोटे छोटे सेवा के कार्य कर सकते हैं। आपके घर के निकट कोई गरीब विधवा बहिन रहती है, उसे छोटे बच्चे हैं। अपने खाने से कुछ खाना बचाकर उनकों खिला सकते हैं। उन्हें वस्त्रों, अन्न धन की सहायता कर सकते हैं, अपनी सहानुभूति व स्नेह दे सकते हैं।

जैसे गोपियां भगवान श्यासुंदर के प्रेम की डोरी में बंध गई थीं, वैसे हैदरबाद की कई बालिकाएं व बहिनें दादा साधु वासवाणी के विचारों व व्यवहार से प्रभावित होकर उनकी प्रेम-डोरी में बंध गई। वे अपने घर का काम काज शीघ्र पूरा करके उनका उपदेश सुनने के लिए आजाती थीं। कुछ बहिनों ने तो विवहा नहीं करने का संकल्प किया। हैदराबाद में दादा वासवाणी की इतनी मान्यता देखकर कुछ ईष्यालू लोगों ने उनका विरोध भी किया। दादाजी ने स्नेह से उनके संश्य, अहम् ईर्ष्या भाव को दूर किया। क्रोध से विरोध दूर नहीं होता, प्रेम व धीरज से दादाजी ने विरोधियों को भी गले लगाकर अपना बना दिया। संत कबीर भी फरमाते है:-

निंदक नियरे राखिये आंगन कुटि छवाय।
बिन साबुन पानी बिना नर्मल करे सुभाय।।

सखी सत्संग में आने वाली बहिनें- बालिकाएं न केवल दादाजी का प्रवचन श्रवण करती थीं किन्तु वे सेवा कार्य भी करने लगी। उनके जीवन में परिवर्तन आगया। संतों का संग मनुष्य के तन मन को शीतल बनाता है।

संत बड़े परमार्थी शीतल जांके अंग।
तप्त बुझावत और की देकर अपना संग।।

सखी सत्संग में एक दिन दादाजी ने बहिनों से अनुरोध किया कि आप अपने घरों को स्वर्ग बनाएं। अपनी संतान को भगवद् रूप समझकर उनकी सेवा करें। अपने पति व परिवार के अन्य सदस्यों की

प्रेम से सेवा करें। घर का काम काज करते आप ऐसे समझें कि वह कार्य प्रभु का कार्य है। प्रभु अर्पणम् की भावना सेवा करें। घर का काम काज पूरा करके, सत्संग में आयें। भोजन बनाते, सफाई करते, दिल में प्रभु को याद करें, यह प्रभु की पूजा है।

दादाजी कभी कभी सखी सत्संग में बालिकाओं की व्याख्यान प्रतियोगता भी आयोजित करते थे। जो बालिकाएँ या बहिनें अच्छा बोलती थीं, दादाजी उन्हें उत्साहित करने के लिए पुरस्कार देते थे। दादा वासवाणी की आज्ञा व प्रेरणा से सखी सत्संग की ओर से गुरूसंगत के पार्क में तीन दिन बहिनों का सम्मेलन आयोजित किया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हूए दादा वासवाणी ने कहा कि नारी शक्ति का प्रतीक है। उसमें अर्पणम् की भावना है। वह समाज का रूप बदल सकती है, घर को स्वर्ग बना सकती है। मेरी प्यारी बहिनों व बालिकाओ ! आप के मानसिक व सामाजिक उत्थान के लिए, आपकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए आज यह सम्मेलन सखी सत्संग की ओर से आयोजित किया गया है। आज हमारे समाज में जिन बुराईयों ने प्रवेश़ किया है, उनको आप ही निकाल सकती हैं। दहेज की कुप्रथा आज समस्या बन गई है। उसका समाधान आप कर सकती हैं। इस सम्मेलन में आप आपस में मिलकर विचार विमर्ष करें। आप अपनी संतान में धार्मिक संस्कार डालें। आज धार्मिक विद्या की अत्यन्त आवश्यकता है। आप अपनी दिनचर्या प्रार्थना से आरंभ करें। प्रभु को कभी नहीं भूलें। परमात्मा ही सदैव सुरक्षा करता है।

द्रोपदी का श्रीकृष्ण में पूर्ण विश्वास था उसकी श्यामसुंदर के चरणों में अविचल प्रीति थी। जब कौरवों की सभा में दुष्ट दुःशासन उन्हें नंगी करना चाहता है तब वह दिल की गहराई से श्री कृष्ण को सहायता के लिए करूण पुकार करती है -:

मेरी लाज रखो गिरिधारी,
अब आओ चक्र सुदर्शन धारी।

भगवान श्री कृष्ण द्रोपदी की करूण पुकार सुनकर उसकी सुरक्षा करते हैं।

भगवान श्री कृष्ण की कृपा से द्रोपदी की साड़ी अनन्तगुना

बढ़ जाती है। दुःशासन उसे जितना ही खींचता है, उतना वह बढ़ती जाती है। दुःशासन की भुजाएं थक गई किन्तु साड़ी का छोर हाथ नहीं आया। दुःशासन लज्जित होकर बैठ गया। भक्तवत्सल भगवान ने द्रोपदी की लाज राखी। मेरी बहिनों आप भी मन में प्रेम धारण कर प्रभु को पुकारें तो वह आपकी सुरक्षा करेंगें।

इस सम्मलेन में सामाजिक बुराइयों एवं बहिनों के उत्थान के लिए विचार विमर्ष किया गया। बालिकाओं ने सादिगी और फैशन, दहेज के दुषपरिणाम सम्बंध में एकाँकी नाटक प्रस्तुत कर दर्शकाओं की आँखे खोल दी। दादाजी तीनों दिन सम्मलेन में उपस्थित रहे।

दादाजी को पुस्तकों के साथ विशेष प्रेम था। वे जहां भी जाते थे तो अपने साथ पुस्तकें ले जाते थे। वे बड़े अध्ययनशील थे। उन्होंने न केवल भारतीय शास्त्रों का अभ्यास किया किन्तु सिन्ध के सूफी, संत एवं विदेश के विद्वातों के साहित्य का भी अभ्यास किया। वे अपने व्याख्यानों व रचनाओं में उन पुस्तकों, व ग्रन्थों के संदर्भ देते थे।

दादाजी की प्रेरणा से गुरूसंगत के पार्क में बहिनें खेलकूद भी करने लगी। खेलकूद में विजयी बहिनों को दादाजी पुरस्कार भी देते थे। खेलकूद के पश्चात् वे छोटासा उपदेश देकर मार्गदर्शन करते थे। उनकी प्रेरणा से सखी सत्संग की ओर से बहिनों के लिए स्टोर भी खोला गया, जिस में कपड़ा एवं थोड़े से खाद्य पदार्थ रखे गये। बेचने वाली भी बहिनें तो खरीद करने वाली भी बहिनें। इस स्टोर में वस्तुओं पर बहुत ही कम मुनाफा रखा गया। दादाजी ने इस स्टोर का उद्घाटन करते हुए बहिनों का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने वस्त्र विक्री का उद्घाटन श्री रत्न मोहटा से करवाया, क्योंकि उन्होंने बिना मुनाफे वस्त्र दिये थे। दादाजी भी एक दो घंटा स्टोर पर आकर बैठकर सब से 'सत्नाम' 'सत्नाम' का मंत्र कहलाते थे।

उन दिन सारे देश में स्वदेशी आंदोलन चल रहा था, दादाजी भी इस आंदोलन के समर्थक थे। उन्हें बहिनों से अनुरोध किया कि आप विदेशी वस्तुओं का परित्याग करें और विदेशी वस्तुओं की दुकानों और शराब की दुकानों पर जाकर विरोध करने के लिए पिकेटिंग करें।

दादा वासवाणी की आज्ञानुसार सखी सत्संग की बहिनें स्वदेशी आंदोलन में सक्रय रहीं। उन्होंने स्वयं तो विदेशी वस्तुओं का तो त्याग किया किन्तु शराब व विदेशी वस्तुओं के दुकानों पर भी पिकेटिंग किया। दादा वासवाणी ने बहिनों को जाग्रत् करते हुए उनमें राष्ट्र भक्ति की भावना का संचार किया।

महात्मा गांधी ने भारत में अछूत उद्धार का कार्यारंभ करते हुए उन्हें अपने दिल का प्यार दिया। दादा वासवाणी ने भी विभिन्न स्थानों पर 'अछूत उद्धार' के सम्बंध में व्याख्यान देकर जनता के मन में हरिजनों के प्रति प्रेम की भावना उत्पन्न की। वे इस विषय के सम्बंध में भाषण करते हुए कहते थे कि हाथ की सभी अंगुलियों व अंगुठा का अपना अपना महत्त्व है, कोई कम नहीं। यदि एक या दो अंगुली खराब हो जाती हैं या कट जाती हैं तो हाथ से अच्छी तरह काम नहीं कर सकते। ये हरिजन भाई बहिने भी हमारे समाज के अंग हैं।वे हमारी कितनी न सेवा करते हैं! वे यदि दस दिन सफाई नहीं करें तो क्या दुर्दशा हो जाये! उनका तिरस्कार मत करें। उन्हें स्नेह व सन्मान दें। मंदिरों में उनके प्रवेश पर प्रतिबंध लगाकर हम स्वयं अछूत हो गये हैं। प्रभु का द्वार सब के लिए खुला रखना चाहिए। ये हरिजन भी प्रभु की संतान हैं, उन्हें हेय दृष्टी से नहीं देखें, उन्हें प्यार करें। उनका तिरस्कार कर हम हिन्दू पाप का काम कर रहे हैं। प्रभु को पत्त पावन कहा गया है, आप उनसे घृणा नहीं करें। हरिजनों से भी विनति है कि वे सफाई का काम काज पूरा कर, नहाकर स्वच्छ होकर मंदिर में आएं।

दादा वासवाणी ने अछूत उद्धार का समर्थन किया। उनका दिल विशाल था। वे नहीं केवल मानव मात्र को किन्तु पशु-पक्षियों को भी प्यार करने वाले मानव थे। उन दिन हरिजन भाई-बहिनों पर मंदिर में आने पर प्रतिबंध था। महात्मा गांधी की भाँति उन्होंने हरिजन भाई-बहिनों के लिए मंदिरों के द्वार खोलने का प्रयास किया। उन्होंने सखी सत्संग में हरिजन बहिनों को आमंत्रित किया। दादाजी ने स्वयं सखी सत्संग की बहिनों के साथ उन हरिजन बहिनों को अपने हाथों से खाना खिलाया, उन्हें कुछ वस्तुएं भेंट दी।

महात्मा गांधी ने अछूतों के लिए मंदिर के द्वार खोल देने के

लिए उपवास धारण किया। उन दिनों में दादाजी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि २ जनवरी से सभी मंदिरों के द्वार हरिजन भाइयों के लिए खोले जायें जैसे बापूजी का जीवन भारत व मानवता की सेवा के लिए उपयोगी हो। परमात्मा ने महात्मा गांधी जैसी महान विभूति भेजी है न केवल भारत के लिए सारे संसार के कल्याण के लिए।

उन दिनों जाति पाति का भेद था। हरिजनों को मंदिरों में आने नहीं देते थे। वे हिन्दुओं के कुओं से पानी तक ले नहीं सकते थे। एक गांव में रात के समय एक हरिजन किसी धनवान हिन्दु के कुएँ पर पानी भरने के लिए गया। उसे किसी ने देख लिया फिर तो हरिजन को पकड़कर सारी रात कमरे में बंद कर दिया गया। सुबह को उसे गाँव की बीच बाज़ार में लेकर पीटा गया। दादा वासवाणी को जब इसी घटना का पता पड़ा तब वे उसी गाँव में हरिजनों की बस्ती में गये। उन्होंने उस हरिजन को गले लगाकर प्यार किया और वे स्वयं उस हरिजन की झोपड़ी में झाडू उठाकर सफाई करने लगे, फिर तो हरिजन बस्ती के अन्य लोग भी वहाँ आये। दादाजी झाडू लगाते राम नाम की धुन गाते रहे। दादाजी का ऐसा प्यार भरा व्यवहार देखकर हरिजन आश्चर्य में पड़ गये। कुएँ वाले धनवान एवं गाँव निवासियों को जब यह पता पड़ा तब उन्होंने आकर दादाजी से क्षमा याचना की। दादा वासवाणी की प्रेरणा से अन्य जातिवालों को भी कुओं से पानी भरने की अनुमति दी गई। तत्पश्चात् उनके साथ अच्छा व्यवहार किया गया। दादाजी ने उसी गाँव में जातिपात का भेद मिटा दिया।

दादाजी को कराची से निमंत्रण आया। वे वहाँ गये, वे वहाँ दस बारह दिन भाभी कृष्णा के मकान में ठहरे। उन्होंने कराची में विभिन्न स्थानों, आर्य समाज, गुरू नानक दरबार, मारवाड़ी विद्यालय, जेठमल गुरूद्वारे, थिया साफीकल सोसायटी एवं डी.जे.सिन्ध कालेज में प्रभावोत्पादक प्रवचन किये। गुरू नानक दरबार में उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि श्री गुरू नानक स्वयं अवतारी पुरूष थे, किन्तु फिर भी स्वयं नाम स्मरण करते थे। उन्होंने तो विभिन्न स्थानों पर जाकर लाखों लोगों को अज्ञान की नींद से जाग्रत् कर नाम का अमृत पिलाया। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी नाम को नहीं भूलें ! अपने

अपने कर्तव्यों का पालन करते नाम स्मरण करें।

डी.जे सिन्ध कालेज में दादाजी ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन करें। आप पाठ्य पुस्तकों के साथ साथ धार्मिक पुस्तकों का भी अभ्यास करें। उन में समाहित शिक्षा के अनुकूल चलें तो आप का भविष्य उज्ज्वल होगा। आप विनम्र बनें।

विद्या ददाति विनयं

नम्रता मनुष्य का आभूषण है। अभिमान आदमी को गिराता है। आप यदि जीवन पथ पर प्रगति करना चाहते हैं तो विनम्र बनें। अप्रैल सन् १९३३ में एक दिन दादा वासवाणी ने सखी सत्संग की बहिनों के साथ हैदराबाद में बातचीत करते हुए कहा कि मेरी इच्छा है कि हम एक आदर्श स्कूल की स्थापना करें, जहाँ बालिकाओं को सच्ची विद्या दी जाये। मेरा यह स्वप्न साकार हो तो कई बालिकाओं का भविष्य बन सकता है। बड़ी पार्वती के मामा श्री चिमनदास की नई इमारत बन रही है, वह यदि आधी जगह किराये पर हमें दे तो वहाँ आसानी से स्कूल खोल सकते हैं। इसके सम्बंध में बड़ी पार्वती अपने मामा से अनुरोध कर सकती है। उसी समय दादाजी ने कहा कि स्कूल खोलने के लिए पैसों की भी आवश्यकता है। उन्होंने उसी समय ही अपने जेब में पैसे निकालने के लिए हाथ डाला तो उस में से केवल एक टका (दो पैसे) का सिक्का निकला। दादाजी ने वह टका बड़ी पार्वती के हाथ में देते हुए कहा कि इस से स्कूल का कार्यारंभ करें। सब बहिनें आश्चर्य में पड़ गई की एक टके से स्कूल कैसे खुलेगा, किन्तु बड़ी पार्वती को श्रद्धा व विश्वास था। उसने दादाजी से वह टका लेकर अपनी आँखों पर रखकर अपनी पोटली में रखा।

दूसरे दिन बड़ी पार्वती ने सखी सत्संग में दादाजी से कहा कि उसके मामा श्री चिमनदास स्कूल आरंभ करने के लिए चार कमरे एक महीने के पश्चात् दे देंगे। उसी समय दादाजी ने निश्चय किया कि जून से स्कूल का श्री गणेश करेंगे। स्कूल के लिए व्यवस्थापक की आवश्यकता थी। प्रभु की कृपा व दादाजी की दया से सेवा निवृत श्री रायबहादुर फतिहचंन्द लखाणी ने बिना वेतन यह कार्य करना स्वीकार

किया।

हैदराबाद में पहले ही स्कूल थे। उनके व्यवस्थापकों, संस्थापकों को जब यह पता पड़ा कि साधु वासवाणी नये सत्र से स्कूल की स्थापना कर रहे हैं, तो उन्होंने आपस में मिलकर दादाजी के स्कूल खोलने का विरोध किया। वे उनके पास आये। दादाजी ने नम्रता से सब को प्रणाम किया। आगुंतकों ने दादाजी से तर्क किया कि नये स्कूल खोलने की क्या आवश्यकता है ? दादाजी ने विनम्रता से उत्तर देते हुए कहा, "मैं आपका दास हूँ। मैं अपने सामने सादगी, सेवा पवित्रता व प्रार्थना के आदर्श रखकर बालिकाओं के स्कूल की स्थापना करना चाहता हूँ। उस विद्यालय में सच्ची विद्या दी जायेगी। आज की नई पीढ़ी फैशन में फंस गई है। दहेज व अन्य सामाजिक बुराइयाँ बढ़ गई हैं। उनको दूर करने के लिए नारी शक्ति काम कर सकती है। बहिनें ही इन समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। बालिकाओं में उपर्युक्त संस्कारों का समावेश करने के लिए मैं स्कूल की स्थापना करना चाहता हूँ।"

आगुन्तको में से किसी ने पूछा स्कूल खोलने के लिए आप पैसे कहाँ से लायेंगे? दादाजी ने कहा, "मेरे प्यारे प्रभु का भंडार भरा हुआ है, फिर मैं पैसों की चिन्ता क्यों करूँ !" आगुन्तक शिक्षा शास्त्री दादा वासवाणी के उत्तरों से संतुष्ट तो हुए किन्तु फिर भी अपने अहम् को पूरा करने के लिए उन्होंने स्कूल खोलने में अड़चने डाली, किन्तु दादाजी अडग रहे। उनका प्रभु में पूर्ण विश्वास था। वे प्रभु अर्पणम् की भावना से कार्य करते थे।

परमात्मा की असीम अनुकम्पा से दादा वासवाणी का स्वप्न साकार हुआ। ४ जून सन् १९३३ ई प्रातः काल को ५ बजे शास्त्रों के पाठ के पश्चात् दादा वासवाणी ने हवन यज्ञ किया। उन्होंने 'मीरा स्कूल' का श्री गणेश करते हुए परमात्मा से प्रार्थना की, "परम पिता परमात्मा" आपकी अनुकम्पा से मीरा विद्या मंदिर का उद्‌घाटन हो रहा है। आप आशीर्वाद करें कि इस विद्या मंदिर की बालिकाएँ सत्य, सादगी, सेवा, स्नेह, सहानुभूति, पवित्रता व प्रार्थना के गुण अपनाकर जीवन सफल बनाएं, यह मीरा स्कूल सखी सत्संग की ओर से आरंभ

किया जाता है। सत्संग की आदर्श बहिनें इस स्कू ल की देखभाल करेंगी। अब यहाँ आठवीं कक्षा तक पढ़ाई का प्रबंध किया गया है। मुझे आशा है कि इस स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने वाली बालिकाएँ सिन्धी समाज व भारत का नाम रोशन करेंगी।

प्रति दिन मीरा स्कूल में प्रथम पीरड में प्रार्थना की जाती थी और नैतिक शिक्षा भी दी जाती थी। ऋषि आश्रमों की भाँति सब बालिकाएँ नीचे धरती पर बैठकर पढ़ती थीं। धीरे धीरे मीरा स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। बालिकाएँ भगवान श्री कृष्ण की रास लीलाएं करती थीं। कभी कभी वे मीरा व सुधामा के एकाँकी नाटक भी प्रस्तुत करती थीं। मीरा स्कूल की बालिकाएँ भाग्यशाली थीं कि वे अच्छी पढ़ाई के साथ साथ प्रति दिन साधु वासवाणी का दर्शन भी करती थीं, और उनका आशीर्वाद भी प्राप्त करती रहीं।

दादाजी बालिकाओं की रास लीला व नाटक देखकर प्रसन्न होते थे और उन्हें पुरस्कार भी देते थे।

साधु वासवाणी को कुछ श्रद्धालुओं ने विनती कि भाइयों को भी सत्संग में आपके प्रवचन श्रवण करने का सुवसर मिलना चाहिए। दयालु दादाजी ने सब के लिए सत्संग का द्वार खोल दिया, फिर तो कई भाई-बहिनें सत्संग में आने लगे और दादाजी का दर्शन पाकर और उपदेश श्रवण कर लाभान्वित होते थे।

श्री गंगाराम साजनदास मलाणी सुंदर युवक था। जब वह विद्यार्थी था तब वह दादाजी की पुस्तकें पढ़कर प्रभावित हुआ। सन् १९२६ ई में दादाजी बंगोदेरो गाँव लाड़काणा में गय थे। वहाँ भी श्री गंगाराम दादाजी का व्याख्यान सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुआ। मैट्रक उत्तीर्ण होने के पश्चात् उसे बिजली घर हैदराबाद सिन्ध में नौकरी मिली। वह ब्रह्मो समाज एवं अन्य स्थानो पर दादाजी के व्याख्यान श्रवण करने जाता था। वह धीरे धीरे दादाजी के इतना तो निकट आया कि दादाजी जब झिरकन में गये तब भी श्री गंगाराम एवं उसकी पत्नी लक्ष्मी साथ में थी। दादाजी भी उसकी श्रद्धा भावना से प्रसन्न रहे। उन्होंने श्री गंगाराम को आज्ञा की वह कुछ समय मीरा स्कूल की

बालिकाओं को अंग्रेजी पढ़ाएं। वह बिजली घर में नौकरी भी करता था और दादाजी की आज्ञानुसार बालिकाओं को अंग्रेजी पढ़ाता था। वह दादाजी के व्याख्यान सुनकर उनका सारांश लिखता जाता था। जब मीरा स्कूल का व्यवस्थापक संसार से चल बसा तब दादाजी ने श्री गंगाराम को मीरा स्कूल का कार्य सौंप दिया। उसने पहले बिजली घर से चार महीने छुट्टी ली, तत्पश्चात् वह दादाजी के चरणों में समर्पित भाव से सेवा करता रहा। उसके मन में भक्ति भावना व श्रद्धा थी। वह दादा वासवाणी अत्यन्त के निकट आया।वह दादाजी का स्नेह प्राप्त कर प्रफुलित होता था।

कराची से डॉ. प्रीतमदास ठारानी ने अपनी कन्या के विवाह के सम्बंध में दादा वासवाणी को आमंत्रित किया। वे कुछ दिनों के लिए कराची गये। वे वहाँ विवाह उत्सव में सम्मिलित हुए। रविवार के दिन सबेरे उन्होंने जेठमल गुरूद्वारे में उपदेश देते हुए श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। वहाँ कराची में सखी सत्संग की बालिकाओं व बहिनों ने दो सत्संग केंद्र खोले। कुमारी भूरी थधाणी ने गाडी खाते में और कुमारी जेठी सिपाहीमलाणी ने बंदर रोड एक्सटेन्शन पर "सखी सत्संग आरंभ किये" दादा वासवाणी दोनों स्थानों पर गये और वहाँ मधुर उपदेश देते हुए नाम की महिमा बताई। कुछ दिनों के बाद दादाजी हैदराबाद लौट आये।

अगस्त १९३३ जन्माष्टमी के पावनदिन दादा वासवाणी ने वहाँ हरि मंदिर का उद्घाटन करते हुए कहा कि यहाँ प्रति दिन सबेरे मीरा स्कूल की बालिकाएँ प्रार्थना करेंगी। शास्त्रों का पाठ होगा। साँझ को गीता किलास में गीता के सम्बंध में उपदेश दिया जायेगा। विभिन्न दिनों पर इस मंदिर में संतों महात्माओं के जीवन चरित्र सुनाये जायेंगे।

दादाजी ने उसी दिन बालमंदिर का भी उद्घाटन करते हुए कहा कि इस बालमंदिर में बच्चों के मन में शुभ संस्कार डाले जायेंगें, जैसे वे भविष्य में वीर, धीर गुणी ज्ञानी बनकर नाम रोशन करें।

दादाजी को विदेश से निमंत्रण आया। उन्होंने भारतीय ऋषिमुनियों का संदेश देने के लिए और स्कूल एवं अन्य सेवा कार्यों के

लिए पूंजी संग्रह करने के लिए विदेश जाने की तैयारी की। श्रद्धालु भाई-बहिनों का दादाजी के साथ साथ ऐसा स्नेह सम्बंध जुड़ गया कि वे नहीं चाहते थे कि दादाजी इतने दिन उन से दूर रहें। उन्होंने दादाजी से विनती की आप यहाँ ही हमें आशीर्वाद देते रहें, अपना प्यार पिलाते रहें, हम सेवा कार्यों के लिए यहाँ धन संग्रह करेंगे। प्रेमियों के आग्रह पर वे विदेश नहीं गये।

९ नवम्बर जैन मंदिर में दादाजी ने जीव दया के सम्बंध में प्रवचन करते हुए कहा कि प्रत्येक धर्म हमें अहिंसा व प्रेम का संदेश देता है। प्रतिदिन लाखों निरीह पशुओं का वध होता है। लोग रसना के रस के कारण मुरदों के टुकड़े खाकर अपने शरीर को शमशान भूमि बनाते हैं। हम मानव हैं, राक्षस माँस भक्षण करते हैं। धर्म, विज्ञान व स्वास्थ्य की दृष्टि से यह हिंसा का खाना बहुत ही हानिकारक है। आप अपने जीवन में जीवदया की ज्योति जगाएँ।

कांग्रेस कामेटी की ओर से आयोजित समारोह में दादा वासवाणी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि लोक सभा के प्रस्तावों व सम्मेलनों से भारत को स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होगी। भारत की अज़ादी के उपलब्धि के लिए निष्काम निडर सेवकों की आवश्यकता है, जिनके जीवन में तपस्या,व अर्पणम् के गुण हों। समर्पित देश भक्तों की आवश्यकता है, जो कौम की नैया पार लगायें।

भारत युवक संघ ने दादाजी को लाहोर में आमंत्रित किया। ६ नवम्बर सन् १९३३ वे लाहोर में पधारे। कई युवकों ने रेल्वे स्टेशन पर उनका स्वागत किया। वहाँ उन्होंने पत्रकारों को संदेश देते हुए कहा कि युवा पीढ़ी भारत का नव निर्माण कर सकती है। युवक प्राचीन भारत के ऋषि-मुनियों के आदर्शों को नहीं भूलें। सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चलकर वे क्या नहीं कर सकते! विद्यार्थी भारत के सच्चे सिपाही हैं, वे भारत के ऊच आदर्शों की सुरक्षा कर भारत का भविष्य उज्ज्वल करें।

७ नवम्बर साँझ को एक विशाल मैदान पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्सव के अध्यक्ष नबीबख्श वज़ीर थे और मुख्य अतिथि दादा वासवाणी थे। आयोजकों ने दादाजी का भव्य स्वागत करते हुए

उनका परिचय दिया। उत्सव में हजारों विद्यार्थी एवं कई जाने माने लोग विद्वान भी सम्मिलित हुए। दादा वासवाणी ने युवकों को सम्बोधित करते हुए कहा, कि मेरे प्यारे युवको! भारत के शान मान की बाग डोर आपके हाथों में है। आप संघठित होकर अहिंसा, सत्य, सेवा, स्नेह सहानुभूति सद्भावना के आदर्शों को अपना कर भारत माता को मुक्त कराने का प्रयास करें। श्रीमद् भगवद् गीता की शिक्षा को ग्रहण कर जीवन मार्ग पर चलें। जाति-पात का भेद भुलाकर मैत्री व प्रेम की ज्योति जगाकर आगे कदम बढ़ाएँ।

लाहोर में दादाजी गुरूकुल में भी गये। उन्होंने वहाँ ब्रहमचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप अपने ज्ञान व शक्ति द्वारा भारत का निर्माण कर सकते हैं। आप भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों के सिद्धांतो के अनुसार चलकर त्याग व तपस्या का जीवन बितायें। त्याग में ही आनंद है। लाहोर के विभिन्न स्थानों पर दादाजी ने उत्साह वर्धक व्याख्यान देते हुए मार्गदर्शन किया। दादाजी श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज के स्मृति स्थाऩ डेरा साहब में गये। वहाँ उन्होंने सिखों को सम्बोधित करते हूए कहा कि श्री गुरूअर्जुनदेव की ज्ञान-गर्भित वाणी न केवल आनंद प्रदान करती है, किन्तु दुख दर्द भी दूर करती है। उन्हें भक्ति की शक्ति थी किन्तु फिर भी उन्होंने पीड़ा सहन करते हुए कहा,

तेरा भाणा मीठा लागे

मेरे भाइयो ! आप भी श्री गुरू अर्जुनदेव के आदर्शों को जीवन में अपनायें; नाम से नाता जोड़कर जीवन सफल बनाएं।

२ दिसम्बर दादाजी हैदराबाद सिन्ध में लौट आये। वे वहाँ प्रति दिन सबेरे व साँझ को प्रवचन कर प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाते रहे। वे हरिमंदिर का द्वार बंद कर नाम स्मरण करते थे, भक्ति भावना के आवेश में आकर गीत गुनाते थे। उनके मुख से भक्ति काव्य की धारा प्रवाहित होती थी।

श्री मंघनमल ने अपना मकान 'रीझूमल काटेज' दादा वासवाणी को सत्संग के लिए अर्पण किया। उस मकान को तुड़वाकर वहाँ सत्संग हाल और कमरे बनाने के लिए योजना बनाई गई। दिसम्बर

सन १९३३ श्री गुरू गोबिन्दसिंघ के पावन जन्म दिन दादाजी ने नये हाल बनाने की नीव डाली। उसी समय दादाजी व बहिनों ने मिलकर गुरूवाणी का शब्द गाया।

संतां के कारिज आप खलोया हरि कम करावन आया राम।

२३ दिसम्बर १९३३ श्री गुरूगोबिन्दसिंघ के जन्मदिन, सत्संग की ओर से युवा शिबर आयोजित की गई। दादाजी ने श्री गुरू गोबिंन्द सिंघ के सम्बंध में व्याख्यान करते हुए कहा कि वे भक्ति व शक्ति के अवतार थे। हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने कितनी न कुरबानी की! उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। आप भी वीर, धीर, निडर निर्भीक बन कर भारत माता को मुक्त कराने का प्रयास करें।

दादाजी बहुत समय हरिमंदिर में द्वार बंद कर भगवद् स्मृण में मग्न रहते थे। जब उनकी इच्छा होती थी तब वे द्वार खोलते थे। कुछ आगुंतकों को संश्य होता था कि वे इतना समय द्वार बंद कर अंदर क्या करते हैं। एक बार सेवा निवृत जिला उपाध्यक्ष उनसे मिलने के लिए आया। उसी समय दादाजी का द्वार बंद था। उसने उनसे मिलने के लिए प्रतीक्षा की किन्तु दादाजी का द्वार नहीं खुला। कुछ घंटो के बाद संशय वश वह उपर गया और खिड़की से झाँका। उसने देखा कि दादा वासवाणी नाम नशे में तनमय होकर गीत गुनगुना रहे हैं।

दिसम्बर सन् १९३३ में मीरा स्कूल के व्यवस्थापक रायबहादुर फतहचन्द लखाणी संसार से चल बसे। उन्होंने ८ महीने लगन के साथ मीरा स्कूल व सत्संग की निष्काम भावना से सेवा की। दादाजी ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दादाजी ने सेवानिवृत जिला उपाध्यक्ष दीवान वसतीराम को मीरा स्कूल के व्यवस्थापक की बाग डोर सौंप दी।

एक बार दादाजी झिरकन गाँव में गये। वह गाँव पहाड़ी पर बसा हुआ है। वहाँ का हवा, पानी व वातावरण शुद्ध था। वे वहाँ प्रकृति की गोद में चार दिन ठहरे। वहाँ ही उन्होंने अपना उपनाम नूरी रखा। तत्पश्चात् उन्होंने जितने भी गीत लिखे, उन में नूरी उपनाम का प्रयोग किया। सन् १९३४ मई में सखी सत्संग कराची का वार्षिक उत्सव एवं श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज का दिवस थियासाफीकल हाल

कराची में मनाया गया। दादा वासवाणी ने बहिनों को इस उत्सव के आयोजन के लिए धन्यवाद देते हुए श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते हुए उनकी अमृतमय वाणी की व्याख्या की। दादाजी ने कहा कि सिन्ध में नारी जाग्रता की अत्यन्त आवश्यकता है। यहाँ अधिकतर बहिने सोई हुई हैं, विदेश में नारी जाग्रता आ गई है। मेरा संदेश है जागो! जागो! एक अंग्रेज कविने कहा है :- Awake for the day is passing

And you lie dreaming on !

जागो जागो ! दिन बीतते जा रहे हैं। आप सपनों में सोए हुए हैं। सखी सत्संग के चार आदर्श हैं, सेवा, सादगी, पवित्रता व प्रार्थना। इन आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएँ, जीवन सफल बनाएँ।

दादा वासवाणी एक सप्ताह कराची में ठहरे, तत्पश्चात् वे रोहड़ी में पधारे। वहाँ १२ मई श्री गुरूनानक कन्या पाठशाला का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया था। वे इस उत्सव के अध्यक्ष थे। उन्होंने अध्यक्षीय भाषण करते हुए कहा कि जिस महान विभूति गुरू नानकदेव महाराज का नाम इस विद्यालय पर रखा गया है, उनके सिद्धातों के अनुसार चलें। श्री गुरू नानक सादगी व नम्रता की मूर्ति थे। वे अवतारी पुरूष होते हुए भी स्वयं नाम का अमृत पीते रहे, छकते रहे। मेरी प्यारी बालिकाओ ! आप विद्याध्ययन के साथ नाम को नहीं भूलें ! प्रभु प्रार्थना से अपनी दिनचर्या आरंभ करें।

रोहड़ी में दादाजी बेदल-बेकस व साईं वसणशाह के स्थानों पर गये और वहाँ नत मस्तक होकर प्रणाम किया। कई भाई बहिनें उनके साथ बड़ी श्रद्धा के साथ मिले।

१४ मई दादा वासवाणी शिकारपुर में पधारे। वहाँ श्री लुणीदासिंघ, श्री मुरलीधर वकील को दादाजी के प्रति श्रद्धा व निष्ठा थी, वहाँ उन्होंने हिन्दु व्यायाम शाला के उत्सव में अध्यक्षीय भाषण करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी को प्रतिदिन व्यायाम शाला में आकर व्यायाम करना चाहिए। भारत को बहादुरों की आवश्यकता है। शरीर सशक्त है तो आप दुश्मन से सामना कर सकते हैं। शक्तिहीन व्यक्ति मृतक के समान है। आप वीर बनें और धीर बनें, ज्ञानी और गंभीर बनें।

श्री रीझूमल लाहोरी ईश्वर भक्त व देश भक्त थे, दीन दुखियों के सेवक थे। उनकी पावन स्मृति में लाड़काणा में उनका अर्धपुतला स्थापित किया गया। उसके अनावरण करने के लिए अगस्त १९३४ में दादा वासवाणी को लाड़काणा में आमंत्रित किया गया। दादाजी लाड़काणा में पधारे। उनके साथ श्री गंगाराम, बड़ी शान्ति, पार्वती, सती एवं छोटी शान्ति भी थी। प्रमियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया।दादा वासवाणी ने श्री रीझूमल लाहोरी के अर्धपुतले का उद्घाटन करते हुए कहा कि श्री रीझूमल लाहोरी शिक्षा शास्त्री थे। लाड़काणा के वे प्रथम व्यक्ति थे जिसने एम ए. एल एल बी की उपाधि प्राप्त की, किन्तु वे कितने न विनम्र थे। वे सेवा व सादगी के स्वरूप थे। जब यहाँ लाड़काणा में कालरा की बीमारी फैल गई, तब उन्होंने स्वयं समर्पित भाव से बीमारों की सेवा की। वे दीन दुखियों के मसीहा थे। ऐसे महापुरूष की पावन स्मृति में आज उनका अर्धपुतला स्थापित किया गया है। उनकी यह प्रतिमा प्रेरणा का स्रोत रहेगी।

१६ अगस्त दादाजी ने ज्ञान गोष्ठी करते हुए कहा कि गुरू महाराज फरमाते हैं -

पारिजात इह हरि को नाम

आप का यह नगर विभिन्न प्रकार के फूलों से महकता है, किन्तु एक अध्यात्मिक फुलवाड़ी भी है, जिस में स्वर्ण रंग का फूल ज्ञान है, लाल रंग का पुष्प विश्वास है, शर्मबुटी का फूल नम्रता का प्रतीक है। पारिजात पुष्प सफेद रंग का है, वह पवित्रता का प्रतीक है। आप नाम स्मरण करें तो पारिजात फूल जैसे महकें। हृदय की शुद्धता अनिवार्य है। सेवा का मूल है पवित्रता , तन की पवित्रता और मन की पवित्रता अत्यन्त आवश्यक है।

दादाजी ने लाड़काणा में विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान देकर प्रेमियों का मार्गदर्शन किया। वे हैदराबाद लौट आए। सत्संग के एक प्रेमी हुकूमतसिंघ की मृत्यु हो गई। दादाजी ने उसे भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

१ सितम्बर १९३४ जन्माष्टमी के पावन दिन उत्सव मीरा स्कूल के मैदान पर आयोजित किया गया। दादाजी ने भगवान श्री कृष्ण के

लीलाओं का वर्णन किया और बहिनों ने श्री श्यामसुंदर के महिमा के गीत गाये। श्री कृष्ण के जन्म समय रात को १ बजे दादाजी ने नये सत्संग भवन की नीब डाली। पूजा, पाठ प्रार्थना के बाद उन्होंने आशीर्वादवचन कहते हुए कहा कि बहिन पार्वती व शांन्ति को धन्यवाद है जिन्होंने यह स्थान अर्पण किया है, इस का नाम नामनगर रखा जायेगा। यहाँ रामनाम की सरिता प्रवाहित होगी।

दादाजी के मन में महात्मा गांधी के प्रति श्रद्धा थी, इसी लिए दादाजी की प्रेरणा से मीरा स्कूल के मैदान पर २ अक्तूबर गांधी जयन्ती के उपलक्ष में मेला आयोजित किया गया। मेले में स्वेदेशी वस्तुओं के स्टाल खोले गये और सत्संग भी किया गया। एक सप्ताह के लिए यह आयोजन किया गया। दादाजी ने महात्मा गांधी के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

२४ अक्तूबर १९३४ मुम्बई में जीवदया मंडली की रजत जयन्ती के उपलक्ष में सभा आयोजित की गईं। इस सभा में राष्ट्रीय कॉंग्रेस के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रप्रसाद, पंडित मदनमोहन मालवीय, सरोजनी नैडू, साधु टी. एल. वासवाणी एवं अन्य विद्वान सम्मिलित हुए। उसी अवसर पर दादा वासवाणी को सन्मान पत्र भेंट किया गया। दादा वासवाणी ने भाषण करते हुए कहा कि सेवा का फल है अधिक सेवा करना। क़ुरबानी का फल है अधिक क़ुरबानी करना। प्रभु से मेरी यह प्रार्थना है कि जीवदया मंडली यत्र तत्र जीवदया की ज्योति जगाकर निरीह पशु पक्षियों को जीवनदान दिलाए। प्रति दिन लाखों पशु-पक्षियों को मौत के घाट उतारा जाता है, यह महापाप है। हम धर्म के मूल तत्व को भूल गये हैं। दया ही धर्म की जड़ है। संत तुलसीदान फरमाते हैं-

दया धर्म का मूल है, नर्क मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्रान ॥

मेरे भाइयों व बहिनों ! अपने तनमन को शमशान भूमि मत बनाएँ। हिंसा से अशान्ति बढ़ती जायेगी। हिंसा का खाना खाने से पाप कर्म का फल आपको अवश्य भुगतना पड़ेगा। जीवंदया की ज्योति जगाओ, सब प्राणियों को गले लगाओ। २५ अक्तूबर दादाजी को

दादाजी मुम्बई में आठ दिन लल्लू भाई के मकान में ठहरे तत्पश्चात् श्री किशनचन्द पोहियाणी ने उन्हें अपने मकान में ठहरने का आग्रह किया। दादाजी प्रतिदिन सबेरे व रात को उनके मकान में उपदेश देते रहे। कई प्रेमी उनके प्रवचन श्रवण कर लाभान्वित होते रहे। २५ अक्तूबर दादाजी को दुखद समाचार मिला कि शान्ति के पिता डाँ. होतचन्द माखीजाणी संसार से चल बसे। दादाजी ने सत्संग में उनके गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। ३० अक्तूबर दिवाली के पावन दिन दादाजी ने प्रभु श्रीराम के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते मार्गदर्शन किया और नाम कीर्तन हुआ।

४ नवम्बर कामा पारसी हाल में दादाजी ने अग्रेंजी में व्याख्यान देते हुए भारतीय संस्कृति का संदेश देते हुए श्रोताओं में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की। ६ नवम्बर उन्होंने मुम्बई विलेपारले में संस्कृत पाठशाला में हिन्दू आदर्शों के सम्बंध में प्रवचन करते हुए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

६ नवम्बर मुम्बई के विभिन्न स्कूलों एवं कालेजों में दादा वासवाणी ने व्याख्यान देते हुए विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का मार्गदर्शन किया। मुम्बई सिन्धी मर्चन्टस ऐसोसीएशन ने एक समारोह में दादाजी को सेवा कार्यों के लिए माया अर्पित की। दादाजी ने उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा कि धन की सार्थकता दान करने में है। संत कबीर ने कहा है-

पानी बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सजन का काम।।

साधु वासवाणी को न केवल सिन्धी समाज किन्तु गुजराती, मारवाड़ी एवं सिख समाज ने भी मीरा स्कूल एवं अन्य सेवा कार्यों के लिए सहायता की। मामा पारसी इन्स्टीट्युट ने दादाजी को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।वहाँ दादाजी ने बहिनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नारी शक्ति व कुरबानी का प्रतिक है। कुछ अज्ञानी लोग नारी जाति को हेय दृष्टि से देखते हैं। संत कहते हैं -

नारी निंदा मत करो नारी गुण की खान।
नारी से पैदा हुए ध्रुव प्रहलाद समान ।।

वूमन गिल्ड ने भी दादाजी को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित

किया। वहाँ भी उन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा उनका मार्गदर्शन किया। थियासाफी कल लाज में दादाजी ने 'भारत की खोज' सम्बंध में ज्ञान गर्भित व्याख्यान दिया।

१४ नवम्बर सिखोंने मुम्बई के जहानगीर हाल में श्री गुरू नानक देव महाराज का जन्मदिन उत्सव आयोजित किया। दादा वासवाणी ने वहाँ व्याख्यान करते हुए कहा कि श्री गुरू नानकदेव महाराज अवतारी पुरूष थे, फिर भी वे स्वयं नाम स्मरण में तल्लीन रहते थे। उन्होंने लाखों लोगों को अज्ञान की नींद से जाग्रत् कर नाम का संदेश दिया। हम भी नाम को नहीं भूलें और श्री गुरू नानकदेव महाराज की शिक्षओं को अपने जीवन में उतारें।

१ जनवरी १९३५ दादाजी ने प्रवचन करते हुए नूतन वर्ष का संदेश दिया। १४ जनवरी नेपाल के राजा बहादुर सिंघ दादाजी से मिलने के लिए मीरा स्कूल में पधारे। उन्होंने दादाजी से विचारों का आदान प्रदान किया। वे दादाजी के कार्य एवं विचारों से बहुत ही प्रभावित हुए।

दादा वासवाणीजी की प्रेरणा से हैदराबाद में बालिकाओं की एक संस्था 'Blue Birds' 'बिलू बर्डस' के नाम से आरंभ हुई। दादाजी प्रति बुधवार को बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए उन में सत् विचारों का संचार करते रहे। हैदराबाद में दादाजी की कीर्ति बढ़ती देखकर कुछ लोगों के मन में वैमनस्य की भावना उत्पन्न हुई। उन्होंने 'सखी सत्संग' के विरूद्ध प्रचार किया। कुछ अखबारों में भी में दादाजी के विरूद्ध लिखा गया। ऐसे लेख पढ़कर कुछ प्रेमियों को दुख हुआ किन्तु निर्भीक दादाजी हंसते रहे और सत्संग व सेवा के कार्य करते रहे। संतों सुधारकों और सेवकों के जीवन काल में अड़चने डालेवाले व्यक्ति हुए हैं, किन्तु सत्पुरूष कष्टों का सामना करते सत्कर्म को नहीं छोड़ते। दादा वासवाणी श्रद्धालु प्रेमियों को सत्संग व सेवा कार्यों के लिए प्रेरित करते रहे।

शिकारपुर सिन्ध में सिन्ध सिख सम्मेलन आयोजित किया गया। दादाजी को वहाँ मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। दादा वासवाणी ने इस सम्मेलन में व्याख्यान करते हुए सिख समुदाय

के इतिहास पर प्रकाश डाला। उन्होंने भाषण करते हुए कहा कि श्री गुरू गोबिन्दसिंघ महाराज ने हिन्दू धर्म की सुरक्षा के लिए सिख पंथ की स्थापना की। उन्होंने सिखों में वीरता व कुरबानी की भावनाएं उत्पन्न की। सिख हिन्दू हैं, हिन्दूओं से अलग नहीं। हम श्री गुरू गोबिन्दसिंघ की मूल शिक्षा को नहीं भूलें।

हम सब एक ब्रह्म की संतान हैं। आपस में मिलकर देश का उत्थान करें , हिन्दू जाति की सुरक्षा करें। श्री गुरूतेगबहादुर, बंदेबहादर और श्री गुरू गोविंदसिंघ के बेटों की कुरबानी को नहीं भूलें। जिस हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने जीवन बलिदान किया उस, हिन्दू धर्म की रक्षा करना हम सबका परम कर्तव्य है।

शिकारपुर के कालेज एवं विभिन्न स्कूलों में दादा वासवाणी को व्याख्यान देने के लिए आंमत्रित किया गया। दादाजी ने विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए उनका मार्गदर्शन किया। दादाजी ने कालेज के प्राचार्य एवं स्कूलों के प्रधानाध्यापकों को अपने अपने विद्यालयों में नैतिक शिक्षा देने व गुरू वाणी पढ़ाने के लिए अनुरोध किया। शिकारपुर से लौटते समय वे तीन चार दिन सक्खर व रोहड़ी में ठहरे। उन्होंने तिलक स्कूल में व्याख्यान देते हूए विद्यार्थियों में देश भक्ति का संचार किया।

दादा साधु वासवाणी की प्रेरणा व आशीर्वाद से भाई भगवानदास मनचुंडिया ने सन् १९३४ ई में रोहड़ी में मीरा स्कूल का श्री गणेश किया। उन्होंने समर्पित भाव से मीरा स्कूल की सेवा की। दादा वासवाणी सक्खर से रोहड़ी में पधारे वे वहाँ प्यारे भगवानदास मनचुंडिया के मकान पर ठहरे। उन्होंने मीरा स्कूल के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप विद्याध्ययन के साथ अपने जीवन में पवित्रता प्रार्थना, सत्य, सेवा, सादगी, संयम, स्नेह व सहानुभूति के गुण अपनाएं।

२७ मई दादा वासवाणी कराची में पधारे। वहाँ सखी सत्संग की ओर से बहिन भूरी थघाणी ने उत्सव आयोजित किया। दादाजी ने प्रवचन करते हुए भारत के ऋषि मुनियों का संदेश सुनाया। उन्होंने बहिनों से प्रार्थना की आप अपने जीवन में सीता, सती सावित्री,

अनुसूया के गुण अपनाएं, प्रभु को नहीं भुलाएं।

दादा वासवाणी कराची में थे, तब उन्हें दुखद समाचार मिला कि कोइटिया बलोचस्तान में भयंकर भूकम्प हुआ है। प्रकृति के इस तांडव नृत्य का समाचार सुनकर दादाजी का मन द्रवित हो गया। कराची के कुछ व्यक्ति भूकम्प के कारण मर गये। दादाजी सहानुभुति के लिए उनके घरों में गये। उन्होंने उनके परिवारों को सांतवना दी। वे शीघ्र ही हैदराबाद लौट आए। कोइटिया से जो भूकंप में घायल व्यक्ति या अपंग और पीड़ित लोग हैदराबाद में आ रहे थे, दादाजी ने हैदराबाद में उनकी सेवा आरम्भ की। सत्संग में भूकंप मृतकों के लिए प्रभु से प्रार्थना की। हैदराबाद के भी कुछ लोग कोइटिया में काल के शिकार हुए थे। दादाजी उनके घरों में गये और सहानुभूति के साथ समयानुकूल उनकी सेवा भी की।

दादाजी को कुछ भाई बहिनें माया भेंट करते थे, तो दादाजी उन पैसों का सेवाकार्यों में सदुपयोग करते थे। समय समय पर वे भाई बहिनों से कहते थे कि आप यदि किसी से सेवा कार्य के लिए धन मांगते हैं तो पहले स्वयं यथाशक्ति अपने धन की आहुति भी उस सेवा यज्ञ में डालें। जनता के पैसों का सदुपयोग करें। आप दान यदि दाएं हाथ से करते हैं तो बाएं हाथ को पता नहीं पड़ना चाहिए, गुप्त रूप से दान करने का बड़ा महत्व है।

एक बार दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आप यदि आध्यात्मिक पथ पर प्रगति करना चाहते हैं तो अपने तन - मन को निर्मल व शीतल रखें। पर धन से दूर रहें । परमात्मा से अपने लिए इतना माँगे जिसकी आवश्यकता हो। संत कबीर भी फरमाते हैं -

साई इतना दीजिये, जामें कुटम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, और न भूखा जाय।।

आप सदैव विनम्र बन कर रहें। यदि कोई आप से झगड़ता है, अपशब्द बोलता है, आपको तंग करता है, आप शान्ति से किनारा करें। आप सब से मधुर व्यवहार करें।

मीरा स्कूल के प्रधानाध्यापक वृद्धावस्था और अस्वस्थ होने के कारण काम नहीं कर सकते थे। दादाजी की भतीजी हरीदेवी

वासवाणी सक्खर में आध्यापिका थी।

दादाजी ने उसे प्रधानाध्यापिका के पद के लिए योग्य समझकर उसे सक्खर से हैदराबाद बुलाया। बहिन हरी देवी ने दादा की आज्ञानुसार मीरा स्कूल की बागडोर संभाली। बहिन हरीदेवी दादाजी के निकट होने के कारण प्रफुलित रहती थी। जब दुपहर को वह स्कूल से लौटकर आती थी तब वह दादाजी के साथ आकर खाना खाती थी। श्री गंगाराम साजनदास मीरा स्कूल के व्यवस्थापक होकर देखभाल करते रहे। जब उनके सामने कोई समस्या आती थी, तब दादाजी समस्या का समाधान कर देते थे।

दादाजी के आशीर्वाद व प्रेरणा से, सत्संग, दवाखाना, मोदीखाना एवं अन्य सेवा कार्य अच्छी तरह चलते रहे। संत माला मासिक पत्रिका का भी प्रकाशन आरंभ हुआ। दादाजी बालिकाओं व बहिनों द्वारा विधवाओं एवं गरीबों के घरों में खाद्य सामग्री भेजते थे। वे कहते थे कि दरिद्र नारायण की सेवा प्रभु की पूजा है। उनकी सहायता करना हमारा कर्तव्य है।

बहिन पार्वती ने आमिल कालोनी हीराबाद में सत्संग के लिए नया विशाल हाल बनाकर दादाजी को समर्पित किया। इस हाल का नाम श्री कृष्ण हाल रखा गया। दादाजी वहाँ सप्ताह में एक बार सत्संग करते थे। वहाँ भी दादाजी की बढ़ती कीर्ति देखकर किसी व्यक्ति ने उनके विरूद्ध अखबार में लेख प्रकाशित किया, किन्तु दादाजी मुस्कराते रहे। उसी हाल में बाल मंदिर आरंभ किया गया। उसी बाल मंदिर में बच्चों में शुभ संस्कार डाले जाते थे।

श्री बगोमल थघाणी, बहिन सती के पिताश्री ने नया मकान बनाया। दादाजी ने वहाँ हवन यज्ञ किया। श्री बगोमल दादाजी के अत्यन्त श्रद्धालु थे। दादाजी सुबह व संध्या टहलने जाते थे।१८ जून सन् १९३४ वे साँझ को टहलते टहलते श्री बगोमल के मकान पर आये। श्री बगोगल उनकी सुपुत्री सती एवं परिवार के अन्य सम्बंधी अत्यंन्त प्रसन्न हुए। वे एक सप्ताह के लिए वहाँ ठहरे और एकांत में बैठकर कुछ लिखते रहे। कराची में श्री गोपालदास जगत्याणी ने नया बंगला बनवाया। उसने उसके उद्‌घाटन करने के लिए दादा वासवाणी

को विनती पत्र लिखा। दादाजी इस सम्बंध में कराची में पधारे। दादाजी ने उस बंगले का उद्घाटन करते हुए उसका नाम 'मोहन कुंज' रखा। दादाजी वहाँ प्रति दिन सत्संग करते रहे। दादाजी के भतीजे प्यारे श्री जशन वासवाणी भी दादाजी से मिलने के लिए वहाँ आते रहते थे। एक दिन रात को दादाजी ने उसे कहा कि यहाँ ही ठहर जाओ। श्री जशन दादाजी की आज्ञानुसार उनके साथ ठहर गया। प्राकृतिक दृश्य दादाजी को अधिक आकर्षित करते थे। वे चाँद व तारों की आँखमिचोली देखकर प्रसन्न होते थे।

कराची में कई संस्थाओं,व प्रेमियों सत्संग करने के लिए उन्हें निमंत्रण आये थे। वहाँ वे चार सप्ताह अपने उपदेशों द्वारा मार्गदर्शन करते रहे। एक महीने के पश्चात् वे हैदराबाद में लौट आये। वे मुसलमानों को भी प्यार करते थे। वे खाना बनवाकर उन्हें खिलाते थे। मुहरम के दिनों में उन्हें शर्बत पिलाते थे। मुसलमान भी उन्हें सन्मान देते थे, वे उन्हें एक दरवेश की दृष्टि से देखते थे। दादाजी सत्संग के अतिरिक्त शेष समय विभिन्न ग्रंन्थो का अभ्यास करते थे और लेख या गीत लिखते रहते थे। उनके कंठ में सरस्वती का निवास था। वे सुबह को कभी फुलेली नदी के किनारे तो कभी बख्शूसिंघ के बगीचे में टहलने जाते थे। कभी कभी वे सारा दिन उसी बगीचे में बैठकर भगवद् भजन करते थे और शाम को लौटते थे। उनके मन में दीनदुखियों के प्रति सहानुभूति थी। वे खाद्य पदार्थ मंगवाकर गरीब परिवारों में भेज देते थे।

एक दिन दुपहर को वे खाना खाकर विश्राम कर रहे थे तो अचानक एक बूढ़ी माता उनके पास आई। वह बच्चों की तरह रोने लगी। दादाजी ने उसे सांतवना देते हुए पानी पिलाया और पूछा कि उसे क्या चाहिए ? बूढ़ी माताने कहा "पैसों की सहायता करें।" दादाजी ने पहले उसे खाना खिलाया और बाद में उसे कुछ पैसे दिये। बूढ़ी सहायता प्राप्त कर प्रसन्न हुई और दादाजी को आशीर्वाद देती चली गई।

उदयपुर राजस्थान के स्कूल के प्रबंधक श्री महिता दादाजी से मिलने के लिए आये। उन्होंने दादाजी से प्रार्थना करते हुए कहा कि वे

उनके स्कूल में पधारकर मीरा विद्या हलचल का संदेश सुनायें। दादाजी ने निमंत्रण स्वीकार किया। वे श्री धनराज, श्री गंगाराम, बहिन सती व शान्ति के साथ उदयपुर में पधारे। श्री महिता ने उनका हार्दिक स्वागत किया। वहाँ दादाजी ने तीन दिन विद्यार्थियों एवं अध्यापको को सम्बोधित करते हुए मीरा विद्या हलचल के सिद्धातों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ साथ विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा देनी चाहिए। उनके शारीरिक व मानसिक उत्थान के लिए प्रयास करना चाहिए। उनमें प्रार्थना, पवित्रता, सादगी, स्नेह, सत्य, संयम, सेवा, सहानुभूति के बीज बोने चाहिए। आज का विद्यार्थी कल का नागरिक होगा ।आदर्श नागरिक ही नगर व देश की नैया पार लगा सकते हैं।

उद्‌यपुर के अन्य विद्यामंदिरों में भी दादाजी ने व्याख्यान देते हुए भारत के ऋषि-मुनियों का संदेश दिया। कुछ श्रोताओं ने उनसे प्रश्न पूछे, दादाजी ने उनके प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनकी शंकाओं का समाधान किया।

दादा वासवाणी मीरा के भक्त थे, मीरा के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा थी, इस लिए उनकी इच्छा थी कि चितोर में जाकर मीरा मंदिर का दर्शन करें। दादाजी चितोर में आये। वे मीरा मंदिर के द्वार पर ध्यान मग्न हो गये, तत्पश्चात् उन्होंने मंदिर को सात बार परिक्रमा दी। उन्होंने मीरा मंदिर की मिट्टी उठाकर मस्तक को लगाई। उसी समय दादाजी के मुख से काव्य सरिता प्रवाहित हुई। उन्हों ने मीरा के सम्बंध में गीत गुनगुनाए। चितोर से दादाजी गुरूकुल में पधारे। उन्होंने गुरूकुल के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप यहाँ के पवित्र वातावरण में धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करें , अपने मन पर नियंत्रण रखकर तल्लीनता से अभ्यास करें, भारत के ऋषि मुनियों के आदर्शों व सिद्धांतो के अनुसार चलकर अपना भविष्य उज्ज्वल करें।

दादाजी राजस्थान की यात्रा कर हैदराबाद में लौट आये। कुछ दिनों के पश्चात् दादाजी को कानपुर से निमंत्रण आया। १० मार्च सन् १९३६ दादाजी ने कानपुर के लिए प्रस्थान किया। कानपुर में कार्यक्रम के आयोजकों ने दादाजी का भव्य स्वागत किया। वहाँ दादाजी एक

सप्ताह ठहरे। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर प्रवचन करते हुए प्रेमाभक्ति की धारा प्रवाहित की। उनके प्रभावोदक प्रवचन श्रवणकर कई श्रोता प्रभावित हुए। २२ मार्च वे हैदराबाद सिन्ध में लौट आये।

बहिन भूरी थघाणी ने कराची में सखी सत्संग का उत्सव आयोजित किया। दादाजी ने उस उत्सव में तीन दिन ज्ञान गर्भित प्रवचन करते हुए श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। उनके आशीर्वाद व प्रेरणा से कराची में सत्संग के लिए पिलाट खरीद किया गया। वे हैदराबाद में लौट आये। वे सत्संग के साथ साथ सेवा की ज्योति जगाते रहे। उनके मन में गरीबों के प्रति सहानुभूति व स्नेह था। एक दिन दुपहर को उन्होंने बहिनों से कहा कि अब आप मेरे साथ चलें, घर घर झोली फैलाकर गरीबों के लिए पैसे संग्रह करें। तत्काल ही वे इस कार्य के लिए निकल पड़े। घर घर जाकर उन्होंने दीन-दुखियों के लिए झोली फैलाई। धन संग्रह कर वे लौट आये और उसी समय ही उन्होंने वह माया गरीबों के सहायता के लिए उनके घरों में भेज दी। महान विद्वान, संत, दार्शनिक शिक्षा शास्त्री होते हुए वे गरीबों के लिए फक़ीर बनें। बिना किसी संकोच वे भूखों को खिलाने के लिए भिखारी बनें। पर हित के लिए संत क्या क्या नहीं करते!

श्री बगोमल थघाणी दादाजी के भक्त थे। वे अचानक लाड़काना के मदेहजी गांव के नज़दीक संसार से चल बसे। दादाजी ने सत्संग में उनके गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

दादाजी की प्रेरणा से बहिन सती थघाणी ने 'श्याम' पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन प्रारंभ किया। अगस्त सन् १९३८ जन्माष्टमी के पावन दिन दादा वासवाणी ने 'श्याम' पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन करते हुए कहा कि इस पत्रिका में देश-विदेश के विभिन्न संतो महात्माओं के जीवन सम्बंधी व आध्यात्मिक लेख प्रकाशित किये जायेंगे। एसी पत्रिका की अत्यन्त आवश्यकता है। पाठकों के मन में भक्ति भावना उत्पन्न करने व उन्हें सत् मार्ग दिखाने के लिए इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया जाता है। आज भगवान श्री श्याम सुंदर का जन्म दिन है जिन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अवतार धारण कर

दुष्टों का दमन किया। वे प्रेम के अवतार थे। उन्होंने अपनी प्रेम की डोरी व मधुर बाँसुरी द्वारा लाखों प्रेमियों का मन मोह लिया। आप भी श्री कृष्ण का ध्यान व चिन्तन करते प्रेमा-भक्ति में तल्लीन हो जायें।

प्यार ही कनैया कृष्ण मुरारी,
प्यार ही ज्योतिधाम अवतारी।

जब दादा साधु वासवाणी कराची में आते थे, तब वे भाभी कृष्णादेवी के घर में अवश्य जाते थे और उन से आशीर्वाद लेते थे। वे अपने भतीजे प्यारे जशन को बहुत प्यार करते थे। संत जिन पर दया दृष्टि करें वे अत्यन्त भाग्यशाली होते हैं। श्री जशनजी भी अपने चाचा साधु वासवाणी की शिक्षाओं व सिद्धांतो से अत्यन्त प्रभावित हुए। वे दादाजी के जीवन से इतने तो प्रभावित हुए कि वे स्वयं खादी के वस्त्र पहनकर कालेज में जाते थे। युवा अवस्था में ही उन्होंने सादगी अपनाई। वे सदैव मुस्कराते रहते थे।

सन् १९३८ ई में जब श्री जशन विज्ञान में अन्वेषण कर रहे थे, तब कालेज अधिकारियों ने विज्ञान सम्बंधी एक विशेष यन्त्र खरीद किया। श्री जशनजी उसके द्वारा खोज करते थे। एक दिन रात को उन्होंने साधु वासवाणी से अनुरोध किया कि प्रयोगशाला में चलकर वह नया यन्त्र देखें। साधु वासवाणी उसी समय ही उनके साथ प्रयोग शाला में गये और उन्होंने वहाँ यन्त्र देखा। उसी समय आकाश में तारे चमक रहे थे। श्री जशनजी ने वह यन्त्र चलाकर दादाजी को दिखाया। दादाजी ने अपना हाथ उसके निकट रखा तो हाथ की सब पसलियां देखने में आ रही थी। दादाजी मुस्कराने लगे, उन्होंने उनसे पूछा, क्या तुम्हारे पास अणुवीक्षण यंन्त्र भी होगा ? श्री जशन दूरबीन ले आया। पूज्य दादा वासवाणी ने कहा कि बाहर चलकर इस दूरबीन से आकाश में तारे देखो।

श्री जशन, दादा वासवाणी की आज्ञानुसार अणुवीक्षण यंत्र से तारे देखता है, तब वह ऐसा अनुभव कर रहा है कि तारे उसके अत्यन्त निकट चमक रहे हैं। उसी समय दादाजी ने उसे कहा कि दूरबीन के कांच को फूंक देकर देखो। फूंक देने के कारण उसी दूरबीन से उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। उसी समय साधु वासवाणी ने मुस्कराते हुए

उन्हें समझाया, मेरे बालक ! यह है अहम् का, अज्ञान का परदा जो तुम्हारे और श्री श्याम सुंदर के बीच में है। यह अविद्या का पटल दूर करो तो तुम्हें सर्वत्र, सभी प्राणियों में भगवान का दर्शन होगा।

साई सूरत ऐन की साई सूरत ग़ैन,
समन नुक्ता दूर कर तो रहे ऐन का ऐन ।।

१७ वर्ष की छोटी आयु में श्री जशन ने बी. एस. सी की परीक्षा उत्तीर्ण की। यह सिन्धी जाति के लिए गौरव की बात थी। वे उसी कालेज में फेलो नियुक्त हुए, साथ साथ उन्होंने एम्. एस सी का अभ्यास भी आरंभ किया। १९ वर्ष में उन्होंने बम्बई विश्वविद्यालय से एम्. एससी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। यह भी सिन्धी जाति के लिए अत्यन्त गौरव की बात थी। उन्होंने फिज़क्स में ऐक्सरे के सम्बंध में खोज की थी, विश्व विख्यात विज्ञानी सी. वी रामन उनके शोधप्रबंध के निरीक्षक थे। दादा जशन चाहते तो वे महान विज्ञानी बन सकते थे किन्तु वे भौतिक विज्ञानी न बनकर सच्चे विज्ञानी बने। 'वि' का अर्थ है विशेष और ज्ञानी, जिसे ज्ञान हो। उन्हें सच्चा अध्यात्मिक ज्ञान है। वे आज इस आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा लाखों लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। यह ज्ञान किसी प्रयोग शाला या पुस्तकालय से प्राप्त नहीं होता है। आध्यात्मिक ज्ञान तो संतों महात्माओं के संग संसर्ग, सेवा से मिलता है। श्री जशन वासवाणी सौभाग्यशाली थे कि उन्हें साधु टे. एल वासवाणी गुरू रूप में प्राप्त हुए। उन्हें दादा वासवाणी का संग एवं सेवा का सुअवसर मिला। वे अध्ययन एवं अध्यापन करते दादा साधु वासवाणी की सेवा में तत्पर रहते थे। साधु वासवाणी उन्हें समय समय पर शिक्षा देकर मार्गदर्शन करते थे।

साधु वासवाणी जब भी कराची में आते थे तो श्री जशनजी उनके साथ रहते थे। साधु वासवाणी भी उसे दिल से चाहते थे। योग्य गुरू को योग्य शिष्य मिला। एक बार श्री जशन जी को बहुत बुखार आया, बुखार २१ दिन तक चला, पूज्य दादा वासवाणी प्रतिदिन उनके निकट जाकर बैठते और आशीर्वाद करते थे।

श्री जशनजी को गुरदेव साधु वासवाणी के संग एवं सेवा में ही आनंद आता था, उन्हें कोई सांसारिक प्रलोभन आकर्षित नहीं कर

सका। माता कृष्णा मोह वश विचार करने लगी कि कष्ट झेलकर उसने बेटे जशन को पढ़ाकर योग्य बनाया, क्या अब वह सदैव साधु वासवाणी के पास रहेगा ! यह विचार करते करते उसकी आँखों से आँसू बह आये।

संत अंतर्यामी होते हैं। साधु वासवाणी ने एक दिन प्यारे जशन से कहा 'बेटा जशन ! तुम्हारी माँ तुम्हें बहुत याद कर रही है, तू अब उनके पास कराची में जाओ। जाकर माता की प्यास पूरी करो। श्री जशन गुरूदेव की आज्ञानुसार कराची में अपनी माँ के पास आये और प्रणाम किया। माता कृष्णा बेटे जशन को देखकर प्रफुलित हूई। श्री जशनजी ने माता से कहा, 'माँ ! आप चिन्ता मत करें, आप जैसे चाहोगी मैं वैसे करूंगा। यदि आप चाँहे तो मैं आपको प्रसन्न करने के लिए विवाह भी करूंगा। आपको प्रफुलित करने के लिए मैं कोई कसर नहीं छोडूंगा, जैसे आपकी इच्छा पूर्ण हो।' बेटे के ऐसे वचन सुनकर माँ कृष्णा संतुष्ट हूई। उसने उसे गले लगाया।

कुछ दिन श्री जशनजी माँ के घर में रहे किन्तु उनका मन सदैव दादा साधु वासवाणी का चिन्तन करता रहता था, उन्हें और न कुछ भी भाता था। वे गुरदेव के विरह में आँसू बहाते रहते थे। एक दिन माता कृष्णा ने उसे कहा 'बेटा ! मैं तुम्हारे मन की दशा देखकर तुम्हें साधु वासवाणी से दूर रखना नहीं चाहती हूँ। तू उनके पास जाओ और भाक्ति मार्ग में उन्नति करो।' माँ का आशीर्वाद लेकर वे हैदराबाद में गुरूदेव के पास लौट आये। दादा साधु वासवाणी का दर्शन कर वे अत्यंत प्रसन्न हुए। एक दिन साधु वासवाणी ने उन्हें कहा बेटा ! तू अंतर्मुखी बनो। उसके लिए तीन साधन हैं, स्वयं को भूल जाओ, सब के चरणों की धूलि बनो। दूसरा सदैव सत्गुरू की आज्ञा का पालन करो, उनके शिक्षाओं व सिद्धांतों का अनुसरण करो। तीसरा मन में प्रभु के लिए प्यास पैदा करो। जैसे जैसे प्यास बढ़ेगी, वैसे तू प्रभु के निकट होता जायेगा। इन तीन बातों को अपनाओगे तो धीरे धीरे तू अंतर्मुखी होते जाओगे।

सन् १९३८ में कराची में जब सत्संग का स्थान बन रहा था तब श्री जशनजी सीमेंट की गाड़ी भराकर आते थे, तो उनके मुँह पर सीमेंट

की दज़ लग जाती थी, साधु वासवाणी अपना रूमाल निकाल कर उसका मुँह साफ करते थे, वे प्यारे जशन को इतना प्यार करते थे।

दादा वासवाणी क्रांन्तिकारी संत थे। सन् १९३९ ई में हैदराबाद के व्योवृद्ध मुखी मंघाराम, मुखी हरिकिशनदास एवं अन्य प्रतिष्ठित लोग दादाजी के पास आये और उन्होंने दादाजी से अनुरोध किया कि दादा लेखराज ने ओम मंडली द्वारा कई बहिनों को इतना तो आकर्षित किया है कि वे अपने घर गृहस्थ का त्याग कर मंडली में सम्मिलित हो गई हैं, घर टूट रहे हैं। आप कृपया इस समस्या का समाधान करें। दादाजी ने आये हुए प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सांतवना देते हुए कहा कि वे इस समस्या को दूर करने का प्रयास करेंगे। उन दिनों दादाजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था फिर भी वे, प्यारे गंगाराम, बहिन सती व शान्ति के साथ कराची में पधारे। उन्होंने ओम मंडली के संस्थापक से बातचीत करते हुए कहा कि आप बहिनों से आज्ञा करें कि वे अपने अपने घरों में जाकर परिवार की सेवा करें। पति परमेश्वर है, बाल बच्चे भी प्रभु की संतान हैं, उनकी सेवा करें। वे अपने अपने कर्तव्य का पालन करें।

श्री लेखराज ने दादाजी की विनती स्वीकार नहीं की। इस के पूर्व दादाजी ने हैदराबाद से ही मुख्य मंत्री को तार भेजा था कि ओम मंडली पर प्रतिबंध लगाया जाये, नहीं तो उसके विरूद्ध सत्याग्रह किया जायेगा। मुख्य मंत्री ने जिलाध्यक्ष के द्वारा उन्हें संदेश भेजा था कि इसके सम्बंध में आप उनसे कराची में आकर सम्पर्क करें। मुख्य मंत्री अल्लाह बख्श, विधि मंत्री वज़ीराणी कराची में दादा वासवाणी से मिलने के लिए आये। उस समय डॉ. चोइथराम गिदवाणी, प्रो घनश्याम शिवदासाणी, महाराज़ विष्णु शर्मा, बापू किशनचन्द, एवं श्री जशनजी भी उपस्थित थे। तीन चार घंटे इसी समस्या के सम्बंध में विचारों का आदान प्रदान किया गया। यह तय किया गया कि जो सगे-सम्बंधी अपनी सुपुत्रियों को, पति अपनी पत्नियों को अपने घर में लाने के लिए इच्छुक हैं, उन्हें एक सप्ताह के अंदर उनकी बेटियाँ व पत्नियाँ अपने अपने घरों में लौटा दी जायें। सरकार की ओर से भी इस के लिए प्रयास किया गया। किन्तु उसका परिणाम कुछ भी नहीं निकला। दादाजी ने इस समस्या को दूर करने के लिए आंदोलन चलाया, सत्याग्रह

किया। दादाजी समाज सुधारक थे। उनहें इस आंदोलन के कारण जेल में जाना पड़ा। दादाजी के साथ डॉ. चोइथराम गिदवाणी, डॉ. चिमनदास जगतियाँ, बापू किशनचन्द एवं श्री जशन भी साथ में थे। न्यायाधीश ने दादाजी को १४ दिन जेल की सज़ा दी। दादाजी ने जेल में राम नाम की धूम मचा दी। उन्होंने क़ैदियों को उपदेश देते हुए उनका मार्गदर्शन किया। सारे जेल में भक्ति व प्रेम का वातावरण उत्पन्न हो गया।

दादाजी ने जेल में नया वातावरण उत्पन्न कर दिया। वे वहाँ क़ैदियों को एकत्रित कर प्रभु से प्रार्थना करने लगे। उनके साथ मिलकर भजन गाने लगे। दादाजी क़ैदियों को सांतवना व सहानुभूति देते रहे। विभिन्न क़ैदियों ने उन्हें अपनी अपनी आपबीती सुनाई। किसी क़ैदी ने छोटी सी बात पर क्रोधित होकर अपने मित्र का खून किया था, किसी ने परिवार की आर्थिक परिस्थिति के कारण चोरी की थी। किसी क़ैदी पर आरोप लगाया गया था, वह पूर्वजन्म के किसी पाप के कारण दंड भुगत रहा था। कुछ क़ैदियों ने परिस्थिति के कारण गुनाह किये थे। दादाजी जितने दिन भी जेल में रहे वे क़ैदियों को उपदेश देकर भविष्य के लिए उनका मार्गदर्शन करते रहे। कई कैदियों की आँखों से पश्चानुत्ताप के आँसू टपकते देखकर, दादाजी उनके आँसू पोछते थे, और उन्हें रत्नकार डाकू एवं अन्य पाप कर्म करने वाले व्यक्तियों, जिन्हों के जीवन में बड़ा परिवर्तन आ गया, उनके उदाहरण देकर संतवना देते रहे। द:दा वासवाणी के व्यवहार व विचारों के प्रभाव के कारण कई क़ैदियों के मन में मानसिक परिवर्तन आ गया।

जेल में श्री जशनजी दादाजी की समर्पित भाव से सेवा करते रहे। दादा जी जेल में कुछ पुस्तकें भी पढ़ते रहे और कुछ लिखते भी रहे। सत्पुरूष दूसरों की भलाई के लिए कितनी न कुरबानी करते हैं! जेल में भी वे प्रभु को प्रार्थना करते हुए मुस्कराते रहे और अपने संकल्प पर डटे रहे। दादाजी को मुक्त करने के लिए फिर बहिनों ने आंदोलन चलाया। दादाजी जेल से मुक्त हुए। उन्हें सरकार की ओर से आश्वासन दिया गया कि शीघ्र ही ओम मंडली की समस्या का समाधान किया जायेगा। श्री जशनजी ने अंग्रज़ी में Excelisior पत्रिका सम्पादित

की, जिस में साधु वासवाणी एवं अन्य संतों महात्माओं की अमृत वाणी और शिक्षाप्रद लेख प्रकाशित करते थे। साधु वासवाणी के साथ रहते वे ज्ञानगोष्ठी भी करते थे।

श्रीजशन एक सेवक के भाव से गुरूदेव की सेवा करते रहे। जब साधु वासवाणी प्रवचन करते थे तब वे उनके अमृत वचन लिखते जाते थे। सन १९३९ ई में दादा साधु वासवाणी को कोलम्बो में आयोजित एश्या शान्ति सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण आया। दादाजी तो विश्व शान्ति के अलम्बरदार थे। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए उन्होंने ९ मई हैदराबाद से प्रस्थान किया। उनकी सेवा में प्यारे जशन वासवाणी एवं तीन बहने बड़ी शान्ति, बहिन सती व शान्ति भी थी। वे मुम्बई में पधारे। वहाँ से वे सागर यात्रा द्वारा कोलम्बो गये। वे कोलम्बो में पधारे, श्री हेमनदास एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। कुछ पत्रकारों ने भी उन से मुलाक़ात की और कुछ प्रश्न पूछे। दादाजी ने उन्हें प्रश्नों के उत्तर देते हुए प्रभावित किया। दादाजी श्री हेमनदासजी के मकान में ठहरे। वह मकान सागर के किनारे था। वहाँ दादाजी ने सत्संग किया। कई सिन्धी भाई बहिनें उनके दर्शन करने के लिए और अमृत-वचन श्रवण करने के लिए सत्संग में सम्मिलित हुए। एक दिन प्रेमी दादाजी को गौतम बुद्ध के मंदिर में ले गये, वहाँ श्री गौतम बुद्ध की भव्य मूर्ति स्थापित थी। उसको प्रणाम कर दादाजी ध्यान मुद्रा में बैठ गये और उनके मुख से श्री गौतम बुद्ध के सम्बंध में गीतों की सरिता प्रवाहित हुई। कोलम्बो के विभिन्न स्थानों पर दादाजी ने प्रवचन देते हुए मार्गदर्शन किया।

आनंद कालेज कोलम्बो में दादा वासवाणी का भव्य स्वागत किया गया, इस समारोह के अध्यक्ष कोलम्बो के मुख्य मंत्री थे। इस अवसर पर दादाजी ने कहा कि आप लोगों ने जो मेरी प्रशंसा की मैं उसके योग्य नहीं, मैं संत नहीं संतों के द्वार का दास हूँ। आज मैं आपको श्री गौतम बुद्ध का ही संदेश सुनाता हूँ। दो हजार वर्ष पूर्व वे सत्य की खोज में निकले, महलों व वैभव का परित्याग कर वे जंग़ल में गये। वहाँ उन्होंने तपस्या का जीवन बिताया। साधना के पश्चात् उन्होंने ज्ञान का प्रकाश प्राप्त कर विश्व को अहिंसा, प्रेम शान्ति का संदेश

दिया। आज भी उनके अष्ट मार्ग पर चलने की अत्यन्त आवश्यकता है। राजा अशोक ने श्री गौतम बुद्ध के सिद्धांतो व शिक्षा के अनुसार शासन में परिवर्तन लाया। आज दुनिया की क्या दुर्दशा है ! हिटलर का यहूदियों के साथ कैसा दुखदाई व्यवहार, मसोलनी का अन्य देशों पर आक्रमण, खून की नदी बहाने से शान्ति की स्थापना कैसे हो सकती है ! जर्मन के एक विद्वान ने कहा कि शक्ति ही न्याय है, Might is Right श्री गौतम बुद्ध ने शान्ति का संदेश दिया तो ईषा ने प्रेम का पैग़ाम दिया। युरोप उनके सिद्धांतों को कुचल रहा है। हम सब मानव हैं, दानव जैसे कर्मों का त्याग कर प्रेम व शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें।

एश्या शान्ति सम्मेलन में दादाजी ने विश्वशान्ति के सम्बंध में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अधिक शक्ति के लिए एक देश दूसरे देश पर आक्रमण कर रक्त की नदी बहाता है। एक व्यक्ति अहम् को खुश करने के लिए युद्ध करता है ! कितनी बहिनें विधवाएं बनती हैं ! कितने बच्चे अनाथ हो जाते हैं, कितने व्यक्ति अपंग हो जाते हैं ! जान माल की कितनी न हानि होती है ! परिणाम शून्य ! शून्य ! भारत के प्राचीन ऋषी मुनियों ने वसुदेव कुटंबकम् का संदेश देकर स्नेह सद्भावना मैत्री का वातावरण उत्पन्न किया। उन्होंने विश्व कल्याण की धारणा प्रचारित की। पूर्व ने दुनिया को प्रकाश दिया किन्तु आज चारों ओर अशान्ति का अंधकार है। आज श्री गौतम बुद्ध की शिक्षाओं को अपनायें, अहिंसा, प्रेम शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें। हम मन से बदले की भावना निकालें, पद, शक्ति के मोह का त्याग करें। सब ही प्राणियों के प्रति सद्भावना रखें तो विश्व में शान्ति का वातावरण उत्पन्न कर सकते हैं। त्याग में ही आनंद है। लोभ, विरोध, दुश्मनी अशान्ति व दुख उत्पन्न करते हैं। प्रभु से प्रार्थना करें -:

सर्वे भवन्तु सुखन :, सर्वे सन्तु निरामय :।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् भाग्भवेत्॥

मेरे भाइयो व बहिनें योरप अवनति की ओर अग्रसर हो रहा है। टालिस्टाइ ने भी योरप की दुखदाई दशा देखकर आँसू बहाये। अब जागो ! जागो ! ज्योति जगाओ, प्रेम व शान्ति की, अहिंसा व मैत्री

की ज्योति जगाओ !

दादाजी ने कोलम्बों के विभिन्न स्थानों पर व्याखयान देकर नई चेतना उत्पन्न की, कोलम्बो के प्रसिद्ध दैनिक पत्रिका ''सेलान आबज़रवर'' ने दादाजी से संदेश लेकर प्रकाशित किया। अन्य पत्रकारों ने भी उनसे कई प्रश्न पूछे। दादाजी ने उन्हें प्रभावोत्पादक उत्तर दिये।

२६ मई श्री हेमनदासजी के आग्रह पर दादाजी न्यूरेला पहाड़ियों पर गये। वहाँ के प्राकृतिक दृश्य एवं शुद्ध वातावरण तन मन के स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी है। दादाजी तो प्रकृति के पुजारी थे। वे प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करते आनंदित होते थे। वहाँ भी दादाजी ने 'धर्म व नया युग' के विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं धर्म को विज्ञान मानता हूँ, विशेष ज्ञान। विज्ञान खोजना करता है, धर्म भी आत्मविद्या को समझने की खोजना है। हक्सले, आइस्टन एवं कई विद्वान, महापुरूष भगवान के अस्तीत्व में विश्वास रखते हैं। जैक्सन कहते हैं कि एक परम शक्ति है जो सृष्टि को चला रही है। हमें उस शक्ति को जानना है। वह शक्ति सब ही प्राणियों में विद्यमान है, फिर भी हम धर्म व जाति के नाम व्यर्थ झगड़ते हैं, लड़ाइयाँ करते हैं। इस परम शक्ति के ज्ञान की प्राप्ति के लिए सत्य के मार्ग पर चलें। आप विचारों व व्यवहार में सत्य के मार्ग पर चलें। आपके विचारों व व्यवहार में सत्य होना चाहिए, सत्य बोलने से आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती है और झूठ बोलने से शक्ति क्षय होती है। संत कबीर भी कहते हैं। -

साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जॉके हृदे साच है, ताँके हृदे आप।।

दूसरा साधन है प्रार्थना, प्रार्थना हमारे जीवन की ढ़ाल है। जार्ज मूलर का प्रार्थना में कितना न विश्वास था ! आज के नास्तक लोग प्रार्थना को महत्व नहीं देते। प्रार्थना द्वारा कई समस्याओं का समाधान हो सकता है। तीसरा साधन है कुरबानी, अर्पणम् की भावना। इन तीन साधनों द्वारा परमशक्ति का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह ज़ान भीतर का ज्ञान है, हम बहर्मुखी भटकते हैं। भीतर जाओ मेरे प्यारे ! भाइयो व बहिनों भीतर जाओ तो आपको दिव्य ज्योति का

दर्शन होगा, आनंद की उपलब्धि होगी।

न्यूरेला के निवासी दादाजी के प्रवचनों से बहुत ही प्रभावित हुए। उनके आग्रह पर उन्होंने टाऊन हाल में भी व्याख्यान देते हुए श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कुछ श्रोताओं की शंकाओं का भी समाधान किया। वे प्रति दिन वहाँ प्रकृति की गोद में सत्संग भी करते तो गीतों की रचना भी करते रहे। वहाँ ही उन्होंने 'मन प्रबोध' एवं 'रूह रबाब' की रचना की। वहाँ दादाजी ने ग्रामीण गरीब लोगों को अपने हाथों से भोजन खिलाया और अपना प्यार दिया। वे वहाँ से कोलम्बो में लौट आये।

'आनंद विद्या मंदिर' की प्रधानाध्यापिका ने दादा वासवाणी को स्कूल में बालिकाओं का मार्गदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया। दादाजी ने बालिकाओं एवं अध्यापिकाओं को सम्बोधि करते हुए कहा कि इस विद्या मंदिर पर श्री गौतम बुद्ध के परम शिष्य 'आनंद' का नाम रखा गया है। आशा है आप इस विद्यामंदिर को आनंद का स्रोत बनायेंगी। आप आनंद के नाम को सार्थक बनायें। अपने व्यवहार व विचारों द्वारा आप स्वयं भी आनंद में जीवन बितायेंगी और दूसरों को भी आनंद प्रदान करेंगी। आनंद का सम्बंध आत्मा से है, शरीर से नहीं। त्यागी तपस्वी संत सब आनंद की खोज में हैं। आप यहाँ पवित्र वातावरण में ऐसी शिक्षा ग्रहण करें जैसे आपको आनंद की उपलब्धि हो।

कोलम्बो के सिन्धी समुदाय ने एक हाल में दादाजी के आगमन पर स्वागत समारोह आयोजित किया। सिन्धी समाज की ओर से उन्हें सन्मान पत्र एवं सेवा कार्यों के लिए धन की भेंट की गई। दादाजीने प्रवचन करते हुए कहा कि मैं आप सब का आभारी हूँ। आप लोगों ने मुझे कितना न स्नेह व सन्मान दिया है। आप यहाँ विदेश में रहकर भी अपनी सिन्धु संस्कृति को नहीं भुलाएँ। सिन्ध के संतो, सूफियों की वाणी का अभ्यास करते रहें। धन कमाकर उसका उपयोग परोपकार के कार्यों में करें। अपने अपने कर्तव्य की पालना करते नाम को नहीं भूलें। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज सुखमनी में फरमाते हैं :-

जह मात पिता, सुत मीत न भाई।

मन, ऊहा नाम तेरे, संग सहाई ।।

सांसारिक सम्बंधी आपका साथ छोड़ देंगे, एक नाम ही सदैव आपका सहायक व संगी होगा। उस नाम को नहीं भूलें। ऊठत बैठत सोवत जागत नाम की पूंजी संग्रह करें। यह पूंजी कभी कम नहीं होती। परम सुख के प्रप्ति के लिए आप नाम स्मरण करें। इह लोक सुहेला पर लोक सुहेला।

कोलम्बो से लौटते समय दादाजी श्री रामेश्वरम् भी गये। वहाँ प्रभु श्री राम का भव्य मंदिर है। यह महान तीर्थस्थल है। यहाँ प्रभु श्री राम सुखधाम पधारे थे। वहाँ रामकुंड, सीताकुंड व लक्ष्मण कुंड भी है। दादाजी ने प्रभु श्री राम की सुंदर मूर्ति का दर्शन करते, उनका ध्यान किया। दादाजी के साथ प्यारे श्री जशन, श्री गंगाराम, बहिन शान्ति व सती भी थीं। उन्होंने दादाजी से कहा कि अब दर्शन हो गया, लौट चलें। दादाजी ने कहा कि आप सब लौट जायें मैं यहाँ एक रात ठहरकर प्रभात को पावन राम कुंड में डुबकी लगाकर प्रभु श्री राम का आशीर्वाद लूंगा। सब अपने बिस्तर, वस्त्र एवं अन्य सामान स्टेशन पर रखकर आये थे। सब सारी रात धर्मशाला में बिना बिस्तर सो गये। प्रभात को सब श्री रामकुंड आये। दादाजी ने किसी यात्री से टावल लेकर राम कुंड में डुबकी लगाई, औरों ने पंचश्नान किया। लौटते समय पंडे पैसे मांग रहे थे, दादाजी किस को एक आना तो किसी को एक टका देते गये। एक पंड़ा दादा के सामने आरती की थाली लेकर कहने लगा कि इस में एक रूपया दक्षणा रखो ! दादाजी ने आरती की थाली में एक टका डाला तो पंडा क्रोधित हो गया और उसने वह आरती वाली थाली दादाजी की ओर फेंक दी। दादाजी मुस्कराते हुए बोले, मेरे प्यारे मन में प्रभु श्री राम की मूर्ति धारण करो, पैसों के लिए क्यों क्रोधित होते हो। प्यारे जशन ने वह थाली उठाकर पंडे के सामने रखी। उसी समय दादाजी ने प्यारे जशन से कहा, मेरे प्यारे ! ये धर्म के मर्म को नहीं जानते। भारत में सच्चे धर्म की आवश्यकता है, आज जीवन के खेत में प्रेम के बीज बोने की जरूरत है। तीर्थस्थलों पर ऐसा व्यवहार देखकर दादाजी का मन भर आया। उन्होंने उसी समय प्रभु श्री राम से प्रार्थना की। मर्यादा पुरूषोत्तम प्रभु श्री राम के तीर्थस्थान पर पंडे

मर्यादाहीन ! यह कैसी विडम्बना !

दादाजी ने सबेरे वहाँ दीन दुखियों व संतों को भोजन खिलाया। उसी समय भी किसी पंडे ने इतना परेशान किया कि वहाँ खड़े हवलदार उसे पुलिस थाने ले गया। पंडों का ऐसा व्यवहार देखकर दादाजी को दुख हुआ। वे क्षमाशील थे। वे प्यारे जशन के साथ पुलीस थाने पर गये और पुलीस अफसर से विनय की कि उस पंडे को मुक्त कर दें। अफसर ने दादाजी के कहने पर उस पंडे को मुक्त किया। दादाजी इतने महान थे कि उन्होंने उस पंडे को बुलाकर कहा कि तुम्हें जितने रूपये चाहिए अब ले लो और जाकर राम नाम का उचारण करो। तुम क्यों धन के लिए अपने श्वास व्यर्थ गंवाते हो ! चिलाते हो! अपने मन को निर्मल बनाओ उस में रामनाम की ज्योति जगाओ ! वह पंडा दादाजी का ऐसा स्नेहयुक्त व्यवहार देखकर आश्चर्य में पड़ा गया।

श्री रामेश्वरम् से दादाजी मद्रास में पधारे। वहाँ श्री केवलराम चेलाराम के मकान पर उनके रहने की व्यवस्था की गई थी। कई भाई बहनें उनका दर्शन करने के लिए उनके पास आये। मद्रास की गणेश कम्पनी ने दादाजी की अंग्रेजी पुस्तकें प्रकाशित की थी। मद्रास के कुछ लोगों ने दादाजी की पुस्तकें पढ़ी थी और नाम सुना था। दादाजी ने मद्रास के विभिन्न स्थानों पर प्रवचन कर श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। मद्रास से थोड़े फासले पर रमन महर्षि का आश्रम था। दादाजी प्यारे जशन को लेकर वहाँ गये। उन्होंने रमन महर्षि का दर्शन कर उनसे ज्ञान गोष्ठी की और आशीर्वाद लिया।

मद्रास में उन दिनों बहुत ही गरीबी थी। दादाजी गरीबों की दयनीय दशा देखकर पिघल जाते थे। वे वहाँ प्रति दिन खाना बनवाकर गरीबों को खिलाते रहे साथ साथ अपने अमृत तुल्य वचनों द्वारा प्रभु के प्यासियों की प्यास भी बुझाते रहे। मद्रास रेडियो की ओर से उन्हें व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। वे रेडियो स्टेशन पर गये। उन्होंने अपनी आकाशवाणी वार्ता में कहा कि जीवन में कभी निराश नहीं बनें। प्रभु आपकी सब ही समस्याओं का समाधान कर सकता है। आप उसे श्रद्धा व विश्वास के साथ प्रार्थना करें। आस्तिक मनुष्य कभी निराश नहीं होता, क्यों कि उसका परमात्मा में पूर्ण

विश्वास है।

आशा आत्मा का गुण है और निराशा विकार ग्रस्त मन का। जीवन दुख सुख का संगम है। विपदाओं या दुखों को देखकर अपने पथ से कभी भी विचलित नहीं हों। साहस व धीरज के साथ जीवन मार्ग पर बढ़ते जायें। किसी न किसी दिन आपको सफलता अवश्य मिलेगी। व्यवहार का मार्ग हो या परमार्थ का पथ, विरोध करने वाले, विघ्न डालने वाले, बाधाएं डालेंगे किन्तु आप विवेक के अनुसार अपना कार्य करते रहें। परमात्मा आपके सहायक व संरक्षक बनेंगे।

दादाजी मद्रास से मुम्बई पधारे। वे वहाँ चार दिन ठहरे। कुछ प्रेमी उनसे मिलने के लिए आये। दादाजी ने दो स्थानों पर अमृत वचनों की वर्षा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।१४ सितम्बर उन्होंने मुम्बई से हैदराबाद के लिए प्रस्थान किया।१६ सितम्बर सन् १९३९ ई में दादाजी हैदराबाद सिन्ध में पधारे। वहाँ कई प्यासी अखियाँ उनके दर्शन की प्रतीक्षा कर रही थीं। प्रेमियों ने पुष्प मालाओं से दादाजी का स्वागत किया। रविवार सुबह को 'कृष्णहाल' में सत्संग आयोजित किया गया। प्रेमियों ने दादाजी का अभिनंदन किया और दादाजी ने कोलम्बो यात्रा के अनुभव सुनाते हुए आशीर्वाद दिया। प्यारे जशनजी दादाजी का आशीर्वाद लेकर कराची गये। प्यारे श्री जशन इतने दिन भ्रमण में दादाजी के साथ रहे, अब कराची में दादाजी के बिरह में उनका मन नहीं लगता था। वे प्रतिदिन दादाजी को पत्र लिखते रहे। संत घट घट की जानत। दादाजी ने प्यारे जशन को हैदराबाद आने के लिए तार भेजा। प्यारे श्री जशन दादा वासवाणी का तार पढ़कर फूला नहीं समाया। वह माताश्री से आशीर्वाद लेकर हैदराबाद में गुरूदेव दादाजी के पास आया। दादाजी का दर्शन कर, स्नेह प्राप्त कर प्यारे जशन प्रफुलित हुए।

२५ नवम्बर १९३९ पहिली बार बहिन सती ने दादा साधु वासवाणी का जन्म दिन उत्सव आयोजित किया। बहिन सती थघाणी ने ५०० रूपये इक्ट्ठे कर वह माया की उपहार श्री चोइथराम द्वारा दादाजी को अर्पित की। दादाजी के गुणों का वर्णन किया गया, नाम कीर्तन हुआ। दादाजीने तत्काल ही वह माया की उपहार प्यारे गंगाराम

साजनदास को संस्था के सेवा कार्यों के लिए दे दी। उसी दिन अस्पताल में बीमारों की सेवा की गई और दीन दुखियों को खाना खिलाया गया। दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि मैं तो संत महात्मा नहीं, मैं तो सब का सेवक हूँ। आपने एक सेवक को सन्मानित कर अपनी महानता दिखाई है। आप अपने श्वास नाम स्मरण एवं शुभ कर्मों में सफल करें।

प्रति रविवार सुबह को दादाजी कृष्ण हाल में श्रीमद् भगवद् गीता या श्री सुखमनी के सम्बधं में प्रवचन देकर मार्गदर्शन करते थे। मीरा संस्था के व्यवस्थापक श्री गंगाराम साजनदास कर्मठ व्यक्ति थे। वे धन संग्रह कर मीरा स्कूल एवं अन्य सेवा कार्य करते रहे। उनकी चाहना थी कि मीरा स्कूल के लिए अलग पिलाट सरकार से लिया जाये। दादाजी के आशीर्वाद एवं श्री गंगाराम के पुरूषार्थ से मीरा स्कूल के लिए सरकार ने पिलाट दिया। श्री गंगाराम मीरा स्कूल के नये भवन के निर्माण कार्य में जुट गये।

सन् १९३९ ई में बहाई धर्म की एक निष्ठावान विदुषी बहिन मार्थारूट विदेश से सिन्ध में आई थी। वह कराची में दादाजी के व्याख्यान सुनकर बहुत ही प्रभावित हुई थी। फिर वह हैदराबाद में भी आई। वह दादाजी के व्यवहार,विचारों व परमार्थ-परोपकार के कार्यों से इतनी तो प्रभावित हुई कि उसने व्याख्यान देते हुए कहा, "मुझे यहाँ साधु वासवाणी जैसे महान संत दार्शनिक आध्यात्मिक मार्गदर्शक का दर्शन हुआ, मैं स्वयं को भाग्यशाली समझती हूँ। मेरा सिन्ध में आना सफल हुआ। वह बहिन आस्ट्रेलिया गई। वहाँ उनका देहावसन हो गया। बहाई धर्म वालोंने उसी बहिन की पावन स्मृति में ७ जनवरी सन् १९४० कराची में समारोह आयोजित किया। दादाजी को उसी समारोह में अतिथि रूप में आमंत्रित किया गया। पूजनीय दादाजी कराची में पधारे। वे वहाँ बहिन भूरी थघाणी के घर में ठहरे। बहिन भूरी ने अपना समस्त जीवन दादाजी को समर्पित कर दिया था। वह कराची में दादाजी की आज्ञानुसार सत्संग की ज्योति जगाती रही। स्मृति समारोह में दादाजी ने बहिन मार्था रूट के गुणों का वर्णन करते हुए उसे भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

दादाजी की आशीर्वाद व प्रेरणा से कराची में नया भवन बन

गया। दादाजी प्रभात् को सत्संग हाल में प्रवचन करते थे, नाम कीर्तन होता था। वे प्रति शनिवार साँझ को गीता वर्ग चलाते थे। वे श्रीमद् भगवद् गीता की शिक्षा सरल मधुर भाषा में सुनाकर मार्गदर्शन करते थे। श्री गंगाराम साजनदास मीरा स्कूल के लिए एक बस लेने के लिए कराची में आया। किसी प्रेमी ने बस दादाजी को स्कूल के लिए उपहार दी, दादाजी ने उस बस का नाम रखा 'Green Gopal Bus' दादाजी एक सप्ताह के लिए कराची में आये थे किन्तु प्रेमिओं की प्यास पूरी करने के लिए वे वहाँ पाँच महीना ठहरे। कराची के विभिन्न स्थानों पर उन्होंने प्रवचन देकर प्रेम व भक्ति की सरिता प्रवाहित की। दादाजी हैदराबाद लौट आये। फिर आठ दिन के बाद वे कराची में पधारे। वहाँ जन्माष्टमी का उत्सव कृष्ट कुंज में मनाया गया। दादाजी ने भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया। प्यारे भाई जशन दादाजी के व्याख्यानों का अंग्रेजी में अनुवाद कर वे लेख 'ईस्ट एंड वेस्ट' पत्रिका में प्रकाशित करते थे। दादाजी फिर हैदराबाद लौट आये। प्यारे जशनजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था इस लिए दादाजी ने उन्हें कराची में माताश्री के घर में रहने के लिए कहा। प्यारे जशनजी को दादाजी के विरह में एक महीना बीत गया। वे अपने प्रियतम गुरूदेव के विरह से व्याकुल लगते थे।

दिवाली का उत्सव सखी सत्संग की ओर से कराची में मनाया गया। दादाजी उसी उत्सव के सम्बंध में कराची में पधारे। प्यारे श्री जशन अपने गुरूदेव का दर्शन कर अत्यन्त प्रफुलित हुए। दिवाली के दिन दादाजी ने गरीबों में मिठाई बाँटी। उन्होंने सत्संग हाल में दिवाली का महत्व बताते हूए कहा कि दिवाली प्रकाश का संदेश देती है। हमारे अंत:करण में अज्ञान का अंधकार है, फिर प्रभु श्री राम कैसे मन मंदिर में आयेंगे। आप अपने मन में ज्ञान की, प्रेम की ज्योति जगाएँ। आज के पावन दिन प्रभु श्री राम १४ वर्ष बन में रहने के बाद, दुष्टों का दमन कर, धर्म की रक्षा कर अयोध्या में पधारे। उनके स्वागत में दिवाली का उत्सव मनाया जाता है। आप आज प्रभु श्री राम का ध्यान करें, चिन्तन करें, श्री हनुमान की भाँति भक्ति में तल्लीन हो जायें।

१४ नवम्बर सन् १९४० श्री गुरू नानकदेवजी महाराज का जन्म

दिन मनाया गया। सबेरे नाम कीर्तन हुआ। दादाजी ने दीन दुखियों की सेवा की। दुपहर को लंगर हुआ। साँझ को दादाजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि गुरू नानकदेव अवतारी पुरूष थे किन्तु भ्रमण करते उन्होंने लाखों मनुष्यों को राम नाम जपाया, अपनी वाणी में नाम की महिमा गाई। श्री गुरू नानकदेव महाराज अपनी वाणी में नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं -

आखा जीवा बिसरै मर जाउ,
आखणि अउखा साचा नाउ।
साचे नाम की लागै भूख,
उतु भूखे खाइ चली अहि दूख।

परमात्मा का स्मरण करता हूँ तो जीवत हूँ, नहीं तो मृतक हूँ। नाम की साधना बड़ी कठिन है। उस साचे नाम की भूख हमें लगे। नाम की भूख सब ही दुखों को नाश करती है, इस लिए दुख दर्द दुखी नहीं कर सकता। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी परमात्मा के नाम को नहीं भूलें।

२५ नवम्बर दादाजी का जन्मदिन मनाया गया। दादाजी ने गरीबों की सेवा की। संध्या काल को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आप लोग आज इस शरीर का जन्मदिन मना रहे हैं, आत्मा तो अजन्मा है। प्रभु ने हमें यह अमूल्य जीवन दिया है सत् कर्म करने के लिए, अपना भविष्य उज्ज्वल करने के लिए, किन्तु हम संसार की कीचड़ में फंसकर परमात्मा को भूल जाते हैं और दुखी होते हैं। गुरू महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं -

स्मरउ स्मर स्मर सुख पावउ,
कलि कलेश तन माहि मिटावउ।

जन्म दिन आत्म निरिक्षण का दिन है। स्वयं से पुछें कि हमने नाम की कितनी पूंजी संग्रह की है? कितने शुभ कर्म किये हैं ? आज आप मुझे आशीर्वाद करें कि मन की वृत्ति नाम से जुड़ी रहे। आप लोगों ने जो माया उपहार रूप में दी वह सेवा कार्यों के लिए प्यारे गंगाराम को देता हूँ, मुझे तो आपका केवल प्यार चाहिए।

१० दिसम्बर गीता जयन्ती के उपलक्ष में दादा वासवाणी ने

प्रवचन करते हुए कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता भगवान श्री कृष्ण के मुख की वाणी है, जिसके श्रवण करने से, अध्ययन करने से मोह का नाश होता है, आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। गीता में सब ही शास्त्रों का सारांश है। उसके अभ्यास से ज्ञान की प्राप्ति होती है। आप श्रद्धा से गीता का अभ्यास करें।

दादाजी हैदराबाद में पधारे, वहाँ प्यासी अखियाँ उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। २५ दिसम्बर दादाजी ने श्री ईषा के सम्बंध में व्याख्यान दिया।

श्री घनश्यामदास मीरचन्दाणी ने फुलेली के निकट पिलाट तीर्थ स्थल बनाने के लिए दादाजी को समर्पित किया। ४ जनवरी सन् १९४१ श्री गुरू गोबिन्दसिंघ महाराज के जन्मदिन वहाँ उत्सव आयोजित किया गया। दादाजी ने वहाँ हवन यज्ञ किया और श्री गुरू गोविदसिंघ के जीवन पर प्रकाश डाला, तत्पश्चात् लंगर का आयोजन किया गया।

दादाजी प्यासियों की प्यास बुझाने के लिए कराची में गये। वहाँ रोहड़ी से मीरा स्कूल के संचालक श्री भगवान मनचुंडिया एवं लाड़काणा से जोतूमल कराची में दादाजी के पास आये। उन्होंने उन्हें रोहड़ी, सक्खर एवं लाड़काणा में आने के लिए प्रार्थना की। दादाजी ने उनका निमन्त्रण स्वीकार किया। ३० मार्च दादाजी ने, सती, शान्ति व प्यारे जशनजी के साथ सक्खर के लिए प्रस्थान किया। सक्खर में वे प्यारे घनश्यामदास के मकान में ठहरे। दादाजी उसी मकान में ही सत्संग करते थे। उन्होंने सक्खर व रोहड़ी के विभिन्न स्थानों पर अमृत वचनों की बरखा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १४ अप्रैल वे हैदराबाद लौट गये और वहाँ नियमित रूप से प्रवचन करते रहे। १२ मई वे कराची में पधारे। वे तीन महीने वहाँ ज्ञान व प्रेम की ज्योति जगाते रहे। सितम्बर में वे हैदराबाद में लौट आये। वहाँ विजयदश्मी के दिन दादाजीने नये भवन की नीव डाली, बहिनों ने "संता के कार्ज आप खलोइया हरि कम करावन आया राम" शब्द गाया। दिवाली के दिन उन्होंने गरीबों में वस्त्र व मिठाई वितरण की।

२५ नवम्बर दादाजी का जन्म दिन कराची में मनाया गया।

दादाजी ने उस दिन्न सुबह को दीन दुखियों व अपाहिजों की सेवा की। साँझ को उन्होंने प्रवचन करते प्रेमियों से कहा कि आप मुझे आशीर्वाद करें, यह मानव जीवन स्मरण व सेवा में सफल हो। जीवन की सार्थकता स्मरण व सेवा में है। आप भी इसी मार्ग पर चलने का प्रयास करें।

प्राथमिक सिन्धी स्कूल हैदराबाद की प्रधानाध्यापिका कुमारी सीता नंदीरामाणी का देहावसन हो गया। विद्यार्थी जीवन से उसका दादाजी से सम्बंध रहा। दादाजी ने उसे भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए उसके गुणों का वर्णन किया। १ जनवरी सन् १९४२ दादाजी ने नूतन वर्ष का संदेश देते हूए परमात्मा से प्रार्थना की कि योरूप व जर्मनी का युद्ध समाप्त हो जाये, और विश्व में शांति का वातावरण उत्पन्न हो।

२१ फरवरी बसंत पंचमी के पावन दिन दादाजी ने मीरा स्कूल के नये भवन की नीव डालते हुए सरस्वती माता को प्रार्थना की। प्रभु की कृपा से मीरा स्कूल का निर्माण कार्यारंभ हुआ।

कभी कभी अपने भी विरोध करते हैं। दादाजी का एक प्रेमी जो मीरा स्कूल कमेटी का सदस्य था, उसका स्वार्थ पूरा नहीं हुआ तो उसने दादाजी के विरूद्ध पत्र छपाकर बाँटे। अहम् भाव को पूरा करने के लिए मनुष्य क्या क्या नहीं करता ! दादाजी कराची में गये तो भी उस व्यक्तिने दादाजी के विरूद्ध पत्र प्रकाशित कर घरों में बांटे। दादाजी ज्ञानी गंभीर थे, उन्होंने विरोध के कारण उस व्यक्ति पर क्रोध नहीं किया । वे अपनी आनंदावस्था में मग्न रहे। उनकी यह धारणा थी -

Love is a Transformer Power

प्रेम में परिवर्तन लाने की शक्ति है। प्यार द्वारा आप दुश्मन को भी दोस्त बना सकते हैं। दादाजी सदैव सब से प्यार का व्यवहार करते थे। कराची में दादाजी को कुछ प्रेमियों ने आकर बताया कि अमुक व्यक्ति आपके विरूद्ध योजनाएं बना रहा है। तब दादाजी ने मुस्कराते हुए कहा -

मारे राखे एको आप,
मान्ख के कुछ नाहीं हाथ।

वह विरोधी व्यक्ति पछतावा कर फिर सत्संग में आने लगा।

दादाजी प्यार के सागर, उन्होंने उसका तिरस्कार नहीं किया, किन्तु उसे प्यार किया। दादाजी आठ महीने कराची में सत्संग व सेवा की ज्योति जगाते रहे। दादाजी गरीब घरों में अन्न -धन की सहायता बहिनों द्वारा भेजते रहे।

टंडे आदम में श्री किशनचन्द पोहोख्याणी ने पूज्य पिता की पावन स्मृति में "सेठ लेखराज खीअलमल कन्या पाठशाला" का निर्माण किया। दादा साधु वासवाणी ने उस कन्याशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्यारे किशनचंद को धन्यवाद है जिसने पूज्य पिता श्री की पावन स्मृति में यह विद्यामंदिर बालिकाओं के लिए बनवाया है। आज सिन्ध के विभिन्न नगरों में कन्याशालाएँ आरंभ करने की अत्यन्त आवश्यकता है। हमारी बालिकाएँ, बहिनें विदुषियाँ बनेंगी तो हमारे घर स्वर्ग- सम बन जायेंगे। यहाँ बालिकाओं को न केवल पाठ्य पुस्तकें पढ़ाई जायें किन्तु उन्हें धार्मिक पुस्तकें व ग्रन्थों का ज्ञान भी दिया जाये, भारतीय आदर्श नारियों के जीवन चरित्र सुनाये जायें।

श्री किशनचन्द ने दादाजी का स्वागत करते हुए आभार माना। शाम को ४ बजे नगर पालिका की ओर से दादाजी के स्वागत में एक समारोह आयोजित किया गया। नगर पालिका के अध्यक्ष ने सन्मान पत्र पढ़कर दादाजी को भेंट किया। दादाजी ने वहाँ व्याख्यान करते हुए कहा कि मैं सिन्धी जाति का एक विनम्र सेवक हूँ, सेवक का काम है सेवा करना। सेवा का फल है अधिक सेवा करना। आज आपने जो मेरा सन्मान किया है, वह मेरे कार्य का सन्मान है, आप ने अपनी महानता दिखाई,मैं सब का आभारी हूँ। आप नगर पालिका द्वारा लोगों को अधिक सुविधाएं दें, उनकी अधिक सेवा करें।

१२ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। दादाजी स्वयं मोदी बन कर गरीब भाई बहिनों को आटा चॉवल, दाल आदि खाद्य्य पदार्थ दे रहे थे। शाम को दादाजी प्रेमियों के साथ शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए। रात को उन्होंने श्री गुरू नानक के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

मीरा स्कूल का वार्षिक उत्सव १९ नवम्बर मनाया गया। उत्सव

के मुख्य अतिथि डाँ. अरंडिल थे। दादाजी उनके साथ बड़ी आत्मीयता के साथ मिले। दादाजी ने अतिथि का स्वागत करते हुए ऋषियों का संदेश सुनाया। मुख्य अतिथि ने मीरा स्कूल की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस मंदिर के विद्यार्थी भाग्यवान हैं, जिन्हें महान संत, विद्वान साधु वासवाणी का मार्गदर्शन व आशीर्वाद मिलता रहता है। मुझे प्रसन्नता है कि यहाँ भारतीय आदर्शों के अनुसार शिक्षा दी जाती है। श्री गंगाराम साजनदास ने आभार प्रदर्शन किया।

२५, २६, २७ नवम्बर कलकत्ता में गीता जयन्ती के उपलक्ष में गीता सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में दादाजी को आमंत्रित किया गया। दादाजी तो गीता के भक्त थे, उन्होंने यह निमंत्रण स्वीकार किया। दादाजी, प्यारे जशन, बहिन सती व शान्ति के साथ २४ नवम्बर कलकत्ता में पधारे। वे वहाँ श्री सतरामदास कृपलानी के मकान पर ठहरे। श्री सतरामदास एवं उसकी पत्नी सुलछणी तो दादाजी के भक्त थे। उन्होंने प्रेम के साथ दादाजी की सेवा की।

२५ नवम्बर दादाजी का जन्मदिन था। प्रभात को उन्होंने परमात्मा से प्रार्थना की और हैदराबाद व कराची के प्रेमियों को जन्म सम्बंध में संदेश भेजा। श्री सतरामदास ने गरीबों के लिए खाना बनवाया था। वे दादाजी को एक गरीबों की बस्ती में ले गये। दादाजी ने अपने हाथों से गरीबों को भोजन खिलाया।

२५ नवम्बर वे कलकत्ता में आयोजित गीता जयन्ती सम्मेलन के उद्‌घाटन समारोह में गये। वे वहाँ कई विद्वानों एवं गीता भक्तों से मिले। २६ नवम्बर सुबह को दादा साधु वासवाणी ने सम्मेलन मेंअध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि न केवल भारत के विद्वान किन्तु विदेश के विद्वान दार्शनिक भी भगवद् गीत को विश्व का सर्वोत्तम ग्रंन्थ मानते हैं। सिकन्दर बादशाह जब यूनान से दुनिया पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रस्थान करते हैं तो वे अपने गुरूदेव अरस्तु के पास आशीर्वाद लेने जाते हैं। तब उनके गुरू उन्हें कहते हैं कि यदि तुम भारत में जाओ तो मेरे लिए वहाँ से श्रीमद् भगवद् गीता, गंगाजल व भारत की माटी सौग़ात रूप में लेकर आना। इस से प्रमाणित होता है कि विदेश के विद्वान गीता को कितना न महत्व देते थे ! किन्तु आज

हम अपनी अमूल्य निधि गीता को इतना महत्व नहीं देते हैं।

श्रीमद् भगवद् गीता भगवान श्रीकृष्ण के मुख से प्रवाहित ज्ञान, भक्ति की त्रिवणी हैं।

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता ।।

भगवान की इस ज्ञान गर्भित वाणी का श्रवण मनन, व चिन्तन करें। गीता की शिक्षा केवल अर्जुन के लिए नहीं थी, किन्तु हम सब के लिए है। हम अपने अपने कर्तव्यों का पालन करें। हम गीता के मूल सिद्धांतो पर चलने का प्रयास करें।आयोजकों को इस सम्मेलन आयोजित करने के लिए धन्यवाद है।

कलकत्ता में कई संस्थाओं ने दादाजी को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। दादाजी के विचारों, व्यवहार व व्यक्तित्व से कलकत्ता में कई लोग प्रभावित हुए। केशब चन्द्रसेन की बेटी महाराणी सुचारूदेवी ने भी उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित किया। दादाजी को नई नई पुस्तकें पढ़ने की चहना रहती थी। वे कलकत्ता की पुस्तकों की दुकानों पर जाकर नई पुस्तकों का अवलोकन कर कुछ पुस्तकें खरीद करते थे। एक रविवार को बोद्धी हाल में दादाजी ने विभिन्न धर्मों के श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम धर्म के मूल सिद्धांतों को भूल गये हैं। सभी धर्म प्रेम, सद्भावना, सत्य, अहिंसा, दया व शान्ति का संदेश देते हैं। आप दूसरों के धर्मों में हस्तक्षेप नहीं करें। विवाद व विरोध से तनाव और झगड़े होते हैं। आप अपने अपने धर्म के अनुसार चलें तो आपका जीवन सुखमय होगा।

कुछ समय पूर्व बेंगाल में भयंकर अकाल पड़ा था। इसके कारण कलकत्ता में कई गरीब लोग भूख के कारण मर रहे थे। उनकी दयनीय दशा देखकर दादाजी का मन बार बार भर आया। कलकत्ता में जिस धनवान के यहाँ वे ठहरे थे, वह धनवान उन्हें विभिन्न खाद्य पदार्थ खाने के लिए देता था, किन्तु दादाजी बहुत ही थोड़सा खाना खाते थे। वे कहते थे कि हमारे लाखों भाई बहिनों को खाना नहीं मिलता है और मैं पेट भरकर खाना खाऊँ! यह उचित नहीं है। गरीब भूखों के प्रति दादा वासवाणी के मन में सहानुभूति थी। वे भूखों को

खाना खिलाने में आनंद का अनुभव करते थे।

एक दिन वे वहाँ भूखों को खिलाने के लिए रोटिया व सबज़ी बनवाकर कलकत्ता के कालीघाट मंदिर की ओर गये जहाँ सैकड़ों गरीब, भूखे, वस्त्र हीन निराश्रय लोग बैठे थे। दादाजी जैसे उन में खाना बांटने लगे तो लोगों की भीड़ आकर टूट पड़ी। भूख के कारण ऐसी स्थिति होती है। उसी समय दादाजी के एक प्रेमी उन भूखों पर क्रोधित होकर कहने लगा कि तुम लोगों में अनुशासन नहीं है। एक बूढ़े शक्तिहीन भूखे व्यक्ति ने कहा,हम कई दिनों से त्रिस्त हैं ! और आप अनुशासन की बात करते हैं ! उसी समय दादाजी ने उस व्यक्ति को गले लगाते हूए कहा कि यह हमारे व्यक्ति की गलती है। हम तो प्रेम से आपको खाना खिलाने आये हैं। प्रभु ने हमें आपकी सेवा करने का अवसर दिया है। दयालु दादाजी जितने दिन कलकत्ता में ठहरे, वे प्रति दिन खाना बनवाकर भूखों को खाना खिलाकर आते थे। सेवा करते यदि किसी प्रेमी से कोई गलती होती थी तो वे स्वयं क्षमा याचना करते थे। वे कहते थे इन दुखियों को प्रेम से खाना खिलाएं ये भी हमारें अंग हैं।

जमशेदपुर से भी दादाजी को निमंत्रण आया। ३१ जनवरी वे जमशेदपुर में पधारे। वहाँ दादाजी के आगमन में स्वागत समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता टाटा मिल्स के वृष्ठ अधिकारी मिस्टर कतार ने की। उन्होंने दादाजी का स्वागत करते हुए कहा कि हमारा नगर भाग्यशाली है कि यहाँ सिन्ध की महान विभूति साधु वासवाणी पधारे हैं। दादाजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि हमारे विचार व व्यवहार में सत्य का प्रयोग होना चाहिए। सत्य बोलने से आध्यत्मिक शक्ति बढ़ती है। सत्यमेव जयते। परमात्मा भी सत् चित्त आनंद रूप है। कितनी भी कुरबानी करनी पड़े, सत्य का मार्ग नहीं छोड़ें, किसी न किसी दिन आपको सफलता मिलेगी, मन की शान्ति प्राप्त होगी।

दूसरे दिन दादाजी ने राम मंदिर में प्रभु श्री राम की लीलाओं का हिन्दी भाषा में वर्णन किया। बंगाली हाल में उन्होंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानन्द के सम्बंध में प्रभावोत्पादक

व्याख्यान किया। एक पारसी अफसर दादाजी के पास आया, उसने उनसे कहा कि मुझे प्रभु का दर्शन करवायें। दूसरे, तीसरे दिन भी उसने दादाजी से यह विनय की। दादाने कहा कि यदि तुम्हें परमात्मा के दर्शन की प्यास है तो तुम अभी अपने माथे के सब बाल कटवाके आओ। वह अफसर विचारने लगा मैं गंजा बन जाऊँगा तो लोग हंसी उड़ायेंगे। उसने दादाजी से कहा कि वह बाल नहीं कटवायेगा। दादाजी ने उसे समझाते हुए कहा कि मेरे कहने का अभिप्राय है कि पहले तुम अहम् को भूलो फिर तुम्हें प्रभु का दर्शन होगा।

जमशेदपुर की ईवनिंग क्लब में दादाजी ने अंतिम व्याख्यान देते हुए श्रोताओं को प्रेमा भक्ति की डोरी में बांध लिया। दादाजी अब कलकत्ता में लौट आये। कलकत्ता की हरि सभा में संत तारचरण का जन्मदिन मनाया गया, दादाजी को उस उत्सव में आमंत्रित किया गया। उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलओं का ऐसी शैली में, वर्णन किया की श्रोता मंत्र मुग्ध होकर हरि बोल, हरि बोल की धुन में खो गए। दादाजी ने रामकृष्ण वेदांत आश्रम में भी प्रवचन किया।

ब्रह्मो समाज से दादाजी के पहले से ही सम्बंध थे। वे केशबचन्द्रसेन की विचारधारा से प्रभावित हुए थे। ब्रह्मो समाज ने उन्हें व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। दादाजी ब्रह्मो समाज में आए। वे पहले गुरूदेव प्रमोथोलाल की कुटिया में गये और वहाँ साष्टांग प्रणाम किया फिर वे उनके समाधि स्थल पर गये। दादाजी ने ब्रह्मो समाज हाल में श्री केशबचन्द्र सेन के 'नव विधान' के सम्बंध में विचार व्यक्त किये।

नवद्वीप के गोविन्द बाबू ने कलकत्ता में सुना कि साधु वासवाणी आये हुए हैं। उसने दादा वासवाणी की पुस्तकें पढ़ी थी। वे उनकी विचार धारा से पहले ही प्रभावित थे। वे उनके दर्शन के प्यासी थे। वे दादा वासवाणी के पास आये उन से ज्ञान गोष्ठी भी की। उन्होंने दादाजी से नवद्वीप में पधारने की विनय की। दादाने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। गोबिन्द बाबू नवद्वीप में एक स्कूल व कालेज चलाते थे। दादाजी उनके साथ नवद्वीप में आये। लोगों को उनके प्रति श्रद्धा थी, वे उन्हें संत कह कर सम्बोधित कर रहे थे। दादा ने उन्हें

नम्रता से कहा "में निमाई का दास हूँ, अर्थात् श्रीचैतन्य महाप्रभु का सेवक हूँ। वहाँ दादाजी ने स्कूल व कालेज के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप भाग्यशाली हैं कि श्री चैतन्य महाप्रभु के लीला स्थल पर रहते हैं। उन्होंने न केवल बंगाल में किन्तु सारे भारतवर्ष में श्री कृष्ण के प्रेमाभक्ति की सरिता प्रवाहित की। आप जितनी अधिक विद्या प्राप्त करें उतने विनम्र बनें। अपने अध्यापकों व माता पिता की आज्ञा का पालन करें, उनकी श्रद्धा से सेवा करें। प्यारे प्रभु को भी श्रद्धासे प्रार्थना करें।

'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्'

नवद्वीप के रामकृष्ण मठ में भी दादाजी ने ज्ञानगर्भित प्रवचन करते हुए कहा कि परमहंस स्वामी रामकृष्ण एवं स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं को अपनाएँ। उनके जीवन चरित्र का अभ्यास करें। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

दादाजी ने कलकत्ता से बनारस के लिए प्रस्थान किया। वे बनारस में राधा स्वामी बाग में आकर ठहरे। वहाँ हिन्दू विश्व विद्यालय में पंडित मदनमोहन मालवीय ने उन से ज्ञान गोष्ठी की। दादाजी ने विद्यार्थियों व प्राध्यापकों को सम्बोधित करते हूए कहा कि मैं भाग्यशाली हूँ कि आज मुझे महान विद्वान शिक्षा शास्त्री पंडित मदनमोहन मालवीय का दर्शन हुआ है। हम दोनों के विचारों में समानता है। यह हिन्दु विश्व विद्यालय भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति का संरक्षक बनेगा। आप भारत के धार्मिक शास्त्रों का गहन अध्ययन कर विश्वा का मार्गदर्शन कर सकते हैं। आप अपनी संस्कृति, सभ्यता को कभी नहीं भूलें। आपके जीवन में देश भक्ति व ईश्वर भक्ति का सुंदर संगम होना चाहिए। भारत की आज़ादी की प्राप्ति के लिए दृढ संकल्प करें। मुझे प्रसन्नता है कि यहाँ संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया जाता। संस्कृत देववाणी है। संस्कृत में ही हमारे वेद -शास्त्र लिखे हुए हैं। आप इस विश्व विद्यालय से विद्वान बनकर विश्व को आलोकित करें।

दादाजी ने गंगा नदी में डुबकी लगाकर विश्वनाथ जी के मंदिर का दर्शन किया। गंगा किनारे कई भिक्षुक व गरीब बैठे थे। दादाजी ने

उन्हें खाना खिलाया। दादाजी ने सारनाथ मंदिर का भी दर्शन किया। काशी से लौटते वे दो दिन लाहोर में ठहरे। वे वहाँ हीरानन्द भोजराज के घर में ठहरे। वे लाहोर में श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज के स्थान पर गये। वे वहाँ कुछ समय श्री गुरू अर्जुनदेव का ध्यान करते लीन हो गये। उन्होंने लाहोर से हैदराबाद के लिए प्रस्थान किया। रोहड़ी स्टेशन पर कई श्रद्धालु प्रेमी उनका दर्शन करने आये। दादाजी ने उन्हें प्रसाद व आशीर्वाद दिया। जब वे हैदराबाद स्टेशन पर पहुँचे तो कई प्यासी प्रेमी भीगी आँखो से उनसे मिले। दादाजी सब से प्रेम के साथ मिले। वे वहाँ नियमित रूप से सत्संग व सेवा की ज्योति जगाते रहे।

उन दिनों अंग्रजों व जर्मन का महाभारी युद्ध हो रहा था। सब ही वस्तुओं के भाव बढ़ गये। दादाजी ने जिलाध्यक्ष से मुलाकात कर खाद्य्य सामग्री सस्ते मूल्य में जरूरतमंदो को उपलब्ध करवाई। प्रति दिन वे श्री जशन एवं श्री गंगाराम के साथ टहलने जाते थे। एक दिन टहलते टहलते दादाजी ने प्यारे गंगाराम से कहा कि मीरा स्कूल के लिए विशाल नई इमारत बननी चाहिए। दादाजी की आज्ञा श्रोधार्य कर प्यारे गंगाराम ने धन संग्रह कर, सीमेंट, स्टील आदि की व्यवस्था कर नये भवन के निर्माण का कार्यारंभ किया। दादाजी की कृपा व आशीर्वाद से मीरा स्कूल के लिए नया भवन बन गया।

रोहड़ी व सक्खर में श्री भगवानदास मनचुंडिया और लाड़काणा में श्री जोतूमल लीलाणी के प्रयास से मीरा स्कूल संचालित थे। दोनों प्रेमियों ने दादाजी को पत्र लिखे, "आप यहाँ आकर हमारी प्यास पूरी करें और हमारा मार्गदर्शन करें , दादाजी ने प्यारे भगवान को पत्र लिखा कि तुम मीरा स्कूल के लिए दस हजार रूपये संग्रह करो तो मैं आजाऊँगा। थोड़े ही दिनों में उसने दस हजार रूपये संग्रह कर दादाजी को पत्र लिखा, "आपकी आज्ञानुसार मैंने मीरा स्कूल के लिए दस हजार इकट्ठे किये हैं, अब देरी नहीं करें, नंदलाला, तेरी राह तके ब्रज बाला।" दादाजी ने हृदय स्पर्शी पत्र पढ़कर एक सप्ताह के पश्चात् रोहड़ी के लिए प्रस्थान किया। रोहड़ी में मीरा स्कूल का उत्सव आयोजित किया गया। स्कूल की बालिकाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री भगवानदास ने दादाजी का स्वागत करते हुए उन्हें

दस हजार रूपये भेंट किये। दादाजी ने तत्काल ही दस हजार रूपये भगवानदास को मीरा स्कूल के लिए लौटाते, बालिकाओं को सम्बोधित कर उनका मार्गदर्शन किया। कई श्रद्धालु प्रेमी दादाजी का दर्शन करने के लिए उनके पास आये। वे साई बेदल-बेक्स, संत वसवणशाह एवं अन्य संतों के स्थानों पर गये। वे एक सप्ताह रोहड़ी के प्रेमियों को वचनामृत पिलाकर सक्खर में पधारे। सक्कर पंचायत ने उनका स्वागत किया। वे प्यारे घनश्यामदास के घर में ठहरे। सक्खर में उन्होंने विभिन्न स्थानों पर प्रवचन किया। वे श्री साधु बेला तीर्थस्थान पर गये। वहाँ वे स्वामी श्री हरिनामदास महाराज से मिले। दोनों सत्पुरूषों ने आपस में सामाजिक एवं राष्ट्रीय विषयों पर विचार विमर्ष किया। दोनों महापुरुष न केवल महान संत थे, किन्तु देश भक्त, समाज सुधारक और परोपकारी, कर्म योगी सत्पुरूष थे। दादाजी ने कुछ समय श्री साधुबेला के प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करते वहाँ विश्राम किया।

दादाजी सक्खर से लाड़काणा में आये। वहाँ जोतूमल लीलाणी एवं अन्य प्रेमियों ने दादाजी का स्वागत किया। वे वहाँ रूकमणी किशनद पंजाबी के घर में ठहरे। उन्होंने वहाँ मीरा स्कूल व अन्य स्थानों पर व्याख्यान देते हुए मार्गदर्शन किया। वे कवि किशनचन्द बेवसि के साथ मिलने के लिए उनके मकान पर भी गये। कवि किशनचन्द बेवस फूले नहीं समाये। दादाजी की नम्रता देखकर कवि बेवस आश्चर्य में पड़ गये। दोनों सत्पुरूषों ने आपस में विचार विमर्ष किया। दोनों सत्पुरूषों के विचारों में समानता थी। दोनो कवि हृदय व ईश्वर के भक्त थे। लाड़काणा के प्रेमियों की प्यास पूरी कर दादाजी शिकार पुर में पधारे। शिकारपुर में वे वहाँ सेठ लुणीदासिंघ के यहाँ ठहरे। कुछ प्रेमियों ने उनसे कहा, कि "दादाजी! आप यहाँ पाँच वर्ष के पश्चात् पधारे हैं, आप के दर्शन के लिए हम आँखे बिछा रहे थे, जल्दी जल्दी यहाँ आकर हमें अपने मधुर वचनों का अमृत पिलाएं, प्रभु की राह दिखाएं।" दादाजी प्रेमियों का स्नेह प्राप्त कर प्रसन्न हुए।

२०० वर्ष पूर्व शिकारपुर सिन्ध में महान संत कवि सामी साहब

का जन्म हुआ था। दादाजी के मन में उनके प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे सामी साहब के जन्मस्थल को तीर्थस्थान मानते थे। जहाँ भी कोई साधक भक्ति साधना करता है वह स्थान पश्चात् में तीर्थस्थल बन जाता है। दादाजी जब भी शिकारपुर में आते थे तब वे सामी साहब के मकान में जाकर नतमस्तक होते थे। इसी बार भी वे वहाँ गये। उन्होंने देखा एक छोटे से कमरे में ज्योति जल रही है, शेष मकान दुकान के रूप में परिवर्तित किया गया है। सामी साहब के स्थान की यह दशा देखकर दादाजी की आँखों में आँसू आ गये। उन्होंने उसी समय कहा कि यह सारा मकान खरीद कर इसे सामी साहब का पुण्य स्मृति स्थल बनाना चाहिए। यहाँ उनकी अमृत तुल्य वाणी का पठन व श्रवण होना चाहिए। उनका भक्ति काव्य ज्ञान का भंडार है। वे सिन्धी संत काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि थे।

दादाजी ने शिकारपुर के विभिन्न स्थानों पर प्रवचन देकर प्रेमियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने शिकारपुर वासियों को संदेश देते हुए कहा कि आपकी संतान आपकी सच्ची निधि है। आप अपनी संतान में शुभ संस्कारों के बीज बोएं, केवल माया संग्रह में मग्न नहीं रहें। अपनी माया परोपकार के कार्यों में और श्वास नामस्मरण में सफल करें। आप भाग्यवान हैं कि आपके नगर में ही महान संत कवि सामी साहब ने जन्म लिया। उनकी वाणी का अभ्यास करें। उनकी ज्ञान गर्भित, सरल मधुर वाणी सदैव हमारा मार्गदर्शन करती है। उनकी वाणी में समाहित शिक्षानुसार चलें तो आपका कल्याण होगा।

दादाजी हैदराबाद रामनगर में लौट आये। वे वहाँ नियमित रूप से सत्संग की ज्योति जगाते रहे। दादाजी की कृपा से प्यारे गंगाराम मीरा स्कूल का विस्तार करते गये। एक बार दादाजी ने अपने सेवक भाई बहिनों से कहा कि आप जो भी कार्य करें उस में आसक्ति नहीं रखें, वह कार्य प्रभु के श्री चरणों में अर्पण करें तो आपको कार्य में सफलता प्राप्त होगी। आपके कठिन कार्य भी आसान हो जायेंगे।

सन् १९४४ ई में एक दिन दादाजी ने अपने संस्था के सेवकों की सभा में कहा कि अब मैं इस संस्था के प्रधान पंद का परित्याग करता हूँ, मैं अध्यक्ष नहीं, आपका दास बन कर सेवा करूँगा। उन्होंने

मीरा स्कूल के बोर्ड के प्रधान पद का भी त्याग कर दिया और कहा कि परमात्मा हम सब का प्रधान है, मैं सेवक बनकर सेवा करूगाँ !

दादाजी की इतनी त्याग भावना देखकर सभी सेवक सेविकाएं आश्चर्य में पड़ गये। सच्चे संत पदों का परित्याग करते हैं। वे कार्य करते अकर्ता रहते हैं। उन्हें तो केवल प्रभु मिलन की प्यास रहती है। वे जो भी कर्म करते हैं, वह प्रभु अर्पणम् ! दादाजी की ऐसी त्याग भावना देखकर सब आश्चर्य में पड़ गये।

२५ नवम्बर सन् १९४६ दादा वासवाणी का जन्मदिन उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के पश्चात् दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। साँझ को प्रेमियों की ओर से उन्हें एक लाख तेतीस हजार रूपये भेंट किये गये। दादाजी ने वह माया प्यारे गंगाराम को नये मंदिर के निर्माण हेतु दे दी। दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि मेरी चाहना है कि गीता मंदिर बनजाये। जहाँ श्रीमद् भगवद् गीता का अभ्यास किया जाये, साथ साथ अन्नपूर्णा भंडार भी हो। जो भी भूखा आये व पेट भरकर खाना खाकर जाये। आप लोग मुझे कितना न स्नेह व सन्मान देते हैं, आज भी आपने माया और अन्य वस्तुएँ मुझे भेंट की, उसके लिए मैं आभारी हूँ। मुझे आपकी सौगातें नहीं, स्नेह चाहिए। आप प्रभु से भी स्नेह सम्बंध जोड़ें, माया का मोह छोड़ें तो सुख का अनुभव करेंगे।

एक दिन दादाजी प्यारे श्री जशन के साथ टहलने के लिए गये। रास्ते में उन्हें एक मुसलमान सूफी फकीर मिला। वह कभी कभी दादाजी के पास आता जाता था। उसने दादाजी से सिन्ध के महान सूफी कवि शाहलतीक के साधना स्थल भिट्ट का उल्लेख किया और कहा कि प्रति शुक्रवार रात को वहाँ शाहलतीक की वाणी बड़े प्रेम के साथ गाई जाती है। आप भी किसी शुक्रवार को वहाँ जाकर आनंद प्राप्त करें। उसी दिन शुक्रवार था। दादाजी शाहलतीफ की वाणी से बहुत ही प्रभावित थे। वे अपने उपदेशों में शाहलतीफ का उल्लेख भी करते थे तो उनकी वाणी के संदर्भ भी देते थे।वे शहालतीफ की वाणी सुनकर मंत्र मुग्ध हो जाते थे। उसी दिन दादाजी प्यारे जशन के साथ हैदराबाद से हालन के लिए निकले। वहाँ से वे घोड़ा गाड़ी द्वारा

शाहलतीफ की भिट्ट पर आये, थोड़ा सा पैदल भी चलना पड़ा। रात का समय था, वहाँ कई साधक व दरवेश शाह लतीफ की वाणी गा रहे थे। दादाजी भी सारी रात प्यारे जशन के साथ समाउ (संगीत सभा) में बैठकर शाहलतीफ की वाणी का रसास्वादन करते रहे। शाहलतीफ विरह के शाइर थे, तो दादाजी भी विरह के कवि थे। दोनों विभूतियों की विचार धारा में समानता थी।

अगस्त सन् १९४७ ई में देश के विभाजन के कारण सिन्ध में भी परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो गई। सिन्ध में हिन्दू-मुसलमानों का आपस में कितना न मेलझोल था। कुछ राजनीतिज्ञों ने दूध में जहर डाल दी। चारों ओर वातावरण दूषित हो गया। कराची हैदराबाद एवं सिन्ध के अन्य नगरों में धर्म के नाम लोग लड़ने लगे। सिन्धी हिन्दुओं को विवश होकर सिन्ध छोड़ना पड़ा।

मीरपुर ख़ास के रहने वाले श्री चेलाराम ने ५५ वर्ष की आयु में सेवानिवृत होकर शेष जीवन दादा वासवाणी के चरणों में अर्पित किया। वे सिन्ध के विभिन्न नगरों व गांवो में दादाजी के साहित्य का प्रचार करते रहे। हैदराबाद में जब मीरा स्कूल की नई इमारत बन रही थी, तब वह उसकी देखभाल करता था। एक दिन वह उसी इमारत की सीढ़ही से खिसक कर नीचे गिर पड़ा और तत्काल ही उसका देहावसन हो गया। दादाजी ने उसे भावभीनी श्रद्धांजलि आर्पित करते हुए कहा कि प्यार चेलाराम, धनवान नहीं, विद्वान नहीं किन्तु श्रद्धा व अर्पणम् की मूर्ति था। वह कितनी न लगन के साथ यहाँ सेवा करता था। मीरा स्कूल व सखी सत्संग को ऐसे निष्काम नम्र सेवकों की आवश्यकता है। आओ तो सब मिलकर उनकी शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करें।

एक वर्ष बीत गया दादाजी कराची नहीं गये। वहाँ से प्रेमियों के पत्र आ रहे थे। दादाजी ने प्रेमियों की प्यास बुझाने के लिए कराची प्रस्थान किया। वे वहाँ अमृत वचनों की वर्षा करते रहे। देश विभाजन के कारण कई बंगाली-पंजाबी मुसलमान भारत छोड़ कर सिन्ध में आये ! पंजाब में रक्त की नदी बहने लगी। सिन्ध में चारों ओर अशांन्ति व हिंसा का वातावरण पैदा हुआ। दादाजी कराची में थे तब उन्हें शोक समाचार मिला कि प्यारे लोकूमल हीरानन्द कृपलाणी का

शैतानों ने रात को खून कर दिया। श्री लोकूमल धनवान थे किन्तु बहुत ही विनम्र थे। वे दादाजी के सत्संग में आते थे। वे दादाजी के भक्त थे। अपने प्रेमी की ऐसी हत्या देखकर दादाजी बहुत उदास हुए। उन्होंने शमशान भूमि व सत्संग में प्यारे लोकूमल के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें हृदय स्पर्शी श्रद्धांजलि अर्पित की।

२६ दिसम्बर १९४७ में हैदराबाद में साम्प्रदायक झगड़ा इतना तो बढ़ गया कि सरकार को फिफ्यू लगाना पड़ा। कई हिन्दू परिवारों को लूटा व मारा गया। ऐसी हिन्सात्मिक घटनाएं सुनकर दादाजी का मन भर आया कि सुफियों व संतों की भूमि में क्या हो रहा है ! उन्होंने प्रभु से शान्ति के लिए प्रार्थना की।

३० जनवरी १९४८ दिल्ली के बिरला मंदिर में प्रार्थना करते महान विभूति महात्मा गांधी की हत्या की गई। घर को आग लगी घर के चराग़ से ! यह शोक समाचार सुनकर दादाजी बहुत ही उदास हुए उनकी आँखो से अश्रुधारा प्रवाहित हुई। वे एकांत में बैठकर प्रार्थना करने लगे। महात्मा गांधीजी को भावमीनी श्रद्धांजलि देते हुए दादाजी की आँखो से आँसूओं की धारा प्रवाहित हुई।

१५ अगस्त १९४८ दादाजी ने आजादी दिवस के उपलक्ष में संदेश देते हुए कहा कि आज आप लोग आजादी दिवस के सम्बंध में खुशियाँ मना रहे हैं किन्तु मेरा मन दुखी है। सच्ची आज़ादी तो एकता व प्रेम में है। हिंसा व आतंक का वातावरण देखकर मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ, कि हम भाईचारा नहीं भूलें, अहिंसा व शान्ति के पथ पर चलकर जान या माल की हानि नहीं करें।

'मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखाना।' इस उक्ति को नहीं भूलें। एक दूजे के लिए सद्‌भावना रखें। हम सब प्रभु की संतान हैं। आवेश में आकर अशोभनीय काम नहीं करें।

११ सितम्बर १९४८ ई में महमद जनाह पाकिस्तान के अध्यक्ष संसार से चल बसे। प्रतिदिन की भाँति सत्संग में कणाह साहब का प्रसाद बाँटा गया। कुछ ईर्ष्यालु मुसलमानों ने गलत उफवाह फैलाई कि साधु वासवाणी ने जनाब जनाह की मौत की खुशी में हलवा बाँटा है। इसी कारण दादाजी को खून करने की धमकियाँ आई। स्वार्थी

लोगों ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए दादाजी पर आरोप लगाये। दादाजी रात को भाई बहिनों से बातचीत कर रहे थे, द्वार बंद थे। कुछ मुसलमान भाईयों ने आवेश में आकर घर में पत्थर व ईंटे फेंकी और दादाजी के विरूद्ध प्रचार किया।

दादाजी ने शान्तचित्त होकर प्रभु से प्रार्थना की। थोड़े ही दिन बाद हैदराबाद दक्खन में लड़ाई आरंभ हुई तो पकिस्तान के मुसलमानों के मन में बदले की आग धधक उठी। फिर तो सारी सिन्ध में झगड़े हुए, सिन्धी हिन्दुओं पर असहनीय अत्याचार हुए। कई हिन्दुओं ने खाली हाथ भारत के लिए प्रस्थान किया।

कराची में ऐसा भय व आतंक का वातावरण देखकर कई प्रेमी दादाजी का आशीर्वाद लेकर भारत चले गये। दादाजी ने महसूस किया कि अब सिन्ध में रहना कठिन है। उन्होंने कराची में सत्संग का भवन बेच दिया। वे थोड़े ही दिनों के बाद फिर हैदराबाद में आये। मीरा स्कूल में अब हिन्दु बालिकाएँ कम होती गई और मुसलमान बालिकाएँ दाखिल होती गई। प्रधानाध्यापिका बहिन हरीदेवी उन्हें भी हिन्दु बालिकाओं जैसा प्यार देती रही। दादाजी विशाल हृदय थे। उनके मन में सब ही धर्मों के लिए सन्मान की भावना थी।

मुसलमानों में अपनेपन का भाव उत्पन्न करने के लिए श्री गंगाराम ने एक सभा आयोजित की, जिस की अध्यक्षता सिन्ध विश्व विद्यालय के उपकुलपति मिस्टर हलीम ने की। दादाजी ने इस्लाम के मूल सिद्धांतो का विवेचन करते हुए कहा कि प्रत्येक धर्म, मज़हब हमें प्रेम व शान्ति का पैग़ाम देता है। हम मानवता का व्यवहार करें एक दूसरे के लिए सद्‌भावना होनी चाहिए। धर्म के नाम रक्त की धाराएँ बहाना ठीक नहीं। आओ तो आज एकता व शान्ति स्थापित करने का संकल्प करें।

कई हिन्दु बालिकाएँ अपने परिवारों के साथ भारत में चली गई। अब मीरा स्कूल में अधिकतर मुसलमान बालिकाएँ पढ़ती थीं। कट्टर मुसलमानों को यह बात ठीक नहीं लगी कि स्कूल में पढ़ने वाली अधिक बालिकाएँ मुसलमान और उसके व्यवस्थापक हिन्दू हैं। उन कट्टर मुसलमानों ने इसके विरूद्ध शोर मचाया कि साधु वासवाणी की

संस्था को नष्ट कर दो। उन दिनों हैदराबाद के जिलाध्यक्ष एक मुसलमान थे, किन्तु उनके मन में दादाजी के प्रति श्रद्धा व सद् भावना थी। उन्होंने डॉ. मंघनमल द्वारा दादाजी को संदेश भेजा कि परिस्थितियाँ ऐसी हो गई हैं, कि आपको अब भारत में जाना चाहिए। दादाजी ने यह संदेश सुनकर कहा कि जो प्रभु की इच्छा ! प्रेमियों, आप मेरी कोई चिन्ता नहीं करें। भगवान भला करेगा। दूसरे दिन रात के समय दादाजी को शोक समाचार मिला कि श्री मोतीराम गिदवाणी का खून कर, उसे बोरी में डालकर गुरूसंगत पार्क के एक बेंच पर वह बोरी रखी गई। ऐसे दु:खद समाचार सुनकर दादाजी बहुत ही उदास हुए।

दूसरे रात को दादाजी एकांत में ऊपर चिन्तन कर रहे थे, कि जिस मातृभूमि सिन्ध के लिए मेरे आँखों में स्वप्न थे, उसकी ऐसी दुर्दशा ! दादाजी ने अपने मन से पूछा क्या अब मुझे मातृभूमि को छोड़ना चाहिए। उनके अन्त:करण से आवाज आई, "अब तुम ऋषियों की तपोभूमि भारत में जाओ। वहाँ दुखी जनता की जाकर सेवा करो, उन्हें नाम का अमृत पिलाओ।" दादाजी ने देखा कि हिन्दुओं के मंदिरों को भी नष्ट किया जा रहा है। दादाजी ने अन्त:करण की आवाज़ अनुसार शीघ्र ही अपने वतन हैदराबाद सिन्ध से भारत के लिए प्रस्थान किया। हैदराबाद छोड़ने के पहले दादाजी ने प्यारे गंगाराम से कहा कि मीरा स्कूल अब सरकार को दे दो। दादाजी, प्यारे जशन, शान्ति, सती व हरीदेवी सहित कुछ दिन कराची में श्री दुर्गादास पंजाबी के साथ ठहरे। दादाजी ने श्री गंगाराम को भी भारत में भेज दिया। वे १० नवम्बर हवाई जहाज़ द्वारा मुम्बई में पधारे। हवाई अड्डे पर उनसे कई प्रेमी मिलने और आशीर्वाद लेने के लिए आए। उसी समय दादाजी को सिन्ध की स्मृति आ गई और उन्होंने वतन के विरह में गीत गुनगुनाया। दादाजी मुम्बई में श्री दुर्गादास पंजाबी के घर में ठहरें। शेष प्रेमी भी १४ नवम्बर मुम्बई में आ गये। उसी दिन श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्म दिन था। दादाजी श्री दुर्गादास के घर में ठहरे हुए थे। उन्होंने नाम कीर्तन के पश्चात् श्री गुरू नानकदेव के कुछ प्रसंग सुनाये।

श्री दुर्गादास पंजाबी के घर में कुछ सिन्धी समाज सेवक

दादाजी से मिलने के लिए आये। उन्होंने उन्हें बताया कि सिन्धी भाई बहिनें किस प्रकार विभिन्न कैम्पस में जीवन बिता रहे हैं। वे दादाजी को कुर्ला कैम्प, मुलन्ड कैम्प, अक्बर कैम्प थाना में ले गये। दादाजी सिन्धी समाज की दयनीय दशा देखकर मन में दुःखी हुए, उन्होंने सिन्धी समाज को सांतवना व सहानुभूति दी।

प्रोग्रेस्व ग्रुपने दादाजी को ग्रीन होटेल में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। अध्यक्षता मिस्टर क्रन्ज्या ने की। इसी समारोह में सिन्धी, गुजराती, मराठी भाषी, पारसी भाई बहिनें सम्मिलित हुए। दादाजी ने व्याख्यान देते हुए कहा कि हमें स्वतंत्रता तो प्राप्त हुई किन्तु देश के बटवारे के कारण लाखों परिवार दुखी हुए हैं। उनको सुखी करना, उनकी सेवा सहायता करना मानवधर्म है। मुम्बई के इस नगर में कई धनवान हैं,किन्तु कई भाई बहिनें निराश्रय जीवन बिता रहें हैं। बहुत से ऐसे हैं जो भूखे पेट सोते हैं। दुखियों को सुखी करने का प्रयास करें। परमात्मा ने आप को जो कुछ धन -पदार्थ दिया है, उस में गरीबों का भी हिस्सा है। गरीबों की सेवा प्रभु की पूजा है। किसी सत्पुरूष ने कहा है -:

'बाँट के खाना बंदगी छुपा के खाना शर्मंदगी'
बाँट के खाना भी एक प्रकार की भक्ति है।

भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं -:

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञ भाविताः।
तैर्दत्तान प्रदायैभ्यो यो भुडक़्ते स्तेन एव सः॥
यज्ञ शिष्टाशिन : सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिशैः।
भुञ्जते ते त्वधं पाप ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

यज्ञ द्वारा प्रसन्न हुए देवता तुम लोगों को बिना मांगे ही इच्छित फल निश्चय ही देते रहेंगे। उन देवताओं द्वारा दिये हुए भोगों को जो मनुष्य बिना दिये स्वयं भोगता है, वह चोर है, यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरूष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं, और जो पापी लोग अपना शरीर पोषण करने के लिए ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी पहले दूसरों को खिलाएं पश्चात् स्वयं ख़ाएं। आप दूसरों को सुखी करेंगे तो प्रभु अवश्य

आपको सुखी करेंगे।

सप्ताह में दो बार दादाजी श्री दुर्गादास के घर में प्रवचन करते थे। अन्य स्थानों पर भी व्याख्यान देने के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया। श्री नानक मोटवाणी दादाजी को शरणार्थी सिन्धी भाइयों के विभिन्न कैम्पस में ले जाते थे। उनके साथ श्री जशन, बहिन शान्ति व बहिन सती भी साथ में रहती थी। दादाजी यथा योग्य सिन्धी परिवारों को सहायता व सांतवना देते रहे। दादाजी तीन महीने मुम्बई में रहे। प्रेमियों के अनुरोध पर वे १३ फरवरी पुणे में पधारे। वे वहाँ पौंडी मेनशन में आकर ठहरे। हैदराबाद व कराची के जो प्रेमी पुणे में आकर बसे थे, वे दादाजी का दर्शन करने के लिए उनके पास आये। दादाजी ने एक कमरे में सत्संग आरंभ किया। उस कमरे में इतने प्रेमी बैठ नहीं सकते थे, श्री रामचन्द दरियानाणी ने दादाजी से विनय की कि उनके बंगले के कम्पाऊंड में आप सत्संग करें तो श्रोताओं को बैठने में सुविधा होगी। दादाजी फिर वहाँ सत्संग करने लगे। एक दिन श्री तनूमल दादाजी को आलंदी में श्री ज्ञानेश्वर का मंदिर दिखाने के लिए ले गये। मंदिर की दशा देखकर उन्हें दु:ख हुआ। २४ अप्रैल दादाजी संत तुकाराम की समाधि का दर्शन करने गये। वहाँ दादाजी भक्ति की मुड में संत तुकाराम का अभंग गुनगुनाने लगे।

धीरे धीरे पुणे में दादा वासवाणी की सुरभि फैलती गई। महर्षि कर्वे ने दादाजी के स्वागतार्थ एक सभा का आयोजन किया, जिस की अध्यक्षता पुणे के जिलाध्यक्ष श्री पारदे ने की। महर्षि कर्वे ने दादाजी का परिचय देते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमारे इस पुणे नगर में सिन्ध के संत साधु वासवाणी आकर बसे हैं। मैं उन्हें बीस वर्ष से जानता हूँ। वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक, शिक्षा शास्त्री, विद्वान, समाज सुधारक व मानव जाति के विनम्र सेवक हैं। आज हम सब मिलकर उनका स्वागत करते हैं।

दादाजी ने व्याख्यान देते हूए कहा कि मैं मातृभूमि सिन्ध को विवश छोड़कर यहाँ पितृ भूमि, भव्य भारत भूमि में आया हूँ, एक यात्री बनकर। आपने मेरा स्वागत किया मैं आपका आभारी हूँ। गत १३ फरवरी जैसे में पुणे में आया तो मुझे शिवाजी महाराज, श्री बाल

गंगाधर तिलक, श्री गोपाल कृष्ण गोखले की स्मृति आई। मन ही मन उन्हें प्रणाम किया। यहाँ मुझे बार बार संत रामदास, संत एकनाथ, संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर की याद आती है। इन संतो ने सत्य को पहचाना, इन्होंने न केवल स्वयं आध्यात्मिक पथ पर प्रगति की किन्तु लाखों लोगो के मन में भक्ति की भावना उत्पन्न की। इन संतो के जीवन में ज्ञान व भक्ति का सुंदर संगम था। देश विभाजन के कारण हमारे लाखों सिन्धी भाई बहिनें मातृ भूमि सिन्ध को छोड़कर अपना सर्वस्व कुरबान कर यहाँ भारत में आये हैं, मैं यदि उनकी दयनीय दशा का वर्णन करूँगा तो आपका मन भर आयेगा।

यहाँ पुणे का शान्तिमय व पवित्र वातावरण मेरे लिए अनुकूल है। यह नगर सभ्यता व स कृति का केंद्र हैं। संस्कृति के सम्बंध में एक विद्वान ने कहा है कि संस्कृति है प्रकाश व मधुरता। मैं कहता हूँ कि संस्कृति है सेवा, संगठन, स्नेह। इन तीन गुणों को नहीं भूलें। धनवान निर्धन, राजा रंक हम सब मिलकर स्नेह के साथ जीवन बितायें, एकता के सूत्र में बंध जायें। हम न केवल मानव मात्र को प्यार करें किन्तु पशु पक्षियों को भी प्यार करें। सब प्राणी प्रभु की संतान हैं। एक दिन साँझ को मैं किसी शान्ति स्थल पर खड़ा था, अचानक मैंने आवाज़ सुनी, वह गांधीजी की आवाज़ थी, वे कह रहे थे कि काश ! उनकी खाक से प्रेम की शक्ति उत्पन्न हो। प्रेम की शक्ति द्वारा ही भारत का नव निर्माण होगा। मैं भारत के ऋषि-मुनियों का दास हूँ, प्राणी मात्र का सेवक हूँ। आप सब आशीर्वाद करें कि स्मरण, सेवा, स्नेह की ज्योति जगाता रहूँ, प्यारे प्रभु के गीत गाता रहूँ। जिलाध्यक्ष ने अध्यक्षीय भाषण करते हुए कहा कि सरकार की ओर से सिन्धी भाई बहिनों को यहाँ बसाने के लिए सुविधाएं दी जायेंगी। दादा वासवाणी जी को हम पूर्ण सहयोग व सहायता करते रहेंगे। हमें गौरव है कि सिन्ध की महान विभूति दादा वासवाणी पुणे में संतों के परम्परा की ज्योति जगाते रहें।

ब्रह्मो समाज पुणे ने दादाजी को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। प्राचार्य जोग ने उनका स्वागत करते हुए परिचय दिया।

साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि धर्म का सार है 'प्यार'। सभी प्राणियों को प्यार करना। जो प्रेम के पथ में प्रगति करना चाहे उसे विनम्र बनना पड़ेगा, अहम् का त्याग करना पड़ेगा। जब उस का मन खुदी से खाली होगा तब मन प्रेम से भर जायेगा। प्रेम का पथ आसान नहीं है। संत कबीरदास ने कहा है :-

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा प्रजा जे रूचै सीस ले दे जाय।।

भक्त प्रेम में सर्वस्व समर्पण करता है। प्रभु की प्राप्ति के लिए साधक समर्पित भाव से भक्ति करता है। मेरे भाइयों व बहिनों आप भी यदि आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं तो प्रेम के पथ पर प्रगति करने का प्रयास करें। प्रभु है प्रेम और प्रेम है प्रभु ! जिसके मन में स्नेह का स्रोत प्रवाहित होता है, वह न केवल मानव मात्र को किन्तु पशु पक्षियों, पुष्पो को भी प्यार करता है। जिसके मन में प्रेम है वह सदैव प्रसन्न चित्त रहता है।

दादाजी ने अपने परम भक्त श्री जशन से नौकरी करने के लिए कहा। उसे मुम्बई में अच्छी नौकरी मिल रही थी, किन्तु जिसने स्वंय को गुरूदेव के कमल चरणों में समर्पित किया। वह सांसरिक नौकरी क्या करेगा ! श्री जशन अपने गुरूदेव की सेवा में ही आनंद का अनुभव करते थे। दादाजी पुणे के निकट पिम्परी कैम्प, उरली कैम्प आदि सिन्धी बस्तियों में शरणार्थी भाइयों की देख भाल करने के लिए जाते थे तो प्यारे जशन, बहिन सती, शान्ति व श्री गंगाराम भी उनके साथ रहते थे। श्री गंगाराम साजनदास को भी दादाजी ने नौकरी करने के लिए कहा किन्तु उसका स्वप्न था कि दादाजी की आज्ञा लेकर हैदराबाद की भाँति पुणे में मीरा स्कूल आरंभ किया जाये। श्री गंगाराम, बहिन, हरीदेवी, प्यारे जशन ने तीन चार बार दादाजी से मीरा स्कूल खोलने के लिए विनती की। एक दिन दादाजी ने पुणे में मीरा स्कूल खोलने की अनुमति दी।

हैदराबाद में दादाजी की संस्था की ओर से बीमारों की सेवा के लिए 'दया डिस्पेन्सरी' (दया दवाखाना) निःशुल्क चलती थी। यहाँ पुणे में भी बीमारों की निःशुल्क सेवा करने के लिए 'राधा कृष्ण

दया डिस्पेन्सरी' आरंभ की गई। दादा वासवाणी ने २६ जनवरी सन् १९५० ई में इस दवाखाने का श्री गणेश करते हुए कहा कि डॉ. हीरानन्द हाथीरामाणी अनुभवी डॉक्टर हैं, इनके मन में बीमारों के प्रति सहानुभूति है। वे प्रेम के साथ बीमारों की सेवा करेंगे। दादाजी की प्रेरणा व आशीर्वाद से बहिन पार्वती ने बहिनों व बालकिओं को सिलाई की शिक्षा देने के लिए नारी शाला आरंभ की। इस सेवा केंद्र का नाम 'सेवा कुंज' रखा गया।

श्री गंगाराम साजनदास ने मीरा स्कूल खोलने के सम्बंध में पैसों व जगाह के लिए प्रयास किया। श्री गंगाराम निष्ठावान लगनशील मनुष्य था। उसके परिश्रम, ईश्वर की असीम कृपा व दादा वासवाणी के आशीर्वाद से १ मार्च सन् १९५० ई महर्षि कर्वे ने मीरा स्कूल का श्री गणेश करते हुए कहा कि साधु वासवाणी के आदर्शों के अनुकूल यहाँ विद्यार्थियों को शिक्षा दी जायेगी। विद्या मनुष्य का तीसरा नेत्र है। आप इस विद्यालय में विद्या प्राप्त कर अपना भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं। दादा वासवाणी ने उद्घाटन समारोह में शुभ मंगल कामनाएं दी। श्री गंगाराम की चाहना थी कि यदि मीरा स्कूल एवं सत्संग के लिए जीजाबाई कैसल मिल जाये तो वह स्थान बड़ा उपयोगी होगा। श्री गंगाराम का यह स्वप्न भी साकार हुआ वह स्थान सरकार की ओर से कराये पर मिल गया। १ जून से मीरा स्कूल वहाँ आरंभ किया गया। सत्संग के लिए भी वहाँ अच्छा सुंदर हाल था। वहाँ प्रति दिन सत्संग की सरिता भी प्रवाहित हुई। अब यह स्थान मीरा भूमि के नाम से प्रसिद्ध है।

सन् १९५१ दादाजी स्वयं इस स्थान पर आकर रहे। प्यारे जशन, बहिन शांन्ति एवं बहिन सती उनकी सेवा करते रहे। दादाजी का यह लीलास्थल तीर्थ स्थान बन गया। भक्ति साधना के कारण देश विदेश से श्रद्धालु उनका दर्शन करने के लिए आते थे। यह स्थान आगे चलकर भक्ति व कर्म का, स्मरण सेवा का केंद्र बन गया। इस स्थान के सामने बहिन पार्वती ने 'सेवा कुंज' आरंभ किया, कल्याण नारी शाला भी वहाँ शुरू कर दी गई।

ब्रदर हुड संस्था की ओर से २५ नवम्बर दादाजी का जन्मदिन

मनाया गया। दादाजी ने दीन दुखियों की सेवा की। उसी दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आप मुझे स्नेह व सन्मान देते हैं, मैं सब का आभारी हूँ। आप आज इस शरीर का जन्मदिन मना रहे हैं, आत्मा तो अजन्मा है। उस आत्मा को पहचाने ! अपने भीतर जाकर अपने साक्षी स्वरूप का दर्शन करें। अधिकतर लोग, बड़े बड़े विद्वान, राजा अज्ञान के कारण अपने साक्षी स्वरूप को भूल गये हैं। संत कबीर फरमाते हैं -

घूंघट के पट खोल रे तो को पीव मिलेगें।

प्रेमियो ! अज्ञान का, अविद्या का परदा हटायें , तो आपको दिव्य दर्शन होगा। यह दिव्य दर्शन इसी मनुष्य योनि में ही सम्भव है, इस लिए मानव जीवन व्यर्थ नहीं गंवाएं।

दिसम्बर में श्री गुरू गोबिन्द सिंघ का जन्म दिन सत्संग हाल में मनाया गया। दादाजी ने श्री गुरू गोबिन्दसिंघजी महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग बताते हुए कहा कि वे भक्ति व शक्ति के अवतार थे। उनकी शिक्षाओं को अपायें।

१ जनवरी सन् १९५२ सत्संग में दादाजी ने नूतन वर्ष का संदेश देते हुए कहा कि आप प्रति दिन सत्संग में आते हैं। सत्संग की बाते केवल श्रवण करने के लिए नहीं, उनका चिन्तन कर, उन्हें अपने जीवन में उतारें। प्रति वर्ष केवल एक गुण रूपी पुष्प अपनायें तो आपके जीवन की फुलवाड़ी महक उठेगी। आपके विचार व व्यवहार में सत्य, सादगी, स्मरण, सेवा, स्नेह सहानुभूति की सुरभि होनी चाहिए तब आपका सत्संग में सम्मिलित होना सार्थक होगा।

२६ जनवरी राधाकृष्ण दया डिस्पेन्सरी के वार्षिक दिवस उपलक्ष में दादाजी ने कहा कि प्रभु की कृपा से इस दवाखाने से कई बीमार स्वस्थ हुए हैं। वास्तव में हम सब बीमार हैं, हमें भी दवा की आवश्यकता है। वह दवा है नामकी, यह दवा दवाखाने से नहीं किन्तु सत्संग से, संत सत्गुरू रूपी वैद्य से प्राप्त होगी। नाम की औषध द्वारा हमारे शारीरिक, मानसिक सब दुख दूर हो जायेंगे।

सर्व रोग का ओखद् नाम

३० जनवरी सत्संग में दादाजी ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे न केवल राष्ट्र भक्त थे किन्तु ईश्वर भक्त

भी थे। उनकी आध्यात्मिक विचार धारा के कारण ही उन्हें महात्मा शब्द से सम्बोधित किया गया। वे निष्काम निडर, निष्ठावान नेता थे। उन्होंने अपना सर्वस्व भारत माता के चरणों में अर्पित किया। उनका जीवन अर्पणम् का जीवन था। आज देश को ऐसे ही नेताओं की अत्यन्त आवश्यकता है। फरवरी में बसंत पंचमी के पावन दिन दादाजी ने सत्संग में उपदेश देते हुए कहा कि आज से बसंत ऋतु प्रारंभ होती है। किन्तु हमारे मन मुरझाये हुए हैं ! यदि हम दूसरों को सुखी करेंगे तो हमारे जीवन में भी बहार आयेगी। जितना हो सके दूसरों का भला करें। आप दूसरों का भला करेंगे, परमात्मा आपका भला करेगा।

१५ मार्च होली के दिन दादाजी ने भक्त प्रहलाद के सम्बंध में उनकी अटूट श्रद्धा का उल्लेख करते हुए कहा कि भक्त प्रहलाद आयु में कितना न छोटा था ! किन्तु प्रभु में उसकी अटूट श्रद्धा व आस्था थी। पिताश्री ने उसे नष्ट करने के लिए प्रयास किया किन्तु फिर भी वह विफल हुआ। संत कबीर भी कहते हैं -

जाको राखें साँइयाँ मारि न सके कोय।
बाल न बॉका कर सके जे जग बैरी होय।।

जिस पर भी प्रभु की कृपा है, उसको कोई भी नष्ट नहीं कर सकता। जिसका रक्षक स्वयं प्रभु है, उसका कोई भी भक्षक नहीं बन सकता है। प्रहलाद का परमात्मा में पूर्ण विश्वास था। प्रेमियो ! आप भी प्रहलाद की भाँति प्रभु में पूर्ण विश्वास रखकर सत् मार्ग पर चलें तो आपको कोई भी हानि पहुँचा नहीं सकता।

१३ अप्रैल बैसाखी के पावन दिन दादाजी ने श्री गुरू गोबिन्द सिंघ के सम्बंध में उपदेश देते हुए कहा कि आज के दिन उन्होंने हिन्दु धर्म की सुरक्षा के लिए खालसा सम्प्रदाय का श्री गणेश किया। उन्होंने अपने सिखों में वीरता का संचार किया। श्री गुरू गोबिन्दसिंघ भक्ति व शक्ति के अवतार थे। आजकल हम उनके सिद्धांतों व शिक्षाओं को भूल गये हैं। उनकी वाणी का अभ्यास करें, उनकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारें।

१२ जून साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज कबीर जयन्ती है। संत कबीर सद् ग्रहस्थी होते हुए भी महान संत बने।

वे पढ़े लिखे नहीं थे। वे स्वयं कहते हैं -

मसि कागद तो छुओ नंहि, कलम गही नंहि हाथ।

उन्होंने संतो के संग में जो ज्ञान प्राप्त किया, नाम का जाप जपते जो कुछ अनुभव किया वह अपनी वाणी द्वारा व्यक्त किया। उनकी वाणी अनुभूति की वाणी है, ज्ञान गर्भित वाणी है। उनकी वाणी व्यवहार एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है। ईश्वर का उल्लेख करते हुए वे कहते हैं -

रेख रूप जेहि है नहीं, अघर धरो नहिं देह।
गगन मंडल के मध्य में रहता पुरूष विदेह॥

संत कबीर की वाणी से प्रति भासित होता है कि वे आध्यात्मिक ऊँचाई पर पहुँच गये थे।

सर्गुण की सेवा करौ, निर्गुण का कर ध्यान।
निर्गुण सर्गुण के परै, तहै हमारा ध्यान॥

प्रेमियो ! आप भी संसार में रहकर संत कबीर की भाँति प्रभु के पथ में प्रगति कर सकते हैं। जहाँ चाह वहाँ राह। अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते नाम को नहीं भूलें और सत् कर्म करते रहें।

१० जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि जैसे ज्ञान के लिए गुरू की जरूरत है, वैसे सत् ज्ञान, के लिए आध्यात्मिक गुरू की आवश्यकता है। गुरू व्यवहार व परमार्थ के लिए हमारा मार्गदर्शन करता है। सब ही संतो महात्माओं ने गुरू की महिमा गाई है। श्री गुरू ग्रन्थ साहब में भी गुरू की कितनी ने महिमा याई गई है -

गुरू प्रसाद परम पद पाया सूखे काष्ट हरिया।

संत कबीर तो ईश्वर से भी अधिक महत्व गुरू को देते हैं -

गुरू गोबिंद दोऊ खड़े काके लागौ पाँय।
बलिहारी गुरू आपने, गोबिंद दियौ बताय॥

मेरे भाइयो व बहिनों ! वह मनुष्य भाग्यवान है जिस पर सत्गुरू की कृपा है। सत्गुरू की कृपा उस पर होती है जो गुरू की आज्ञानुसार चलता है, उसकी सेवा करता है। हम भी गुरूकृपा के पात्र बनने का प्रयास करें। गुरू द्वारा दिये नाम की साधना करें।

२० अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन सुबह को दादाजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। संध्या को उन्होंने उपदेश देते हुए भगवान श्याम सुंदर की अद्भुत लीलाओं का वर्णन किया। दादाजी ने कहा कि श्री कृष्ण प्रेम के अवतार थे। उन्होंने दुष्टों का दमन तो किया, किन्तु साथ प्रेम का संचार भी किया। प्रेम बिना हमारा जीवन नीरस है। हम भी श्री कृष्ण भक्ति की सरिता में डूब जायें, डूब जायें! तो किसी न किसी दिन श्री श्याम सुंदर आकर हमें अपने गले लगायेंगे।

२० सितम्बर सन् १९५२ ग्रीन्स होटेल में जीवदया सम्मेलन आयोजित किया गया। दादा वासवाणी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि सब प्राणी प्रभु की संतान हैं, इसी लिए किसी भी पशु पक्षी की हत्या करना पाप कर्म है। कई लोग स्वाद के लिए बकिरियों, मुर्गियों एवं अन्य निरीह पशुओं को कटवाकर मांस भक्षण करते हैं, यह उचित नहीं। राक्षस मांसाहारी होते हैं, हम मानव हैं। जिस मनुष्य में दया भावना नहीं वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। संत कबीर भी फरमाते हैं -

दया सब पर कीजिये निर्दय कभी न होय।
साईं के सब जीव हैं, कीरी, कुंजर दोय।

जीवदया सम्मेलन का उद्देश्य ही है घर घर में जीवदया की ज्योति जगाना, दानव को मानव बनाना। जब तक हमारे मन में दया भावना नहीं तब तक हम स्मरण भी नहीं कर सकते। प्रभु नाम के लिए निर्मल मन की आवश्यकता है। जिसके मन में दया होगी उसका मन भी निर्मल रहेगा। प्रेमियो ! आपसे अनुरोध है कि आज से ही माँस भक्षण का परित्याग करें।

कई श्रोतागण दादाजी के भाषण से प्रभावित हुए। अमेरिका से आये मिस्टर डेविड जोफो ने कहा कि वे दादा वासवाणी का व्याख्यान सुनकर बहुत ही प्रभावित हुए हैं, वे विदेश में जाकर उनका संदेश सुनायेंगे। दादा वासवाणी जी के संदेश की न केवल भारत को परन्तु विश्व को आवश्यकता है।

दादाजी चैम्बूर कैम्प, अकबर कैम्प एवं अन्य कैम्पों में भी गये। जहाँ निर्वासी सिन्धी भाई बहिनें दयनीय दुखी जीवन बिता रहे

थे। दादाजी ने उन्हें अपने वचनों द्वारा उन्हें सांतवना दी और साथ साथ कुछ भाई, बहिनों को सहायता भी की।

१० अक्तूबर दादाजी श्री नानक मोटवाणी के साथ कल्याण कैम्प में पधारे। वे सिन्धी भाई बहिनों से मिले, वे देश विभाजन के कारण दुःखमय जीवन बिता रहे थे, दादाजी ने उन्हें सांतवना दी। उन्होंने श्री नानक मोटवाणी द्वारा संचालित नारी शाला व होम्योपथी दवाखाना देखा और आशीर्वाद किया। डॉ. गोबिन्दराम दादलाणी व श्री लालचन्द लालवाणी ने उनका स्वागत किया। साँझ को वे नेताजी हायस्कूल में पधारे। श्री परसराम मसंद ने उनके गुणों का वर्णन करते हुए स्वागत किया। दादाजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि मेरे भाइयो व बहिनों! मैं आपके दुःख का अहिसास करता हूँ। आप देश विभाजन के कारण सर्वस्व अपने वतन सिन्ध में छोड़कर यहाँ खाली हाथ आये हैं। यद्यपि सरकार की ओर से आपको सहायता मिल रही है, फिर भी आप परिश्रम कर आत्म निर्भर होने का प्रयास करते हैं, इस के लिए आपको धन्यवाद है। जब मैं देखता हूँ हमारे बच्चे रेल गाड़ियों में लेमनड्राप्स बिस्केट आदि बेचते हैं तो मेरा मन भर आता है। आप आत्म विश्वास रखकर जीवन पथ पर आगे बढ़ें तो परमात्मा आपकी सहायता करेंगे। आप आपस में संगठित होकर एक दूसरे को सहयोग दें। प्रति दिन प्रभुको प्रार्थना अवश्य करें तो एक दिन आपका जीवन सुखमय बनेगा।

२८ अक्तूबर दिवाली के शुभ दिन सबेरे १० बजे सत्संग हाल में नाम कीर्तन हुआ, तत्पश्चात् दादाजी ने गरीबों को मिठाई व अन्न-धन दिया। उसी समय उन गरीबों की आँखो में खुशी की चमक थी। साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज दिवाली का पावन दिन है। आजके दिन प्रभु श्री राम चौदह वर्ष के पश्चात् अयोध्या में पधारे। हमारे जीवन के तो कई अमूल्य वर्ष बीत गये हैं, कभी श्री राम हमारे मन मंदिर में पधारेंगे! उनकी आराधना करें, उन्हें मन मंदिर में आने के लिए प्रार्थना करें, प्रेम से पुकारें। हमारे लिए वह दिवाली का सच्चा दिन होगा जब प्रभु श्री राम हमारे मन मंदिर में प्रवेश करेंगें!

२५ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज एवं दादा साधु

वासवाणी का जन्म दिन मनाया गया। सुबह को श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के बाद दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। साँझ को श्री गंगाराम साजनदास ने दादाजी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि हम सब भाग्यशाली हैं कि दादाजी जैसी महान मूर्ति हमारा मार्गदर्शन करती है। इनके अमृत तुल्य वचन श्रवण कर, इनका स्नेह प्राप्त कर हम कितना प्रफुलित होते हैं। आज हम यहाँ श्री गुरू नानकदेव महाराज एवं प्यारे दादाजी का जन्मदिन मना रहे हैं।

दादा वासवाणी ने श्री गुरू नानकदेव महाराज को पुष्पाजंलि अर्पित करते हुए कहा कि वे कलियुग के अवतार थे, फिर भी वे स्वयं नाम का जाप करते रहते थे। उन्होंने नाम की कितनी न महिमा गाई है! वे अपनी वाणी में कहते हैं -

आखा जीवा बिसरै मर जाउ,
आखण अउखा साचा नाउ।
साचे नाम की लागै भूख,
उतु भुखै खाह चली अहि दूख।

नाम स्मरण के बिना मैं जीवित नहीं, नाम ही मेरा जीवन है, यदि उसको भूल जाऊँ तो मर जाऊँ। मुझे साचे नाम की भूख है। नाम का जाप करना सरल नहीं है। नाम के जाप से सब दुख - दर्द नष्ट हो जाते हैं। प्रेमियो ! आप भी सांसारिक काम काज करते नाम को नहीं भूलें।

डाँ. थधाणी लगन से सेवा करते थे, वे दादाजी के आशीर्वाद से मुफ्त होम्योपथी किलनिक चलाते थे। उन्होंने सेवा कार्य के लिए जवानों की एक टोली बनाई। वे जवानों को होम्योपथी के सम्बंध में शिक्षा देते थे। डाँ. थधाणी ने दादाजी को इस युवकों की संस्था के सम्बंध में बताया और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की। दादाजी ने उस संस्था का नाम "मोहन मंडली" रखा और कहा कि आप इस मंडली द्वारा सेवा के कार्य करके दिखएं। आपस में संघठित होकर, प्रेम से सेवा करें। डाँ. थधाणी ने दादाजी से विनय की कल मोहन मंडली के सदस्यों का प्रतिभोज आयोजित करेंगे, आप भी इस प्रतिभोज में आकर आशीर्वाद दें।

रविवार दुपहर १२ बजे सत्संग हाल में दादाजी ने युवकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि गुरू अमरदास बड़ी नम्रता के साथ श्री गुरू अंगददेव महाराज की सेवा करते थे। वे प्रभात को बियास नदी से पानी भरकर ले आते थे और उसी जल से श्री गुरू अंगददेव महाराज को नहलाते थे। वे समर्पित भाव से गुरू की सेवा करते थे। वे सेवा करते मुख से श्री जप साहब की अमृत वाणी का जाप करते थे। वाणी का उचारण करते करते उनकी आँखो से अश्रुधारा प्रवाहित होती थी। जब श्री गुरू अंगददेव साहब ब्रह्मलीन हुए तब बाबा बुढ़ाने श्री गुरू अंगददेव महाराज की आज्ञानुसार श्री अमरदास को गादी पर बिठाया।

गुरू अंगददेवजी के पुत्र दातु को जब यह ज्ञात होता कि श्री अमरदास को गादी पर बिठाया गया है तब वे क्रोधित होकर श्री गुरू अमरदास को लात मारते हैं। तब गुरू अमरदास जी उसके पॉवों पर गिरकर विनती करते हुए कहते हैं, कि मुझे लात मारने से आपके पाँव को यदि दर्द हुआ हो तो मुझे क्षमा करें। आपके पाँव कोमल हैं और मेरा शरीर पत्थर की भाँति है। गुरू अमरदास के मन में कितनी न नम्रता थी। प्रेमियो ! आप भी नम्रता से सेवा करें।

दादाजी के उपदेश के पश्चात् प्रतिभोज आरंभ हुआ। खाना बाँटा गया। दादाजी को भोजन खाने के लिए प्रार्थना की गई किन्तु उन्होंने कहा कि वे बाद में खाना खायेंगे। दादाजी द्वार के बाहर पानी का बड़ा बर्तन लेकर खड़े हो गये। जो लोग खाना खाकर हाल से बाहर निकल रहे थे, दादाजी उन्हें हाथ धोने के लिए पानी व टावल देते रहे। यह देखकर प्रेमियों ने दादाजी से कहा कि यह काम हम करते हैं, आप कृपया आशीर्वाद दें और भोजन स्वीकार करें। वे नहीं मानें। जब सब आगुंतकों ने भोजन खाया तब ही दादाजी ने भोजन खाया। वे नम्रता की मूर्ति थे।

दादाजी को सिन्ध से कुछ मुसलमान भाई पत्र लिखते रहे, दादाजी उन्हें प्रेम के साथ उत्तर भेजते थे। कभी कभी अपनी जन्मभूमि सिन्ध के सम्बंध में अपनी स्मृतियाँ सुनाते हुए दादाजी की आँखों से आँसू टपक पड़ते थे। वे मूड में आकर सिन्ध के बारे में गीत भी गुनगुनाते थे। बहिन डॉ. सती मीरचन्दाणी मीरा सत्संग में जब शाहलतीक,

सचल सरमस्त, बेदल बेक्स की वाणी अपने मधुर स्वर में गाती थी तो दादाजी भाव विभोर हो जाते थे। दादाजी की सेवा में बहिन सती, बहिन शान्ति, बहिन देवकी, बहिन पार्वती, प्यारे श्री जशन तो थे ही, श्री आत्म वासवाणी भी उनकी सेवा करते रहे। प्यारे आत्म वासवाणी, के भाई निर्मल, बहिन रत्ना एवं अन्य सदस्य समर्पित भाव से सेवा करते रहे और सत्संग का लाभ भी प्राप्त करते रहे।

दादाजी प्रतिदिन संध्या को प्रवचन करते प्रेमियों का मार्गदर्शन करते रहे। वे कभी कभी मीरा स्कूल में जाकर विद्यार्थियों को शिक्षाप्रद बातें बताकर उनके नैतिक उत्थान का प्रयास करते रहे।

२० फरवरी शिवरात्री के दिन दादाजी ने उपदेश देते हुए भगवान शंकर के कुछ प्रसंग बताते हुए कहा कि ॐ नमः शिवायः के मंत्र का जाप करें। भगवान शंकर शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं।

५ अप्रैल रामनवमी के पावन दिन दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज के पवित्र दिन प्रभु श्री राम ने राक्षसों व पापियों को नष्ट करने के लिए धर्म की सुरक्षा के लिए अवतार धारण किया। प्रभु श्री राम मर्यादा पुरूषोत्तम थे। उनका जीवन त्याग-तपस्या का जीवन था। उन्होंने आसुरी शक्तियों का विनाश कर राम राज्य की स्थापना की। आज यदि घर घर में प्रभु श्री राम जैसे आज्ञाकारी सुपुत्र हों तो संसार स्वर्ग बन जाये।

आज मेरे पूज्य भ्राता श्री पहिलाजराय वासवाणी की भी पुण्यतिथि है। वे राम भक्त, शिक्षाशास्त्री, समाज सेवी निष्ठावान कर्मयोगी मनुष्य थे।

१७ जुन दादाजी ने कबीर जयन्ती के उपलक्ष में उपदेश देते हूए कहा कि संत कबीर की वाणी व्यवहार एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए मार्गदर्शन करती है। वे नाम की महिमा बताते हुए कहते हैं-

आदि नाम पारस अहै, मन है मैला लोह।
परसत ही कंचन भया, छूटा बंधन मोह।।

नाम रूपी पारस मैले मन को स्वर्ण सम बना देता है। नाम के अभ्यास से मनुष्य माया-मोह के बंधन से भी मुक्त हो जाता है। मेरे भाइयो व बहिनों ऐसे नाम से नाता जोड़ें। संत कबीर भी काम काज

करते नाम की साधना करते थे, संतो की सेवा करते थे। ब्रह्म के प्रति वे अपनी अनुभूति बताते हुए कहते हैं -

लाली मेरे लाल की जित देखो तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल॥

१५ जुलाई गुरू पूर्णिमा के दिन सुबह को कई प्रेमियों ने दादाजी के चरणों में श्रीफल व मिश्री भेंट की। दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते सब को आशीर्वाद दिया। साँझ को उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि संत दादू गुरू की महिमा प्रति पादित करते हुए कहते हैं-

दादू साचा गुरू मिल्या, साचा दिया दिखाइ।
साचे को साचा मिल्या, साचा रहया समाइ॥

ब्रह्म ही एक सत्य है, उसकी प्राप्ति गुरूकृपा द्वारा ही सम्भव हैं। दादू दयाल ने इस दोहे में आत्मानुभूति का उल्लेख किया है। हम भी साचे गुरू की शरण लें तो गुरू हमें नाम की नाव में चढ़ाकर भव सागर पार लगाए।

१५ अगस्त दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज लोग स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। बहुत ही कुरबानियों व त्याग के पश्चात् हमारा भारत अंग्रेजों की परतंत्रता से मुक्त तो हुआ है किन्तु महात्मा गांधी का स्वप्न साकार नहीं हुआ है। हमारे लाखों भाई बहिनें दुखमय जीवन बिता रहे हैं। हम सिन्धियों को तो बड़ी कुरबानी करनी पड़ी, रातों रात अपने मकान, माया सब कुछ छोड़ना पड़ा! देश के विभाजन के कारण बिजली टूट पड़ी, फिर भी हम साहस रखकर परिश्रम कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। आजाद भारत में सबको रोटी, कपड़ा और मकान मिलना चाहिए। सरकार को रामराज्य का स्वप्न साकार करने का संकल्प करना चाहिए।

२८ अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन सुबह को दादाजी ने दीन दुखियों की सेवा की। साँझ को वाडिया कालेज के हाल में बहिन हरीदेवी वासवाणी ने मीरा स्कूल की बालिकाओं द्वारा श्री कृष्ण लीला का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मुख्य मंत्री श्री मुरारजी डेसाई उत्सव के मुख्य अतिथि थे। दादाजी ने श्री मुरारजी डेसाई का स्वागत करते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि धर्म की रक्षा करने के लिए

दुष्टों का दमन करने के लिए चक्र सुदर्शन धारी भगवान श्री कृष्ण ने आज के दिन अवतार धारण किया। भगवान श्री कृष्ण को रसेश्वर कहा गया है। आप आज उनकी रास लीला का अवलोकन कर, उनका स्मरण करें, ध्यान करें तो आप आनंद का अनुभव करेंगे। श्री मुरारजी भाई ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि आज के पावन दिन मुझे श्रीकृष्ण भक्त और देशभक्त महान विद्वान, दार्शनिक साधु वासवाणी के आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला है। बालिकाओं ने जो श्रीकृष्ण के जीवन की कुछ लीलाएं प्रस्तुत की, वे भी प्रेरणादायक व प्रशंसनीय हैं।

४ अक्तूबर साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज संत फ्राँसिज का जन्म दिन है। उन्होंने न केवल मानव मात्र को प्यार किया किन्तु पशु पक्षियों को भी प्यार दिया। आप भी सभी प्राणियों को प्यार करें।

३० अक्तूबर दिवाली के दिन दादाजी ने गरीब परिवारों को मिठाई के पाकेट, वस्त्र एवं अन्नधन दिया। संध्या को उन्होंने उपदेश देते हुए प्रभु श्री राम के जीवन के कुछ प्रेरणा दायक प्रसंग सुनाये।

एक बार दादाजी टहलते टहलते एक वृक्ष के निकट आये। उस वृक्ष की छाया में एक गरीब व्यक्ति सोया हुआ था, उसके वस्त्र फटे और मैले थे। शायद उसने कुछ दिनों से नहाया भी नहीं था। उसे देखकर दयालु दादाजी ने प्यारे जशन से कहा कि कहीं से पानी भरकर आओ। प्यारे जशनजी शीघ्र ही पानी भरकर आये। दादाजी ने उस गरीब व्यक्ति को अपने हाथों से नहाया और अपना चोला उतार कर उसे पहनाया। उस व्यक्ति ने दादाजी को उनकी टोपी की ओर इशारा किया। दादाजी ने उसी समय अपनी टोपी भी उतार कर उस व्यक्ति को पहनाकर प्रसन्न किया और उसे खाने के लिए भी कुछ वस्तुएं दी। उसी समय दादाजी ने कहा कि हमारे पास जो कुछ भी है वह प्रभु की धरोहर है, यह धरोहर किसी के काम आ जाये तो अहो भाग्य ! हमारा पैसा, पदार्थ, पद, विद्या, सब परमात्मा की धरोहर है, उसे लौटाने में ही आनंद है। देने में आनंद है, लेने में नहीं। दूसरों को सुखी करने में ही जीवन की सार्थकता है।

एक दिन दादा वासवाणी के पास एक डाक्टर आये। उन्होंने दादाजी से कहा, "मैं नाक, कान व गले का विशेषज्ञ हूँ। आपकी श्रवण शक्ति कम हो गई है। आप यदि चाहें तो आपके कानों की तपास कर उपचार करूँ।" दादाजी ने मुस्कराते हुए कहा, "अच्छा हुआ कि मेरी श्रवण शक्ति कम हो गई है" डॉक्टर यह उत्तर सुनकर आश्चर्य में पड़ गये। दादाजी ने फिर उसे समझाते हुए कहा कि "कानों की यह बाह्य शक्ति जब कम होती जायेगी तो मैं मन मंदिर में अनहद की आवाज सुन सकूंगा।" संतों की चाल निराली होती है, अंत मुंखी होने के लिए यदि बाह्य इन्द्रयाँ काम नहीं करें तो संत प्रसन्न होते हैं।

एक दिन कुछ प्रेमी आपस में विचार विमर्ष कर रहे थे। दिल्ली से आये एक सजन, जो प्रधान मंत्री के निकट के कर्मचारी थे, उसने कहा कि भारत के प्रधान मंत्री चरित्रवान और महान व्यक्ति हैं। फिर दुसरे व्यक्ति ने कहा कि भारत के राष्ट्रपति महान विद्वान व, दार्शनिक, चरित्रवान पुरूष हैं। इतने में वहाँ दादाजी भी आ गये। दादाजी ने दोनों व्यक्तियों की आवाज़ सुनी थी, उन्होंने कहा कि महापुरूष वह है जो निष्काम सेवा करने में अग्रणीय है। दादाजी सेवा को अधिक महत्व देते थे।

२० नवम्बर श्री गुरू नानक देवजी महाराज का जन्मदिन मीरा भूमि में मनाया गया। सबेरे १० बजे श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के बाद दादाजी ने दीन दुखियों को अन्न-धन की सहायता की। साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए श्री गुरू नानकदेव महाराज के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। उन्होंने कहा कि श्री गुरू नानकदेव महाराज स्वयं अवतारी पुरूष थे फिर भी वे भगवान से नाम-दान की विनती करते हैं -

सिखानू सिखी दान, रहितदान, विवेक दान, भरौसा दान
दान सिर दान नाम दान !

हम भी परम पिता परमात्मा से नाम का दान मांगे, साँसरिक वस्तुएं नहीं मांगे। सांसरिक पदार्थ दुखदाई है परन्तु हरि का नाम सुखदाई है।

२५ नवम्बर मीरा भूमि में ब्रदरहुड की ओर से दादा वासवाणी का जन्म दिन उत्सव मनाया गया। सुबह को दादाजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की, सासुन अस्पताल में फल बाँटे गये। साँझ को श्री गंगाराम साजनदास ने दादाजी के योगदान पर प्रकाश डाला। दादाजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि प्यारे गंगाराम ने मेरे लिए जो कुछ कहा मैं वह नहीं हूँ। मैं तो आप सबका सेवक हूँ, आप मुझे आशीर्वाद करें कि शेष जीवन भी सब ही प्राणियों की सेवा करता रहूँ। प्रभु ने हमें यह मानव जीवन दिया है सत् कर्म करने के लिए। जन्मदिन पर स्वयं से पूछना चाहिए।

ए सरीरा ! इस जग में आयके क्या तुध कर्म कमया !

स्वयं से पुछें कि यदि यह जन्म व्यर्थ गंवाया है तो उसके लिए भीगी आँखों से पछतावा करें और संकल्प करे कि जीवन का शेष समय सत् कर्मों में सफल करूँगा। संतो महात्माओं का संग करूँगा। संत कबीर सत्संग की महिमा गाते हूए कहते हैं -

कबिरा संगत साध की हरै और की व्याधि।
संगत बुरी असाध की आठों पहर उपाधि।।

मेरे भाइयो व बहिनों ! आप प्रति दिन सत्संग रूपी नदी में डुबकी लगाएं तो आपका तन मन शीतल व पवित्र हो जायेगा।

१० दिसम्बर मीरा भूमि में गीता जयन्ती मनाई गई। दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के पावन दिन भगवान श्री कृष्ण ने श्री अर्जून को गीता ज्ञान सुनाना आरंभ किया। मोह वश अर्जुन हताश हो जाते हैं। श्री कृष्ण उन्हें गीता के ज्ञान द्वारा कर्तव्य परायण बनाते हैं। वे उन्हें ब्रह्म, जीव जगत् माया शरीर का सत् ज्ञान देकर उनकी आँखे खोल देते हैं। हम सब की स्थिति भी श्री अर्जुन जैसी है। गीता का ज्ञान न केवल श्री अर्जुन के लिए था किन्तु हम सब के लिए है। यह अमूल्य ग्रन्थ सदैव मानव मात्र का मार्गदर्शन करता रहेगा। हमारे सब ही शास्त्रों व ग्रन्थों का सार श्रीमद् भगवद् गीता में समाहित है। हम गीता का अच्छी तरह अभ्यास करें, उसकी शिक्षा का चिन्तन व मनन करें। हम अधिकतर शरीर के मोह वश क्या क्या नहीं करते! किन्तु शरीर नवश्वर है और आत्मा अमर है। भगवान श्रीकृष्ण आत्मा के

सम्बंध में कहते हैं -

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि बिहाय जीर्णान्य न्यानि संयाति नवानि देही।।

जिस प्रकार कोई व्यक्ति पुराने वस्त्र त्याग कर नये वस्त्र पहनता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर को त्याग कर नए शरीर में प्रवेश करता है। आत्मा की मृत्यु नहीं होती है, वह तो अजर अमर होता है। ऐसा ज्ञान प्राप्त करने से हम मोह मुक्त हो सकते हैं ।

साधु वासवाणी ने नव वर्ष के सम्बंध में श्याम पत्र के लिए हृदयस्पर्शी संदेश देते हुए लिखा कि मेरी आँखों में नींद नहीं, नेत्रो में अश्रुधारा है, अपनी मातृभूमि सिन्ध से दूर होते हुए आपको न अपने मकान हैं न खाद्य पदार्थ हैं। आपका दु:ख व मेरे दिल का दर्द, उन शहीदों की गवाही देता है, जिन्होंने वतन की आज़ादी के लिए सब कुछ फिदा किया। आप परमात्मा में पूर्ण विश्वास रख कर, उसे प्रार्थना करें वे ही दुखियों के दुख दर्द दूर करेंगे। आप जीवन में निराश नहीं बनें, क्यो कि निराशा मृत्यु है और आशा जीवन है। कष्टों को प्रभु का प्रसाद समझकर स्वीकार करें, सदैव अंधेरी रात नहीं रहेगी जीवन में सुप्रभात भी आयेगा।

नूतन वर्ष के उपलक्ष में मीरा स्कूल के अध्यापकों ने दादाजी को आमंत्रित किया। दादाजी ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा कि आप भाग्यवान हैं कि आप बालक व बालिकाओं की सेवा कर रहे हैं। इनके भविष्य की बागडोर आपके हाथों में है।

'Let us live for children'

आप न केवल विद्यार्थियों की पढ़ाई किन्तु उनके नैतिक उत्थान की ओर भी ध्यान दें।

२ जनवरी १९५४ को पुणे एडियूकेशन सोसायटी के आर्टस व साईंस कालेज के वार्षिक उत्सव में दादाजी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। प्राचार्य भट्ट ने दादाजी का स्वागत करते हुए कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि मेरे गुरूदेव महान विभूति दादा साधु वासवाणी यहाँ पधारे हैं। यद्यपि आज वे अस्वस्थ थे फिर भी वे यहाँ आये हैं। दादाजी ने विद्यार्थियों व प्राध्यापकों को सम्बोधित

करते हुए कहा कि विद्या मनुष्य का तीसरा नेत्र है। आप पाठ्य पुस्तकों के साथ साथ भारतीय धार्मिक ग्रन्थों का भी अभ्यास करें। धर्म के निम्न अंगो के अनुसार आचरण करने से आपका जीवन सफल होगा।

क्षमा, अंहिसा, दया, सत्य वचन, तप, दान।
शील शौच तृष्णा विनय, धर्म लिंग दशजान।।
(सार कितावली)

२० जनवरी में साँझ के समय कुछ दिन दादाजी ने प्रवचन करते हुए मारूई का उल्लेख किया। मारूई एक गाँव में रहने वाली साधरण स्त्री थी, किन्तु अपने पतिव्रत धर्म पर अटल रहती है। उसे उमर बादशाह भगाकर अपना बनाने के लिए कई आकर्षण देता है, किन्तु वह आकर्षणों में न फंसकर खेतसेन जिसके साथ उसकी मंगनी हुई थी उसके साथ ही स्नेह सम्बंध जोड़ना चाहती है। मारूई एक पतिव्रता नारी का प्रतीक है जो शासकीय, ऐशवरीय प्रलोभनों को त्याग कर अपने गरीब पति की झोपड़ी में रहना पसंद करती है। दादाजी ने प्रवचन करते हुए संदर्भ में शाह लतीफ की वाणी सुनाते हुए श्रोताओं को इस कहानी को आंतरिक अर्थ बताया। उन्होंने कहा कि भारूई एक साधक का प्रतीक भी है, तो एक देशभक्त का भी प्रतीक है। साधक को सांसरिक आकर्षण आकर्षित नहीं कर सकते। जैसे मारूई को खेतसेन व अपने सगे वालों से मिलने की प्रबल इच्छा थी, वैसे साधक को भी प्रभु मिलन की प्यास रहती है, देश भक्त को भी अपनी मातृभूमि के प्रति वैसा प्रेम होता हो जैसा प्रेम मारूई को अपने मातृभूमि के लिए था और भक्त को प्रभु के प्रति होता है।

३० जनवरी साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज महात्मा गांधी की पुण्य तिथि है। उन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया। वे निष्ठावान, निडर, निष्काम राष्ट्रभक्त एवं ईश्वर भक्त थे। वे दीन दुखियों, के मसीहा थे, अहिंसा के अवतार थे। उनका जीवन प्रेरणा का स्रोत है।

२० फरवरी साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज बसंत पंचमी का पावन दिन है। आज से बसंत ऋतु प्रारंभ होती है। इसी ऋतु में अनुकूल वातावरण होता है, आप अधिक समय भगवद्

भजन करें। आज वीर हकीकत का शहीदी दिवस भी है। बालक हकीकत ने हिन्दू धर्म के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी। मौलवी ने इस्लाम में आने के लिए उसे प्रलोभन दिया किन्तु वह वीर निडर ९ वर्ष का बालक डट कर मौत का सामना करता है, अपना धर्म परिवर्तन नहीं करता। धन्य है वह माता जिसने वीर बालक हकीकत को जन्म दिया।

जननी जने तो हरिजन जने या दाता या सूर।
नहीं तो वह बाँझ भली, काहे गंवाए नूर।।

प्यारे गंगाराम की बच्ची शकु की दुर्घटना के कारण मृत्यु हो गई। दादाजी शकु को प्यार करते थे। दादाजी ने गंगाराम साजनदास एवं उसकी पत्नी लक्ष्मी को सांतवना देते हुए प्रभु से प्रार्थना की।

दादाजी शाम को भी टहलने जाते थे। अधिकतर श्री जशन, श्री गंगाराम, बहिन शान्ति व बहिन सती उनके साथ जाते थे। रास्ते में चलते चलते यदि कोई गरीब व्यक्ति उन्हें मिल जाता था, तो वे उसकी सेवा व सहायता भी करते थे।

दादाजी अचानक अस्वस्थ हो गये, डॉ. हीरानन्दाणी ने उनका उपचार किया किन्तु स्वास्थ्य में सुधार नहीं आया, फिर डॉ. ग्रान्ट ने आकर उनकी तपास की और उन्हें नर्सिंग होम में दाखिल किया गया। दादाजी के स्वास्थ्य के लिए सत्संग में प्रार्थना की गई और श्रीमद् भगवद् गीता, श्री सुखमनी एवं श्री जप साहब के पाठ आरंभ किये गये। नर्सिंगहोम में श्री जशन, शान्ति, हरिदेवी व सतीदेवी दादाजी की देखभाल व सेवा कर रहे थे। डॉ. मोटवाणी ने भी उनका उपचार व सेवा की। धीरे धीरे दादाजी के स्वास्थ्य में परिवर्तन आ गया। कई प्रेमी दादाजी का दर्शन करने के लिए नर्सिंगहाल में आते रहते थे। दादाजी उन्हें मुस्कराते मुस्कराते आशीर्वाद देते थे। एक दिन श्री गंगाराम साजनदास वहाँ आया और उसने दादाजी को बताया कि सरकार की ओर से मीरा स्कूल के लिए पच्चीस हजार रूपये अनुदान आया है। वह समाचार सुनकर वे प्रसन्न हुए।

दादाजी बीमारी के कारण बहुत ही अशक्त हो गये थे। वे ऊपर नहीं चढ़ सकते थे। उन्हें कुर्सी पर बिठाकर ऊपर ले जाते थे।

सत्संग के समय फिर उन्हें कुर्सी पर बिठाकर नीचे सत्संग हाल में ले आते थे। २२ सप्ताह के बाद दादाजी ने सत्संग हाल में प्रवचन करते हुए कहा कि इतने दिनों में मैंने कई अनुभव प्राप्त किये हैं। यद्यपि मेरा शरीर कमज़ोर है किन्तु आपका प्यार मुझे कुछ कहने के लिए प्रेरित करता है। मेरे स्वास्थ्य के लिए आपने शास्त्रों का पाठ किया, प्रभु से प्रार्थना की इसलिए मैं आप सब का आभारी हूँ।

दुख दारू सुख रोग मया जा सुख ताम न होई

दुखदर्द,कष्ट प्रभु की दवाई है जो हमारे तन मन को स्वस्थ करती है। सांसरिक सुख भोग तो रोग पैदा करते हैं। सब ही संतों महात्माओं ने सुख से अधिक महत्व दुख को दिया है। दुख में प्रभु की अधिक स्मृति होती है। वह दुख दर्द अच्छा जिसमें प्रियतम की याद आये। मैं अस्पताल में था, वहाँ मुझे शोक समाचार मिला कि सत्संग के तीन प्रेमी गुल गुलराजाणी, मीरा स्कूल का अध्यापक, श्री हीरानन्दाणी और मूलचन्द पहिलाजाणी संसार से चल बसे। उनके आत्मा के शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करें।

मेरे भाईयों व बहिनों ! पता नहीं कब काल का बुलावा आए! मानव जीवन में ही प्रभुकी प्राप्ति सम्भव है। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज फरमाते हैं -

भई प्राप्त मानुख देहरीआ ,
गोबिन्द मिलन की इह तेरी बरीआ।
अवरि काज तेरे कितै न काम,
मिल साध संगति भजु केवल नाम ।।

बिना नाम स्मरण के सांसरिक सब काम व्यर्थ हैं। आपको नाम की पूंजी ही काम आयेगी। मेरे भाइयो व बहिनों आप अपने श्वास स्मरण व अन्य सत्कर्मों में सफल करें। यह मनुष्य तन बार बार नहीं मिलेगा। अज्ञान, मोह की नींद से जागकर नाम का स्मरण करें। मैं अस्पताल में था, बार बार स्वयं से कहता रहा, "हे मन जागो ! जागो ! कब तक सोए रहोगे !"

जो जागा उसने ही पाया,
जो सोया उसने ही खोया !

१४ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया। सुबह को श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के बाद दादाजी ने मोदी खाना चलाया। उन्होनें गरीब परिवारों को चावल, दाल एवं अन्य खाद्य्य पदार्थ दिये। दिन को लंगर प्रसादी की गई। साँझ को दादाजी ने श्री गुरूनानक देव महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे कलियुग के अवतार थे। उन्होंने लाखों लोगों को अज्ञान की नींद से जाग्रत् कर नाम का अमृत पिलाया। श्री गुरू नानकदेव महाराज महान संत कवि व समाज सुधारक भी थे। उनकी ज्ञान गर्भित वाणी का पाठ करने से भी दुख दूर होते हैं। उन्होंने अपने काव्य में वेदान्त के अद्वैत सिद्धान्त का समर्थन किया है। वे ब्रह्म के सम्बंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं -

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिन रचाई।

ब्रह्म निर्गण, निरंजन, निराकार अगम अपार है। सब उसका ही ध्यान करते हैं। वे ही सृष्टि के सृजन करने वाले हैं -

सो पुरूख, निरंजन, हरि पुरूख निरंजन हरि अगम अपारा।
सभि धिआवहि सभि धिआवहि, तुधुजी हरि सच्चे सिरजण हारा।

प्रेमियो ! आप भी एक ब्रह्म का ध्यान व चिन्तन करें। श्री गुरू नानकदेव महाराज की शिक्षाओं के अनुसार चलें ? दादाजी के मागदर्शन में मोहन मंडली, कल्याण नारी शाला, हरी निवास सेवा के कार्य करते रहे। २५ नवम्बर प्रमियों ने दादाजी का जन्मदिन मनाया सबेरे शास्त्रों के पाठ व नाम कीर्तन के पश्चात् दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। संध्या को श्री गंगाराम साजनदास ने, दादा वासवाणी के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से चलते हुए सेवा कार्यों का वर्णन किया। उन्होंने दादाजी के चरणों में संग्रह की हुई माया भेंट की।

दादाजी ने उसी समय ही वह माया प्यारे गंगाराम को सेवा कार्यों के लिए दे दी। दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप सब मुझे बहुत ही स्नेह व सन्मान देते हैं, में आप सब का आभारी हूँ। आओ तो अब सब मिलकर श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज की निम्न पंक्तियाँ उचारण करें :-

संत जना मिल हरिजस गाओ,
कोट जन्म के दूख गंवाओ।

मेरे भाइयो व बहिनों ! आप यदि दुखों से मुक्त होना चाहते हैं तो संतों के संग में प्रभु की गुण-गाथा गाएं। संतों के संग से ही आपको राम का रंग लग जायेगा। आपके अनेक जन्मों के पाप कर्म कट जायेंगें और शान्ति की प्राप्ति होगी। यह मानव जीवन बार बार नहीं मिलेगा। स्मरण व सेवा में जीवन सफल बनाएं।

१२ दिसम्बर श्री गुरू गोबिंन्द सिंघ के जन्म दिन साँझ को दादाजी ने गुरू गोबिन्द सिंघ के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज आप श्री गुरू गोबिन्दसिंघ की वाणी की ये पंक्तियाँ अपनायें तो आपका जीवन धन्य धन्य हो जाये। श्री गुरू गोबिन्दसिंघजी फरमाते हैं -

साच कहूँ सुण लेह सभै,
जिन प्रेम कियो तिनही प्रभु पायो।

प्रेम द्वारा ही प्रभु की प्राप्ति सम्भव है । जिन्होंन भी प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ा है, उन्हें ही प्रियतम परमात्मा का दर्शन हुआ है। प्रभु, पूजा पाठ बाह्य कर्मकांड देखकर प्रसन्न नहीं होता है, वह तो प्रेम के आँसू देखकर प्रेमी को गले लगाता है। प्रेम के बिना जीवन नीरस है।

प्रेम के वश हैं राम हमारे,
जूठे बेर थे जिसको प्यारे।

दादाजी सुबह को ९ बजे टहलने के लिए निकलते थे। सदैव कुछ प्रेमी भी उनके साथ रहते थे। वे टहल कर काऊँसिल हाल के मैदान पर किसी वृक्ष के नीचे बैठते थे। वे प्रति दिन वहाँ ज्ञान गोष्ठी करते थे, और श्रोता प्रेमी लाभान्वित होते थे। एक दिन बहिन कर्मचन्दाणी ने उनसे पूछा कि परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो? दादाजी ने इस प्रश्न का उत्तर देते हूए कहा कि विनम्र बनें। प्रभु के द्वार में वे प्रवेश कर सकेंगे जो विनम्र हैं, जो स्वयं को शून्य समझते् हैं, जो अहम् का परित्याग करते हैं। जितने भी महापुरूष हुए हैं आप उनमें यह नम्रता का गुण देखेंगे। उनकी नम्रता से उनकी महानता झलकती है। अपनी

हस्ती को मिटाओ, तब महिबूब की मस्ती आयेगी। किसी भी प्रेमी के मन में यदि कोई शंका उत्पन्न होती थी तो दादाजी तत्काल ही उसकी शंका का समाधान कर देते थे।

१ जनवरी सन् १९५५ साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए नूतन वर्ष के सम्बंध में शुभ मंगल कामनाएं प्रकट की। उन्होंने कहा कि वर्ष का पहला दिन है, आज आप किसी न किसी अवगुण का त्याग करें। आप में से कोई सत्य बोलने का संकल्प करे, कोई अपने जीवन में जीवदया की ज्योति जगाने की प्रतिज्ञा करे। नये वर्ष में आप नया बनने का प्रयास करें।

१४ जनवरी मक्रसंक्रान्ति के पावन दिन दादाजी ने गरीबों में तिल गुड़ के लड्डू बाँटे और उन्हें अपना प्यार दिया। १८ जनवरी दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज स्वामी विवेकानन्दजी की जयन्ती है। उन्होंने गुरूदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंस के चरणों में बैठकर जो ज्ञान प्राप्त किया उस ज्ञान का प्रकाश विश्व को दिया। हम भी सत्गुरू व संतों के चरणों में बैठकर ज्ञान प्राप्त करें।

१ फरवरी बसंत पंचमी के दिन दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज से बसंत ऋतु प्रारंभ होती है। आप भी यदि अपने जीवन में बहार, आनंद चाहते हैं तो मुख से रामनाम का स्मरण करें और हाथों से दान व अन्य शुभ कर्म करें। संत तुलसीदास भी अपनी वाणी द्वारा यही आज्ञा देते हैं -

तुलसी इस संसार में कर लीजे दो काम।
देने को टुकड़ा भला लेने को हरिनाम।।

१५ अप्रैल श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज के जन्मदिन सम्बंध में सुबह को दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की । साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज की वाणी का विश्वास के साथ पाठ करने से भी दुख दर्द दूर होते हैं। उनकी अमूल्य कृति श्री सुखमनी साहब वास्तव में सुखों को देने वाली है। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज स्वयं श्री सुखमनी साहब में कहते हैं -

सुखमनी सुख अमृत प्रभ नाम।
भगत जनाके मनि बिस्राम।।

भाइयो व बहिनों आप प्रेम के साथ श्री सुखमनी का पाठ कर चिन्तन व मनन करें।

दादाजी कभी कभी आपबीती भी सुनाते थे। एक दिन उन्होंने बताया कि बचपन में जब वह एक पैसे की कोई खाने की वस्तु किसी कागज़ में लेता था, तब वह पना पढ़ता था। यदि उस कागद पर किसी संत के वचन या वाणी होती थी तो वह कागज, वह अपने पास रखता था। एक वचन भी जीवन में परिवर्तन ला सकता है। श्री गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुरजी के पिता के जीवन में ऐसी एक घटना के कारण परिवर्तन आ गया। एक दिन जैसे ही वे रास्ते से गुज़र रहे थे, तब उन्होंने रास्ते में कागज का एक टुकडा देखकर उठाया। उस पर निम्न सूत्र लिखा हुआ था -:

ईषा वास्यम सर्वं इदम् तेन तक्तेन भुञयता: माग्रद:

सर्वत्र सब में एक ब्रह्म व्यापक है। यह सूत्र पढ़ते ही गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिताश्री के जीवन में परिवर्तन आ गया। एक दिन आत्म वासवाणी ने दादाजी से पूछा कि क्या आप इतने गरीब थे कि आपको बचपन में एक पैसा खर्ची मिलती थी? दादाजी ने कहा, कि पूज्य पिताजी को पैसा व ज़मीन थी, किन्तु मेरे जन्म के बाद आर्थिक स्थिति बिगड़ गई। मेरे पूज्य पिता व माता सादगी का जीवन बिताते थे। जब मैं पिताजी के पाँव दबोचता था तब पिताश्री प्रसन्न होकर मुझे एक पैसा देते थे। उन दिनों एक पैसे का भी मूल्य था। पूज्य पिताश्री एवं माता के आशीर्वाद से ही मैंने बड़े बड़े पद प्राप्त किये।

मुझे बचपन की आप बीती याद आती है और यह अनुभव हुआ कि कर्ज़ मर्ज़ है। कभी भी कर्ज़ नहीं लेना। मैं स्कूल में पढ़ता था, तब मुझे एक पैसा खर्ची मिलती थी। स्कूल में दाल पूरी वाला आता था। मुझे दाल पुरी स्वादिष्ट लगती थी। एक पैसे में दाल पूरी मिलती थी। मैं एक पैसे से दालपुरी लेकर खाता था। एक दिन दालपूरी बेचने वाले ने मुझे कहा कि तुम दाल पूरियां अधिक खा सकते हो, उसके पैसे कभी बाद में दे देना। मैं भी दाल पूरियों की ला़लच में दो चार दिन अधिक पूरियाँ खाता गया। आठ पैसे कर्ज़ हो गया। एक दिन पूरी वाले ने कहा कि आठ पैसा दो। मेरे पास तो पैसे थे नहीं। मैं

अक्षरभुरी खेल में होश्यार था। मैंने इस खेल द्वारा आठ पैसे संग्रह कर उस दालपुरी वाले को दिये और मन को समझाया कि भविष्य में कभी भी किसी से कर्ज़ नहीं लेना। आज आपसे भी कहता हूँ कि कभी किसी से कर्ज़ नहीं लेना, कर्ज़ मर्ज़ पैदा करता है।

४ जून को मीरा स्कूल का स्थापना दिवस मनाया गया। दादाजी ने विद्यार्थियों व अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिन आदर्शों से मीरा विद्यालय प्रारंभ किया गया है, आप उन आदर्शों के अनुसार चलें। अपनी दिनचर्या प्रार्थना से प्रारंभ करें। प्रार्थना में बड़ी शक्ति है। प्रार्थना पवित्रता, प्रेम, सत्य, सादगी के गुण अपनाएं। पाठ्य पुस्तकों के साथ साथ धार्मिक पुस्तकों का भी अभ्यास करें।

७ अगस्त साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज तुलसी जयन्ती है। संत तुलसीदास ने राम भक्ति की सरिता प्रवाहित कर राम भक्ति का प्रचार किया। श्री राम चरित्र मानस उनकी अमूल्य कृति है। आजकल न केवल भारत में किन्तु मारीशस एवं विदेश के कई देशों में श्री रामचरित मानस प्रेम व श्रद्धा के साथ पढी जाती है। आप भी उसका अध्ययन करें। संत तुलसीदास रामनाम की महिमा गाते हुए कहते हैं -

राम कृपा नासहिं सब रोगा,
जौं एहि भाँति बनै संयोगा।।
सद्गुरू वैद वचन विश्वासा
संयम यह न विषय कै आसा।।

मेरे भाइयो व बहिनों ! आप सब बातों को भूलें किन्तु नाम को नहीं भूलें। गुरूदेव के वचनों में पूर्ण विश्वास रखकर, विषय विकारों से विमुख होकर राम नाम की साधना करें।

दादाजी सबेरे टहलते टहलते काऊँसिल हाल के मैदान पर बैठकर ज्ञान गोष्ठी करते थे। इस गोष्ठी का लाभ प्राप्त करने के लिए कई भाई-बहिने आकर सम्मिलित होते थे और दादाजी की अमृत वाणी श्रवण कर लाभान्वित होते थे। एक दिन एक इंजनेयर जो काऊँसिल हाल की देख भाल करता था, वहाँ से गुज़रा। उन्होंने दादाजी को व्याख्यान देते हुए देखा और बिना जाँच किये हुए उसने

राय बनाई कि ये साम्यवादियों का समूह है, और दादाजी को साम्यवादियों का नेता समझकर उन्हें पत्र भेजा कि आप यहाँ किसी भी सभा का आयोजन नहीं करें। प्यारे श्री जशनने यह पत्र पढ़कर दादाजी को सुनाया। दादाजी ने पत्र सुनकर मुस्कराते हुए कहा कि जो प्रभु की इच्छा!

दादाजी टहलते टहलते मीरा सत्संग हाल में आकर ज्ञान गोष्ठी करते थे। एक दिन वे टहलते टहलते एक बगीचे में आये, वहाँ भाँति भाँति के फूल खिले हुए थे। उन फूलों को देखते देखते दादाजी की आँखों से आँसू टपक पड़े। प्यारे श्री जशन ने दादाजी से पूछा कि आपकी आँखों से आँसू क्यों टपकते हैं ? दादाजी ने कहा प्यारे जशन! इस संसार रूपी बगीचे में भी विभिन्न प्रकार के धर्म व मज़हब रूपी फूल हैं, उन में अपनी अपनी सुंदरता व सुरभि है। फिर लोग क्यों धर्म मज़हब के नाम आपस में लड़ते झगड़ते ख़ून की नदी बहाते हैं! यह विचार करते मेरा मन भर आता है। प्रत्येक धर्म में अपने अपने गुण व विशेषताएँ हैं।

दादाजी फिर अस्वस्थ हुए। डॉ. हीरानन्द हाथीरामाणी एवं उनके सुपुत्र डॉ. नारायण हाथीरामाणी ने उनका उपचार किया।

२५ नवम्बर दादाजी का जन्मदिन मीरा स्कूल के विद्यार्थियों, अध्यापकों एव प्रेमियों ने मिलकर मनाया। यद्यापि दादाजी अशक्त थे, फिर भी उन्होंने दरिद्र नारायण की सेवा की। साँझ को प्यारे गंगाराम साजनदास ने दादाजी के गुणों का वर्णन करते हुए जन्मदिन सम्बंध में संग्रह की गई माया ६५ हजार रूपये दादाजी के चरणों में अर्पित किये। दादाजी ने तत्काल ही यह माया प्यारे गंगाराम को सेवा कार्यों के लिए लौटा दी। दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज सबेरे जैसे ही मेरी आँखे नींद से खुली तो मैं ने श्री सुखमनी साहब की निम्न पंक्तियां उचारण की।

टूटी गांढ़न हार गोपाल,
सर्ब जीआं आये प्रतिपाल।

हमारे बिगड़े हुए काम एक प्रभु ही संवार सकता है, हमारे जीवन की डूबती नैया परमात्मा ही भवसागर से पार लगा सकता है।

वह परमात्मा सर्व शक्तिवान है, सारी सृष्टि की पालना करने वाला है। उसकी अनुकम्पा के बिना हम एक पग भी आगे बढ़ नहीं सकते। हम सब अशक्त हैं वह शक्तिशाली है। हम सब पर उसकी असीम कृपा है। प्रतिदिन उसके आभार मानें। आप यहाँ सत्संग के साथ तन, मन व धन की सेवा कर रहे हैं। इसके लिए मैं सब का आभारी हूँ।

२८ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज के जन्मदिन सुबह को श्री गुरू ग्रंन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के पश्चात् दादाजी ने गरीबों के लिए मोदी खाना आरंभ किया। गरीब लोग दादाजी से खाद्य पदार्थ लेकर उन्हें आशीर्वाद देते गये। साँझ को दादाजी ने श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते हुए कहा कि उनके मन में गरीबों के प्रति अधिक स्नेह व सहानुभूति थी। उन्होंने धनवान मलक भागू के मालपुड़े न खाकर गरीब लालू बढ़ई का जुआर का ढ़ोढ़ा खाया। हमें गरीबों का तिरस्कार न कर उनको प्यार करना चाहिए।

१५ दिसम्बर श्री गुरू गोबिन्दसिंघ के जन्मदिन दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि श्री गुरू गोबिन्दसिंघ महाराज शक्ति व भक्ति के अवतार थे। उन्होंने हिन्दू धर्म की सुरक्षा के लिए "खालसा" पंथ आरंभ किया, किन्तु आज हम उनके मूल भूत सिद्धांतों को भूल गये हैं। उनके आदर्शों को अपनाएँ।

२५ दिसम्बर दादाजी ने उपदेश देते हुए श्री ईषा के जीवन की कुछ घटनाएं सुनाई। दादाजी कभी 'श्याम' सिन्धी पत्रिका के लिए स्वयं लेख लिखते थे तो कभी वे बोलते जाते थे और बहिन सती थधाणी लिखती जाती थी। वे 'मीरा' अंग्रेजी 'ईस्ट ऐंड बेस्ट' मासिक पत्रिकाओं के लिए कभी स्वयं लेख लिखते थे तो कभी श्री जशन उनके प्रवचनों को लेखों के रूप में प्रस्तुत कर फिर लेख दादाजी को दिखलाते थे। 'मीरा' का सम्पादन श्री गंगाराम साजनदास करते थे, तो 'ईस्ट ऐंड वेस्ट' पत्रिका का सम्पादन श्री जशन वासवाणी करते थे।

१ जनवरी १९५६ सबेरे ६.३० बजे दादाजी सत्संग हाल में आये। शास्त्रों से वचन लिया गया और प्रार्थना की गई। दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि हवा लगने से दीपक बुझ जाता है। हम प्रभु

से आज नववर्ष के प्रथम दिन यह प्रार्थना करें कि "हम छोटे से दीपक हैं, विकारों रूपी हवा व तूफान से हमें बचायें, हमारी रक्षा करें। हम स्वयं अशक्त हैं वह सर्व शक्तिवान है। काम, क्रोध, लोभ, मोह की तेज़ हवा हमें बुझा सकती है। प्रभु इस हवा व तूफान से हमें बचाओ, अपनी शरण बिठाओ।"

एक ज्ञानवान मनुष्य दोस्तों के संग में सिनेमा में जाता है, वह चल चित्र में एक सुंदरी को देखकर आकर्षित हो जाता है, सिनेमा हाल से लौटता है तो उसके मन में परिवर्तन आ जाता है। वह सौंदर्य के आकर्षण में पथ भ्रष्ट हो जाता है। काम का तूफान उसे गिरा देता है। पग पग पर प्रभु के कृपा की आवश्यकता है।

दादाजी को प्रेमियों एवं गरीबों को विभिन्न वस्तुएँ प्रसाद रूप में बाँटने की इच्छा होती थी तो शीघ्र ही उसकी व्यवस्था की जाती थी। संत जब अपने हाथ से कोई भी वस्तु प्रसाद रूप में देता है तो उसका अपना महत्व है। अधिकतर हम प्रसाद बाँटकर खाते हैं। एक संत ने कहा है :-

बाँट के खाना बंदगी छुपा के खाना गंदगी

दादाजी को बाँटने में ही आनंद आता था। एक दिन उन्होंने कहा कि आप यद्यि कोई वस्तु नहीं बाँट सकते तो अपने दिल का प्यार बाँटे। आपका प्यार कई दिलों को प्रफुलित कर सकता है। १४ जनवरी मकरसंक्रान्ति के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में नामकीर्तन के पश्चात् दादाजी ने गरीबों में तिल के लड्डू एवं चावल बाँटे। साँझ को उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि आज के दिन दान करने का बड़ा महत्व है। किसी को कुछ दान कर हम अपना उपकार करते है, क्यों कि माया की सार्थकता दान करने में है। माया अर्थात् लक्ष्मी तो प्रभु की पत्नी है, उसे अपना समझना मूर्खता है। हमारे पास जो कुछ भी है वह प्यारे प्रभु की धरोहर है। अमानत में ख्यानत नहीं करें।

१५ जनवरी दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज स्वामी विवेकान्द की जयन्ती है। गुरूदेव स्वामी रामकृष्ण परम हंस के चरणों में बैठकर उसने जो ज्ञान प्राप्त किया, उसका प्रकाश उसने सारे विश्व

को दिया। गुरू कृपा से ही उसने आध्यात्मिक पथ पर प्रगति की। हम किसी न किसी परिपूर्ण गुरू के चरणों में बैठकर ज्ञान ग्रहण करें, गुरूदेव की शिक्षा को अपने जीवन में उतारें।

३० जनवरी दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज महात्मा गांधी की पुण्यतिथि है। उन्होंने अपना सर्वस्व भारत माता के चरणों में अर्पण किया। वे त्याग व तपस्या की तस्वीर थे। किसी की भी हत्या करना महापाप है। विरोधियों ने विश्व विभूति बापूजी की हत्या कर भारत को कलंकित किया, किन्तु गांधीजी सदैव अमर रहेंगे। उनकी शिक्षाएं युगों तक मानव मात्र का मार्गदर्शन करती रहेंगी।

३ फरवरी बसंत पंचमी के दिन सुबह को दादाजी ने गरीबों में गीहर व अन्न बाँटा। साँझ को उन्होंने उपदेश देते हुए बालक वीर हक़ीकतराय को श्रद्धांजलि अर्पित की। १९ फरवरी शिवरात्री के दिन दादाजी ने भगवान शंकर के सम्बंध में प्रवचन करते हुए कहा कि आज के दिन भगवान शंकर की उपासना व उनके नाम का जाप करने का विशेष महत्व है। वे शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं, इस लिए उन्हें भोलानाथ कहा जाता है। उनका मंत्र शक्ति प्रदान करता है। आज एकांत में बैठकर उनका ध्यान व जाप करें।

१८ मार्च होली के दिन सुबह को दादाजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। कुछ प्रेमियों ने दादाजी को गुलाल लगाया, उन्होंने मुस्कराते मुस्कराते सब को प्रेम का रंग लगाया। सांझ को उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि भक्त प्रहलाद छोटा बालक था किन्तु विरोध होते हुए भी वह तनमयता के साथ भगवद् भजन करता रहा। हमारे जीवन के कई वर्ष बीत गये किन्तु अब तक हम प्रभु से दूर रहे हैं। मेरे भाइयो व बहिनों! एकाग्रचित्त होकर नामस्मरण करें, भक्त प्रहलाद की भाँति आप प्रभु में पूर्ण विश्वास रखें तो वह आपकी सुरक्षा करेगा।

१४ अप्रैल बैसाखी के दिन दादाजी ने सब ही प्रेमियों व गरीबों को अपने हाथों से शर्बत पिलाया। संध्या को उन्होंने उपदेश देते हुए बैसाखी का महत्व सुनाया।

१६ अप्रैल श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज का जन्मदिन मीरा सत्संग हाल में मनाया गया। दादाजी ने श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज के

जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके वाणी की व्याख्या की। दादाजी ने कहा कि श्री गुरू अर्जुनदेव की ज्ञान गर्भित व शान्त रस से ओतप्रोत वाणी पढ़ने व श्रवण करने से आनंद की उपलब्धि होती है।

६ मई बुद्ध जयन्ती के उपलक्ष में दादाजी ने सुबह को दरिद्र नारायण की सेवा की। साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आज भगवान गौतम बुद्ध की जयन्ती है। वे अहिंसा व करूणा के अवतार थे। उन्होंने राजकीय भोग विलास के जीवन का त्याग कर तपस्या का जीवन बिताया, जीवदया का दीप जगाया। उन्होंने मैत्री,करूणा व अहिंसा का मार्ग बताया और हजारों लोगों के मन में परिवर्तन लाया। आज सारे विश्व को उनके सिद्धांतों पर चलने की अत्यन्त आवश्यकता है।

४ जून मीरा स्कूल का स्थापना दिवस मनाया गया। श्री गंगाराम साजनदास ने मीरा विद्या हलचल के सम्बंध में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि दादा साधु वासवाणी की असीम अनुकम्पा से मीरा विद्या हलचल प्रारंभ हुई। पहले पहले हैदराबाद में मीरा स्कूल आरंभ किया गया। दादाजी ने बालक बालिकाओं में पवित्रता, प्रार्थना, सत्य, सेवा, सादगी, संयम, स्नेह सहानुभूति के बीज बोने के लिए मीरा स्कूल की स्थापना की। धीरे-धीरे सिन्ध के अन्य नगरों, रोहड़ी, सक्खर, लाड़काणा में भी मीरा स्कूलों की स्थापना हुई। इन स्कूलों में पुस्तकीय ज्ञान के साथ साथ विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा भी दी जाती है। विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक उत्थान के लिए भी प्रयास किया जाता है।

दादा वासवाणी ने श्री गंगाराम,प्यारे जशन, बहिन हरीदेवी, बहिन शान्ति, श्री चंदीराम आडवाणी एवं अन्य सेवक सेविकाओं को स्कूल की देखभाल करने के लिए धन्यवाद दिया। दादाजी ने विद्यार्थियों व मीरा स्कूल के अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस विद्या मंदिर पर श्री कृष्ण की अनन्य उपासिका मीरा का नाम दिया गया है। मीरा त्याग व अर्पणम् की मूर्ति थी। उसने राज भाग का त्याग कर स्वयं को श्री श्याम सुंदर के चरणों में समर्पित किया। उसके मुख से श्री कृष्ण भक्ति की सरिता प्रवाहित हुई, जिसने कई मरूस्थल

जैसे दिलों में प्रेम की बहार लाई। मेरे प्यारे विद्यार्थियो व गुरूजनों आप यदि मीरा विद्या हलचल के आदर्शों को अपनायेंगे तो आपका भविष्य उज्ज्वल होगा।

१६ जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन सुबह को कई प्रेमियों ने दादाजी के श्री चरणों में श्रीफल व मिश्री भेंट रखकर प्रणाम किया। दादाजी ने मुस्कराते उन्हें आशीर्वाद दिया। साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि सब ही संतों महात्माओं ऋषि मुनियों ने गुरू की महिमा गाई है। संस्कृत में गुरू महिमा का प्रसिद्ध श्लोक है -:

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विषणु गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरू साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

गुरू ही ब्रह्मा विष्णु एवं शिवशंकर का रूप है। वह साक्षात् ब्रह्म रूप है। इस श्लोक का अर्थ यह भी हो सकता है कि गुरू ब्रह्मा की भाँति शिष्य में सद्गुणों की उत्पत्ति करता है, श्री विष्णु की भाँति उन गुणों का विकास करता है, और शिव की भाँति शिष्य के अवगुणों व विकारों का विनाश करता है। गुरू शिष्य को धरती से उठाकर अम्बर तक पहुँचा देता है। गुरू की शरण लें और उनके बताए हुए मार्ग पर चलें तो आपका कल्याण होगा।

६ अगस्त दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज तुलसी जयन्ती है। गोस्वामी तुलसीदास महान रामभक्त कवि थे। पहले उनके मन में अपनी पत्नी के प्रति कितनी न आसक्ति थी ! पत्नी रत्नावली ने उनकी आँखे खोलते हुए कहा :-

अस्थि चर्म मय देह मम, तामें जैसी प्रीति।
तैसी जो रघुनाथ महँ, होति न तौ भवभीत।।

पत्नी के ये वचन श्री तुलसीदास को तीर जैसे लग गये। उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन आ गया। वे प्रभु श्री राम के अनन्य भक्त बन गये और उनके मुख से राम भक्ति की काव्यधारा प्रवाहित हुई। प्रेमियो! आप भी प्रभु श्री राम का स्मरण करें, तुलसीदास जैसे भक्त बन जायें।

२२ अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन सुबह को मीरा हाल में दादाजी आये। बहिनों ने श्रीकृष्ण के मधुर गीत गाये। दादाजी गीत सुनते सुनते ध्यान मुद्रा में आ गये। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने दीन

दुखियों व अपाहिजों को अपने हाथों से सहायता की और अपना निर्मल स्नेह दिया। साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज भगवान श्रीकृष्ण का जन्मदिन है। श्री कृष्ण का अर्थ है जो आकर्षित करे। उन्होंने लाखों व्यक्तियों को अपनी प्रेम की डोरी में बांध लिया। उनके बाँसुरी की तान सुनकर न केवल गोपियाँ, गुवाल किन्तु गायें भी दौड़ दौड़ कर आती थीं। वे प्रेम के अवतार थे। हमारे जीवन में प्रेम का अभाव है। मेरे भाइयो व बहिनो ! आप श्री कृष्ण भक्ति सरिता में डुबकियाँ लगाएँ तो आपका जीवन प्रेममय हो जायेगा। आजकल न केवल भारत में किन्तु विदेश में भी लाखों लोग भगवान श्री कृष्ण के भक्त वन गये हैं।

२ अक्तूबर दादाजी ने प्रवचन करते महात्मा गांधी का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हम गांधीजी के मूल सिद्धांतों को भूल गये हैं। वे जितने महान थे, उतने विनम्र थे। एक बार वे किसी गाँव से गुजर रहे थे। उनकी दृष्टि एक गरीब लड़की पर पड़ी जो घर के बाहर आँगन में चौपाई पर सोई हुई थी। वह ठंडी के कारण कंप रही थी। उसे मोतीझिरा नकला था, साथ साथ निमोनिया भी हो गया था। उसका बिस्तर भी बहुत मैला हो गया था। बालिका की दयनीय दशा देखकर गांधीजी ने उसे साफ किया, उसकी चदर बिछाकर उसे सुलाया। उसका प्राकृतिक उपचार किया, अपनी चदर भी उतार कर उस पर डाल दी। गांधीजी का आत्मीयता का व्यवहार देखकर गाँव वाले आश्चर्य में पड़ गये और उनके आभार मानने लगे। बालिका का बुखार कम हुआ। गांधीजी ने उसी समय गाँव वालों से कहा कि वे तो सब के सेवक हैं। सेवा करना उनका धर्म है, उन्होंने कोई बड़ा उपकार नहीं किया।

एक रात को मीरा भूमि पुणे में एक चोर चोरी करने आया। वह कुछ बर्तन व पानी के नल तोड़ कर ले जा रहा था तो चौकीदार ने उसे पकड़ लिया। उस चोर को पुलिस के हाथों सौंप दिया गया। जब दादा वासवाणी को यह घटना सुनाई गई तब वे अप्रसन्न हुए और उन्होंने कहा चोर भी हमारा भाई है, उसने चोरी क्यों की ? हो सकता है किसी परिस्थिति के कारण उसने चोरी की हो। दूसरे दिन दादा वासवाणी ने नियाय अधिकारी को पत्र भेजा कि कृपया उस चोर को

मुक्त कर दें। हम उसे कोई दंड दिलाना नहीं चाहते, हम उसे सुधारना चाहते हैं। न्याय अधिकारी के मन में साधु वासवाणी के प्रति श्रद्धा व सन्मान की भावना थी। उसने दादाजी का पत्र पढ़कर उस चोर को मुक्त कर दिया।

चोर सीधा दादा वासवाणी के पास आया। वह अपने अपराध की क्षमा याचना करते दादा वासवाणी के चरणों में गिर पड़ा। उसकी आँखों से पश्चानुत्ताप के आँसू टपक रहे थे। दादा वासवाणी ने उसे उठाकर अपने गले लगाया। चोर ने अपनी दयनीय दशा का उल्लेख करते हुए कहा, दादाजी ! मैं परिश्रम कर पैसा कमाना चाहता था, उसके लिए मैं ने बहुत प्रयास भी किया, किन्तु मुझे छोटी मोटी नौकरी भी नहीं मिली। मैं ने विवश होकर, अपने बाल बच्चों का पेट भरने के लिए चोरी का काम किया। आप दयालु हैं, आपने मुझे जेल से मुक्ति दिला दी, मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा। दादाजी ने कुछ पैसे, खाद्य पदार्थ व वस्त्र उस चोर को देते हुए किसी प्रेमी से कहा कि इस बिचारे को कहीं नौकरी दिलवादें। दादाजी की दया दृष्टि से चोर के जीवन में परिवर्तन आ गया। दादाजी ने चोर को न केवल जेल से मुक्त करवाया, परन्तु उसका अपराध क्षमा करते, अपना स्नेह, सहानुभूति व सहायता भी दी।

४ नवम्बर दिवाली के दिन सुबह को दादाजी ने गरीबों को मिठाई के पाकेट व अन्न-धन की सहायता की। साँझ को उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि आज के दिन हम बाहर कितने न दीपक जलाते हैं ! किन्तु अपने मन मंदिर में प्रेम के, ज्ञान के दीपक नहीं जगाते ! अन्त:करण में अंधकार है, वहाँ उजाला करें। दिवाली हमारा राष्ट्रीय पर्व है, खुशी का त्यौहार है, सब के साथ खुशी बांटे। हम अधिकतर इन त्यौहारों के मूल उद्देश्यों को भूलकर बाह्य आडंवर में व्यर्थ पैसा व समय गंवाते हैं। आज का संदेश है मन मंदिर में ज्ञान की, प्रेम की ज्योति जगाओ !

श्री शान्ति शहाणी पत्रिकार व देश भक्त था। दादा वासवाणी जब लाड़काणा में गये थे। तब से उसका सम्बंध दादा वासवाणी से हुआ। शान्ति शहाणी के मन में दादाजी के प्रति अगाघ श्रद्धा थी,

दादाजी भी उसे प्यार करते थे। देश विभाजन के पश्चात् वह मुम्बई में हिन्दुस्तान प्रेस का व्यवस्थापक था। कुछ वर्षों के लिए वह श्याम पत्रिका प्रकाशन की सेवा भी करता रहा। अचानक व अस्वस्थ हो गया। ८ नवम्बर १९५६ में श्री शान्ति शहाणी इस संसार से चल बसा। दादा वासवाणी को जब यह दु:खद समाचार मिला तब उनका मन पिघल गया। दादाजी ने उसे श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि प्यारे शान्ति ने अपने नाम को सार्थक किया।

१५नवम्बर कर्तिक एकादशी के दिन दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज संत नामदेव का जन्मदिन है। वे उच्च कोटि के संत थे, भगवान हरि विट्ठल के अनन्य उपासक थे। वे एक क्षण भी प्रभु से दूर रहना नहीं चाहते थे। वे समर्पित भाव से भगवान हरि विट्ठल की भक्ति करते थे। उनकी कुछ वाणी श्री गुरू ग्रन्थ साहब में भी है। मराठी में उनके अभंग प्रसिद्ध हैं। उनके संत काव्य से उनकी आध्यात्मिक ऊँचाई परिलक्षित होती है। हमारा सौभाग्य है कि हम उनके जन्म स्थल, लीला स्थल के निकट रहते हैं। हमें उनकी वाणी का अभ्यास करना चाहिए।

१८ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज के जन्मदिन सुबह को सत्संग हाल में श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के पश्चात् दादाजी ने मोदी खाना आरंभ किया। उन्होंने कई गरीब परिवारों को खाद्य सामग्री मुफ्त दी। साँझ को उन्होंने श्री गुरू नानकदेव महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा की श्री गुरू नानकदेव महाराज सद्गृहस्थी थे। उन्हें दो सुपुत्र श्री श्रीचन्द्र, श्री लक्ष्मीचन्द एवं बेटी नानकी देवी थी, किन्तु वे सदैव अनासक्त भाव से रहते थे। यह उनकी महानता व त्याग भावना थी कि उन्होंने अपना उत्तराधिकारी पुत्रों को न बनाकर निष्काम व आज्ञाकारी सेवक भाई लहणों को बनाया, जो श्री गुरू अंगद के नाम से प्रसिद्ध हुए। ऐसे महापुरूष गुणों को महत्व देते हैं। श्री गुरू नानकदेव महाराज स्वयं महान विभूति होते हूए भी गुरू की महिमा गाते हैं -:

बलिहारी गुर आपने दिउहाड़ी सद् बार।
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार॥

मैं ऐसे गुरूदेव पर न्योछावर जाऊँ जिन्होंने मुझे देवता बना दिया। ऐसा करने से उन्हें कुछ देर नहीं लगी।

श्री गुरूनानक की वाणी व्यवहार एवं परमार्थ की प्रगति के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है। उनकी शिक्षा को अपनायें, मानव जीवन सफल बनाएं।

२५ नवम्बर दादा वासवाणी का जन्मदिन मीरा भूमि में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। सबेरे मीरा सत्संग हाल में नाम कीर्तन हुआ, तत्पश्चात् दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। मीरा स्कूल के विद्यार्थी एवं अध्यापक गण दादाजी को बधाई देने के लिए आये। दादाजी ने उसी समय मुस्कराते मुस्कराते विद्यार्थियों को शिक्षाप्रद बातें बताकर मार्गदर्शन किया। दुपहर को लंगर प्रसादी हुई। साँझ को दादाजी के जन्म दिन उपलक्ष में संग्रह की गई माया भेट की गई। दादाजी ने तत्काल ही वह माया प्यारे गंगाराम साजनदास को सेवा कार्यों के लिए लौटा दी। श्री गंगाराम ने दादाजी के जीवन की प्रेरणादायक घटनाएं सुनाई। दादाजी ने सब का आभार मानते हुए कहा कि इस मानव जीवन में ही हम प्रभु का दर्शन कर सकते हैं, नाम स्मरण व शुभ कर्म कर सकते हैं, अपना भविष्य बना सकते हैं। कई जन्मों के पश्चात् यह अमूल्य मनुष्य शरीर मिला है, वह व्यर्थ नहीं गंवाएं। प्रभु से कहें -:

बहुत जन्म बिछड़े थे माधव, यह जन्म तुम्हारे लेखे

बार बार परम पिता परमात्मा के उपकार मानें जिसने अमूल्य मानुष तन दिया है। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप मूझे कितना न स्नेह देते हैं, ऐसा स्नेह सम्बंध अब प्रभु के साथ जोड़ें। संतों के संग में प्रभु के गुण गाएं जीवन सफल बनाएं। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज भी फरमाते हैं -:

संत जना मिल हरिजस गाओ ,
कोट जन्म के दूख गंवाओ ।।

५ दिसम्बर साँझ को दादाजीने उपदेश देते हुए कहा कि आज श्री गुरू गोबिन्दसिंघ महाराज की जयन्ती है। वे शक्ति व भक्ति के अवतार थे। हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने अपने बच्चों का बलिदान

किया। उन्होंने हिन्दूओं में वीरता का संचार किया। उनके आदर्शों के अनुकूल चलने का प्रयास करें।

२५ दिसम्बर श्री ईषा के जन्मदिन दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जब निर्दोष ईषा को सूली पर चढ़ाया गया तब भी वे विरोधियों के लिए परमात्मा से प्रार्थना करने लगे कि वे विचारे अनभिज्ञ हैं, उन्हें क्षमा करें। उन्होंने बुरों का भी भला किया। वे कितने न क्षमाशील थे। हम भी अपने जीवन में क्षमा का गुण अपनाएं। क्षमा मनुष्य का आभूषण है। आप को किसी ने सताया है, कष्ट दिया है, अपशब्द कहे हैं, आप उसे क्षमा कर दें। क्षमा करने में ही महानता है।

३१ दिसम्बर दादाजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आज वर्ष का अंतिम दिवस है। आप आज एकांत में बैठकर इस वर्ष अपने किये हुए कर्मों का निरीक्षण करें। यदि आपने कोई अशोभनीय कर्म किया है तो उसके लिए पछतावा करें। पश्चानुत्ताप के आँसू मन को स्वच्छ साफ व निर्मल बनाते हैं। प्रेमियो ! पश्चानुत्ताप कर फिर वह अशुभ कर्म कभी नहीं करें। अपने किये हुए कुकर्म एवं अशुभ विचार के लिए स्वयं को दंड दें तो आपके जीवन में परिवर्तन आ जायेगा।

१ जनवरी १९५७ साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हूए कहा कि आज नये वर्ष का प्रथम दिन है। आज आप अपने जीवन में किसी न किसी गुण को अपनायें। हम प्रति दिन कितने न श्वास व्यर्थ गंवाते हैं। ये अमूल्य श्वास आप पैसों से खरीद नहीं कर सकते हैं। आज से आप कम व मधुर बोलने का संकल्प करें। बहुत बोलने से आपकी शक्ति जाती है, समय जाता है। कड़वा बोलने से आप भी दुखी और जिस से बात करते हैं वह भी दुखी होता है। संत कबीर भी फरमाते हैं-

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥

कम व मधुर बोलने से आपका मन शीतल रहेगा। प्रभु प्राप्ति के लिए भी यह साधन आपका सहायक बनेगा।

३० जनवरी साँझ को दादाजीने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि बापूजी न केवल राष्ट्र भक्त थे, किन्तु ईश्वर भक्त थे। उनका प्रार्थना में बड़ा विश्वास था। वे प्रातःकाल

को उठकर प्रार्थना करते थे, श्रीमद् भगवद् गीता का पाठ करते थे। प्रभु से प्रार्थना करते ही उन्हें समस्याओं का समाधान मिल जाता था। उन्हें आध्यात्मिक शाक्ति थी, उस शक्ति द्वारा ही उन्होंने निडरता से अंग्रेज़ों का सामना किया। वे निष्काम निर्भीक देश भक्त थे। उनके सिद्धांतो के अनुसार चलने की अत्यन्त आवश्यकता हैं।

५ फरवरी उन्होंने उपदेश देते हुए संत दादू दयाल के सम्बंध में बताया कि संत दादू पर बालक अवस्था में ही गुरू की कृपा हुई। एक बार ११ वर्ष का बालक दादू अपने सहपाठियों के साथ खेल रहे थे, अचानक एक बूढ़ा साधु वहाँ से कहीं जा रहा था। वह बालक दादू को देखकर रूक गया। वह अपने मुख की थूक उस के मुख में डालकर आशीर्वाद देते चला गया। दादू इस रहस्य को नहीं जान सके, किन्तु धीरे धीरे दादू के मन में संसार के प्रति अनासक्ति का भाव उत्पन्न होता गया और बूढ़े बाबा के दर्शन की प्यास लगी। घर वालों ने उसे सांसरिक पर पंच में फंसाने का प्रयास किया किन्तु युवा दादूजी का मन नहीं लगता था। १८ वर्ष की आयु में फिर उसे उस बूढ़े संत का दर्शन हुआ। दादूजी उन्हें देखकर उनके चरणों में गिर पड़ा। साधु ने उसे गले लगाते हुए कहा बेटा ! अब तुम भगवद् भक्ति में जीवन सफल करो, प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ो। तुम भविष्य में धन्य धन्य हो जाओगे। ऐसा कहते उस बूढ़े बाबा की आँखों से प्रेम के आँसू टपक पड़े। यह देखकर दादू जी ने उनके चरणों को पकड़ कर कहा, "आप मेरे सर्वस्व हैं ! मैं भाग्यवान हूँ घर बैठे ही आप मेरा कल्याण करने के लिए आये हैं।" संत तो चले गये फिर श्री दादूजी के जीवन में बड़ा परिवर्तन आ गया। उसने इतनी तो भक्ति साधना की कि वे स्वयं सच्चे संत बन गये। वे न केवल महान संत हुए किन्तु आध्यात्मिक मार्गदर्शक और उच्च कोटि के संत कवि हुए। उनकी अमूल्य वाणी आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है। वे अपने सत्गुरू की अनुकम्पा का उल्लेख करते हुए कहते है -:

गैब में गुरूदेव मिला, पाया हम प्रसाद।
मस्तक मेरे कर घारिया, की दया अगम अगाध॥

जब संत कृपा दृष्टि करते हैं तब जीवन में परिवर्तन आ जाता

हैं। वे हमारी कुबुद्धि को नष्ट कर सुबुद्धि प्रदान करते हैं। आप भी संत कृपा के पात्र बनें।

श्री आतम वासवाणी का तो सिन्ध से ही दादाजी के साथ सम्पर्क रहा। उसके पिताश्री मूलचंद भी भक्त जन थे। उसका सारा परिवार दादाजी के सत्संग में आता था। श्री आतम राशन विभाग में नौकरी करता था। शेष समय वह सत्संग व सेवा में सफल करता था। वह संतों, फक़िरों की वाणी भी गाता था और मोदीखाना भी चलाता था। दादाजी के संग में उसने संतों व सूफियों की वाणी का भी गहन अध्ययन किया। विभाजन के बाद वह भी परिवार सहित पुणे में आकर बसा और दादाजी के सत्संग व सेवा कार्यों में सक्रय रहा। दादाजी भी उसकी निष्काम सेवा भावना के कारण उसे प्यार करते थे। धीरे धीरे वे ब्रदर हुड संस्था के अभित्र अगं बन गये। वे दादाजी की कृपा व प्रेरणा से 'संत माला' सिन्धी मासिक पत्रिका का पुस्तक रूप में सम्पादन व प्रकाशन कर सिन्धी पाठकों को संतों का संदेश देते रहे।

श्री आतू रेलवाणी लाड़काणा सिन्ध का निवासी था। वह कराची कालेज में पढ़ता था। दादाजी जब कराची में आते थे तब भी श्री आतू दादाजी का व्याख्य श्रवण करने के लिए कृष्ण कुंज में जाता था। वह सिन्ध में ही दादाजी की ओर आकर्षित हुआ। विभाजन के बाद उसने बनारस विश्व विद्यालय से उपाधि प्राप्त की। दादाजी के सम्पर्क में रहने के कारण उसने भी पुणे में नौकरी की। शेष समय वह भी सत्संग में आकर दादाजी के निकट आता गया। धीरे धीरे वह दादाजी की ब्रद्रहुड संस्था से जुड़ गया। कुछ वर्षों के पश्चात् उसने सरकारी नौकरी का त्याग कर समस्त जीवन गुरूदेव दादा वासवाणी के श्री चरणों में अर्पित किया।

श्री पमो मन्चुंडिया पढ़ा लिखा था। उसने इन्जनीअरिंग डिपलोमा उत्तीर्ण कर खड़की में सरकारी कार्यालय में नौकरी की। वह शेष समय मीरा सत्संग में आने लगा। धीरें धीरे उसका मन सत्संग व दादा वासवाणी के चरणों की ओर आकर्षित होता गया। उसके सगे वालों ने बिना उससे पूछे उसकी मंगनी करवा दी। जब प्यारे पमे को यह पता पड़ा तो उसने शादी करने से इनकार किया। श्री पमे के

श्री सत्रामदास कृपलाणी दादाजी के भक्त थे। जब दादाजी कलकत्ता गये थे , तब उन्होंने दादाजी की बड़ी श्रद्धा के साथ सेवा की थी। दादाजी के प्रेम के कारण वे पत्नी सहित पुणे में आकर बसे। वे प्रति दिन सत्संग में आते थे। १८ मार्च उनका देहावसन हो गया। दादाजी ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री सत्रामदास भक्तजन थे, उनके मन में प्रभु-दर्शन की प्यास थी। वे निष्काम भावना से सेवा करते रहे। यह जगत् यात्री भवन है, सब को इक दिन जाना है उस पार। उस ओर जाने के लिए हमें भी तैयारी करनी चाहिए। माया के परपंच में हम अपने वतन को, सच खंड को भूल गये हैं। प्रभु से प्रार्थना करें कि प्यारे सत्रामदास की आत्मा को शांन्ति प्रदान करें।

श्री सत्रामदास कृपलाणी की पत्नी सुलक्षणी ने गीता मंदिर बनाने के लिए ५० हजार रूपये दादाजी को दिये। तत्काल ही दादाजी ने पैसा श्री जशन को देते हुए कहा कि ये पैसे गीताभवन के निर्माण कार्य में खर्च करना।

२३ मार्च सुबह को संत मेहरबाबा मीरा भूमि में पधारे। संत मेहरबाबा ने सन् १९२५ ई से मौन धारण किया था। वे जो कुछ भी बोलना चाहते थे, वह अपनी अंगुलियों के संकेत द्वारा समझाते थे। उनका एक शिष्य उनके संकेतों को देखकर उनकी भावना प्रकट करता था। दादाजी ने संत मेहरबाबा का स्वागत करते हुए उन्हें गले लगाया। उनको गले लगाते दादाजी की आँखो से प्रेम के आँसू टपक पड़े। पहले दोनों विभूतियों ने मीरा स्कूल के एक कमरे में ज्ञान गोष्ठी की, तत्पश्चात् वे प्रार्थना हाल में आये। दादाजी ने अंग्रेजी में संत मेहरबाबा के सम्बंध में कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि आज यहाँ संत मेहरबाबा पधारे हैं। उन्होंने गत ३२ वर्षों से मौन धारण कर प्रभु की भक्ति में अपने श्वास सफल किये हैं। उनकी मौन साधना से परिलक्षित होता है कि उनके मन में संसार के प्रति वैराग्य भावना और प्रभु केप्रति प्रेम है। वे सारा समय एक परमात्मा का ध्यान व चिन्तन करते हैं। इनके जीवन में सादगी का गुण है। वे बाह्य आडम्बर से दूर हैं और सदैव इनके मुँह पर मुस्कान होती है। वे दुख में,सुख में प्रत्येक परिस्थिति में मुस्कराते रहते हैं। हम भी इनके जीवन से कुछ गुण प्राप्त करें। हम

भी कुछ समय तो मौन धारण करके एकांत में प्रभु का चिन्तन करें। हम अधिकतर साँसारिक चिन्ताओं में व्यर्थ समय गंवाते हैं। चिन्ताओं को त्याग कर हरिचिन्तन करें तो हमारे जीवन में भी गुलाब जैसी महक होगी। आज हमें संत मेहर बाबा आशीर्वाद देने के लिए यहाँ पधारे हैं। इनका दर्शन भी लाभकारी है।

एक दिन दादाजी टहलते टहलते प्रेमियों के साथ प्यारे गंगाराम के घर में आये। गंगाराम की पत्नी अत्यन्त प्रसन्न हुई। वहाँ दीवार पर श्री गुरू नानकदेव महाराज की मूर्ति लगी हुई थी। दादाजी कुछ समय उस मूर्ति को देखते ही रहे। बाद में उन्होंने कहा कि मुझे बचपन की याद आती है। एक दिन मेरी माताजी श्री गुरू नानकदेव महाराज की मूर्ति पर अपने हाथ रखकर मेरे मस्तक पर वे हाथ रखते मुझे आशीर्वाद करती कहती है "बेटा तुम श्री गुरू वाणी का पाठ करो।" तब मैंने माताजी से पूछा कि गुरूवाणी तो बड़ा शास्त्र है, इतनी वाणी तो मैं पढ़ नहीं सकूंगा। तब माताजी ने कहा, "बेटा श्रीजपुजी साहब छोटा शास्त्र है उसका केवल सबेरे पाठ करो।" तब से मैं ने श्रीजपुजी का पाठ करना प्रारंभ किया। यद्यिपि उन दिनों मैं उसका अर्थ नहीं समझता था, किन्तु वाणी का पाठ करते करते जपुजी साहब मुझे कंठ हो गया। जब मैं बड़ा हुआ और उसके अर्थ व रहस्य को जाना तो मेरी आँखे खुल गई। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी ऐसी अमूल्य वाणी का श्रवण व पठन करें।

४ जून मीरा स्कूल का स्थापना दिवस मनाया गया। इस सम्बंध में दादा वासवाणी ने विद्यार्थियों व अध्यापकों को सम्बोधित करते हूए कहा -:

'सा विद्या या विमुक्तये'

विद्या वही है जो हमें मुक्त करे, स्वतंत्रता दे। हमारे मन व बुद्धि को अज्ञान, भ्रम व भय से विमुक्त करे। यही सच्ची विद्या है जो हमें उच्च आदर्शों के पथ पर चलने के लिएं प्रेरित करती है, अपने उत्तरदायित्व पूरा करने की शक्ति देती है। आज कल थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त कर कई लोग घमंडी बन जाते हैं। आप विद्या प्रांप्त कर विनम्र व गंभीर बनें। काम चोर नहीं बनें। परिश्रम का परित्याग नहीं करें। परिश्रम

सफलता की चाबी है। आप आगे चलकर दिल व दिमाग का सही उपयोग करें।

८ जुलाई गुरू पुर्णिमा के दिन सुबह कई श्रद्धालु प्रेमी दादाजी के पास आये, उन्होंने दादाजी के श्री चरणों में श्रीफल व मिश्री भेंट रखते हूए प्रणाम किया। दादाजी उसी समय सब को स्नेहमुक्त आँखों से आशीर्वाद देते रहे। साँझ को दादाजी ने गुरू महिमा के सम्बंध में उपदेश देते हुए कहा कि सत्गुरू हमारे नेत्रों में ज्ञान-अंजन डालकर नई ज्योति प्रदान करता है। गोस्वामी श्री तुलसीदास महाराज गुरू की महिमा गाते हुए कहते है -:

गुर पद रज मुदु मंजुल अंजन,
नयन अमिअ दृग दोष विभंजन।
तेहिं करि विमल विवेक विलोचन,
बरनउ राम चरित भव मोचन ।।

संत कवि तुलसीदास कहते हैं :- गुरूदेव के चरणों की रज निर्मल, मुलायम व सुंदर नयनामृत अंजन है, वह नेत्रों के दोषों को नष्ट करने वाला है। उस अंजन से विवेक रूपी नेत्रों को पवित्र कर के मैं सांसारिक बन्धनों से मुक्त करने वाले प्रभु श्री राम का चरित्र सुनाता हूँ।गुरू कृपा द्वारा असम्भव काम भी सम्भव हो सकता। गुरू ही हमें सत्मार्ग बताकर मार्गदर्शन करता है, इस लिए किसी न किसी परिपूर्ण गुरू की शरण लें।

आज जहाँ मीरा भूमि है वह स्थान "जीजाबाई महल" के नाम से प्रसिद्ध था। सत्संग एवं शिक्षण के कार्य के लिए ऐसी बड़ी जगह एवं विशाल प्रागंण की आवश्यकता थी।श्री होतचन्द गोपालदास आडवाणी दादाजी के पास आये और आकर उन्होंने दादाजी से विनय की कि सत्संग एवं अन्य कार्यों के लिए "जीजाबाई महल" खरीद किया जाए। दादाजी मुस्कराकर बोले, "मेरे पास तो केवल १०१ रूपये हैं, जो बैंक में पड़े है; अगर आप चाहें तो इन रूपयों का चेक दे दूँ। उस समय उस महल का मूल्य पाँच लाख चालीस हजार रूपये था। श्री होतचन्द आडवाणी ने कहा, दादाजी आपके ये १०१ रूपये लाखों रूपये के समान हैं, ईश्वर की अनुकंपा एवं आप की आशीर्वाद

से काम पूरा हो जायेगा।" दादाजी ने उसी समय १०१ रूपये का चेक महल मालिक के नाम श्री होतचन्द आडवाणी को दिया। जब श्री होतचन्द आडवाणी मुम्बई में उस महल-मालिक के साथ जगह का सौदा तय करने लगे तब उन्होंने उसे चेक दिया। चेक पर दादाजी के हस्ताक्षर देखकर मालिक अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने श्री आडवाणी से कहा सौदा पका हुआ। श्रीमती रामीबाई भगवानदास आडवाणी ने इस जगह के सहायतार्थ डेढ़ लाख रूपये दिये और इस महल का नाम "धमीबाई बसंतसिंघ आडवाणी" रखा गया।

दादाजी की संकल्प शक्ति से इस पुण्य स्थल पर न केवल सत्संग होने लगा किन्तु यह स्थल "मीरा हलचल" का मुख्य केंन्द्र बन गया, सेवा और स्नेह का क्षेत्र बन गया। यह स्थान तो वृंदावन लगता है, जहाँ श्याम के भक्त दादाजी ने कई लीलाएं की, जहाँ श्यामसुंदर मुरारी वहाँ अवश्य होंगे गोपी ग्वाल बनवारी। दादाजी के भी अनेक प्यासे प्रेमी सदैव दादाजी के पास आते थे, उनका उपदेश सुनते, उनके गीत सुनते, उनका दर्शन पाकर आत्म-विभोर हो जाते थे। यह स्थान सचमुच एक तीर्थस्थान बन गया। न केवल भारत के भिन्न भिन्न नगरों से प्रेमी दादा के दर्शनार्थ आते रहे, परन्तु विदेश से भी कई विद्वान एवं प्रेमी इस पुण्य भूमि में यात्री के भाव में आते थे। वे मीरा भूमि का स्नेहसिक्त पवित्र वातावरण देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे। मीरा भूमि से प्रकशित अमूल्य पत्रिकाएँ अनेक लोगों का मार्गदर्शन करती हैं। साथ साथ इनके अभ्यास से आध्यात्मिक आनंद की उपलब्धि होती हैं।

एक दिन दादाजी ने सत्संग में सेवकों से कहा कि परमात्मा की अनुकम्पा से ही हमें यह विशाल जगाह मिली है। आप कभी भी अभिमान नहीं करें हमें बड़ा महलात है, यहाँ स्कूल एवं अन्य सेवा के कार्य हम चला रहे हैं। ये सब कुछ प्रभु की धरोहर है। उस में अपना ममत्व नहीं होना चाहिए। बैसबीनोनिया के बादशाह एक दिन अपने भव्य महल पर चढ़कर अपने नगर के सुंदर भवन व मकान देखकर मन में विचार करता है कि इन सब का मालिक मैं हूँ, मैं राजा हूँ, ऐसा विचार करते करते अचानक उसी समय भूकम्प होता है, उस राजमहल

एवं अन्य मकानों, सुंदर भवन व राजा की क्या दुर्दशा होती है ! कहा नहीं जाता ! वह राजा स्वयं को किसी सुनसान जंगल में गिरा हुआ देखकर आँसू बहाता है। पाँच-दस मिनट पूर्व जो उसके मन में अहम् की वृत्ति थी वह तो खत्म हो गई किन्तु राजा रंक बन गया। सब महल मकान व कई लोग भूकम्प के कारण नष्ट हो गए।

मेरे भाइयो व बहिनों ! आप किसी बात पर भी घमंड नहीं करें। परमात्मा ने हमें जो कुछ भी दिया है उसे उसकी धरोहर समझकर अर्पणम् की भावना से कार्य करें। कार्य करने वाला भी वह स्वयं है, वह स्वयं सब का मालिक है। हम स्वयं को मज़दूर समझकर कार्य करें, अभिमान नहीं करें। जो गर्व करता है वह गिरता है, इस लिए विनम्र बन कर सेवा व भक्ति करें तो आप शान्ति का अनुभव करेंगे।

२७ अगस्त जन्माष्टमी के दिन सुबह मीरा हाल में नाम कीर्तन हुआ, तत्पश्चात् दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की, साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के पवित्र दिन भगवान श्री कृष्ण ने धर्म की रक्षा व दृष्टों का दमन करने के लिए अवतार धारण किया। उन्होंने स्वयं गीता में कहा है -:

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

प्रेमियों ! आज श्री श्याम सुंदर का जन्म दिन है, आप उसे क्या भेंट करेंगे ? प्रभु को आपका पैसा पदार्थ, छपन भोज नहीं आहिए, उसे आपके प्रेम के आँसू चाहिए। प्रभु-प्रेम का भूखा होता है। आप स्वयं को श्री राधावलभ के श्री चरणों में अर्पण करें तो वह स्वयं आकर आपको गले लगाएगा और आपका जीवन सफल हो जायेगा। आज सारी रात रसेश्वर की महिमा गाते गाते तल्लीन हो जायें तो आनंद का अनुभव करेंगे। बार बार दिल की गहराई से उसे पुकारें -:

कृष्ण मुरारी है गिरिधारी
मुझे अपने चरण बिठाओ
मुझे अपना दरस दिखाओ !

सिन्ध के मुख्य नेता व मंत्री जी. एम. सैयद ने दादाजी को एक पत्र में लिखा, "आपका सिन्ध के सम्बंध में लेख पढ़कर बहुत

ही खुशी हुई। आपके मन में वतन सिन्ध के लिए अगाध प्रेम है। आप एक बार सिन्ध में आकर हमें दर्शन दें। ९ सितम्बर से ११ सितम्बर शाह लतीफ का उत्सव मनाया जायेगा। आप सादर निमंत्रित हैं।"

दादाजी ने जी. एम. सैयद का आभार मानते हुए शाहलतीफ उत्सव के सम्बंध में शुभ संदेश भेंजा।

९ सितम्बर दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज से तीन दिन सिन्ध में शाहलतीफ का स्मृति उत्सव मनाया जायेगा। शाह लतीफ सिन्ध के सर्वश्रेष्ठ सूफी व संत कवि थे। वे न केवल उच्च कोटि के कवि थे किन्तु आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी थे। उनके काव्य में रहस्य वाद है। उन्होंने लौकिक प्रेमाख्यानों द्वारा अलौकिक ईश्वरी प्रेम व ज्ञान का संदेश दिया। उनका काव्य व्यवहार एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए मार्गदर्शन करता है। उनकी वाणी में वियोग रस का मार्मिक समावेश हुआ है। उनका पैग़ाम नहीं केवल सिन्ध के लिए है किन्तु सारे विश्व के लिए है। उनका काव्य अनुभूति की उपज हैं। आप प्रेम व श्रद्धा से उनके काव्य का अध्ययन करें।

२ अक्तूबर साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज महात्मा गांधी का जन्म दिन है। वे त्याग तपस्या का जीवन बिताते थे। उन्होंने देखा कि भारत के लाखों लोगों को पहनने के लिए पूरे वस्त्र नहीं हैं तो उन्होंने अपने वस्त्रों का भी त्याग किया। वे केवल छोटी धोती व बनिया पहनते थे। वे जनता के दुखों को अपना दुख समझ कर उसे दूर करने का प्रयास करते थे। उनके मन में गरीबों, अनाथों के प्रति स्नेह व सहानुभूति थी।

ठंडी की मौसम में गांधीजी नोवाखली की पैदल यात्रा करते एक गाँव में पहुँचे जहाँ, एक परिवार की छोटी लड़की मोतीझिरा व निमोनियाँ के कारण गंभीर स्थिति में थी, उसके सम्बंधी भी उसे छोड़कर चले गये। गांधीजी पीड़ित अकेली बालिका को देखकर द्रवित हुए। उन्होंने उसकी स्वयं सेवा व प्राकृतिक उपचार किया। बालिका के स्वास्थ्य में सुधार आया। गाँव वालों ने उनके आभार मानें। बापूजी ने कहा कि मैं दीन-दुखियों का सेवक हूँ। सेवा करना मेरा धर्म हैं, सेवा करना मुझे अच्छा लगता है। मैंने बालिका का कोई

उपकार नहीं किया। मैंने स्वयं का उपकार किया।

मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी गांधीजी की भाँति दीन - दुखियों, बीमारो, अनाथों व अपाहिजों की सेवा करें। ५ अक्तूबर दादाजी ने इच्छा प्रकट की अब फकीरों को खाना खिलाया जाये। शीघ्र ही खाना बनाया गया। मीरा सत्संग हाल के बाहर कई फकीर अपाहिज बैठ गये। दादाजी ने स्वयं अपने हाथों से उनकों खाना बाँटा। उसी दिन दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि ये अनाथ अपाहिज दीन दुखी फकीर सब प्रभु के रूप हैं। सब में एक ब्रह्म व्यापक है, इस लिए किसीका भी तिरस्कार नहीं करें, सब को प्यार करें। मैं स्वयं इनके आगे नतमस्तक होता हूँ। उनकी सेवा व सहायता कर हम अपना उपकार करते हैं। आप उनकी खूब सेवा करें।

सेवा से साहब मिले, साहब सब में जान।
श्रद्धा से सेवा करो, मिल जाये भगवान॥

११ नवम्बर दिवाली के दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में नाम कीर्तन हुआ, तत्पश्चात् दादाजी ने गरीब भाई बहिनों को मिठाई के पाकेट व वस्त्र देते हुए मुस्कराते प्यार किया, आशीर्वाद दिया। दादाजी को देने में ही आनंद आता था।

साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के पावन दिन प्रभु श्री राम चौदह वर्ष के पश्चात् अयोध्या में पधारे। उनके स्वागतार्थ अयोध्या में चारों ओर दीपक जगमगाए गये, खुशियाँ मनाई गई, मिठाइयाँ बाँटी गई। तब से यह दिवस न केवल अयोध्या, न केवल भारत परन्तु जहाँ भी हिन्दू लोग रहते हैं, यह त्यौहार मनाया जाता है। घर घर दिवाली मनाई जाती है, दीपक जगमगाते हैं। हमारे मन मंदिर में भी अज्ञान व अविद्या का अंधकार है, हम अपने मन मंदिर में ज्ञान व प्रेम के दीप जगाएं, तो प्रभु श्री राम हमारे मन-मंदिर में किसी न किसी दिन पधारेंगे , जैसे वे शबरी की झोपड़ी में गये। वे हमारे घर में भी आयेंगे, किन्तु हम अपने मन में प्रभु प्रेम की ज्योति जगाएं।

२५ नवम्बर दादा वासवाणी का जन्मदिन उत्सव था, उसके सम्बंध में २२ नवम्बर मीरा स्कूल में विद्यार्थियों ने दादाजी का जन्म

दिन उत्सव मनाया। दादाजी ने अध्यापकों व विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते, जीवन उपयोगी बातें बताते हुए मार्गदर्शन किया। २३ नवम्बर सुबह को श्री गुरू ग्रन्थ साहब का अखंड पाठ आरंभ किया गया। दादाजी के जन्मदिन सम्बंध में सासून अस्पताल में बीमारों की सेवा की गई। २४ नवम्बर मीरा भूमि में दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। २५ नवम्बर सुबह को मीरा सत्संग हाल में नामकीर्तन हुआ। दुपहर को लंगर प्रसादी हुई। साँझ को मीरा सत्संग हाल में श्री होतचन्द आडवाणी ने जन्मदिन सम्बंध में संग्रह किये गये ८१००० रुपये दादाजी के चरणों में भेंट किये।

दादा वासवाणी ने वह माया तत्काल ही सेवा कार्यों के लिए प्यारे गंगाराम को लौटा दी। दादाजी ने उसी समय प्रवचन करते हुए कहा कि आज के दिन मेरी जीवन यात्रा का नया वर्षारंभ होता है। यह जीवन अनन्त है, स्वयं को एक यात्री, तीर्थवासी समझता हूँ। आप भी यदि स्वयं को यात्री समझकर संसार में रहें तो आपकी जगत् व जगत् के पदार्थों में आसक्ति नहीं रहेगी। आसक्ति ही दुख उत्पन्न करती हैं। यात्री यात्रा समाप्त कर फिर अपने घर लौट आता है। हमें भी किसी न किसी दिन यह यात्रा समाप्त कर सचखडं लौट चलना है। वहाँ चलने के पूर्व सत्कर्मों की पूंजी संग्रह करें। सांसारिक पुस्तकें बहुत ही पढ़ी, अब नाम का अभ्यास करें। नाम की बड़ी महिमा है। सिन्धके प्रसिद्ध शाइर दरवेश शाह लतीफ अपनी वाणी में फरमाते हैं -:

अखर पढ़ अलफ जो ब्रिया वर्क सभ विसार।
अंदरू तूं उजार पन्ना पढ़ंदे केतिरा।।

शाह लतीक साधक से कहते हैं कि सांसारिक पुस्तकों के आप कितने पृष्ठ पढ़ेंगे, एक ब्रह्म का चिन्तन करें, एक नाम का अभ्यास करें, अपने अन्त;करण को शुद्ध व निर्मल बनाएं आप कितनी पुस्तकें पढ़ सकेंगे! संत कबीर भी हमें प्रभु प्रेम की पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं -:

पढ़ पढ़ के जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढ़ाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी प्रभु प्रेम की पुस्तक का अभ्यास कर चिन्तन व मनन करें तो जीवन में आनंद की उपलब्धि कर सकेंगे। जो प्रेम के पथ पर चलता है वह सब में एक प्रभु का ही दर्शन करता है।

७ दिसम्बर गीता जयन्ती के पावन दिन दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता अमूल्य ग्रन्थ है। भगवान श्री कृष्ण ने जो ज्ञान, श्री अर्जुन को दिया, उसी ज्ञान की आज भी हमें अत्यन्त आवश्यकता है। श्रीमद भगवद् गीता में समाहित ज्ञान न केवल श्री अर्जुन के लिए था, किन्तु हम सब के लिए है। यह अमर कृति सदैव मानव मात्र का मार्गदर्शन करती रहेगी। इस में भक्ति, ज्ञान व कर्म का सुंदर संगम है।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

श्रीमद् भगवद् गीता में सब ही उपनिषदों का सार समाहित है। भगवान श्रीकृष्ण की यह महान कृति गाय के समान है और श्री अर्जुन बच्छड़े के तुल्य है, श्री कृष्ण ने इस कपिला गाय का दूध दुहकर श्री अर्जुन को ज्ञान रूपी दूध का पान करा कर उसका सही मार्गदर्शन किया है। हम भी ऐसे अमृत तुल्य ज्ञान की प्राप्ति कर मानव जीवन सफल करें।

दादाजी सब ही धर्मो के अवतारों व नेताओं को मानते थे, किन्तु अपने ही धर्म के अनुसार ही चलने के लिए प्रेरित करते थे। वे धर्म परिवर्तन के विरूद्ध थे। २५ दिसम्बर साँझ को उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि आज श्री ईषा का जन्म दिन है। वे दया व प्रेम के अवतार थे। उनके जीवन से दया व प्रेम के गुण प्राप्त करें।

१ जनवरी १९५८ सुबह को हरि निवास की ओर से बड़ी पार्वती ने दादाजी को नूतन वर्ष का संदेश देने के लिए आमंत्रित किया। दादाजी ने बहिनों व बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप आपस में मेल झोल के साथ रहें, एकता में आनंद है। एक दुसरे को स्नेह दें। अपने अपने मन को साफ स्वच्छ रखने का प्रयास करें। यही नए वर्ष का संदेश है।

एक बड़े भूपति थे। उसे बड़ी ज़मीन थी, जहाँ खेती बाड़ी

होती थी, उसकी देखभाल नौकर करते थे। खेत के कुएं से ही नौकर पानी पीते थे। अचानक एक दिन एक स्वस्थ नौकर मर गया, दूसरे दिन दूसरा नौकर मर गया। खेती बाड़ी का मालिक चिन्तित हुआ। उसने समझा शायद कोएं का पानी जिस लोखन के पाइप से आता है, वह खराब हो गया है। उसने तत्काल ही नया पाईप लगवाया। तीसरे दिन तीसरा नौकर मर गया। खेत के मलिक ने किसी काबिल इंजनेयर को बुलाया उसने कुएं के पानी की तपास की और कहा कि कुएं का पानी ही खराब हो गया है, आप कितने भी नये पाईप लगाएंगे पानी में परिवर्तन नहीं आयेगा। अब यहॉ नए कुएं की खुदाई की जाए। मेरी बहिनें व बालिकाएँ ! हमारे अन्त:करण में भी विकारों वासनाओं का कचरा संग्रह हो गया है। जब तक आप अपने अन्त: करण स्वच्छ साफ नहीं करेंगे तब तक मन स्मरण में नहीं लगेगा। आप अपने मन को निर्मल व नर्म बनाएं, पवित्र विचारों से मन रूपी फुलवाड़ी को सींचें।

१३ जनवरी लाल लोई के दिन रात को दादाजी ने मीरा भूमि में अग्नि प्रज्वलित की और तत्पश्चात् प्रेमियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जैसे ये लकड़िया जल रही हैं, वैसे आप अपने अशुभ विचारों व अपवित्र संस्कारों को भस्म करें।

१४ जनवरी मकरसंक्रांति के पावन दिन दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की और तिलगुड़ बाँटे। साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा आज के दिन दान करने का बड़ा महत्व है। किसी को दान देकर हम उसपर अहिसान नहीं करते परन्तु अपना उपकार करते हैं। धन की सार्थकता दान करने में है, संग्रह करने में नहीं है। आप लोक कल्याण के कार्यों में विशाल हृदय होकर दान करें।

३० जनवरी साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज महात्मा गांधी का शहीदी दिवस है। उन्होंने देश के लिए सर्वस्व समर्पित किया। वे निष्काम, निष्ठावान, निर्भीक नेता के साथ साथ आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे। उनका जीवन प्रेरणा का स्रोत है। आज भारतवासी उनकी शिक्षा व सिद्धांतों को भूल गये हैं। उनका जन्मदिन मनाने के लिए बड़े बड़े आयोजन किये जाते हैं किन्तु उनकी मूल शिक्षा को नहीं अपनाते।

८ फरवरी संत कृपालसिंघ दादाजी से मिलने के लिए मीरा भूमि में पधारे। दोनों महापुरूषों ने आपस में ज्ञान गोष्ठी की। ९ फरवरी संत कृपालसिंघ ने मीरा सत्संग हाल में नाम का संदेश दिया। उसी समय दादाजी प्रसन्न चित्त होकर श्रवण कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि घर बैठे ही हमें संत कृपालसिंघ के दर्शन व प्रवचन श्रवण करने का अवसर मिला है। आज उन्होंने नाम की महिमा बताई। आप सब बातों को भूल जायें किन्तु नाम को नहीं भूलें।

९ अप्रैल राम नवमी के पावन दिन सुबह को पूज्य दादाजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। साँझ को दादाजीने प्रवचन करते हुए कहा कि आज प्रभु श्रीराम का जन्म दिन है। दुष्टों का दमन करने के लिए प्रभु श्रीराम ने आज के दिन अवतार धारण किया। उन्हें मर्यादा पुरूषोतम कहा जाता है। वे अवतारी पुरूष थे, फिर भी कभी उन्होंने मर्यादा का उलंघन नहीं किया। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। आज़ मेरे अग्रज श्री पहिलाजराय वासवाणी की पुण्य तिथि भी है। हम सब के प्यारे जशन के पूज्य पिता श्री पहिलाजराय राम भक्त थे। वे शिक्षाशास्त्री, निष्काम सेवक व समाजसुधारक थे। हम प्रभु श्रीराम की श्रद्धा व प्रेम से शरण लें तो वह सदैव हमारी सुरक्षा करेगा। भगवान स्वयं कहते हैं -:

जहाँ भक्त मेरो पग धरै, तहाँ धरूँ मैं हाथ।
आगे पीछे मैं फिरू, कभी न छोडूं साथ॥

८ मई बुद्ध जयन्ती के दिन दादाजी ने सबेरे पक्षियों की सेवा की, तत्पश्चात् उन्होंने दीन दुखियों को अन्नधन की सहायता की। साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि श्री गौतम बुद्ध का जन्म तो भारत में हुआ किन्तु उनकी शिक्षा व सिद्धांतों का प्रचार व प्रसार विदेश में अधिक हुआ। वे अहिंसा व करूणा के अवतार थे। उन्होंने कई राजाओं महाराजाओं के हृदय का परिवर्तन किया। जो राजा रक्त की नंदिया बहाते थे, युद्ध करते थे, वे अहिंसा व शान्ति के पथ पर चलने लगे। आज सारे संसार में अशान्ति व हिंसा का वातावरण है। श्री गौतम बुद्ध के सिद्धांतो के अनुसार चलने की अत्यन्त आवश्यकता है।

१० मई साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज श्री गुरू अमरदास की जयन्ती है। वे विनम्रता की मूर्ति थे। श्री गुरू अमरदास श्री गुरू अंगददेव महाराज की गादी पर ब्राजमान थे। उनका बढ़ता यश देखकर एक दिन श्री गुरू अंगदेव महाराज का बेटा दातृ उनके पास आया और क्रोधित होकर उसने श्री गुरू अमरदास को लात लगाई और कहा कि गादी का अधिकारी मैं हूँ, तुम क्यों बैठे हो? दातू की लात लगने के कारण वृद्ध गुरू अमरदास गिर पड़े। उन्होंने दातू से कहा कि अपका पॉव कोमल है, मुझे लात लगाने से आपके पाँव को चोट लगी होगी, इस लिए आप मुझे क्षमा करें और आप गादी पर ब्राजमान हों। अभिमानी दातू गादी पर बैठ गया किन्तु उसके पास एक भी प्रेमी सेवक नहीं आया। कुछ दिनों के पश्चात् वह स्वयं लज्जित होकर, गुरू स्थान का धन व कुछ अमूल्य वस्तुएं लेकर गोइंदवाल से चला गया। रास्ते में कुछ डाकुओं ने उसे मार पीट कर धन व अन्य वस्तुएं उससे छीन लीं, दातू की दुर्दशा हो गई। जो भी सत्पुरूषों को सताता है, निर्दोषों का अपमान करता उसकी हालात दातू जैसी होती है ! श्री गुरू अमरदास कितने न विन्रम थे, दातू ने उनके शरीर को चोट लगाई फिर भी उन्होंने दातू से क्षमा याचना की। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी क्षमा व नम्रता के गुण अपनाएं। आपको कोई अपशब्द कहता है, कष्ट देता है, आप क्रोधित न होकर उसे क्षमा करें। जो भी महापुरूष हुए हैं वे क्षमाशील व विनम्र हुए हैं। क्षमा व नम्रता मनुष्य के आभूषण हैं।

४ जून मीरा विद्या हलचल का स्थापना दिवस मीरा सत्संग हाल में मनाया गया। शास्त्रों के पाठ के पश्चात् दादाजी ने यज्ञ की ज्योति प्रज्ज्वलित की। उन्होंने मीरा स्कूल के विद्यार्थियों व अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्या का ध्येय केवल प्रमाण पत्र प्राप्त करना नहीं है। सच्ची विद्या हमारे इस ज़ीवन व भविष्य को बनाती है, सत् मार्ग दिखलाती है, हमारे दिल व दिमाग को खोलती है। विद्या मनुष्य को फंसाती नहीं, परन्तु विमुक्त करती है। मीरा विद्या आंदोलन का यही उद्देश्य है। मीरा स्कूल के अध्यापकों व अध्यापिकाओं से अनुरोध है कि वे मीरा विद्या हलचल के आदर्शों

को कार्यान्वित करें। विद्यार्थियों में प्रार्थना, पवित्रता सेवा स्नेह सहानुभूति, सादगी, सत्य, दया के गुणों का संचार करें।

श्री गंगाराम साजनदास ने दादाजी का आभार मानते हुए मीरा स्कूल की उपलब्धियों के सम्बंध में प्रकाश डाला। ६ जुलाई सुबह को १० बजे संत मेहर बाबा मीरा भूमि में पधारे। वे दादाजी से मुस्कराते हुए मिले। दोनो महापुरूषों ने आपस में संकेतो द्वारा ज्ञान गोष्ठी की।

ज्ञानी से ज्ञानी मिले, तो करे ज्ञान की बात।
मूर्ख से मूर्ख मिले, क्या थफड़ क्या लात।

जब दो संत, सत्पुरूष आपस में मिलते हैं तब वे आपस में आध्यात्मिक चर्चा करते हैं और जब दो मूर्ख आपस में मिलते हैं तब वे लड़ते झगड़ते हैं। मीरा सत्संग हाल में प्यारे दादाजी एवं संत मेहर बाबा का सुंदर संगम देखकर उनका दर्शन कर प्रेमी बहुत ही प्रसन्न हुए। संतों का दर्शन भी आनंद दायक व फलदायक है। संत कबीर भी संतों के संग का उल्लेख करते हुए कहते हैं -:

कबिरा संगत साधु की, ज्यो गांधी की बास।
जो कुछ गांधी दे नहीं, फिर भी आती वास।।

११ जून साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज संत कबीर की जयन्ती हैं। कबीर शब्द का अर्थ है बड़ा वे सचमुच महान थे। उन्होंने अपने परिवार की पालना करने के लिए काम काज करते हुए कितनी न तनमयता के साथ भक्ति की! वे न केवल महान भक्त किन्तु महान संत कवि और दार्शनिक भी थे। वे किसी महा विद्यालय में नहीं पढ़े, परंन्तु गुरू कृपा व भक्ति साधना के कारण उनके मुख से ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई। उनकी अमर वाणी आज भी हमारे व्यवहारिक जीवन एवं आध्यत्मिक उन्नति के लिए मार्गदर्शन करती है। सत्य का समर्थन करते हुए वे कहते हैं -:

साच बराबर तप नहीं, और झूठ बरबर पाप।
जाँके हदे साच है, ताँके हदे आप।।

संसार की नश्वरता प्रतिपादित करते हुए संत कबीर ने कहा

पानी केरा बुद् बुदा इस मानुस की जात।
देखत ही छुप जायेगा तारा ज्यों प्रभात।

हाड जले ज्यों लकड़ी, केस जले ज्यों घास।
सब जग जलता देख के भया कबीर उदास।।

संत कबीर अपना आध्यात्मिक अनुभव बताते हुए कहते हैं -

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, तो मैं भी हो गई लाल।।

मेरे भाइयो व बहिनों ! संतों की वाणी अनुभव की वाणी है, वह सदैव हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी। आप भी संत कबीर, श्री गुरू नानकदेव महाराज एवं अन्य संतों की वाणी का अभ्यास, चिन्तन व मनन करें।

१२ जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन सुबह को मीरा हाल में कई प्रेमियों ने दादाजी के कमल चरणों में श्रीफल व मिश्री रखकर प्रणाम किया। नाम कीर्तन के पश्चात् दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते आशीर्वाद दिया। साँझ के सत्संग में दादाजी ने कहा कि आज आपने गुरू पूर्णिमा का दिन मनाया। गुरू शब्द का अर्थ है जो अंधकार से प्रकाश के मार्ग पर लाए। सत्गुरू हमारे मन से अज्ञान रूपी अंधकार को मिटा कर ज्ञान की ज्योति जगाए। सत्गुरू हमारे अहम् को मिटाता है और साक्षी स्वरूप का दर्शन करवाता है। किसी संत ने कहा है -:

तिमर गयो रवि देखके. मोह गयो गुरू ज्ञान।
कियो करायो सब गयो जब आयो अभिमान।।

सूर्य के प्रकाश से अंहकार मिट जाता है, और गुरूदेव के ज्ञान से मोह का विनाश होता है। अहम् की भावना उत्पन्न होने से हमारे किये हुए सत्कर्म निष्फल होते हैं।

मेरे भाइयो व बहिनों ! गुरू की बड़ी महिमा है। आप प्रेम व श्रद्धा से गुरू की शरण लेकर उसकी शिक्षा को ग्रहण करें। बहुत से लोग गुरू को तो मानते हैं किन्तु गुरू की नहीं मानते। आप ऐसा नहीं करें।

पशु-पक्षियों के लिए प्रेम : दादाजी न केवल मानव मात्र को स्नेह देते थे, परन्तु पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं के लिए भी दादाजी के मन मे स्नेह की सरिता बहती थी। वे कहते थे, ये पशु-पक्षी भी प्रभु की संतान हैं, इन पर दया करना हमारा कर्तव्य है।

एक बार दादाजी रास्ते से गुजर रहे थे, तो उनकी नज़र एक कसाई पर पड़ी जो एक गाय को ले जा रहा था। दादाने उस कसाई से पूछा, "प्यारे इस गाय माता को तुम कहाँ ले जा रहे हो?" कसाई ने उत्तर दिया, मैं इसे कोस-घर में ले जा रहाँ हूँ और वहाँ इस का कत्ल किया जायगा। कसाई की बात सुनकर दादाजी के आँखों में आँसू आ गये। दादा ने कसाई से कहा "इसे मत मारना।" कसाई बोले ये तो मेरा पेशा है, कमाई का साधन है। दादा फिर उससे पूछते हैं, तुम्हें इस गाय से कितनी कमाई होगी ?" कसाई ने कहा "मुझे ६०-७० रूपये मिल जायेंगे " दादा ने उसी समय मुंह मांगे पैसे उस कसाई को देकर गाय माता को मुक्त किया और उसे हरे भरे खेतों में छोड़ दिया। दादा ने उस कसाई से कहा "भाई तू मानव जीवन इन निरीह मूक पशुओं को कत्ल करने में व्यर्थ मत गंवाओ। जिन सम्बंधियों के लिए तु ऐसे निकृष्ट कर्म कर रहे हो, वे तुम्हारा साथ नहीं देंगे। दया और प्यार का व्यवहार करो।"

दादाजी सबेरे उठकर पक्षियों को खाना खिलाते थे, उन्हें पानी पिलाते थे और प्रेमियों से कहते थे कि इनकी सेवा से आपको प्रभु का आशीर्वाद मिलेगा। अपने स्वार्थ के लिए उन्हें बंदी मत बनाओ। प्रभु ने उन्हें पंख दिये हैं उड़ने के लिए। उन्हें मुक्त करें।

एक बार दादाजी पैदल घूम रहे थे, तो रास्ते में उन्होंने एक आदमी को देखा जो दो मुर्गियों को बांधकर ले जा रहा था। दादा ने प्यारे जशनजी से पूछा, "यह व्यक्ति क्यों इन मुर्गियों को बांधकर ले जा रहा है ?" दादा जशनजी ने उत्तर देते हुए कहा, "यह व्यक्ति इन मुर्गियों को मार कर खायेगा।" दादाजी ने उसी समय आज्ञा दी कि इसी आदमी को बुलाओ। दादा ने उस आदमी से पूछा, "तुम इन मुर्गियों के कितने पैसे लोगे?" जितने पैसे उस आदमी ने मांगे, दादाने उतने पैसे उस आदमी को देकर मुर्गियों को अपने प्रांगण में ले आये, जहाँ वे स्वच्छंदता से विचरने लगी।

आज भी पूना की पुण्य मीरा भूमि में पक्षियों के लिए अलग जगह बनाई गई है, जहाँ उनके खाने के लिए अन्नाज रखा जाता है। प्रतिदिन अनेक पक्षी दाना चुगने के लिए आते हैं। दादाजी कहते थे

इन पशु-पक्षियों को मार कर मांस भक्षण नहीं करें, यह महा पाप है। उन्हें अपना प्यार दें, ये प्रभु की वह संतान है जिसकी हम भाषा नहीं समझते, परन्तु प्यार की भाषा सब ही प्राणी समझते हैं, इन्हें प्यार दें प्यार !

एक बार सत्संग हाल में दादाजी और अन्य प्रेमी बैठे थे। एक व्यथित व्यक्ति विनय के स्वर में दादाजी से बोले, "दादाजी ठंडी की मौसूम है, मुझे कंबल की अत्यंत आवश्यकता है और मेरी नज़र कम हो गई है, इस लिए एक चश्मा ले देने की कृपा करें, मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।" दादाजी ने उसी समय एक कंबल मंगवाया, वह कंबल और बीस रूपये चश्मा खरीद करने के लिए उस पीड़ित व्यक्ति को दिये। वह व्यक्ति अत्यन्त प्रसन्न चित्त होकर आशीर्वाद देते चला गया। भजन कीर्तन के बाद बैरिस्टर श्री. होतचन्द गोपालदास आडवाणी ने दादाजी से विनय की कि आप कृपया उपदेश दें। दादाजी मुस्कराते हुए कहने लगे, "मुझे जो कुछ आज कहना था, वह आपके सामने करके दिखाया। ये दीन दुखी पीड़ित प्रभु की संतान हैं। उनकी सेवा है प्रभु की भक्ति। इन अपाहिजों की सेवा करो, यही मेरा उपदेश है !

दादाजी के मन में गरीबों के प्रति कितना लगाव था ! सिन्ध में चाहे भारत में दादाजी प्रति दिन गरीबों की, अपाहिजों की कुछ न कुछ सेवा अवश्य करते थे। प्रेमियों से भी कहते थे कि वह दिन व्यर्थ है, जिस दिन कोई सेवा का कार्य नही किया जाता। रामनोमी, जन्माष्टमी, गुरूनानक जयन्ती उत्सव एवं अन्य बड़े दिनों पर दादाजी हजारों गरीबों को अपने हाथ से खिलाते थे। गरीब बच्चों को खिलौने देते, उन्हें वस्त्र देते, उन्हें खर्ची देते और उस से अधिक उन्हें अपना प्यार देते थे। कई महाराष्ट्रीय भाई बहनें जब दादाजी को देखते थे, तो कहते थे, गुरूबाबा आगए हैं। दादाजी समान भाव से सब की सेवा करते थे।

दादाजी को प्रतिवर्ष उनकी जयन्ती के शुभ अवसर पर लाखों रूपये मिलते थे, दादाजी तत्काल ही वे लाखों रूपये गरीबों की सहायता और सेवा कार्यों में दे देते थे।

एक बार दादाजी रास्ते से गुजर रहे थे, तो एक दुकान का मालिक अपने एक गरीब नौकर को पीट रहा था। वह बेचारा नौकर बार बार मालिक से विनय कर रहा था, मुझे अपनी तनखाह दो, मुझे बेगुनाह क्यों मारते हो ? फिर भी वह मालिक मन मानी कर रहा था। उस गरीब नौकर ने दादाजी को देख कर उनके चरण छूए और दादाजी से प्रार्थना की कि वे उसका संरक्षण करें। उस समय दादाजी के जेब में जितने भी पैसे थे वे उस पीड़ित नौकर को देकर सांत्वना दी। दादाजी किसी का दुख दर्द सहन नहीं कर सकते थे ! दुखियों का दुख देख कर द्रवित हो जाते थे।

१ अगस्त साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज श्री लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि है। उन्होंने गुलामी में सोई हुई भारतीय जनता को सजग करते हुए कहा कि आज़ादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। अपना अधिकार खोकर बैठ रहना, पाप कर्म है। जैसे भगवान श्री कृष्ण ने श्री अर्जुन को मोह व अज्ञान की नींद से जाग्रत् करने के लिए उसे श्रीमद् भगवद् गीता का ज्ञान दिया उसी प्रकार श्री लोकमान्य तिलक ने भी शतियों से सोए हुए भारत वासियों को जाग्रत् कर उनमें देश भक्ति की भावना का संचार किया। उन्होंने जेल में रहकर श्रीमद् भगवद् गीता का गहन अध्ययन कर हमें उसकी अमूल्य व्याख्या 'गीता रहस्य' के रुप में दी। आज राष्ट्र को श्री लोकमान्य जैसे कर्मठ, निष्काम निर्भीक, नेताओं की अत्यन्त आवश्यकता है जो देश की नैया पार लगाएँ।

२ अगस्त दादाजी के अनन्य सेवक भक्त प्यारे जशन वासवाणी का जन्म दिन था। साँझ के सत्संग में दादाजी ने प्रवचन करते हुए प्यारे जशन के गुणों का वर्णन किया। दादाजी ने प्यारे श्री जशन के सम्बंध में कहा कि प्यारे जशन ने अपने नाम को सार्थक किया है। जशन का अर्थ खुशी है, वह दीन दुखियों पशु पक्षियों को खुश करने का प्रयास करता है। वह विद्वान है, किन्तु उसे विद्वता का अभिमान नहीं। वह कितनी न नम्रता से मेरी सेवा करता है। उस में मेरी बड़ी आशाएं हैं। आज हम सब मिलकर उसे जन्मदिन की बधाईयाँ व शुभ मंगल कामनाएं देते हैं।

१८ अगस्त रक्षा बंधन के पावन दिन सुबह को कई प्रेमियों ने दादाजी को राखियाँ बांधी और दादाजी ने अपने स्नेहयुक्त आँखों से आशीर्वाद दिया।

२ सितम्बर जन्माष्टमी के दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में दादाजी ने हवन यज्ञ की ज्योति प्रज्ज्वलित की और यज्ञ में आहुति अर्पित की। बहिनों ने भगवान श्री कृष्ण के आगमन की खुशी में भजन गाये !

आज मेरे घर श्याम पधारे

साँझ को दादाजी ने उपदेश करते हुए भगवान श्री कृष्ण के जीवन चरित्र सम्बंधी दृष्टांत सुनाते हुए कहा कि भक्त सुधामा बचपन में श्री कृष्ण का सहपाठी था। वे साथ साथ पढ़ते व खेलते थे। श्री सुधामा बड़ा हुआ, उसका विवाह हुआ, वह परिवार सहित गाँव में रहता था। यद्यपि उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहती थी फिर भी वह प्रसन्न चित्त रहता था। उसकी पत्नी ने उसे सलाह दी कि भगवान श्री कृष्ण तुम्हारे बचपन के मित्र हैं, उनके पास जाओ तो वे आपको मालामाल कर देंगे और हमारी दरिद्रता दूर हो जायेगी। भक्त सुधामा भगवान श्याम सुंदर के पास जाने में संकोच कर रहा था, किन्तु उसकी पत्नी सुलक्षणी ने उसे उनके पास जाने के बार बार प्रेरित किया। झोपड़ी में रहने वाला गरीब सुधामा महल में रहने वाले राजाओं के राजा श्री कृष्ण के पास कैसे जाये ? पत्नी ने उसे कहा कि भगवान जब तुम से कुशल क्षेम पूछें तो मेरी ये दो पक्तियाँ याद कर उन्हें बताना, सीधी तरह उन्हें कुछ नहीं कहना। पत्नी के आग्रह पर श्री सुधामा चार मुट्ठी चावल फटे वस्त्र में बांधकर भगवान श्री कृष्ण के महल में आया। द्वारपाल ने उससे पूछा तुम कौन हो कहाँ से आये हो? श्री सुधामा ने कहा मैं भगवान द्वारकाधीश के साथ मिलना चाहता हूँ, वे मेरे बचपन के सखा-सहपाठी हैं। द्वारपाल ने यह संदेश ज़ाकर भगवान कृष्ण को सुनाया। वे तत्काल ही द्वार पर आये और श्री सुधामा को देखते ही उसे गले लगाया। दोनों मित्रों की आँखों से प्रेम के आँसू टपक पड़े। भगवान उसे अपने महल में लेकर आये। सुधामा को चावल की चार मुट्ठियाँ देने में संकोच हो रहा था किन्तु भगवान घट घट के अंतर्यामी

ने उससे चावल की पुटली खींच कर चावल की भेट प्रेम से स्वीकार की। भगवान ने उसका हार्दिक स्वागत किया, उसे नये वस्त्र पहनाये, भोजन खिलाया। जब भगवान ने उससे क्षेम कुशल पूछा तब उसने पत्नी की बताई हुई दो पक्तियाँ सुनाई;

एक मास दो पक्ष में दो एकादशी होय।
मेरे घर गोपाल जी, सदा एकादशी होय॥

भक्त सुधामा ने उपर्युक्त दो पंक्तियों में अपने परिवार की दरिद्रता का चित्र प्रस्तुत किया। भगवान ने भक्त सुधामा को गले लगाते हुए अपनी दिव्य शक्ति द्वारा उसकी आर्थिक स्थिति सुधार दी। भगवान ने उसे कई वस्तुएँ भेट रुप में दीं और उसे सांतवना देते हुए कहा कि भाभी से कहना -:

होनी थी सो हो चुकी, और न ऐसी होय।
भाभी तेरे महल में सदा द्वादशी होय॥

जो बिंद गया वह मोती, अब आपकी दरिद्रता दूर हो जायेगी। तुम्हारे महल में अब सदैव द्वादशी होगी, अर्थात् खान पान की कमी नहीं होगी। आप सदैव धनधान्य से सम्पन्न रहेंगे।

भगवान श्री कृष्ण के वचन सुनकर और स्नेह पाकर श्री सुधामा की आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हुई।

भक्त सुधामा जैसे ही अपने गाँव में आया, वह अपनी झोपड़ी को महल के रूप में परिवर्तित देखकर, अपनी पत्नी व परिवार को धन धान्य से सम्पन्न देखकर आश्चर्य में पड़ गया और उसने भगवान श्री कृष्ण की असीम अनुकम्पा व स्नेह का सारा समाचार पत्नी को सुनाया।

प्रेमियो ! भगवान अपने भक्तों की सदैव सहायता व सेवा करता है। उन्हें अपना अमूल्य प्यार देकर भक्ति का दान देता है। हम भी श्रद्धा व प्रेम से श्री कृष्ण की शरण लें। आप एक बार उनके होके देखें। मीरा ने सर्वस्व त्याग कर एक गिरिधर की शरण ली तो वह अमर हो गई ! भगवान स्वयं श्रीमद् भगवद् गीता में कहते हैं -:

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

सब ही धर्मों व राहों मार्गों का त्यागकर मेरी शरण में आजाओ

तो तुम्हें सब ही पापों से विमुक्त कर दूँ।

२ अक्तूबर साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज महात्मा गांधी का जन्म दिन है। वे सदैव दूसरों को सुखी करने का प्रयास करते थे। वे दूसरों के दुख को अपना दुःख समझ कर उस दुख को दूर करते थे। एक बार वे वर्षा ॠतु में रेलगाड़ी में सफर कर रहे थे। जिस डिब्बे में वे बैठे थे, उस डिब्बे में वर्षा का पानी गिर रहा था। गार्ड को यह पता चला, वह उनके पास आया और विनती की कि आप कृपया डिब्बा बदलें, यहाँ आप पानी में भीग रहे हैं, आपके लिए दूसरे डिब्बे में व्यवस्था की गई है। बापूजी ने उस गार्ड से पूछा कि इस डिब्बे में फिर कौन बैठेगा? गार्ड ने कहा जो डिब्बा हमने आपके लिए इस स्टेशन पर खाली करवाया है, उस डिब्बे के यात्री इस डिब्बे में बिठाएंगे।

यह सुनकर गांधीजी ने गार्ड से कहा कि दूसरों को दुखी कर मैं सुखी बनूँ , यह गलत बात है। जो यात्री इस डिब्बे में बैठेंगे तो फिर वे पानी में नहीं भीगेंगे ! मैं दूसरों को कष्ट देकर दूसरे डिब्बे में नहीं बैठूंगा। गार्ड साहब ! आप मेरी सुविधा व सुख के लिए दूसरों को परेशान नहीं करें। मैं इस डिब्बें में ही सफर करूँगा। गार्ड गांधीजी का उत्तर सुनकर शान्त हो गया और फिर गांधीजी से कहा कि "मेरे लिए और कोई सेवा हो तो फरमाइये।" बापूजी ने कहा, "मेरे प्यारे ! आपके लायक तो यह सेवा है कि आप यात्रियों के सुख सुविधा का ख़्याल करें, उनसे कभी रिश्वत नहीं लें। धन्यवाद !

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! आज हमारे भारत के नेता लोग यदि गांधीजी की भाँति जनता के सुख सुविधा, का ख्याल करते, उनकी समस्याओं का समाधान करते तो भारत की जनता सुखमय जीवन बिताती। आज हमारे देश में लाखों लोगों को पेट भर खाना नहीं मिलता, लाखों लोगों को रहने के लिए मकान नहीं। गांधीजी के राम राज्य का स्वप्न अब तक साकार नहीं हुआ है। मेरे भाइयो व बहिनों! अपने सुख के लिए दूसरों को दुखी नहीं करें। जितना हो सके दुखियों को सुखी करने का प्रयास करें तो आप सुख का अनुभव करेंगे।

२५ नवम्बर दादा वासवाणी के जन्मदिन उत्सव सम्बंध में

विभिन्न नगरों से प्रेमी आकर सम्मिलित हुए। सबेरे ६ बजे दादाजी मीरा सत्संग हाल में पधारे। उन्होंने हवन यज्ञ की ज्योति प्रज्वलित की और यज्ञ में आहुति डाली। शास्त्रों से पाठ हुआ और बहिनों ने नाम कीर्तन किया। प्रेमियों ने दादाजी को बधाईयाँ दी और उसी समय दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते सब को आशीर्वाद व प्रसाद दिया। दादाजी फिर सुबह ११ बजे नीचे आए और उन्होंने गरीबों की सेवा की।

साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज इस शरीर का ८० वर्ष आरंभ हो रहा है। यह शरीर भी प्रभु का मंदिर है। इस मंदिर में प्रभु ने हमें पाँच कर्म इन्द्रियाँ व पॉच ज्ञान इन्द्रियाँ प्रदान की हैं। क्या हम सब इन दस इन्द्रियों का सदुपयोग करते हैं या नहीं? यह प्रश्न प्रत्येक मनुष्य स्वयं से पूछे। यदि हम इन इन्द्रियों का सदुपयोग करते हैं तो हमारा यह जन्म सफल व सार्थक है, अन्यथा हमारा जन्म लेना व्यर्थ है। कभी कभी इन इन्द्रियों में से किसी एक इन्द्री के दुरूपयोग के कारण हम पथ भ्रष्ट हो जाते हैं, इस लिए मेरे भाइयों व बहिनों आप जीवन पथ पर संभल संभल कर चलें। मैं परमात्मा का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने आजीवन अपनी असीम अनुकम्पा से मेरी सुरक्षा की है। मैंने विद्यार्थी जीवन में एक पुस्तक में एक पक्षी के सम्बंध में पढ़ा था। उसका नाम था 'Bird of Fire' 'आग का पक्षी'। कई वर्ष पूर्व मुझे भी एक ऐसा महानु भाव मिला, जिसके अंदर इश्क की आग थी, मैंने उसके चरणों में बैठकर सच्ची विद्या ग्रहण की। कुछ वर्षों के बाद जब मैं कलकत्ता में अध्यापन कार्य के लिए गया तो वहाँ ऐसे ही आध्यात्मिक आग वाले महापुरूष से मेरा सम्पर्क हुआ, जिसने मेरा मार्गदर्शन किया। मैंने उन्हें आध्यत्मिक गुरू के रूप में स्वीकार किया। वे दोनों महानुभाव एक दूसरे को पहचानते थे। दोनों सत्पुरूषों को स्वामी रामकृष्ण के प्रति प्रेम व श्रद्धा थी। दोनों भक्त हृदय थे, दोनों के मन में भारत के ऋषिमुनियों के प्रति श्रद्धा थी, दोनों के जीवन में स्नेह की सरिता प्रवाहित हुई, वे थे मेरे अध्यापक साधु हीरानन्द और मेरे आध्यात्मिक गुरू श्री नालूदा। उनकी विशेष दया दृष्टि मुझ पर रही।

आप मेरे लिए जो संज्ञाएं और विशेषण देते हैं, वह मैं नहीं हूँ, मैं तो आप सब का एक अयोग्य सेवक हूँ। मैं नहीं साधु हूँ न महर्षि हूँ, नहीं विद्वान हूँ न ज्ञानवान हूँ। मैं तो आपका विनम्र सेवक हूँ। आप मेरी महिमा गाते अपनी योग्यता दिखा रहे हैं। आज आप मुझे आशीर्वाद करें कि मेरी शेष जीवन यात्रा सफल व सुखद हो। आप प्रति दिन सत्संग में आते हैं , सेवा कार्यों में सहयोग देते हैं, मैं सब भाई बहिनों का अत्यन्त आभारी हूँ और बड़ा आभार प्यारे प्रभु का मानता हूँ जो पग पग पर मेरी देखभाल करता है, रक्षा करता है।

२६ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्मदिन उत्सव मीरा भूमि में मनाया गया। सुबह को श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के पश्चात् दादाजी ने मोदी खाना आरंभ किया। वे अपने कर कमलों द्वारा दीन दुखियों को गेहूँ, चावल, चीनी, दाल बाँट रहे थे और उसके साथ अपनी स्नेह युक्त निहार !

साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के पावन दिन कलियुग के अवतार श्री गुरू नानकदेव महाराज ने लाहौर के तिलवंडी गाँव में श्री कालूराम के घर में अवतार धारण किया। बचपन से ही उनका मन पढ़ने लिखने व साँसारिक बातों में नहीं लगता था। वे तो नाम का पाठ पढ़ना चाहते थे, नाम का ही अभ्यास करना चाहते थे। वे आयु में बड़े हुए तो पिताश्री ने उन्हें खेती बाड़ी की देखभाल का काम सौंप दिया। खेत में भी वे वृक्ष के नीचे बैठकर नाम चिन्तन करते थे। यदि खेत में पक्षी दाना खाने के लिए आते थे, तो वे उन्हें उड़ाते नहीं थे, किन्तु उन्हें कहते थे -:

राम दी चड़ियाँ राम दा खेत।
चड़ियाँ खाओ भर भर पेट !

मोदी खाना चलाते समय भी वे नाम का जाप जपते थे और दीन दुखियों संतों को बिना मूल्य वस्तुएँ देते जाते थे और लेने वालों से भी नाम जपाते थे। उन्होंने अशांत व तनावयुक्त वातावरण को बदलने के लिए नाम का कितना न प्रचार किया। देश- विदेश में उन्होंने भ्रमण कर नाम की ज्योति जगाई। उन्होंने अपनी अमृत तुल्य वाणी में भी नाम की कितनी न महिमा गाई है ।

मेरे भाइयो व बहिनों ! अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें। श्री गुरूनानक अवतारी पुरख होते हुए भी स्वयं नाम जपते और जपाते रहे। आप भी नाम की पूंजी संग्रह करें।

६ दिसम्बर गीता जयन्ती के दिन दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता की अमर वाणी रुपी ज्ञान गंगा भगवान् श्री कृष्ण के मुख से प्रवाहित हुई है। उसमें ज्ञान का अपूर्व भंडार भरा हुआ है। भारत के कई महात्माओं, विद्वानों एवं विदेश के विद्वानों ने श्रीमद् भगवद् गीता का अभ्यास कर विभिन्न भाषाओं में उसका अनुवाद किया है, उसकी टीकाएं लिखी हैं, विभिन्न व्याख्याएं की हैं। हम गीता का पाठ करते हैं किन्तु अधिकतर लोग उसमें समाहित शिक्षा व ज्ञान प्राप्त नहीं करते। उसकी दार्शनिक विचार धारा को समझने की चेष्टा नहीं करते। इस अमूल्य ग्रन्थ में भक्ति, ज्ञान व कर्म का सुंदर संगम हैं। जीव, जगत्, आत्मा, ब्रह्म, माया, मुक्ति सम्बंधी विशेष विचार भगवान श्री कृष्ण ने श्री अर्जुन को सुनाये हैं। गीता का ज्ञान हम सब के लिए लाभकारी है। गीता का ज्ञान व्यवहार एवं परमार्थ की उन्नति के लिए हमारा मार्गदर्शन करता है। आप भी गीता का अभ्यास, चिन्तन व मनन करें।

१ जनवरी १९५९ प्रभात को दादाजीने नूतन वर्ष के सम्बंध में प्रभु से प्रार्थना करते हुए कहा ''हमें नया बनाओ, नई शक्ति, भक्ति प्रदान करो, निर्मल बनाओ। हमारे जीवन में सत्य, सेवा, सादगी, स्नेह व सहानुभूति की ज्योति जगाओ। हम स्वार्थ का त्याग कर परमार्थ के पथ पर चलें। तेरा ही निरंतर ध्यान व चिन्तन करें।

साँझ के सत्संग में दादाजी ने उपर्युक्त प्रार्थना का उल्लेख करते हुए श्रोताओं से कहा कि परमात्मा हमारा माता-पिता है, उस से आप प्रेम व श्रद्धा से जो कुछ मांगेगे, वह अवश्य देगा, किन्तु उससे सांसारिक पदार्थ नहीं मांगे, उससे तो सत्ज्ञान, सत्बुद्धि, नाम की पूंजी, व कृपा माँगे जैसे आप सच्चे सुख की प्राप्ति कर सकें। साँसरिक पदार्थ, वैभव, व्यवहार तो दुखदाई हैं।

रूहानी सत्संग के उत्तराधिकारी संत कृपालसिंघ पुणे में पधारे। उन्होंने तीन दिन पुणे में प्रवचन कर श्रद्धालुओं का मार्ग दर्शन किया।

वे तीनों दिन दादाजी से मिलने के लिए मीरा भूमि में आये। दादाजी ने उनका हार्दिक स्वागत किया। दोनों महापुरूषों ने आपस में ज्ञान गोष्ठी की। एक दिन मीरा सत्संग हाल में संत कृपालसिंघ ने प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप यदि आध्यात्मिक मार्ग पर उन्नति करना चाहते हैं, अपना जीवन सफल करना चाहते हैं तो नाम की पूंजी संग्रह करें।

१३ जनवरी रात को लाललोई का उत्सव मीरा भूमि में मनाया गया। दादाजी ने ज्योति प्रज्वलित कर लकड़ियों को आग लगाई और बहिनों ने कीर्तन आरंभ किया। दादाजी आधे घंटे के लिए ध्यान मग्न हो गये। १४ जनवरी मक्रसंक्रति के साथ साथ श्री गुरू गोबिन्दसिंघ का जन्म दिन था। सबेरे दादाजी ने कहा कि आज श्री गुरू गोबिन्द सिंघ का जन्म दिन है, वे शक्ति के अवतार थे। आज मीरा स्कूल के विद्यार्थी खेलें कूदें। दादाजी की आज्ञा से खेलने कूदने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दादाजी ने स्वयं कुछ समय खेल कूद के मैदान पर बैठकर विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया और खेल कूद में प्रथम द्वितीय तृतीय क्रम आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये। दादाजी ने स्वयं प्रमियों के साथ रस्सी खींचने का खेल किया। दर्शकों ने यह दृश्य देखकर तालियाँ बजाई।

साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि श्री गुरू गोबिन्दसिंघ ने चड़ियों को बाज़ बजाया, वीरता व निडरता का संचार कर हिन्दू धर्म की सुरक्षा की। उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपने बेटों का बलिदान दिया। ऐसी महान विभूति का आज जन्म दिन है। उनकी शिक्षाएं अपने जीवन में उतारें उनकी वाणी का अभ्यास करें।

ठंडी की मौसम में दादाजी सुबह ९ बजे टहलने के लिए मीरा भूमि से निकलते थे। द्वार पर एक फकीर हरी पगड़ी पहन कर बैठा रहता था। दादाजी प्रति दिन मुस्कराते मुस्कराते उसे एक रूपया खर्ची देते थे ! वे एक हाथ प्यारे श्री जशन के कंधे पर और दूसरा हाथ श्री गंगाराम साजनदास के कंधे पर या कभी श्री आतम वासवाणी के कंधे पर रखकर टहलने जाते थे। कुछ समय टहल कर कंउन्सॅल हाल के मैदान पर एक वृक्ष के नीचे बैठकर प्रेमियों को मधुर मधुर बातें बताते

थे। बहिन शान्ति एवं बहिन सती सदैव साथ में रहती थी। प्रेमी दादाजी की मीठी मीठी बातें सुनकर और आशीर्वाद प्राप्त कर प्रसन्न होते थे। दादाजी अपने हाथों से उन्हें कभी केले तो कभी सेव या नारंगी प्रसाद रूप में देते थे। वहाँ यदि कोई गरीब या फकीर आजाता था तो दादाजी पहले उसे प्रसाद देकर खुश करते थे।

२४ अप्रैल सांझ को दादाजी ने प्रवचन करने के पश्चात् कहा, मेरी इच्छा है कि प्रति दिन रात को हम श्रीमद भगवद् गीता के सम्बंध में ज्ञान गोष्ठी करें। दादाजी की यह बात सुनकर प्रमी प्रसन्न हुए। दो दिन के पश्चात् रात को ९ बजे दादाजी ने गीता ज्ञान यज्ञ का शुभारंभ किया। पहले उन्होंने हवन की अग्नी प्रज्वलित करते हुए कहा कि अग्नि भी प्रभु का रूप है। प्रचीन काल में जो भी शुभ कार्यारंभ किया जाता था, तो पहले हवन यज्ञ किया जाता था। यज्ञ की अग्नि हमारे सब ही दूषित विचारों को नष्ट करती है, वातावरण शुद्ध व पवित्र होता है। इस आग्नि को साक्षी समझकर हम श्रीमद भगवद् गीता का अभ्यास आरंभ करते हैं। श्रीमद भगवद् गीता में सभी शास्त्रों का सार समाहित है। भगवान श्री कृष्ण श्री अर्जुन को कर्तव्य विमुख देखकर मोह की नींद से जाग्रत् करते हुए कहते है:-

कर्मणैव हि संसिद्धि मास्थिता जनकादयः।
लोक सग्रंह मेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि।।

भगवान श्री कृष्ण निराश, हताश अर्जुन को अपने कर्तव्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। राजा जनक विदेही थे, किन्तु फिर भी उन्होंने अपने कर्तव्य का अच्छी तरह पालन किया। वे अनासक्त भाव से राज्य भी करते रहे और उन्होंने गृहस्थाश्रम के नियमों को भी निभाया। उन्होंने निष्काम भावना से कर्म करते हुए, सेवा करते हुए परम गति को प्राप्त किया। हे अर्जुन तुम भी राजा जनक की भांति अनासक्त भाव से अपने कर्तव्य की पालना करते दुखी दुनिया की सेवा करो। राजा जनक महान ज्ञानी होते हुए भी सामान्य लोगों के सामने आदर्श प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने नियमित कर्म किये। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी राजा जनक की भांति जगत् में रहें। अपने अपने कर्तव्य पालन करने में ही जीवन की सार्थकता है।

महाराष्ट्र के मुख्य न्यायाधीश श्री एच्छ-के-चैनाणी भक्त हृदय थे। वे नियमित रूप से श्री गुरूग्रन्थ साहिब की वाणी का पाठ करते थे। उनके मन में दादा वासवाणी के प्रति श्रद्धा थी। जब भी वे पुणे में आते थे तब वे मीरा सत्संग में अवश्य आते थे। दादाजी के प्रवचन श्रवण कर और उनका दर्शन कर वे प्रसन्न होते थे। दादाजी भी उन्हें प्यार करते थे। एक दिन वे मीरा हाल में नामकीर्तन श्रवण कर रहे थे। उसी समय उन्होनें दादाजी से प्रार्थना की कि सत्संग समाप्ति के पश्चात् 'तू मेरा पिता तू मेरा भ्राता' गुरू वाणी का शब्द गाया जाये। दादाजी ने उसी समय ही बहिनों से वह शब्द गाने के लिए कहा। बहिनों ने प्रेम के साथ वह शब्द गाया। अब तक यह शब्द सत्संग में प्रति दिन गाया जाता है।

एक दिन दादाजी ने ज्ञान गोष्ठी करते हुए कहा कि यह संसार एक गहन जंगल की भांति है। उसमें अज्ञान का अंधेरा है। एक दिन मैं ऊंटवाले के साथ एक ऐसे गहन जंगल से गुजर रहा था, कितना न भयानक वातावरण! रात के समय ऐसे जंगल से गुजरना कितना न कठिन है,उसी समय कोई भी पशु या सांप हानि पहुँचा सकता है। संसार के इस गहन जंगल में भी विकारों रुपी शेर, वासना लोभ काम आदि सांप व बिशु हमें भी काट सकते हैं । ऐसी कठिन परिस्थिति में गुरु के ज्ञान रुपी प्रकाश की अत्यन्त आवश्यकता है । सत्गुरु ही हमें ऐसे गहन जंगल से पार लगा सकता है ।

दादाजी को कभी कभी शारीरिक कष्ट होता था तो वे हंसते हंसते सहन करते थे । सच्चे संत पीड़ा को भी प्रभु का प्रसाद समझकर स्वीकार करते हैं ।

तेरा भाणा मीठा लागे, नाम पदार्थ नानक मांगे ।

दादाजी प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्नचित्त रहते थे । मीरा स्कूल के प्रधान अध्यापक श्री चंदीराम आडवाणी सेवा निवृत हुए। उसी अवसर पर दादाजी ने उनके सम्बंध में कहा कि प्यारे चंदीराम एक आर्दशी प्रधानाध्यापक हैं। इन्होंने पढ़ाई के साथ-साथ विद्यार्थियों के मन में शुभ विचारों का संचार किया। इन्होंने समर्पित भाव से मीरा स्कूल की बाग डोर संभाली और सत्संग की सेवा भी करते रहे ।

श्री चन्दीराम आडवाणी के सेवा निवृत होने के पश्चात् पूज्य दादाजी की आज्ञा व इच्छा के अनुसार बहिन हरी देवी ने मीरा स्कूल की प्रधानाध्यापिका का पद स्वीकार किया। ४ जून मीरा स्कूल का स्थापना दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। विद्यार्थियों में बड़ा उत्साह था। दादा वासवाणी ने विद्यार्थियों व अध्यापिकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप मीरा विद्या हलचल के सिद्धांतों को कार्यान्वित करें। इस मीरा विद्यालय से जो भी विद्यार्थी विद्या प्राप्त कर निकले उसके जीवन में पवित्रता, प्रार्थना, सत्य स्नेह, सेवा, सादगी, सहानुभूति की सुरभि हो। भविष्य में वह एक नेक नागरिक बन जाये।

२० जून सिन्धी साहित्य सभा पुणे का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। दादा वासवाणीजी को इस उत्सव की अध्यक्षता करने के लिए विनती की गई। उसी दिन दादाजी अस्वस्थ थे। उन्होंने इस उत्सव के सम्बंध में आयोजकों को निम्न संदेश भेजा।

सिन्धी साहित्य की आत्मा प्रेम, रूह है, इश्क। इश्क मुर्शिद के लिए, प्रेम परमात्मा के प्रति। वह परमात्मा सब में व्यापक है। उसकी ही सुदंरता सब में समाहित है। सिन्धी सूफी व संत कवियों ने भीतर जाने का संदेश दिया है। आप सिन्धी साहित्य व सिन्धी भाषा की सुरक्षा के लिए प्रयास करें। अपनी मधुर मातृ भाषा को नहीं भुलाएं। सिन्धी साहित्य का विकास करें। ऐसे साहित्य का सृजन करें जिसके पढ़ने से व्यक्तिगत व समाज का उत्थान हो।

२५ जून दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि हमें ऐसी पुस्तकें पढ़नी चाहिए जिस से हमारी मानसिक उन्नति हो, शुभ विचार उत्पन्न हों, हमारे बल बुदि में वृद्धि हो। जिस पुस्तक पढ़ने से पतन हो उसे छूना भी नहीं चाहिए। कुछ उपन्यास, कहानियाँ, पत्रिकाएं ऐसी प्रकाशित होती हैं जिनके पढ़ने से हमारे विचार अशुद्ध होते हैं। ऐसा साहिद्य नहीं पढ़ें। मुझे अपना अनुभव है जब मैं स्कूल में पढ़ता था तब मुझे अंग्रजी में "She" शी पुस्तक मिली। मैं दुपहर का खाना खाकर वह पुस्तक पढ़ने लगा। उस पुस्तक में कई बातें पढ़ने योग्य नहीं थी किन्तु फिर भी कुतूहलता के कारण मैं वह पुस्तक पढ़ता गया। कुछ समय के पश्चात् मैंने स्वयं पर और लेखक पर क्रोधित

होकर वह पुस्तक फेंक दी। 'शी' पुस्तकें पढ़ने से मन में निर्मल विचार उत्पन्न नहीं होंगे। आप श्री राम चरित मानस, महाभारत आदि धार्मिक ग्रन्थों व पुस्तकों का अभ्यास करें, संतो की वाणी पढ़ें।

१० जुलाइ दादाजी ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि कामनी-कंचन अध्यात्मिक पथ में बाधा डालते हैं। जीवन के मार्ग पर संभल संभल कर चलें। जब मैं विदेश में गया था तब वहाँ की कुछ महिलाएं मेरी और आकर्षित हुई, एक दो ने तो मुझे विवाह करने के लिए कहा किन्तु मैंने उन्हें बहिनें शब्द से सम्बोधित करते हुए विवाह की बात को टाल दिया। एक स्त्रीने तो मुझे यहाँ तक कहा, यदि मैं शादी करूँगी तो आप से करूंगी नहीं तो आजीवन कुँवारी रहूँगी। जब मैं भारत में लौट आया तो उसने मुझे अपने फोटो व पत्र भेजे, किन्तु मैं उसके पत्र पढ़ता भी नहीं था। मैं जब शक्ति आश्रम राजपुर में गया, वहां भी उसने विवाह के सम्बंध में पत्र भेजे, किन्तु प्रभु की कृपा ने मुझे कामनी से बचाया, मेरी रक्षा की, प्रभु ने मेरी लाज राखी। मेरे भाइयो व बहिनों! आप कभी कामनी व कंचन के आकर्षण में नहीं फंसे। यदि आप एक बार फंस गये तो तुम्हारी स्थिति त्रिशंकु जैसी होगी। सदैव सावधान रहें। प्रभु से प्रार्थना करें कि वे कुविचारों से आपकी सुरक्षा करें।

२० जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन सबेरे कई प्रमियों ने दादा वासवाणी की कुटिया में आकर उन्हें प्रणाम किया और श्रीफल व मिश्री भेंट किये। दादाजी ने मुस्कराते उन्हें आशीर्वाद दिया। संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि प्राचीन काल से आज के दिन सत्गुरू की विशेष पूजा उपसना की जाती है। श्री गुरू नानक महाराज कलियुग के अवतार थे फिर भी उन्होंने गुरू की महिमा गाते हुए कहा :

बलिहारी गुरू आपणे, दइहाड़ी सद वार।
जिन माणस ते देवते कीए, कृत न लागी बार

श्री गुरू अंगदेव महाराज गुरू की महता प्रतिपादि करते हुए कहते हैं कि यदि सौ जाँद और हजारों सूर्यों का प्रकाश हो फिर भी गुरू के बिना अंधकार है। गुरू के ज्ञान रूपी प्रकाश से सब अंधेरा मिट

जाता है -

जे सव चन्दा उगवहि, सूरज चढ़ह हजार।
एते चाण्ण होंदिया, गुर बिन घोर अंधार॥

परमार्थ की प्रगति के लिए सत्गुरू की अत्यन्त आवश्यकता है। अध्यापक बाह्य ज्ञान देता है और गुरू सत् ज्ञान का प्रकाश देकर मार्गदर्शन करता है। मेरे भाइयो व बहिनों आप गुरू में पूर्ण श्रद्धा रखकर उसकी शिक्षा के अनुसार चलेंगे तो आपका भविष्य उज्ज्वल होगा। समर्पित भाव से सत्गुरू की सेवा करें। गुरू की केवल बाहरी पूजा नहीं करें किन्तु अपने जीवन में उसकी शिक्षा को उतारें।

१अगस्त श्री लोकमान्य तिलक एवं जमशेद महता का स्मृति दिवस था। दादाजी ने सांझ को उपदेश देते हुए कहा कि आज श्री लोकमान्य बाल गांगाधर तिलक की पुण्य तिथि और श्री जमशेद महता का स्मृति दिवस है। श्री लोकमान्य महान राष्ट्रभक्त, संस्कृत के विद्वान, निडर निष्ठावान नेता थे। उन्होंने सोइे हुई भारतीय जनता को जाग्रत् करते हुए 'आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा दिया और अंग्रजी शासन हिला दिया। वे भारतीय संस्कृति व सभ्यता के स्वरूप थे। हम उनके सिद्धांतो पर चलने का प्रयास करें।

श्री जमशेद महता भी देश भक्त व परोपकारी पुरूष थे। बिना भेद भाव के वे सब की सेवा करते थे। उनके पुरूषार्थ व प्रेरणा से कई लोक कल्याण के कार्य हुए। वे पारसी थे किन्तु वे सबही धर्मों को प्यार करते थे। हम ऐसे महापुरूषों के जीवन से कोई न कोई शिक्षा गृहण करें।

२३ अगस्त पूज्य दादाजी के अनन्य भक्त व सेवक श्री जशन वासवाणी का जन्म दिन था। उसके उपलक्ष मे श्री चतुरूमल ने प्रति भोज का आयोजिन किया। उसने दादा साधु वासवाणी से भी उसी कार्यक्रम में पधारने की प्रार्थना की। प्रतिभोज के पूर्व नाम कीर्तन हुआ। तत्पश्चात् दादाजी एवं सब प्रमियों ने मिलकर भोजन ग्रहण किया। सांझ को दादाजी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि आज दुपहर को आपने प्यारे जशन के जन्मदिन सम्बंध में प्रतिभोज का आयोजन किया,आपने प्रेम से नाम कीर्तन किया, मिलकर भोजन

किया। प्यारे जशन को आपने आशीर्वाद दिया। मैं भी प्यारे जशन का आशीर्वाद लेने के लिए सम्मिलित हुआ हूँ।

जिसने अपने मन मंदिर में प्रभु की खोज की है, मैं उस पर बलिहार जाऊँ। कई लोग प्रभु की प्राप्ति के लिए बाहर भटकते हैं, वह तो हमारे मन में ब्राजमान है। कई लोग सांसारिक शानमान व वैभव के लिए भटकते हैं। बहुत से थोड़े साधक हैं जो अपने भीतर प्रभु को प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं। वे ही सौभाग्यशाली हैं। मेरे परम प्यारे जशन ने भीतर, मन मंदिर में ही प्रभु प्राप्ति का प्रयास किया है। वह सदैव परीक्षा में प्रथम क्रम रहे, बड़ी बड़ी उपाधियां प्राप्त की, उसे बड़ी नौकरी मिल रही थी, उसने मेरे साथ देश-विदेश के विभिन्न नगरों में भ्रमण किया, किन्तु उसके मन में एक ही प्यास, एक ही तलाश कि प्रभु को प्राप्त करूँ। प्यारे जशन की माताश्री ने उसे आग्रह किया कि तुमने बड़ी उपाधि प्राप्त की है, तुम विदेश में जाकर बड़ा पद प्राप्त करो। तुम प्रवीण हो, नौकरी करके बहुत ही धन संग्रह कर सकता है। प्यारे जशन ने माताजी से कहा माँ ! मैं पैसे, पद व पदार्थ का क्या करूँगा? मैं तो फकीर होना चाहता हूँ।" वह अब आध्यात्मिक उन्नति कर रहा है। प्यारा जशन उसने उच्च परीक्षाएं उत्तीर्ण की उसे महत्वपूर्ण पद मिल रहे थे किन्तु उसने पदों का त्याग कर परमार्थ- पथ पर चलने का संकल्प किया। उसके जीवन का ध्येय माया संग्रह करना या संसार के वैभवों की कोई लालसा नहीं है। वे तो प्रभु परमात्मा की खोज में हैं। मुझे प्रसन्नता हुई कि आपने ऐसे महानुभाव के प्रति स्नेह दिखाया है।

प्यारे जशन के मन में दीन दुखियों के प्रति सद्भावना, स्नेह सहानुभूति भरी पड़ी है। उसकी इच्छा है कि गरीबों की सेवा में समर्पित रहूँ। उसके मन में क्षमा व दया के दीपक जगमगा रहे हैं। एक दिन मैंने उस से पूछा प्यारे तू अपने जीवन में कौन सा विशेष गुण विकसित करना चाहते हो? उसने उत्तर दिया, 'दया' प्रेमियो, जिसके मन में दया है उसका मन पिघलता है। दया ही धर्म का मूल है। संत तुलसीदास भी कहते हैं:

दया धर्म का मूल है नर्क मूल अभिमान।

तुलसी दया न छोड़िये जबलग घट में प्रान।।

मेरे प्यारे जशन! तुम जीवन भर दया की ज्याति जगाते रहो। परसों किसी प्रमी का पत्र आया कि हम भाग्यवान हैं जो प्यारे जशन के साथ बैठकर नाम कीर्तन व सेवा करते हैं। यह पत्र पढ़कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आज ऐसे ही व्यक्तियों की आवश्यकता है जो दूसरों को अज्ञान की नींद से जाग्रत् कर स्मरण-सेवा की ज्योति जगाएं।

श्री जशनजी ने पूज्य दादा साधु वासवाणी व सब प्रेमियों को प्रणाम किया। उन्होंने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं प्यारे दादाजी के द्वार का नौकर हूँ। काश! वे अपनी दया दृष्टि से मुझ अयोग्य, अपवित्र दास को योग्य व पवित्र बनायें। कुछ प्रेमियों ने आज मुझे कुछ उपहार दी हैं। मैं इन सौगातों को क्या करूँगा! मुझे तो केवल आपका स्नेह चाहिए। सभी वस्तुएँ गरीबों में बाँटी जायें।

सन् १९५९ में साधु वासवाणी फिर अस्वस्थ हो गये। डाक्टरों ने उपचार किया। दादा वासवाणी ने श्री जशन से कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता का अट्ठारहवां अध्याय पढ़कर उसकी व्याख्या करो। आज्ञानुसार श्री जशनजी ने श्रीमद भगवद् गीता का अट्ठारहवां अध्याय पढ़कर उसकी ज्ञान गर्भित व्याख्या की।

२२ सितम्बर से २४ सितम्बर जन्माष्टमी के सम्बंध में चार दिन का उत्सव मनाया गया। मीरा स्कूल के विद्यार्थियों ने भगवान श्याम सुंदर की कुछ लीलाएं नाटक रूप में प्रस्तुत की। २४ सितम्बर जन्माष्टमी के पावन दिन प्रातःकाल को मीरा भूमि में परिक्रमा हुई। भाई-बहिनों ने गोविन्द धुन लागी- गोपाल धुन लागी की मधुर स्वर से वातावरण को पवित्र किया। सुबह को दस बजे दादाजी ने भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति को नत मस्तक होकर प्रणाम किया। तत्पश्चात् उन्होंने ज्योति प्रज्वलित कर हवन यज्ञ आरंभ किया। बहिनों ने श्री कृष्ण के प्रेमा भक्ति के गीत गाए। तत्पश्चात् दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने भगवान श्री कृष्ण की उद्भुत लीलाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि रसेश्वर की रासलीला में गोपियों इतनी तो तनमयता के साथ रास करती थीं कि वे स्वयं को भूलकर तद्रूप हो जाती थीं। हम भी भगवान श्री कृष्ण की

प्रेमा-भक्ति की सरिता में डूब जाएँ। जब समर्पित भाव से इस स्नेह सरिता में डूब जायेंगे तो श्री कृष्ण स्वयं आकर अपना दिव्य दर्शन देंगे।

जन्माष्टमी के दो चार दिन पश्चात् प्रभात को दादाजी अपने ही कमरे में गिर पड़े, उन्हें बड़ी ठेंस आई। उनका उपचार किया गया, फिर भी चलने में उन्हें कष्ट होता था। पाँच सप्ताह उन्हें पूर्ण विश्राम करने के लिए कहा गया। प्यारे भाई श्री जशन, बहिन शान्ति व बहिन सती उनकी सेवा करते रहे। कई श्रद्धालु उनकी कुटिया में आकर उनका दर्शन कर आशीर्वाद लेते थे। दादाजी पीड़ा में भी मुस्कराते रहे। वे पीड़ा को प्रभु का प्रसाद मानकर स्वीकार करते थे। सच्चे भक्त, ज्ञानी पीड़ा में भी मुस्कराते रहते हैं, वे कष्टों को परमात्मा का उपहार समझते हैं।

'दुख दारू, सुख रोग भया'

दादाजी को भी जब कोई शारीरिक पीड़ा होती थी, तब वे कभी भी शिकायत नहीं करते थे परन्तु प्रसन्न चित्त रहते थे। उन्हें कुर्सी पर बिठाकर नीचे लाया जाता था। वे गीता वर्ग में बैठकर नाम कीर्तन श्रवण करते थे, और कभी कभी वे ज्ञान गर्भित वचन सुनाकर मार्गदर्शन करते थे।

दादा वासवाणी की बड़ी बहिन पपुर बाई देश विभाजन के पश्चात् हाथरस में जाकर रही और दादाजी का भाई मंघाराम पुणे में आया। कुछ समय वह पुणे में रहा। दादाजी ने उसे आज्ञा दी कि बहिन पपुर हाथरस में अकेली रहती है, तुम वहाँ उसके साथ रहकर उसकी देखभाल करो। दादाजी की आज्ञानुसार श्री मंघाराम भी हाथरस में गये और बड़ी बहिन के साथ रहे। कुछ वर्षों के बाद बिछड़ी बहिन पपुरबाई और भाई मंघाराम पुणे में आये। वे दादाजी की कुटिया में आये, क्यों कि दादाजी चल नहीं सकते थे। दादाजी बड़ी बहिन पपुर व भाई मंघाराम से ऐसे मिले जैसे प्रभु श्रीराम भाई भरत से मिले थे। वर्षों के बाद भाई बहिन का मिलन था। उनकी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हुई, वे आँसू मोह के नहीं, प्रेम के आँसू थे। प्रेम के आँसू निर्मल व पवित्र होते हैं।

२६ अक्तूबर दिवाली के पावन दिन सुबह को दादाजी की कुटिया में नाम कीर्तन हुआ। तत्पश्चात् दादाजी ने गरीबों में मिठाई के पाकेट बाँटे। साँझ को उन्होंने दिवाली के सम्बंध में उपदेश देते हुए कहा कि आज के पावन दिन प्रभु श्री राम चौदह वर्ष बन में रहकर कई दुष्टों का दमन कर अपनी जन्म भूमि अयोध्या में पधारे। उनके आगमन की खुशी में हम प्रति वर्ष दिपावली का पर्व मनाते हैं। हमारी सच्ची दिवाली तो तब होगी जब प्रभु श्रीराम हमारे मन-मंदिर में पधारेंगे। हमारे मन मंदिर में वे तब प्रवेश करेंगे जब हमारे मन में शबरी जैसी प्यास होगी। शबरी जैसी श्रद्धा व प्रेम अपने मन में उत्पन्न करें तो किसी न किसी दिन प्रभु श्री राम अपना दिव्य दर्शन देंगे। प्रभु श्रीराम का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय व अनुसरणीय है। आज यदि पुत्र संतान श्रीराम जैसी होती तो हमारे घर स्वर्ग हो जाते। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप अपने मन में स्नेह व सेवा के, ज्ञान व भक्ति के दीप जगाएँ तो आपके मन मंदिर में प्रकाश होगा, फिर आप सर्वत्र संत तुलसीदासजी की भाँति प्रभु श्री राम का दर्शन करेंगे।

सियाराममय सब जग जानी,
करूँ प्रणाम जोड़ जुग पानी।

हिन्दू तिथि केअनुसार दादा वासवाणी जी का जन्म दिन ११ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन था। उसी दिन सबेरे दादाजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की और नाम कीर्तन हुआ। बहिन मिठी ने दादाजी से केक कटवाया। दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते आगुंतक प्रेमियों को आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् उन्होंने दरिद्रनारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आज की एकादशी का बड़ा महत्त्व है। आप में से कई प्रेमियों ने आज उपवास धारण किया होगा, एकांत में बैठकर नाम चिन्तन करें। आज भक्त नामदेव की जयन्ती है। हमारा सौभाग्य है कि हम संत नामदेव के जन्मस्थल के निकट रहते हैं। संत नामदेव का प्रभु में अटूट विश्वास था। वे भक्ति साधना करते करते आध्यात्मिक ऊँचाई पर पहुँच गये थे। एक बार संत नामदेव जंगल में एक वृक्ष के नीचे रोटियाँ बनाकर लघु शंका करने गए। पीछे से एक कुत्ता रोटियाँ उठाकर भागने लगा। उसी

समय संत नामदेव ने यह दृश्य देखकर कुत्ते को रोकते हुए कहा, भगवान ! भागो नहीं, ठहर जाओ रोटियों को घी लगा के दूँ, तू फिर रोटियाँ स्वीकार करो। संत नामदेव घी की कटोरी हाथ में लेकर उस कुत्ते के पीछे दौड़ा जैसे वह कुत्ता बिना घी रोटियाँ नहीं खाये। संत नामदेव ने उस कुत्ते को भी भगवद् स्वरूप समझा। भगवान भक्त की प्रेम-भावना देखता है। भगवान संत नामदेव की अटूट श्रद्धा व प्रेम-भक्ति देखकर वहाँ प्रघट हुआ। संत नामदेव भगवान हरि विट्ठल का दर्शन कर उनके चरणों पर गिर पड़े। संत नामदेव के प्रेमाश्रु भगवान पांडुरंगा के चरणो पर टपक पड़े। उसी समय भगवान ने संत नामदेव को अपने गले लगाया। मेरे भाइयो व बहिनों ! सच्चे संत प्रति एक प्राणी में अपने इष्ट का दर्शन करते हैं। आप भी श्रद्धा व प्रेम से प्रभु को याद करें , उसका ध्यान करें, गुण गान करें तो किसी न किसी दिन प्रभु आपको दर्शन देंगे।

१५ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्मदिन मीरा भूमि में मनाया गया। सुबह को मीरा सत्संग हाल में नाम कीर्तन हुआ, तत्पश्चात् दादाजी ने मोदी खाना आरंभ किया। उन्होंने दीन दुखियों को गेहूँ, चावल, दाल आदि खाद्य पदार्थ मुफ्त दिये। वे लेने वाले भाइ बहिनों को हाथ जोड़कर स्नेह युक्त आँखों से आशीर्वाद देते गये।

संध्याकालीन सत्संग में श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के पश्चात् दादाजी ने श्री गुरु नानक देव महाराज के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते हुए कहा कि आजकल हम श्री गुरू नानक देव महाराज की शिक्षाओं व मूलभूत सिद्धांतों को भूल गये हैं। कई जगह आज उनका जन्मदिन बाह्य आडम्बर के साथ मनाया जाता है। वे कितने न विनम्र थे, दिखावे से दूर थे। उनकी वाणी से भी विनम्रता प्रतिभासित होती है। उन्होंने अपनी अमूल्य वाणी में स्वयं के लिए 'नानक दास' का प्रयोग किया है। वें महान शक्तिशाली होते हुए भी स्वयं के लिए 'दास' शब्द का प्रयोग करते थे और हम लोग अभिमान, घमंड की हवा में उड़ते हैं। उनकी आकृति से, वचनों से व व्यवहार से नम्रता झलकती थी। आज के दिन आप भी विनम्र बनने

का संकल्प करें।

२५ नवम्बर दादा वासवाणी का जन्म दिन मीरा भूमि में मनाया गया। सबेरे उनकी कुटिया में नाम कीर्तन हुआ, तत्पश्चात् कुछ प्रेमियों ने उनके चरणों में उपहार भेंट करते हुए आशीर्वाद लिया। सुबह दस बजे मीरा सत्संग हाल में मीरा स्कूल के विद्यार्थियों व अध्यापकों ने दादाजी का जन्मदिन मनाया। कुछ विद्यार्थियों व अध्यापिकाओं ने दादाजी के गुणों का वर्णन किया। दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते सब को आशीर्वाद दिया। उन्होंने छोटे बच्चों को खिलौने दिये। उन्होंने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप अपनी दिनचर्या प्रार्थना से आरंभ करें। प्यारे प्रभु को श्रद्धा से प्रार्थना करें। यहाँ स्कूल में आने से पहले, प्रार्थना करें, श्री जप साहब या सुखमनी साहब का पाठ कर माता पिता के श्री चरणों में प्रणाम करें। उनकी आशीर्वाद से आप उन्नति की शिखर पर पहुँच सकते हैं।

संध्याकालीन सत्संग में श्री गंगाराम साजनदास ने दादा वासवाणी के त्यागमय जीवन का उल्लेख करते हुए जन्मदिन के सम्बंध में संग्रह की हुई माया दादाजी के चरणों में भेंट की। दादाजी ने तत्काल ही वह धन श्री गंगाराम को ब्रदरहुड संस्था के सेवा कार्यों के लिए लौटा दिया। सच्चे संत धन को प्रभु की धरोहर समझकर सेवा कार्यों में सफल करते हैं। उनकी माया या माया के पदार्थों में आसक्ति नहीं रहती।

दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज मैं आप सब का आभारी हूँ। आपने कितने न उत्साह के साथ आज दास का जन्म दिन मनाया। मेरे लिए जो कुछ कहा गया। मैं वह नहीं हूँ। मैं तो प्रभु के दासों का भी दास हूँ, मैं तो दीन दुखियों, पशु-पक्षियों का सेवक हूँ। मेरे भाइयों व बहिनों ! आप भी सेवक बनकर सेवा करते रहें। सत्गुरू एवं परमात्मा सेवा भावना व प्रेमा भक्ति से प्रसन्न होते हैं। प्रभु को आपका पाँडित्य, व बाह्य आडम्बर नहीं चाहिए।

प्रभु श्री राम स्वयं कहते हैं -

नर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

श्री गुरू अमरदासजी ने श्री गुरू अंगददेव महाराज की कितनी न सेवा की ! प्रतिदिन प्रभात को बियास नदी से पानी भरकर श्री गुरू अंगददेव महाराज को नहलाते थे। वे अपने हाथों से भंडारे की सफाई करते थे। वे सारा समय नाम स्मरण व सेवा में सफल करते थे। वे रात को गुरूदेव के पाँव दबाते थे। गुरूदेव के अंगुठा में कोढ़ का रोग हो गया, वे अपने ज़िवान से उस अंगूठे को चूस्ते चूस्ते फिर वह रोग बाहर फेंक आते थे। कहना आसान हैं, किन्तु वृद्धावस्था में ऐसी सेवा करना अत्यन्त कठिन है। श्री गुरू अंगददेव महाराज श्री अमरदास की निष्काम सेवा भावना से इतने तो प्रसन्न हुए कि उन्होंने अपने बेटे दातू को धर्मपीठ का अधिकारी न बनाकर श्री अमरदास कोअपना उत्तराधिकारी बनाया।

जिन सेविया तिन पाया मान।

प्रेमियो ! आप भी अभिमान का त्याग कर निष्काम भावना से संतों की, गुरू की वृद्धों की,अनाथों अपाहिजों की सेवा करें तो आपका भाग्योदय होगा।

दिसम्बर में फिर दादाजी अस्वस्थ हो गये। उनका उपचार किया गया। प्यारे श्री जशन, बहिन शान्ति, बहिन सती, डॉ. हीरान्दाणी उनकी सेवा करते रहे।

दादा वासवाणी कवि हृदय थे। जब उनके मुख से काव्य सरिता प्रवाहित होती थी, तब अधिकतर वे स्वयं लिखते जाते थे, किन्तु जब वे अस्वस्थ होते थे, तो प्यारे भाऊ जशन, या बहिन देवकी उनके गीत लिखती जाती थी। ६ महीने तक वे अस्वस्थ रहे, डॉ. मोटवाणी उनका उपचार करते रहे। उनके स्वास्थ्य में थोड़ा सा सुधार आया फिर भी वे स्वयं चल नहीं सकते थे। वे प्यारे जशन व शान्ति के कंधों का सहारा लेकर खड़े होकर कुर्सी पर बैठते थे, फिर चार प्रेमी उनकी वह कुर्सी धीरे धीरे नीचे उतारते थे। उस कुर्सी पर बैठे ही वे आशीर्वाद देते थे, और कभी कभी अमृत वचनों की वर्षा करते थे। एक दिन बहिन शान्ति ने उन्हें कुर्सी पर बिठाकर कहा कि आप दो वचन कहें। उसी समय दादाजी ने अंग्रेजी भाषा में निम्न वचन कहे -:

What is Life ? Life is experience, and

one of the greatest experiences is suffernig, pain. May the Lord of mercy be with me in all the sufferning of these days.

जीवन क्या है? जीवन एक अनुभव है और बड़ा अनुभव है पीड़ा, दर्द। इन दिनों जो पीड़ा मैं अनुभव कर रहा हूँ, काश ! दयालु दातार सदैव मेरे साथ रहें।

१२ मार्च होली के दिन सुबह १० भजे दादाजी को कुर्सी पर बिठाकर नीचे लाया गया। वे वृक्ष की छाया में कुर्सी पर बैठे और उन्होंने हाथ जोड़कर मुस्कराते मुस्कराते आशीर्वाद दिया। प्रेमियों ने होली के उपलक्ष में उन्हें गुलाल लगाया, प्रेम के साथ दादाजी से होली खेली। ऐसा लग रहा था कि जैसे ब्रज में गोपियाँ भगवान श्री कृष्ण से होली खेल रही हों। तत्पश्चात् दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। उन्हें खाना खिलाया गया।

होली के दूसरे दिन सुबह को दादाजी को कुर्सी पर बिठाकर टहलाने के लिए ले गये और कुछ समय वे वृक्षों के नीचे ज्ञान गोष्ठी करते रहे। वहाँ अचानक एक मस्त फकीर आया, उसने दादाजी से कपड़े मांगे तत्काल ही दादाजी अपना कोट उतारकर उसे दे रहे थे तो प्रेमियों ने उन्हें कहा कि यह कोट फकीर के काम नहीं आयेगा, उसे दूसरे वस्त्र देते हैं। उसी समय ही श्री आतू रेलवाणी मीरा भूमि में गया और कुछ वस्त्र लेकर आया। दादाजी ने वस्त्र व एक रूपया उस मस्त फकीर को दिया, फिर उसे दूसरी बार चोला व रूपया दिया, फिर उसे तीसरी बार भी चोला व रूपया दिया, वह मस्त फकीर फूला न समाया। वह आश्चर्य में पड़ गया और कहने लगा, मैं इतने चोले क्या करूंगा। इतने में वहाँ दूसरे फकीर भी आ गये, दादाजी ने सब को एक एक नया चोला व एक एक रूपया देकर खुश किया और आशीर्वाद लिया। उन्हें दूसरों को खुश करने में ही खुशी होती थी।

साँझ को दादाजी ने मीरा सत्संग हाल में उपदेश देते हुए कहा कि स्वास्थ्य ठीक न होने से कई दिनों के पश्चात् आज मैं टूटे फूटे शब्द बोल रहा हूँ। आज श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्मदिन है। उनका प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब देश में अशान्ति व अत्याचार का

दूषित वातावरण था। उन्होंने लोगों को कृष्ण भक्ति की ओर आकर्षित किया। वे मध्यकालीन युग की महान विभूति थे। उनके पूज्य पिताजी श्री जगन्नाथ मिश्र अत्यन्त धार्मिक ब्रह्मण थे और माताश्री शची देवी स्नेह, सादगी, सरलता, सेवा की सजीव मूर्ति थी।

श्री चैतन्य मातृपितृ भक्त थे। परिवार के भक्ति मय वातावरण में उनका पालन पोषण हुआ। उनके जन्म का नाम विश्वम्भर था। जब बालक विश्वम्भर रोते थे, तब हरिनाम उचारण करने से ही शान्त होते थे। उनके पूर्व जन्म के ऐसे संस्कार थे। उनकी शिशु लीला भी अलौकिक रही। परिवार के सम्बंधी उसे प्यार से निमई के नाम से सम्बोधित करते थे। युवा निमाई का भाग्योदय हुआ कि श्रीकृष्ण लीलामृत काव्य के रचियता महात्मा ईश्वरपुरी उन्हें गुरू रूप में पाप्त हुए। गुरूदेव ने श्री चैतन्य के मन में कृष्ण भक्ति का संचार किया। वे भगवान श्री कृष्ण का संकीर्तन करते, नृत्य करते स्वयं को भूल जाते थे। आज न केवल भारत में किन्तु विदेश के विभिन्न नगरों में लाखों लोग श्रीकृष्ण भक्ति से प्रभावित हुए हैं। वे रसेश्तर की लीलाओं का रसास्वादन कर मग्न हो जाते थे। मेरे भाइयो व बहिनों! आप भी कृष्ण-भक्ति की सरिता में डुबकियाँ मार कर अद्वितीय आन्द की उपलब्धि करें।

१४ मार्च सुबह को दादाजी को कुर्सी पर बिठाकर नीचे लाया गया। उनकी इच्छानुसार उन्हें श्री जशन वासवाणी , आत्मा वासवाणी; श्री आत् रेलवाणी, बहिन शान्ति, बहिन सती एवं अन्य कुछ प्रेमी पैदल चलते बंद गार्डन ले गये। वहाँ दादाजी ने नदी में मच्छलियों को खिलाने के लिए नदी में गुड, चावल इत्यादि खाने की वस्तएं डालीं। परोपकारी पुण्यात्मा दादाजी को देखकर कुछ गरीब व फकीर भी वहाँ आ गये। दादाजी ने तत्काल ही फल मंगवाए और सब को फल दिये। धूप बढ़ गई थी, इस लिए एक ट्रक की व्यवस्था कर उसमें दादाजी की कुर्सी रखकर उन्हें मीरा भूमि में लांया गया। कुछ प्रेमी भी दादाजी के साथ ट्रक में चढ़कर आए।

प्रति दिन सुबह दादाजी को कुर्सी पर बिठाकर नीचे लाया जाता था। कभी वे टहलने के लिए जाते थे, और कभी वे मीरा भूमि

में आमली के वृक्ष के नीचे बैठकर धीरे धीरे धीमी आवाज में ज्ञान गर्भित बातें सुनाते थे। कभी कभी वे किकी रत्ना से संतो की वाणी गाने के लिए कहते थे। संतों की वाणी श्रवण करते वे मंत्रमुग्ध हो जाते थे, उनकी सुरति चढ़ जाती थी। किकी रत्ना वासवाणी की आवाज में दर्द है, वह दिल की गहराई व प्रेम से संतों, सूफियों व दादाजी की वाणी गाती है। भक्ति संगीत सुनते सुनते कभी कभी दादाजी की आँखो से आँसू टपक पड़ते थे।

दादाजी टहलते टहलते कभी कभी किसी न किसी प्रेमी के घर में पधार कर उसकी इच्छा पूरी करते थे। भाइ-बहिनें उनका दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न होते थे।

१७ मई सांझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि जीवन यात्रा के लिए तैयारी करें। तैयारी है शुभ कर्म करना। किसी समय भी काल का बुलावा आसकता है। काल किसी की नहीं सुनता, वह एक क्षण भी विलम्ब नहीं करता। कई प्रसिद्ध व्यक्तियों को, शक्ति शाली शासकों को ३०-४० वर्ष की आयु में काल का बुलावा आया, वे उसे टाल नहीं सके। सिकन्दर हो या कारून बादशाह, वे औरों से तो सामना कर सके किन्तु काल के आगे उनका वश नहीं चला। संत कबीर भी हमें जाग्रत् करते हुए कहते हैं :-

कबीरा सोता क्या करे, जागके जपो मुरार।
एक दिन है सोवना, लंबे पाँव पसार॥

मेरे प्यारे भाइयों व बहिनों! आप भी अज्ञान की नींद से जाग्रत् होकर नाम स्मरण एवं अन्य शुभ कर्म करें। समय हाथों से निकल जायेगा फिर आप पश्चानुत्ताप करेंगे। श्री गुरू तेगबहादुर महाराज भी अपनी वाणी में कहते है:

करना हो तो ना कियो पडियो लोभ के फंद।
नानक समयो रम गयो अब क्यों रोवत अंध॥

१८ मई सुबह को दस बजे दादाजी ने मीरा स्कूल के प्रार्थना हाल में विद्यार्थियों अध्यापकों-अध्यापिकाओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप मीरा स्कूल के आदर्शों को कभी नहीं भूलें । एक दूजे के प्रति स्नेह व सद्भावना रखें। आप अपने विचार व व्यवहार

सदैव शुद्ध व पवित्र रखें। मन में कभी किसी के प्रति बुरा विचार या बुरा संकल्प नहीं करें। न केवल बुरे या अपवित्र कर्म का किन्तु बुरे विचार का फल भी भुगतना पड़ता है। सब का भला करें। आप दूसरों का भला करेंगे प्रभु आपका भला करेगा। विद्या विनम्रता सिखाती है। नम्रता मनुष्य का आभूषण है। मुझे प्रसन्नता है कि मीरा स्कूल के विद्यार्थियों का परीक्षा फल संतोष जनक है, आपका आचरण भी संतोष जनक और पवित्र होना चाहिए।

दादा वासवाणी ने विभिन्न वर्गों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय क्रम आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देते हुए आशीर्वाद दिया। उन्होंने विद्यार्थियों व अध्यापिकाओं को शुभ मंगल कामनाएं दी।१९ मई सुबह को दादाजी नीचे उतर रहे थे तो मीरा स्कूल की अध्यापिकाओं ने उन्हें प्रार्थना की कि कृपया सत्संग हाल में पधार कर बच्चों को खिलौने दें और आशीर्वाद करें। दादाजी विनती स्वीकार कर मीरा सत्संग हाल में पधारे, जहाँ पहले ही छोटे बच्चे बैठे थे। दादाजी के आगमन पर बच्चों व अध्यापिकाओं ने खूब तालियाँ बजाई। दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते सब ही बच्चों को अपने हाथों से आम व खिलौने देते हुए प्यार किया।

१५ जून दादाजी टहलते टहलते अचानक गांगाराम साजनदास के घर में पधारे। श्री गांगाराम, उनकी पत्नी लक्षमी एवं सुपुत्री ईश्वरी दादाजी के आगमन पर फूले नहीं समाए। बहिन ईश्वरी ने एम. एडि. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी, दादाजी ने उसे बधाई देते हुए स्नेह दिया।

२५ जून दादाजी के भ्राता श्री मंघाराम संसार से चल बसे। भाई की मृत्य सुनकर दादाजी कुछ समय शान्त रहे। शाम को ५ बजे श्री मंघाराम का स्थूल शरीर शमशान भूमि में ले जाने के लिए नीचे लाया गया। दादाजी ने उनके स्थूल शरीर पर पुष्प वर्षा करते हुए उन्हें भाव भीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि भाई मंघाराम बाल ब्रह्मचारी रहा। वह अपनी जीवन लीला समाप्त कर अगम देश की यात्रा के लिए चला गया। हम सब इस संसार में यात्री हैं। हमें भी यात्रा पूरी कर एक दिन उसी अगम देश को जाना है। हम अज्ञान के कारण यह बात भूल

गये हैं कि इक दिन हमारी भी सुंदर काया राख भयेगी। पाँच तत्त्व का नश्वर पुतला भस्म हो कर मिट्टी में मिट्टी हो जायेगा। फिर घमंड किसका ! जगत् के पदार्थ, सब नश्वर हैं।

जो दीसी जमीं पर वह होसी फना

श्री गुरू तेगबाहदुरजी माहाराज भी फरमाते है:

राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
नानक कुछ थिर नहीं, सपने ज्यों संसार।।

मेरे भाइयो व बहिनों ! हम सब को चलना है उस पार । आज या कल, किन्तु चलने से पहले इस संसार रूपी बगीचे से नाम का फूल लेलें, नाम बिना यह जगत् मरूस्थल है। नाम की सुरभि अमर व सुखदाई है। हम सब को नाम की पूंजी ही काम आयेगी। साँसरिक वैभव एवं सम्बंधी साथ नहीं चलेंगे। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज भी नाम का महत्व बताते हुए कहते हैं:

जिह मार्ग के गने जाहि न कोसा।
हरि का नाम ऊहाँ संगि तोसा।
जिह पैडै महा अंध गुबारा,
हरि का नाम संगि उजीआरा।।
जहाँ पंथ तेरा को न सिञानू।
हरि का नाम तह नालि पछानू।।
जह महा भइ आन तपति बहु घाम।
तह हरि के नाम की तुम ऊपर छाम।।
जहा त्रिखा मन तुझ आकरखै।
तह नानक हरि हरि अमृत बरखै।

श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज हमें जाग्रत् करते हुए कहते हैं कि मृत्यु- मार्ग की यात्रा के कोस गिने नहीं जा सकते, इसी यात्रा में नाम की पूंजी काम आयेगी। जिस मृत्यु - मार्ग में भयंकर अंधकार है, वहां हरि का नाम हमें प्रकाश देगा। इसी यात्रा में कोई परिचित साथ में नहीं होगा एक नाम ही साथी सहायक सहारा होगा। जिस पथ में असहनीय ताप व गर्मी होगी वहाँ नाम की छाया में विश्राम मिल सकता है। इसी राह में तुम मृग की भॉति प्यासे होंगे, तब नाम रूपी अमृत ही

तुम्हारी प्यास पूरी करेगा। नाम रूपी अपृत की बरखा तुम्हें ठंडक व आनंद प्रदान करेगी। मेरे भाइयो व बहिनों! आप भी नाम का धन संग्रह करें तो जीवन यात्रा और परलोक की यात्रा सुखद व सफल होगी।

दादाजी टहलते टहलते कभी कभी डां सती मीरचन्दाणी के घर में, कभी प्रो. ईश्वरी जोतवाणी के मकान में तो कभी प्यारे श्री गंगाराम साजनदास के घर में तो कभी किकी रत्ना वासवाणी के मकान में अचानक पधारकर उनकी प्यास पूरी करते थे। बहिन सती मीरचन्दाणी के स्वर में माधुर्य था, जब वह शाहलतीफ, सचल सरमस्त बैदल बेकस की वाणी गाती थी तब दादाजी तनमय होकर वाणी श्रवण करते थे।

१८ जुलाई गुरूपूर्णिमा के पावन दिन सुबह को कई श्रद्धालु प्रेमियों ने दादाजी के चरणों में श्रीफल व मिश्री रखते हुए आशीर्वाद लिया। संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि साधारणतः सत्गुरू की खोज करनी पड़ती है, किन्तु कभी कभी पूर्वजन्म के सत्कर्मों के कारण सत्गुरू स्वयं मिल जाते हैं। बालक दादू जब सात वर्ष का था तब अपने सहपाठियों के साथ खेल रहा था। वहाँ अचानक परिपूर्ण संत प्रघट हुए। उसे देखकर अन्य बालक तो भाग गये, परन्तु बालक दादू ने श्रद्धा व विनम्रता के साथ उन्हें प्रणाम किया। बालक दादू की श्रद्धा व नम्रता से वे संत अत्यन्त प्रसन्न हुए और तत्काल ही वे अंतर्ध्यान हो गये। संत दादू भाग्यशाली थे कि बाल्यावस्था में ही वे गुरू कृपा के पात्र बनें। संत दादू ने गुरू के आशीर्वाद से आध्यात्मिक उन्नती की। वे भक्ति साधना करते करते महान संत बन गये। उनके मुख से काव्य धारा प्रवाहि हुई, जो आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है। वे प्रियतम प्रभु के निकट रहने में ही सच्चे सुख का अनुभव करते हैं -:

दादू सुख साईं सौ, और सब ही दुख।
देखूं दर्शन पीव का, तिस ही लागे सुख।।

संत दादूजी हमें अज्ञान की नींद से जाग्रत् करते हुए कहते हैं -:

बार बार यहु तन नहीं, नर नारयाण देह।

दादू बहुर न पाईये, जन्म अमोलक येह ।।

मेरे भाइयो व बहिनों! यह मानुष तन बार बार नहीं मिलेगा। हम यह अमूल्य जीवन व्यर्थ की बातों में गंवाते हैं। नाम स्मरण व अन्य शुभ कर्म कर यह मानव जीवन सफल करें। पशु पक्षियों की भाँति जीवन नहीं बितायें।

२ अगस्त भाऊ जशन वासवाणी के जन्म दिन सम्बंध में प्यारे चत्रूमल ने दुपहर को प्रति भोज का आयोजन किया। पहले मीरा हाल में नामकीर्तन हुआ, दादा वासवाणी ने प्यारे जशन को आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् सब प्रेमियों ने श्री जशन को जन्म दिन बधाइयाँ दी और प्रतिभोज हुआ। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने उपदेश देते हुए कहा, आज मैं अपने प्यारे जशन से कहना चाहता हूँ कि तू भारत के ऋषियों में सदैव विश्वास रखना। तुम कितनी भी पुस्तकें पढ़ो, अपने ज्ञान की वृद्धि करो किन्तु तुम्हारा ऋषियों में विश्वास कम नहीं होना चाहिए। अब मैंने ८१ वर्ष में प्रवेश किया है, जब मैं १८ वर्ष का था, तब मेरे मन में भारत के ऋषि-मुनियों के प्रति विश्वास पैदा हुआ। मैं उनकी शिक्षाओं का पालन करता रहा,मेरा विश्वास कभी डगमगाया नहीं है।

हरिद्वार में एक सम्मेलन में मुझे अध्यक्षीय भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया। उसी सभा में भारत के कई महानुभाव सम्मिलित हुए थे। वहाँ मैंने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा, “मेरे प्यारे भारतवासियो ! आप यदि भारत का भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते है तो आप प्रभु में, भारत के ऋषिमुनियों व संतों महात्माओं के संदेश व शिक्षा में पूर्ण विश्वास रखकर उनके आदर्शों के अनुसार चलें। आज हम अपनी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता को भूलकर पश्चिम की संस्कृति व सभ्यता का अंधानुकण कर रहे हैं ! ऐसा करने से हमारे देश व जाति की उन्नति नहीं हो सकेगी। भारत के हिन्दू सनातन धर्म के सिद्धांतों को नहीं भूलें। हमारे भारत के ऋषियों का दृष्टिकोण विशाल था,उनके मन में संकीर्णता नहीं थी। वे विश्व का कल्याण चाहते थे, मानवता का उत्थान करना चाहते थे किन्तु वे विधर्मियों के प्रति सजग थे। आप भी धर्म, संस्कृति व सभ्यता की रक्षा करें, उस में ही भारत का

भला होगा। ऋषियों की शिक्षा में विश्वास बढ़ाएं।

उसी सभा में पंडित जवाहरलाल नेहरू भी बैठे थे। उन्होंने मुझ से अनुमति लेकर कहा, मैं, सभा के अध्यक्ष साधु वासवाणी के विचारों से सहिमत नहीं हूँ कि हम परमात्मा व ऋषियों में विश्वास धारण कर उन्नति कर सकते हैं। आज परिवर्तन आ गया है, यह विज्ञान का युग है। हम विज्ञान के युग में विज्ञान की शिक्षा गृहण कर, योरप की भांति प्रगति करें।

उसी समय प्यारे जवाहरलाल को मैंने कोई तर्क नहीं दिया क्योंकि उनके प्रति मेरे मन में आदर की भावना थी, किन्तु मन में, सोचा कि प्यारे जवाहरलाल के मन में प्रभु के प्रति विश्वास डगमगा रहा है। इस लिए आज मैं अपने परम प्यारे जशन से कहता हूँ कि तुम प्रभु और भारत के ऋषियों में पूर्ण विश्वास रखकर जीवन पथ पर आगे बढ़ता रहना। कभी भी तुम्हारा यह विश्वास नहीं डगमगाए। तुम्हारे मन में सदैव दीन दुखियों, दरिद्रों, पशु पक्षियाँ के प्रति स्नेह व सहानुभूति की भावना बढ़ती रहे।

प्यारे जशन ! मैं चाहता हूँ, कि काश ! तू दूसरों को सुखी करने में ही आनंद का अनुभव करो। तुम बच्चों से मिलो, उनसे बातें करो, उनकी बातें सुनो और उनके सम्पर्क में भी खुशी का अनुभव करो। तुम श्री कृष्ण का आशीर्वाद लेकर अपना जीवन सेवा में समर्पित करो। तुम जहाँ भी जाओ वहाँ दया का वृक्ष ले जाओ। कौन सा वृक्ष, जो कई वर्ष पूर्व मैं ने देखा। उसी वृक्ष के नीचे कई वर्ष गौतम बुद्ध बैठे।उसने कितनी न तपस्या की। किन्तु फिर उसने संसार में प्रवेश कर अहिंसा दया व मैत्री का प्रचार किया, लाखों लोगों के मन में श्री गौतम बुद्ध ने दया के, करूणा के बीज बोए, और हजारों मनुष्यों,- पशु पक्षियों की जीवन रक्षा की। प्यारे जशन मेरी भी यही इच्छा है कि तुम भी जहाँ तहाँ दया के दीप जगाओ, पशु पक्षियों, सभी प्राणियों की जीवन रक्षा करो, जाकर दुखी दिलों को प्यार से भरो, उनके कष्ट हरो। मुख से श्री कृष्ण का नाम और हाथों से सेवा का काम, इसी पावन पथ पर चल कर जीवन सफल बनाओ।

एक दिन रात को दादाजी ने ज्ञान गाष्ठी करते हुए कहा कि

जन्माष्टमी का पावन दिन नजदीक आ रहा है। आप इन दिनों श्री श्यामसुंदर का चिन्तन करें। आप जैसे विचार करेंगे, वैसे बनेंगे। गोपियाँ बाँके बिहारी श्री कृष्ण मुरारी का चिन्तन करते करते, रास खेलते खेलते श्याम रूप हो गईं। गोपियों के मन में श्याम, उनकी आँखो में श्याम! वे काम काज करते भी श्री कृष्ण ब्रजबिहारी का चिन्तन करती थीं। आज आप सोते समय भी रसेश्वर का चिन्तन करते सो जाएँ तो नींद में भी आपको भगवान श्री गोवर्धन गिरिधारी का दर्शन होगा।

सपना तुम सुलतान हो उत्तम तेरी जात।
सौ कोस साजन बसे, तू आन मिलावे रात।।

मेरे भाइयो व बहिनों! तुम्हें नींद में भी श्यामसुंदर की मुरली की मधुर आवाज सुनने में आयेगी। साँसारिक चिन्ताओं का परित्याग कर प्रभु का, संतों महात्माओं का चिन्तन करें। ऊठत बैठत सोवत जागत श्याम श्याम पुकारें, उसके मिलन की राह निहारें तो किसी न किसी दिन श्री कुंज बिहारी आपको दिव्य दर्शन देंगे।

२८ अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन सुबह दस बजे मीरा सत्संग हाल में प्रो ईश्वरी जोतवाणी ने श्रीमद भगवद् गीता के १२ अध्याय के श्लोक उचारण किये। हवन यज्ञ किया गया। दादाजी ने यज्ञ में आहुति अर्पण की। बहिनों ने कृष्णा भक्ति से ओतप्रोत भजन गाये। दादाजी भी प्रेम के साथ श्रवण कर रहे थे। तत् पश्चात् दादाजी ने दरिद्र नारयाण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने श्याम सुंदर की लीलाओं का वर्णन करते हुए कहा कि उनकी अमूल्य वाणी गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि यज्ञ द्वारा प्रसन्न हुए देवता तुम्हें बिना माँगे ही इच्छित फल निश्चय ही देते रहेंगे। इस प्रकार उन देवताओं द्वारा दिये हुए खाद्य पदार्थ, एवं अन्य पदार्थों को बिना किसी को दिये हुए जो भोगता है, खाता वह चोर है। परमात्मा ने जो कुछ भी दिया है वह उसकी अमानत् है, उसको बाँटकर खाएं। किसी भूखे को खाना खिलाएं और बाद में स्वयं भोजन खाएँ। किसी नंगे को वस्त्र दें, किसी निराश्रय को आश्रय दें,। जीवन की सार्थकता देने में है। हम यदि प्रभु द्वारा दिये हुए पदार्थों का केवल स्वयं उपयोग करते हैं तो हम चोर हैं। इस लिए मेरे भाइयो व बहिनों आप बाँटकर खाएँ। भगवान

श्री कृष्ण सच्चे साम्यवादी थे।

यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरूष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। जो लोग केवल अपना पेट भरने के लिए खाना बनाते हैं वे पापी हैं, चोर हैं। प्रेमियो! आप पहले दूसरों को खिलाएं बाद में स्वयं खाएं। सिन्ध में हमारे घरों में प्रथा भी कि खाना तैयार होने पर कऊए व गाय के लिए, जल व अग्नि के लिए खाने का हिस्सा अलग रखा जाता था और गाय व कऊए को खिलाया जाता था। अग्रि व जल में तैयार खाना अर्पित किया जाता था । आज कल अधिकतर लोग ऐसा नहीं करते। आप आज जन्माष्टमी के पवित्र दिन भगवान श्री कृष्ण की यह शिक्षा जीवन में अपनाएँ तो जन्माष्टमी का उत्सव मनाना सफल होगा।

७ अक्तूबर विजयदष्मी के दिन सुबह १० बजे मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ किया गया। दादाजी ने यज्ञ में आहुति अर्पण की और दो घंटे वहां बैठे रहे, यज्ञ की अग्नि की ओर देखते देखते उनकी आँखों में चमक आ गई। उसी दिन साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज के दिन प्रभु श्री रामने रावण पर विजय प्राप्त की। रावण महा विद्वान व तपस्वी था किन्तु आसुरी प्रवृति के कारण उसका आचरण अपवित्र व अशुद्ध था। माता सीता का अपहरण कर उसने महा पाप किया। उसकी पत्नी मदोदरी धार्मिक विचार धारा वाली थी, उसने उसे बहुत ही समझाया कि प्रभु श्री राम से युद्ध मत करो, किन्तु अभिमानी रावण नहीं माना। घमंड मनुष्य को गिराता है। यदि रावण अपनी भूल मानकर प्रभु श्री राम की शरण में आता तो प्रभु श्री राम उसका संहार करने के बदले उसे क्षमा कर देते थे।

मेरे भाइयो व बहिनों ! हमारे मन में भी कभी कभी रावण जैसी प्रवृत्ति पैदा होती है। रावण में कितने न गुण थे, किन्तु घमंड ने, अहम् ने उसकी आँखो पर परदा डाल दिया। भाई विभीषण ने उसे समझया कि भगवान श्री राम से युद्ध नहीं करो, उसकी शरण लो, किन्तु घमंडी रावण नहीं माने। अहम् के कारण कितने झगड़े होते हैं, लड़ाइयाँ होती हैं, खून की नदियाँ बहती हैं ! हम भी अभिमान का त्याग कर प्रभु श्री राम की शरण लें। हम अपने जीवन में श्री राम के

आदर्श अपनाएं।

९ अक्तूबर रविवार साँझ को महाराष्ट्र के राज्यपाल श्रीप्रकाश जी दादा वासवाणी के साथ मिलने के लिए आये। श्रीप्रकाश के मन में दादाजी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। सिन्ध से ही उनका दादाजी से स्नेह सम्बंध रहा। वे दादाजी के व्यारव्यान सुनकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने आधा घंटा दादाजी से ज्ञान गोष्ठी की। उसी समय सत्संग हाल में श्री प्रकाश ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आज मेरा सौभाग्य है कि बहुत दिनों के बाद भुझे दादाजी के दर्शन करने का सुअवसर मिला है। दादाजी हमारे आध्यात्मिक मार्गदर्शक हैं। उनके दर्शन करने व वचन श्रवण करने से आनन्द की उपलब्धि होती है। आप भाग्यवान हैं कि प्रति दिन यहां पवित्र वातावरण में महान विभूति दादाजी का दर्शन करते, प्रवचन सुनते लाभान्वित होते हैं। आज मैं भी उनका आशीर्वाद लेने के लिए आया हूँ।

२६ अक्तूबर दिवाली के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ हुआ। दादाजी ने यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित कर आहुति अर्पित की। बहिनों ने नाम कीर्तन किया और मीरा सत्संग हाल 'रघु पति राघव राजा राम, पत्त पावन सीता राम' की धुनि से गूंज उठा। दादाजी ने प्रभु श्री राम की मूर्ति को प्रणाम कर सब को आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् दादाजी नें दरिद्र नारायण की सेवा करते, उन्हें मिठाई के पाकेट देते हुए आशीर्वाद लिया।

हिन्दू तिथि के अनुसार दादाजी का जन्म दिन ७ नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन सुबह दस बजे प्यारे किशोर बगोमल थधाणी के मकान कनाट हाऊस में मनाया गया। दादाजी वहाँ पधारे। बहिनों ने नाम कीर्तन किया और दादा को जन्म दिन बधाइयां दी। दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते सब को आशीर्वाद दिया। संध्या कालीन सत्संग में उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि आज की एकादशी का बड़ा महत्व है, आज जितना समय भी आप एकांत में बैठकर नाम का जाप करें प्रभु का ध्यान करें आपके लिए अत्यन्त लाभकारी है। प्रभु का नाम तो सदैव लेना चाहिए किन्तु दिन दिन का अपना महत्व होता है। प्रभु का नाम लेने में संकोच नहीं करें।

कुछ बहिनों के पति या सासुर के नाम राम कृष्ण, शंकर, हरि, गोबिन्द आदि भगवान के नाम होते हैं तो वे सत्संग में, नाम कीर्तन के समय भी वह नाम उचारण नहीं करती हैं। नाम कीर्तन करते समय आप प्रभु का ध्यान करें, उसका नाम लेने में कोई संकोच नहीं करें। एक घर में नई बहू आई, उसे दही बिलोड़कर माखन निकालने का काम दिया गया। उसे पहले माखन निकालने का अनुभव नहीं था, तब उसने सास से कहा, दही तो बिलोड़ी है किन्तु मैं माखन निकाल नहीं सकती। सास ने उसे डाँटते हुए कहा कि तुम्हें शर्म नहीं आती, अपने सासुर का नाम लेती है। उसके सासुर का नाम माखनलाल था। सासने बहू का माखन निकालने की क्रिया सिखायी। दूसरे दिन फिर बहू ने दही बिलोड़ी । बिलोड़कर जैसे ही उसने माखन निकालकर, माखन हाथ में लिया तो वह छाछ में गिर पड़ा। बहू ने सास को बुलाते हुए कहा, सासजी! सासुर डूब गया डूब गया, उसे आकर निकालो! सास बहू का यह वाक्य सुनकर शीघ्र आ गई और पूछा सासुर कहाँ डूब गया? बहू ने कहा कि छाछ में डूब गया। सासने कहा, बेटी यह तो माखन छाछ पें पड़ा है। बहू ने कहा, आपने कल मुझे कहा कि अपने सासुर का नाम नहीं लो, इस लिए मैंने सासुर के नाम का प्रयोग नहीं किया।

बहिनों आप ऐसा संकोच नहीं करें। प्रभु का कोई भी नाम प्रेम से उचारण करें।

११ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्मदिन मीरा भूमि में मनाया गया। सुबह को दस बजे मीरा सत्संग हाल में दादाजी पधारे, बहिनों ने नाम कीर्तन करते गुरू वाणी गाई। श्री गुरू ग्रंन्थ साहब के अखंड पाठ की समाप्ति हुई। दादाजी विनम्रता की मूर्ति कुर्सी पर बैठे हाथ जोड़कर सब को आशीर्वाद देते गये। उसी समय ऐसा लग रहा था कि स्वयं श्री गुरू नानकदेव महाराज दादाजी के रुप में आशीर्वाद दे रहे हैं। तत्पश्चात् दादाजी ने मोदी खाना आरंभ किया, उन्होंने गरीबो को अन्न धन की सहायता की।

संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने श्री गुरू नानकदेव महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हूए कहा कि श्री गुरू नानकदेव महाराज

कलियुग के अवतार थे फिर भी वे स्वयं नाम का जाप करते थे। नाम की बड़ी महिमा है। नाम ही जीव को परमात्मा से मिलाता है। श्री गुरू नानकदेव महाराज फरमाते हैं कि जो नाम स्मरण करता है वह विपदाओं से विमुक्त हो जाता है, उसका मुख पवित्र होता है, अन्तःकरण शुद्ध होता है, जीवन सफल होता है।

जिनी नाम ध्याइया गए मसकति घालि।
नानक ते मुख उजले, केती छुटी नालि॥

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! जो नाम से विमुख हैं वे आत्मानंद की उपलब्धि नहीं कर सकते। आज श्री गुरू नानक साहिब का जन्म दिन आप लोगों ने कितने न उत्साह से मनाया, उनकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारें, उनकी अमूल्य वाणी का अभ्यास करें, चिन्तन व मनन करें।

२५ नवम्बर साधु वासवाणी का जन्मदिन उत्सव सुबह को मीरा स्कूल की ओर से मनाया गया। दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते विद्यार्थियों व अध्यापिकाओं को आशीर्वाद दिया। दादाजी ने छोटे छोटे बच्चों को खिलौने दिये। तत्पश्यात् मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ हुआ, शास्त्रों का पाठ हुआ। दादाजी ने यज्ञ में आहुति डाली। बाद में उन्होंने दरिद्र नारायण की सेवा की। कई प्रेमियों ने दादाजी को बधाईयाँ दी। साँझ को सत्संग में श्री गंगाराम साजनदास ने दादा वासवाणी के गुणों का वर्णन करते हूए कहा कि वे महान ज्ञानवान कर्म योगी संत, गरीबों के मसीहा हैं। उनकी असीम कृपा से ब्रदर हुड की ओर से मीरा भूमि में कई सेवा कार्य हो रहे हैं, दीन दुखियों, बीमारों व विद्यार्थियों की सेवा की जाती है।

डाॅ. हाथीरामाणी व श्री गंगाराम ने साधु वासवाणी के जन्मदिन सम्बंध में प्राप्त माया उन्हें भेट की। दादाजी ने तत्काल ही भेट की गई माया, श्री गंगाराम को सेवा कार्यों के लिए लौटा दी। उन्होंने प्रवचन करते हूए कहा कि मैं आप सब का आभारी हूँ। जन्मदिन केवल उत्सव मनाने के लिए नहीं हैं। इसी दिन अपने मन का मंथन करना चाहिए कि सारे वर्ष में कौन से सत्कर्म किये हैं। हमने अपने श्वास व्यर्थ तो नहीं गंवाए हैं। मैं मद्रास में था, वहाँ किसी सजन ने

मुझे कहा कि आपके प्रवचन भी सुने हैं, आपके सम्बंध में बहुत कुछ सुना है, आप बताएँ कि आप कौन हैं ? मैंने नम्रता से कहा कि मैं एक किसान हूँ, आपके दिलों रुपी खेत में शुभ विचारों के बीज बोने आया हूँ, उन्हें विकसित करने के लिए प्रेम का पानी देने आया हूँ। आपका मन रुपी खेत जब निर्मल होगा, नर्म होगा, तब बोए हूए बीज विकसित होंगे।

आपने जन्मदिन के उपलक्ष में मुझे जो माया की उपहार एवं अन्य सौग़ातें दी, उन में आपका स्नेह समाहित है। काश ! मैं उस स्नेह के योग्य बनूँ ! आज मेरे मन में कई स्मृतियाँ आ रही हैं। अब मैं ऐसा समझता हूँ कि ? मैं नदी के किनारे खड़ा हूँ , वहाँ दया की नैया खड़ी है। नैया से कोई पुकार रहा है, "आजा मेरे प्यारे आजा !" मेरे मन से बार बार यही प्रार्थना निकलती है, "प्रभु ! मेरी नैया के खेवनहार तू अपनी दया से मुझे पार लगाओ ! मैं अशक्त हूँ ! आज बार बार प्यारे प्रभु को उसकी दया दृष्टि के लिए पुकारता रहा हूँ। मैंने विद्यार्थी जीवन में उपनिषद् का निम्न सूत्र पढ़ा और बहुत ही प्रभावित हुआ -

ईशा वास्यं, इदं सर्वं यत् किञ्चित् जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जी थाः मा गृद्ध कस्य स्वित् धनम् ॥

यह सारा जगत् भगवद् रुप है। जो कुछ भी दृश्यमान है उस में एक ब्रह्म विद्यमान है, सृष्टि में सृष्टा व्यापक है । त्याग की भावना से संसार के पदार्थों का सदुपयोग करें, गृद्ध की भाँति दुसरों के वैभव, धन,पदार्थ को प्राप्त करने का प्रयास मत करें। जगत् में अनासक्त होकर रहें।

मेरे मन में प्यास पैदा होती है कि मैं त्याग करना सीखूँ। पैसे पदार्थ, मान शान, साँसारिक वैभव सुख का त्याग करुँ। यह साँसारिक सुख जब छोड़ेंगे तब ही आत्मानन्द की प्राप्ति होगी। संग्रह करने में सुख नहीं, सुख है बाँटने में। अपनी खुशी, अपना पैसा दूसरों में बाँटने में ही सच्चा सुख है। यदि कोई भाई या बहिन मुझ से पूछे कि तुम्हारे जीवन का ध्येय क्या है ? मैं उसे उत्तर देता "साँसारिक सुख छोड़कर आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करुँ।"

युवावस्था में मुझे कहा गया कि तुम ने एम. ए. की उपाधि

प्राप्त की है, बड़ा पद प्राप्त कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करो, खूब पैसा कमाओ, ऐश करो। मैंने कहा यह काम मुझसे नहीं होगा। साँसारिक पद,वैभव सुख सब झूठे हैं, मैं तो सत्य की खोज में हूँ। मैं साँसारिक भव सागर में प्रवेश करना नहीं चाहता। प्यारे प्रभु ने पग पग पर मेरी रक्षा की। मैंने अपने मन को समझाया कि तुम एक सेवक बनकर दीन दुखियों, अपाहिजों, पीड़ितों की सेवा करते रहो, कभी कीचड़ में नहीं फंसना, कीचड़ में फंस गया तो फिर उससे निकलना सम्भव नहीं है। आज आप मुझे जन्मदिन पर आशीर्वाद करें कि मैं श्री श्यामसुंदर कृष्ण मुरारी के चरणों में समर्पित हो जाऊँ। उसका ही ध्यान ध्याऊँ, उसका ही गान गाऊँ।

२६ नवम्बर बहिन हरी वासवाणी का जन्मदिन था। दादाजी ने उसे आशीर्वाद देते हुए उपहार दिया। २६ नवम्बर मीरा यूनियन की सभा हूई। प्रो. ईश्वरी जोतवाणी ने मीरा यूनियन की ओर से दादाजी को दस हजार रुपये भेंट किये। दादाजी ने आशीर्वाद देते हूए कहा कि मीरा यूनियन के सभी सदस्यों को धन्यवाद है, जो मीरा के आदर्शों को अपने जीवन में अपना रही हैं। मीरा ने अपना सर्वस्व भगवान श्री कृष्ण के कमल चरणों में समर्पित किया। आपने जो अब मुझे दस हजार रूपये भेंट किये वे दीन दुखियों की सेवा में खर्च किये जायेंगे। ये दीन, दुखी,बीमार अपाहिज बूढ़े, पशु पक्षी सब श्री कृष्ण के रुप हैं। उनकी सेवा प्रभु की पूजा है, यह बात कभी नहीं भूलें।

सिन्ध हैदराबाद में दादाजी ने गीता मंदिर की नीव डाली थी, उनकी इच्छा हुई कि मीरा भूमि में भी गीता मंदिर बनाया जाए। बहिन सुलक्षणी ने इस मंदिर के निर्माण कार्य के लिए ५० हजार रूपये दिये और अन्य भाई बहिनों ने भी इसी निर्माण कार्य के लिए भेटाएं दी। ११ दिसम्बर गीता जयन्ती के पावन दिन गीता मंदिर की नीव डालने के लिए तय किया गया। गीता जयन्ती के उपलक्ष में ६ दिसम्बर से ११ दिसम्बर तक निर्माण स्थल पर हवन यज्ञ किया गया। दादाजी स्वयं आकर यज्ञ में आहुति अर्पित करते थे। वहाँ श्रीमद् भगवद् गीता व अन्य शास्त्रों का पाठ किया गया था। ११ दिसम्बर सुबह १० बजे दादाजी ने गीता मंदिर की नीव डालने के उत्सव में प्रभु से प्रार्थना

की। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि आज के दिन भगवान श्री कृष्णने श्री अर्जुन को मोह के नींद से जाग्रत् करने के लिए, अपना कर्तव्य पालन करने के लिए उसे गीता का ज्ञान देने का श्रीगणेश किया। गीता का ज्ञान केवल श्री अर्जुन के लिए नहीं किन्तु हम सब के लिए है। गीता हमारा अमूल्य व अमर शास्त्र है। उसका न केवल हमें श्रवण व पाठ करना चाहिए किन्तु मनन करना चाहिए। मुझे आशा है कि श्री कृष्ण की कृपा से इस स्थान पर गीता मंदिर का निर्माण होगा। आप इस मंदिर में बैठकर श्रीमद् भगवद् गीता का अध्ययन करेंगे, श्रवण,पठन व मनन करेंगे। विभिन्न विद्वान व संत महात्मा इस मंदिर में आकर गीता ज्ञान का अमृत पिलाएंगे। श्री होतचन्द आडवाणी ने गीता मंदिर की नीव डालते हुए कहा कि पूज्य दादा वासवाणी की इच्छानुसार यहाँ गीता मंदिर का निर्माण होगा और भक्तजन उसका लाभ प्राप्त करेंगे। इस अवसर पर श्री जशन वासवाणी ने कहा कि मैंने भगवद् गीता के श्लोक न केवल बार बार पढ़े हैं, श्रवण किये हैं किन्तु साक्षात् प्यारे दादा साधु वासवाणी के जीवन में गीता की शिक्षा का दर्शन किया है। हम भी अपने जीवन में गीता की शिक्षा अपनाएं जीवन सफल बनाएं।

२४ दिसम्बर श्री गुरू गोविन्दसिंघ का जन्मदिन मीरा भूमि में मनाया गया। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने श्री गुरू गोबिन्दसिंघ महाराज के जीवन के प्रेरणा दायक प्रसंग सुनाए। २५ दिसम्बर संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने श्री ईषा के जन्मदिन उपलक्ष में श्री ईषा की दया भावना का उल्लेख किया।

१ जनवरी सन् १९६१ सुबह मीरा हाल में कई प्रेमी दादाजी से आशीर्वाद लेने के लिए आये। कुछ समय के पश्चात् दादाजी मीरा भूमि के एक वृक्ष के नीचे कुर्सी पर बैठे, वहाँ मीरा स्कूल के छोटे छोटे विद्यार्थी दादाजी का आशीर्वाद लेने के लिए आये। दादाजी ने उन्हें प्यार करते हुए एक एक रुपया खर्ची दी। साँझ को दादाजी ने नूतन वर्ष का संदेश देते हुए कहा कि द्वेष, ईर्ष्या, घृणा के पुराने वस्त्र उतारकर नये वस्त्र पहनें। नए वस्त्र हैं प्रेम के वस्त्र, मैत्री व करूणा के वस्त्र, ये वस्त्र पहन कर आप यदि नाम का स्मरण करेंगे तो उसका

बड़ा

प्रभाव पड़ेगा।

राम नाम का पीओ प्याला,
नए बनों, उसका रंग निराला।

२ जनवरी सुबह को दादाजी टहलकर अपनी कुटिया में आये, कुछ भाई बहिने वहाँ पहले ही बैठे थे। दादाजी ने उसी समय भगवान शंकर की मूर्ति पार्वती मूरजाणी को उपहार दी। तब किसी प्रेमी ने दादाजी से पूछा कि पार्वती ने भगवान शंकर को कैसे प्राप्त किया। दादाजी ने कहा कि पार्वती ने तपस्या द्वारा भगवान शंकर को प्राप्त किया। आप भी तपस्या द्वारा, प्रार्थना द्वारा प्रभु को प्राप्त कर सकते हैं। तपस्या में, प्रार्थना में, नाम स्मरण में बड़ी शक्ति है।

मैं स्कूल में पढ़ता था उन दिनों मेरे पूज्य पिताश्री की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। वे कभी कभी स्वयं चने चबाकर खाते थे, किन्तु हमें खाना खिलाते थे। एक दिन मैंने पूज्य माताजी को मायूस देखकर पूछा, माँ ! आपकी आँखों में आँसू क्यों हैं? तुम्हें क्या चाहिए ? उसने कहा, "बेटा ! तुम्हारे पिताजी को यदि चालीस रूपये तन्खा वाली नौकरी मिल जाये तो हम सुखमय जीवन बिता सकते हैं।" दूसरे दिन प्रभात को उठकर मैंने पूज्य पिताश्री की अच्छी नौकरी के लिए प्रार्थना की। मैं दिन रात प्रभु को यह प्रार्थना करता रहा। आठ दिन के पश्चात् उन्हें ४० रुपये तन्खा वाली नौकरी मिल गई। मेरी माताश्री बहूत ही प्रसन्न हुई। प्रार्थना का मेरा यह प्रत्यक्ष अनुभव है। इस के बाद तो मुझे प्रार्थना की शक्ति के कई अनुभव प्राप्त हुए। प्रेमियो ! आप भी यदि किसी समस्या को दूर करना चाहते हैं। सत्गुरू से प्रभु से नाता जोड़ना चाहते हैं तो प्रार्थना करते रहें, तपस्या करते रहें। मुझे तो कई ऐसे अनुभव हैं। जब मै करीबन १४ वर्ष का था, तब कहता था कि ईश्वर है या नहीं, मेरा विश्वास डगमगाता था। किन्तु बाद में मैने अनुभव किया कि परम शक्ति प्रभु है, वह अनन्त है, असीम है, हम सीमित हैं। मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों विश्वास के साथ प्रभु की भक्ति करें।

८ जनवरी दुपहर को दादाजी की कुटिया में कुछ प्रेमी बैठे थे। दादाजी ने उसी समय ज्ञान गोष्ठी करते हुए कहा कि नैपोलियन की सैना को उनके प्रति सन्मान की भावना थी। युद्ध में यदि सैनक

घायल होते थे, तो नैपोलियन स्वयं एक एक सैनक के पास जाकर उससे मिलते थे, उसका उत्साह बढ़ाते थे, सहानुभूति दिखाते थे, उनकी वीरता के लिए उनका आभार भी मानते थे। वे अपनी सैना के साथ स्वयं जाकर हाथ भी मिलाते थे। यदि नैपोलियन कभी थके रहते थे, तो वे कहते थे कि मेरे सिपाहियों ने मेरे लिए इतना किया है, मैं उनके लिए क्या इतना भी नहीं करुँ। वे सैना को प्यार करते थे। मेरे भाइयो व बहिनों ! मैं भी अब थका हूँ। आप भी मेरे लिए इतना कुछ करते हैं। अपने तन मन धन से सेवा करते हैं, क्या मैं आपके लिए कुछ नहीं करुँ ! कम से कम प्रेम से आपके साथ मिलूँ आपसे बाते करुँ।

१३ जनवरी लाल लोई के दिन रात को मीरा भूमि में लाल लोई का उत्सव मनाया गया। दादाजी ने आग प्रज्वलित की। दादाजी अग्नि की ओर देखते रहे। उसी समय उन्होंने ज्ञान गोष्ठी करते हूए कहा कि जैसे अग्नि सब वस्तुओं को भस्म कर देती है, ज्ञान रुपी अग्नि भी विकारों को भस्म करती है। हम भी अपने मन में ज्ञान रुपी अग्नि प्रज्वलित कर उस में अपने दुर्गुणों रुपी लकड़ियाँ डालें तो वे दुर्गुण भस्म हो जायेंगे।

१४ जनवरी मकर संक्रांति के दिन सुबह को दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की और प्रेमियो को अपने हाथों से तिल गुढ़ का प्रसाद देते आशीर्वाद दिया।

२ फरवरी सुबह को दादाजी मीरा भूमि में आमली वृक्ष के नीचे कुर्सी पर बैठे थे, उसी समय प्रसिद्ध चलचित्र पात्र श्री प्रेमनाथ दादाजी का दर्शन करने के लिए वहाँ आया। वह बड़ी श्रद्धा के साथ दादाजी से मिला। दादाजी ने भी उसे स्नेह व आशीर्वाद दिया। दादाजी ने उसे कहा कि कल संध्या को मीरा हाल में आकर भजन सुनाओ। ३ फरवरी संध्याकालीन सत्संग में प्रेमनाथ आया। उसी समय दादाजी ने कहा कि प्रेम से प्रभु को पुकारें, उसके गुण गीत गाएं। हम सब परमात्मा के दास हैं और प्रभु हमारा मालिक है। मेरे प्यारे अपने मालिक के उपकार कभी नहीं भूलें,उसके बार बार आभार मानें। मुझे प्रसन्नता है कि आज हमारे प्यारे प्रेमनाथ यहाँ आए हैं। वे प्रभु की महिमा का भजन गाकर अपने नाम को जीवन में सार्थक करेंगे।

दादाजी के वचन सुनकर श्री प्रेमनाथ की आँखों में आँसू आ गये। उसने भीगी आँखों से दादाजी के आभार मानते हुए भजन गाये। १३ फरवरी शिवरात्रि के दिन संध्या को दादाजी ने प्रवचन करते हूए कहा कि आज महाशिवरात्रि का पावन दिन है। भगवान शंकर शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं। उसे प्रसन्न करने के लिए आप 'ओम नमो शिवाय:' का जाप करें। इस मंत्र का उचारण करने से आपको शक्ति का अनुभव होगा, आपकी शुभ मंगल कामनाएं पूर्ण होंगी। शिव शक्ति का रुप है। भस्मासुर ने भगवान शंकर की भक्ति करके उनसे वरदान मांगा, फिर वह दुष्ट भगवान शंकर का ही दमन करने का प्रयास करता है। भगवान ने मोहनी रूप धारण कर उसे उसका ही हाथ उसके माथे पर रखवाकर उसे भस्म कर दिया। दुष्ट लोग शक्ति का दुरूपयोग करते हैं। शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए।

५ मार्च रविवार सुबह १० बजे मीरा भूमि में डॉ. कर्नल छबलाणी ने मंघाराम खेमलाणी दवाखाने की नई जगाह बनाने के लिए उसकी नीव डाली। उसी समय दादा वासवाणी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि प्रभु व संतों की कृपा से यहाँ शीघ्र ही दवाखाने के लिए नई जगाह बन जायेगी। इस दवाखाने से कई बीमार लाभ उठा रहे हैं। यहाँ सहानुभूति व स्नेह के साथ बीमारों की सेवा की जाती है। गरीबों को दवाईयाँ भी मुफ्त दी जाती हैं। यह दया व दवा का द्वार है, अस्वस्थ आयें स्वस्थ हो जायें, मासूस मुस्कराते जायें।

१८ मार्च चेटी चाँद के पावन दिन सुबह को दादाजी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने उपदेश देते हूए कहा कि आज के दिन सिन्ध में वरुण देवता ने श्री अमर उडेरोलाल का अवतार धारण कर हिन्दू धर्म की सुरक्षा की। उन्होंने अत्याचारियों का दमन कर हताश, अशांत सिन्धी हिन्दुओं को शान्ति व प्रसन्नता प्रदान की। जब जब अत्याचार व आतंक बढ़ जाता है तब प्रभु किसी न किसी रुप में अवतार धारण कर धर्म की रक्षा करता है। सिन्धी समाज बड़ी श्रद्धा के साथ श्री अमर उडेरोलाल की उपासना करता है। कई सिन्धी भाई बहिनें चालीस दिन व्रत धारण कर नियमित रुप से श्री उडेरोलाल की पूजा उपासना करते हैं। हिन्दु तिथि के अनुसार

इस दिन नये वर्ष का प्रारंभ होता है। आप भी नये बनने का प्रयास करें और एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार करें, क्रोध व विरोध का त्याग कर एक व नेक बनें।

१ अप्रैल राम नवमी के पवित्र दिन सुबह को मीरा हाल में यज्ञ का आयोजन किया गया। दादाजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की और तत्पश्चात् उन्होंने दरिद्रनारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के पावन दिन प्रभु श्रीराम ने राजा दशरथ के घर अयोध्या में जन्म लिया। उन्होंने दुष्टों का दमन करने के लिए और संसार को सत्य व मर्यादा का मार्ग दिखाने के लिए अवतार धारण किया। संत कवि तुलसीदास प्रभु श्री राम के जन्म समय और उनकी छवि का वर्णन करते हुए कहते हैं -:

भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी।
हर्षित महतारी गुनि मनहारी अद्भुत रुप विचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयूघ भुजचारी
भूषन बन माला नचन विसाला, शोभा सिन्धु खरारी।।

आज अनन्त कोटि ब्रह्मांड नायक प्रभु श्रीराम का जन्म दिन यहाँ मीरा भूमि में उत्साह के साथ मनाया गया। हमें उनके आदर्शों को अपनाकर अपना जीवन सफल करना चाहिए। हम रामनवमी का दिन तो मनाते हैं, श्री राम के गुण तो गाते हैं, किन्तु उनके गुणों को ग्रहण नहीं करते। वे मर्यादा पुरूषोत्तम थे, किन्तु आजकल अधिकतर लोग मर्यादाओं का उलंघन करते हैं। आप ऐसा नहीं करें। आज मेरे अग्रज श्री पहिलाजराय वासवाणी की पुण्य तिथि है। वे राम भक्त थे, शिक्षाशास्त्री थे, समाज सेवी व सुधारक थे। उनके उपकार मैं कभी नहीं भूल सकता।

१९ अप्रैल महर्षि आचार्य कर्वे का जन्मदिन मीरा स्कूल में मनाया गया। श्री कर्वेजी भी वहाँ पधारे। दादा वासवाणी एवं महर्षि कर्वे बड़े स्नेह के साथ आपस में मिले। उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया। दो महापुरूषों का मिलन एक अनोखा दृश्य था। दादाजी ने उसी समय कहा कि मेरे प्यारे विद्यार्थियो व अध्यापक, अध्यापिकाओ! आज हमारा सौभाग्य है कि महर्षि कर्वे यहाँ पधारे हैं और उनका

जन्मदिन हम यहाँ मना रहे हैं। आपको शायद पता नहीं कि इनके लिए मेरे मन में कितना आदर है। वे प्राचीन ऋषियों के प्रतीक हैं। उन्होंने विद्या के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया है। वे क्रान्तिकारी, सुधार वादी शिक्षा शास्त्री हैं। उन्हों ने बालिकाओं व बहिनों के उत्थान के लिए विशेष विद्या मंदिरों की स्थापना की है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वे महर्षि कर्वे को दीर्घआयु और स्वास्थ्य प्रदान करें जैसे वे विद्या के क्षेत्र में अधिक योगदान दे सकें।

१ जून दादाजी ने प्रेमियों को सम्बोधित करते हूए कहा कि क्या आपने कभी यह विचार किया है कि इस योनि में आपने ऐसी सच्ची पूंजी संग्रह की है, जो तुम्हें वर्तमान व भविष्यकाल में काम में आये? एक व्यापारी अपने साथ धन लेकर किसी दूसरे गाँव में जा रहा था। रास्ते में कुछ डाकुओंने उसे पकड़ कर उसकी आँखें कपड़े की पट्टी से बांधकर उसका सारा धन लूट कर उसे जंगल में फैंक दिया। कुछ समय के लिए वह बेहोश पड़ा था। कुछ समय के पश्चात् कोई सजन पुरूष वहाँ से गुज़रा तो उसने उस धनवान व्यक्ति को देखा। उसने पहले तो उसके नेत्रों पर बांधी हई पट्टी उतारी फिर उसे पानी पिलाया। उस व्यापारी ने अपनी आपबीती उस सजन को सुनाई। प्रेमियो! यह एक दृष्टांत है, विकारों रुपी चोरों ने आपके नेत्रों पर अज्ञान की पट्टी बांध ली है और आप अपने श्वासों रुपी पूंजी खो रहे हैं। आप ये अमूल्य श्वास नाम रूपी पूंजी संग्रह करने में सफल करें। इस लोक और परलोक में आपको नाम की पूंजी ही काम आयेगी। सजन पुरूष जिसने व्यापारी की आँखों की पट्टी उतार ली वह सत्गुरू का प्रतीक है। पूर्ण सत्गुरू अज्ञान की पट्टी उतार कर हमें ज्ञान का प्रकाश देता है। तब हमें सत् व असत् का ज्ञान होता है। एक ब्रह्म सत् है। उसके साथ स्नेह सम्बंध जोड़ें।

४ जून मीरा स्कूल का निर्माण दिवस मनाया गया। प्रभात को मीरा सत्संग हाल में नाम कीर्तन के पश्चात् हवन यज्ञ हुआ। दादाजी ने आशीर्वाद वचन कहे। सुबह को दस बजे दादाजी ने विद्यार्थियों व अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगवान श्री कृष्ण श्री अर्जुन से कहते हैं कि श्रद्धावान ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जिस

स्कूल के विद्यार्थियों व अध्यापकों में श्रद्धा नहीं उसी स्कूल में सच्ची विद्या की ज्योति नहीं चमकेगी। कई वर्ष पूर्व मैं जर्मनी में था, वहाँ एक महान विद्वान प्रो हारिनिक रहते थे। वहाँ के राजा भी उन्हें सन्मान देते थे। एक दिन मैं उनका व्याख्यान सुनने के लिए गया। हाल में ५०० युवक बैठे थे। वे बड़ी श्रद्धा के साथ उनका व्याख्यान सुन रहे थे। सब ही श्रोता शांत व एकाग्र चित्त होकर श्रवण कर रहे थे। व्याख्यान समाप्त होने के पश्चात् श्रोताओं ने तालियाँ बजाई। श्रोताओं को प्रो. हारिनिक में इतनी श्रद्धा देखकर में बहुत ही प्रभावित हुआ। विद्यार्थियों में अपने आचार्यो के प्रति पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए तब वे लाभ प्राप्त कर सकेंगे। मेरे प्यारे विद्यार्थियो, आप अपने गुरू जनों में पूर्ण श्रद्धा रखकर अभ्यास करें और मीरा विद्या हलचल के आदर्शों के अनुसार चलें।

१० जून से वर्षा ऋतु आरंभ हुई। किसी प्रेमी ने दादाजी से विनय की कि वर्षा के सम्बंध में हमें संदेश दें। दादाजी ने कहा कि यह वर्षा जो घनघोर घटाएं करती हैं, वह हमारा जीवन है। वर्षा सब की प्यास पूरी करती, खेतों को आबाद करती है। जल जीवन है। प्रकृति ने हमें सब सुविधाएं मुफ्त दी हैं, किन्तु हम उनका पूरा उपयोग नहीं करते हैं। इसी वर्षाऋतु में लाखों गरीबों की झोपड़ियों में वर्षा का पानी आता है, वे बिचारे भीगते रहते हैं, उनके घर का सामान अस्त व्यस्त व नष्ठ हो जाता है। दूसरी वर्षा है, आप ऐसे गरीबों की तत्काल सेवा करें। सेवा की वर्षा तो सदैव हो सकती है। प्रकृति की वर्षा तो केवल चार मास होती है। आप बारह मास सेवा, स्नेह सहानुभूति की वर्षा कर सकते हैं।

तीसरी वर्षा है जो आपके अन्त:करण को उज्ज्वल करती है, वह वर्षा आपके नेत्रों से बरसती है। प्रभु के प्रेम में, अपने गुरूदेव के स्नेह में जो आप आँखों रूपी बादलों मे आँसू रूपी बरखा बरसाते हैं वह भी अमूल्य वर्षा है। गोपियों ने श्री कृष्ण के विरह में कितने न आँसू बहाए। आप भी ऐसी बरखा बरसाएं। एसी बरखा बरखाने से मन निर्मल व नर्म हो जायेगा, निर्मल मन के खेत में नाम के बीज बोएं तो जीवन सफल हो जायेगा, प्रभु स्वयं आकर तुम्हें गले लगायेंगे।

मीरा ने कहा :-

निश दिन बरसत नैयन हमारे ।

भक्त के नेत्रों से सदैव आसुओं की धारा प्रवाहित होती है। प्रेम के आँसू, पश्चानुत्ताप के आँसू बहाएं, एसी वर्षा बरसाएं। १२ जुलाई १९६१ में भारी वर्षा होने के कारण खडकवासला डैम भर गई, द्वार खोले गये, तब पुणे में बाढ़ आ गई। पुणे में कई झोपड़ियाँ, कुछ दुकान व मकान गिर पड़े। हजारों लोगों का जीवन अस्तव्यस्त हो गया। दादा साधु वासवाणी ने प्यारे श्री जशन, प्यारे श्री गंगाराम से कहा कि शीघ्र ही कुछ सेवक - सेविकाओं को लेकर बाढ़ पीड़ितो की जाकर सेवा करें। समय की सेवा का अपना महत्व होता है। दादाजी की आज्ञा श्रोधार्य कर भाऊ जशन, श्री गंगाराम एवं कुछ भाई बहिने बाढ़ ग्रस्त स्थलों पर गये। उन्होंने तत्काल ही बाढ़ पीड़ितो के खान पान की व्यवस्था की। कुछ बाढ़ पीड़ितो को मीरा स्कूल में आश्रय दिया गया। दादाजी पर-पीड़ा को स्व-पीड़ा समझकर उसे दूर करने का प्रयास करते थे। दादाजी स्वयं भी मीरा स्कूल में ठहरे हुए बाढ़ पीड़ितों की देख भाल करने आते थे, उन्हें स्नेह व सहानुभूति देते थे। २४ जुलाई गुरू पूर्णिमा के दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ हुआ। दादा वासवाणी ने उस में आहुति अर्पित की। कई प्रेमी दादाजी का आशीर्वाद लेने के लिए आये थे। दादाजी ने मुस्कराते मुस्कराते उन्हें आशीर्वाद दिया। साँझ को दादाजी ने गुरू महिमा के सम्बंध में प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरू ज्ञान का प्रकाश देकर अज्ञान अंधेरा दूर करता है।

तिमर गयो रवि देखके, मोह गयो गुरू ज्ञान।
कियो करायो सब गयो, जब आयो अभिमान॥

गुरू व्यवहार एवं परमार्थ के लिए पथ प्रदर्शन करता है। सब ही संतो ने गुरू की बड़ी महिमा गाई है। सिन्ध के संत कवि दलिपत गुरू को ब्रह्म रूप समझकर कहते हैं -:

गुरू गोविन्द एक हैं सोहं साक्षी देव ।
दलिपत गुरू काटा भ्रम कूँ जय जय गुरूदेव॥

गुरू की स्तुति प्रभु की स्तुति है। यदि गुरू व परमात्मा में

आपकी पूर्ण श्रद्धा व विश्वास है तो आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

२ अगस्त साँझ को मीरा सत्संग हाल में साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज मेरे प्यारे, आप सब के प्यारे जशन का जन्मदिन है। वह बड़ा विद्वान है किन्तु कितना न विनम्र है ! उसने सारा जीवन समर्पित किया। वह मेरे आँसूओं का बालक है। उसके मन में दीन दखियों, पशु पक्षियों के प्रति स्नेह व सहानुभूति की भावना भरी हूई है। वह किसी अपाहिज, दुखी दरिद्र को देखता है तो उसके नेत्रों से अश्रु-धारा प्रवाहित होती है। आज हम सब मिलकर जन्मदिन उपलक्ष में उसे बधाईयाँ दें और आशीर्वाद करें।

२६ अगस्त रक्षाबंधन के पावन दिन सुबह को दस बजे दादाजी को पालकी द्वारा नीचे लाया गया। दादाजी आमली के वृक्ष के नीचे बैठे थे। कई प्रेमियों ने दादाजी को राखियाँ बाँधी, दादाजी मुस्कराते मुस्कराते हुए सब को खर्ची देते गये। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आज कई प्रेमियों ने मुझे राखियाॅ बांधी। राखी प्रेम का प्रतीक है, रक्षा का प्रतीक है। आप प्यारे प्रभु से स्नेह सम्बंध जोड़ें तो वह आपकी सुरक्षा करेगा।

३ सितम्बर को जन्माष्टमी का पवित्र दिन था। मीरा भूमि में जन्माष्टमी उत्सव १ सितम्बर से मनाया गया। १ सितम्बर मीरा स्कूल के विद्यार्थियों ने श्री कृष्ण लीला मंच पर प्रस्तुत की। दादाजी ने बालिकाओं को आशीर्वाद देते हुए धन्यवाद दिया। २ सितम्बर दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की।

३ सितम्बर सुबह को मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ हुआ। दादाजी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की। बहिनों ने श्री कृष्ण भक्ति के गीतों की सरिता प्रवाहित की। संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने भगवान श्री कृष्ण की अद्‌भुत लीलाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री कृष्ण का अर्थ है, जो अकर्षित करे। रसेश्वर श्री कृष्ण हमें अपने प्रेम के आकर्षण से आकर्षित कर रहे हैं, किन्तु हम मांया के मद में उनकी मुरली की तान नहीं सुनते। हम सारा समय साँसारिक आकर्षण में फंसे हुए हैं। वे हमें बार बार बुला रहे हैं -:

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

हे अर्जुन ! तुम सब ही घर्मों व मार्गों का त्याग कर मेरी शरण में आजाओ तो तुम्हें समस्त पापों से विमुक्त कर दूंगा। तुम भयभीत न हो !

भक्त जब अपनी बागडोर प्रभु को सौंप देता है तो प्रभु उसकी सुरक्षा करता है, उसकी आवश्यकताओं को भी परमात्मा स्वयं पूरा करता है। हम भी भगवान श्री कृष्ण की श्रद्धा से शरण लें तो हमारा कल्याण होगा।

दादा साधु वासवाणी के साहित्य एवं प्रवचनों से न केवल भारतीय किन्तु विदेशी लोग भी प्रभावित रहे। लंडन में कुमारी जून सैम्यूल रहती थी, वह दादाजी के पुस्तक बड़ी श्रद्धा के साथ पढ़ती थी। वह दादाजी के कार्य एवं विचार धारा से अत्यंन्त प्रभावित थी, उसकी मृत्यु हो गई। जीवन लीला समाप्त होने के पूर्व उसने पूज्य पिताजी से कहा कि उसकी ओर से पाँच सौ पॉऊंड दादा वासवाणी को दीन दुखियों की सेवा के लिए भेज देना। उसकी अंतिम इच्छा के अनुसार उसके पिताश्री ने दादाजी को शोक समाचार व वह माया भेज दी। दादाजी ने उसे श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उसकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

२ अक्तूबर महात्मा गांधी की जयन्ती थी। दादाजी ने साँझ को प्रवचन करते हूए कहा कि महात्मा गांधी सत्य व अहिंसा के उपासक थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में जो कुछ लिखा है सत्य लिखा है। सत्य बोलने व सत्य लिखने के लिए भी साहस चाहिए। सत्य बोलने से आध्यात्मिक शंक्ति बढ़ती है, प्रभु प्रसन्न होते हैं , किन्तु आजकल लोग छोटी मोटी बात के लिए झूठ बोलते हैं। हमारा सिद्धांत है, "सत्यमेव जयते" किन्तु हम इस सिद्धांत को भूल गये हैं। गांधीजी की मूल शिक्षा को भारतवासी भूल गये हैं। यदि सरकार व भारतीय जनता उनके सिद्धांतों को अपनाए तो भारत का रूप रंग ही बदल जाये।

४ अक्तूबर संत फ्रांसिज़ की पावन स्मृति का दिन था। साँझ

को दादाजी ने प्रवचन करते हुए संत फ्रासिज के गुणों ा वर्णन किया। उन्होंने कहा कि संत फ्रासिंज पशु नक्षियों को बहुत ही प्यार करते थे। वे दया के पअतीक थे। पक्षी भी उसे इतना प्यार करते थे कि उसके कांधों पर आकर बैठते थे। पशु पक्षी भी प्रभु की संतान है, न्तिु लोग उन्हें कटठवाकर उनका मांस भक्षण करते है। निरीह पशु-नक्षियों के साथ कब तक अत्याचा होता रहेगा। मेरे भाइयो व बहिनों! आप भी संत फ्रांसिज की गाँति अपने जीवन में दया व प्रेम की ज्याति जगाएं जीवन सफल बनाएं।

।१० अक्तूबर विजय दशमी के दिन साँझ को दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज के दिन प्रभु श्रीराम ने रावण पर विजय प्राप्त की। उसके उपलक्ष में यह दिन खुशी के उत्सव रूप में मनाया जाता है। इसी दिन पांडवो ने अज्ञातवास पूरा करके वृक्ष पर रखे हुए अपने अस्त्र-शस्त्र उतार कर उनकी पूजा की थी। कहा जाता है कि राजा रघुने भी इसी दिन इन्द्र को पराजित कर पहुत ही स्वर्ण प्राप्त कर वह स्वर्णदान कर दिया। यह त्यौहार सारे देश में दशहरा उत्साह के साथ मनाया जाता है। ससी दिन कई लोग शुभ कार्यो का शुभारंभ करते है। यह दिन वीर पूजा के रूप में भी मनाया जाता है।

मेरे भाइयो व बहिनों हमारे मन में विकारों रूपी दुश्मन बैठे हैं, हम अपनी कर्म इन्द्रियों व ज्ञान इन्द्रियों पर नियन्त्रण करें तो मन पर हमारी विजय होगी।

१६ अक्तूबर कल्याण नारी शाला की संचालिका बहिन पार्वती मूरजाणी ने संसार की यात्रा समाप्त की। उसके मन में दादाजी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। दादाजी ने उसके गुणों का वर्णन करते हुए भावमीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

२७ अक्तूबर दिवाली के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ हुआ। बहिन सती मीरचन्दा?णी, बहिन रत्ना वासवाणी एवं ÷य बहिनों ने प्रभु श्री राम की महिमा के गीत गाये। दादाजी प्रेम से श्रवण कर रहे थे। उन्होंने गरीबों को मिठाई के पाकेट व खर्ची दी। संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु श्रीराम आसुरी शक्तियों का विनाश कर के चौदह वर्ष के पश्चात्

बन में रहकर आज के दिन अपने जन्मस्थल अयोध्या में पधारे। उनके आगमन के उपलक्ष में घर घर में दीप जगमगाये गये, खुशियाँ मनाई गई। हमारे मन में भी जो आसुरी प्रवृति है, हम उसका दमन करें, श्रद्धा से प्रभु श्रीराम की शरण लें, शबरी की भाँति भगवान श्रीराम के प्रति मन में प्यास पैदा करें तो किसी न किसी दिन हमारे मन मंदिर में भी प्रभु श्रीराम पधारेंगे।

१७ नवम्बर सुबह को दस बजे मीरा भूमि में मीरा हाइस्कूल का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। भारत के उपराष्ट्रपति डाँ. राधाकृष्णन इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे। पहले श्री गंगाराम साजनदास ने मीरा विद्या हलचल पर प्रकाश डाला और भाई जशन वासवाणी ने उपराष्ट्रपति का स्वागत किया । इस उत्सव में दादा साधु वासवाणी ने मुख्य अतिथि डाँ. राधाकृष्णन् के सम्बंध में कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि डाँ. राधाकृष्णन् यहाँ पधारे हैं वे साधारण व्यक्ति या बड़े राजनीतिज्ञ नहीं हैं । वे तो भारत के सच्चे सपूतों व महापुरूषों में से एक हैं। उन्होंने विदेश के विभिन्न देशों में भारत के ऋषिमुनियों का संदेश देकर विदेशियों को भारत की प्राचीन संस्कृति व सभ्यता का संदेश देकर प्रभावित किया है। वे महान दार्शनिक व विद्वान हैं। आज यहाँ मीरा विद्यालय का वार्षिक उत्सव मना रहे हैं। सच्ची विद्या हमें आध्यात्मिक उन्नति करने का मार्ग बताती है, Cultivate The Soul. सच्ची विद्या का यही संदेश है, केवल पुस्तकीय ज्ञान आवश्यक नहीं।

डाँ राधाकृष्णन् ने व्याख्यान करते हूए कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि आज मैं यहाँ एक तीर्थवासी के रूप में पुणे में आया हूँ। यहाँ दो महापुरूषों श्री साधु टी. एल. वासवाणी एवं श्री जशन वासवाणी को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। सामने बैनर पर जो वाक्य लिखा गया है, उसने मुझे प्रभावित किया है।

Education is not a Withered parchment,
but living Water of Spirit !

अर्थात् सच्ची विद्या पुस्तकों व के वचनों में समाहित नहीं है,किन्तु सच्ची विद्या आध्यात्मिक स्रोत का प्रवाह है,आत्मज्ञान की

अनुभूति है। मीरा स्कूल में ऐसी शिक्षा देने का प्रयास किया जाता है, विद्यार्थियों में प्रार्थना, पवित्रता, सत्य स्नेह व सहानुभूति, सादगी, संयम के बीज बोए जाते हैं। नये भारत के निर्माण के लिए हमें निर्भय होकर सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए।

भारतवासी निर्भय होंगे तो सत्य के मार्ग पर चलेंगे। सत्यमेव जयते। सब ही प्राणियों में एक आत्मा का प्रकाश है, इस लिए किसी के प्रति तिरस्कार की भावना नहीं रखनी चाहिए, आप प्रेम का वातावरण पैदा करें। दूसरा आदर्श दया है, जिसके मन में दया भावना है, वह किसी का बुरा नहीं करेगा। वह सब ही प्राणियों को प्यार करेगा। पशु-पक्षियों में भी एक दूसरे के प्रति दया भावना होती है, हम तो मानव हैं। तीसरा आदर्श है अनासक्त। जब हमारे मन में किसी वस्तु पथार्थ या सम्बंधी के प्रति आसक्ति है तब हम सत्य की राह से गिर पड़ते हैं, स्वार्थ व लोभ के वश हम आदर्शों से गिर पड़ते हैं। अपना धर्म समझकर राजा जनक व अशोक की भाँति निष्काम कर्म करें।

२२ नवम्बर श्री गुरु नानकदेवजी महाराज का जन्म दिन मीरा भूमि में मनाया गया। उसी दिन दादाजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था, इस लिए वे सत्संग हाल में नहीं आ सके। उन्होंने संदेश भेजा कि आप भी गुरू नानकदेव महाराज की शिक्षाओं को नहीं भूलें, उनको अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें, सांसारिक बातों को भूलकर नाम स्मरण करें। नाम स्मरण उत्तम कर्म है। एकाग्रचित्त होकर प्रभु को याद करें।

२५ नवम्बर दादाजी के जन्मदिन सुबह दस बजे दादाजी को पालकी में नीचे लाया गया। कई प्रेमियों ने उन्हें जन्मदिन बधाइयाँ दी और केक कटवाए। साँझ को मीरा सत्संग हाल में दादाजी पधारे। नाम कीर्तन के पश्चात् श्री गंगाराम साजनदास, श्री होतचन्द आडवाणी ने दादाजी के योगदान का उल्लेख किया। डाँ. हीरानन्द हाथीरामाणी ने जन्मदिन के सम्बंध में दादाजी को मिली हुई माया भेंट की। दादा जशन ने दादा साधु वासवाणी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वे ब्रह्म ज्ञानी हैं, महान विद्वान व शिक्षा शास्त्री हैं, उच्च

कोटि के संत कवि हैं, बड़े दार्शनिक हैं, हमारे आध्यात्मिक मार्गदर्शक हैं, दीन दुखियों के मसीहा हैं, किन्तु वे स्वयं को सब का सेवक समझते हैं। श्री गुरू नानकदेव महाराज की भाँति वे विनम्रता का रुप हैं, दया व प्रेम की तस्वीर हैं। उनके निकट बैठने में आनंद आता है, उनके दर्शन से मन प्रफुलित होता है। संत कबीर ने कहा है -:

संत बड़े परमार्थी शीतल जाँके अंग।
तपत बुझावन और की देकर अपना संग ।

दादाजी परोपकारी पुण्य आत्मा हैं। उनका जीवन वृक्ष की भाँति हैं, वृक्ष हमें फल देता है, छाया देता है, यदि कोई उसे पत्थर लगाता है, फिर भी वह उसे फल देता है। उनके साथ एक पत्रकार ने गलत व्यवहार किया, फिर भी उन्होंने उसका तिरस्कार नहीं किया। एक दिन उन्हें समाचार मिला कि अमुक पत्रकार जिसने आपकी निंदा लिखी थी, वह बहुत बीमार है, उसे सहायता की आवश्यकता है। दादाजी स्वयं उसके घर में जाते हैं, उसे स्नेह व सहायता देते हैं, वह पत्रकार लज्जित होता है, अपनी की हुई भूल के लिए दादाजी से क्षमा याचना करता है। दादाजी के जीवन में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं। वे वृक्ष की भाँति कुछ न कुछ देते रहते हैं। मेरा सौभाग्य है कि मुझे बचपन से उनका आशीर्वाद व प्यार प्राप्त हुआ। वे मेरे तो सर्वस्व हैं। हम सब का सौभाग्य है कि हमें इनके दर्शन व प्रवचन श्रवण करने का सुवसर मिलता है।

दादा साधु वासवाणी ने तत्काल ही माया की भेंट ब्रदरहुड संस्था को सेवा कार्यों के लिए लौटा दी। उन्होंने प्रवचन करते हूए कहा कि जीवन की सार्थकता देने में है. लेने में नहीं है। हम क्या लें और क्या दें? संत तुलसीदास उसके सम्बंध में कहते हैं -:

तुलसी इस संसार में कर लीजे दो काम।
देने को टुकड़ा भला, लेने को हरिनाम॥

रसना से नाम का जाप करते रहें, और हाथों से दीन दुखियों को कुछ न कुछ सहायता देते रहें। आपके पास जो कुछ भी माया व पदार्थ हैं, वे प्रभु की धरोहर है, उसका सदुपयोग करें। किसी भूखे को खिलाएं, प्यासी को पानी पिलाएं, वस्त्रहीन को वस्त्र दें, बीमार को

दवाइयाँ दें। आपके पास यदि कुछ भी नहीं है तो सबसे मधुर बोलें,दुखी को सहानुभूति दिखाएं, प्यार करें, किसी का भी तिरस्कार नहीं करें। अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में सफल करें। किसी न किसी संत से स्नेह सम्बंध जोड़ें। गुरू महाराज फरमाते हैं -:

स्मर स्मर पूर्ण प्रभु काजे भए रासि।
करतारिपुर कर्ता बसे, है संतन के पासि।।

प्रति वर्ष दादाजी के जन्मदिन सम्बंध में २४ नवम्बर मीरा स्कूल के बालक व बालिकाएँ उनसे मिलते हैं, उसी दिन वे स्वस्थ नहीं थे, इस लिए यह कार्यक्रम ४ दिसम्बर को रखा गया। ४ दिसम्बर सुबह दस बजे दादाजी मीरा सत्संग हाल में पधारे। मीरा स्कूल के विद्यार्थियों ने उन्हें जन्म दिन बधाइयां दी। विद्यार्थियों व अध्यापकों ने दादाजी से जन्म दिन का केक कटवाया। कुछ विद्यार्थियों ने दादाजी से अनुरोध किया कि हमें दूर दूर से आपका दर्शन व आशीर्वाद मिलता है, आप हमें प्यार व दर्शन से वंचित नहीं रखें। दादाजी ने सब को हाथ जोड़ते, मधुर मुस्कान से आशीर्वाद देते हुए कहा कि मेरे प्यारे बालक-बालिकाएं, अध्यापक गण ! मैं आप से दूर नहीं, मैं सदैव आपके साथ हूँ। आप मीरा विद्या हलचल के अनुसार आगे बढ़ते रहें तो उन्नति की शिखर पर पहुँच जायेंगे। प्रतिदिन परमात्मा को प्रार्थना करते रहें और प्रतिदिन कोई न कोई सेवा का छोटा कार्य करें। एक दूसरे के सहायक बनें।

७ दिसम्बर राजर्षि दयाराम गिदूमल की पुण्यतिथि थी। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने राजर्षि दयाराम गिदूमल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक, विद्वान, निष्काम समाज सेवक, साहित्यकार व सत्पुरूष थे। वे प्रथम सिन्धी सजन थे जिन्होंने अंग्रेजों के शासन काल में अपनी शैक्षणिक योग्यता के कारण न्यायाधीश का बड़ा पद प्राप्त किया, किन्तु वे त्याग व तपस्या की तसवीर थे। वे अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा दीनदुखियों की सेवा में खर्च करते थे। घर गृहस्थ में रहते हुए भी उन्होंने आध्यात्मिक उन्नति की। उनके त्यागमय जीवन के कारण उन्हें राजर्षि के नाम से सम्बोधित किया गया। मेरे प्यारे भाइयो व

बहिनों! आप भी उनके जीवन की फुलवाड़ी से कोई न कोई पुष्प लेकर जीवन को सुरभित करें।

१२ दिसम्बर गीता जयन्ती के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में बहिन ईश्वरी जोतवाणी ने श्रीमद् भगवद् गीता के बारहवें अध्याय का सस्वर उच्चारण किया और हवन यज्ञ हुआ। दादा वासवाणी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आज गीता जयन्ती है। भगवान श्री कृष्ण ने आज के दिन ही श्री अर्जुन को गीता का प्रथम अध्याय सुनाकर गीता ज्ञान का श्री गणेश किया। भगवद् गीता न केवल आध्यात्मिक उन्नति के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है; किन्तु व्यवहार, स्वभाव में परिवर्तन लाने के लिए भी प्रेरित करती है। हम काम क्रोध, लोभ आदि विकारों में अपनी कितनी न शक्ति खो देते हैं! इस के सम्बंध भगवान श्री कृष्ण हमें जाग्रत् करते हूए कहते हैं -:

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारे नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मोदेतत्त्रयं त्येजत्

मेरे भाइयो व बहिनों! काम, क्रोध लोभ ये तीनों नरक के द्वार हैं। आप यदि स्वर्ग में जाना चाहते हैं, आध्यात्मिक आनंद की उपलब्धि करना चाहते हैं तो इन विकारों का परित्याग करें। आप यदि गीता का उपर्युक्त श्लोक अपने जीवन में कार्यान्वित करें तो आपका जीवन सुखमय हो जाये।

२५ दिसम्बर श्री ईषा के जन्मदिन संध्याकालीन सत्संग में दादाजी ने श्री ईषा की दया व क्षमा भावना का उल्लेख करते हूए कहा कि अधिकतर उनके अनुयाई उनके सिद्धांतों को भूल गये हैं। श्री ईषा की सच्ची स्मृति है उनके गुणों को अपनाना। आज सारे विश्व को दया व मैत्री की आवश्यकता है।

३१ दिसम्बर वर्ष के अंतिम दिन दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज रात को आप एकांत में बैठकर आत्म निरीक्षण करें। इस वर्ष आप से जो कुछ भूलें हो गई हैं, उनके लिए प्रभु से क्षमा याचना करते पश्चानुत्ताप के आँसू बहाएँ तो आपका अंतःकरण शुद्ध होगा। अपनी भूलें सुधारने से ही आप प्रगति कर सकते हैं।

१ जनवरी १९६२ नये वर्ष के प्रथम दिन दादा वासवाणी ने नम्र संदेश लिखकर दिया और प्यारे श्री जशन वासवाणी ने यह पढ़कर सुनाया।

नूतन वर्ष आया, परन्तु आप नये नहीं हुए। कब तक आप विकारों के वस्त्र पहनते रहेंगे ! द्वेष, ईषा, घृणा के वस्त्र उतार कर स्नेह, सहानुभूति सद्भावना व दया के वस्त्र पहनें। आप एक दूसरे के सहायक बनें। केवल अपने लिए मत जीएं, दूसरों को भी जीने में सहयोग व सहायता करें। केवल स्वार्थ वश जीना, यह पशु प्रवृत्ति है। संतों के संग में आप नये बन सकते हैं। नाम का रंग भी संतों के संग में चढ़ेगा। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज भी फरमाते हैं -:

संत जना मिल हरिजस गाओ,
कोट जन्म के दूख गंवाओ।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! आप अपने श्वासों का मूल्य नहीं जानते ! नाम स्मरण व सत्कर्मों में अपना जीवन सफल करें।

दादाजी ने सत्संग में आये हुए प्रेमियों को नव वर्ष के सम्बंध में शुभ मंगल कामनाएँ और आशीर्वाद दिया। दुपहर को दादाजी अपनी कुटिया में बैठे थे। बहिन शान्ति ने उनसे कहा कि दादाजी, कृपया बहिनों के लिए नूतन वर्ष के सम्बंध में कोई संदेश दें। दादाजी ने मुस्कराते हूए कहा कि प्रथम पाठ जो मैंने पढ़ा वह है शान्ति का पाठ। लोगों को कितने भी पैसे, पदार्थ हैं, पद व वैभव है फिर भी वे अशांत हैं। आध्यात्मिक उन्नति के लिए शान्ति की अत्यन्त आवश्यकता है। अशान्ति व्यवहार में भी बाधक है। सदैव शान्त चित्त रहें। अशान्ति के कारण शरीररिक व मानसिक हानि होगी। शान्ति में विचत्र शक्ति है। शान्ति द्वारा ही आपकी शक्ति सुरक्षित रहेगी। शान्ति के मार्ग पर चलें, यही आपके लिए आज का संदेश है।

दादाजी श्रोताओं की शंकाओ का प्रसन्नता से समाधान भी करते थे। एक दिन बहिन सती ने उनसे पूछा कि परमात्मा दयावान है, उसका भंडारा सदैव भरा हुआ है फिर भी इतनी गरीबी क्यों है ? कोई धनवान है, तो कोई निर्धन, कोई स्वस्थ तो कोई अस्वस्थं, कोई विद्वान है तो कोई मूर्ख, ऐसा क्यों ? दादाजी ने सत्संग में उसकी शंका का

समाधान करते हुए कहा कि कर्म ही हमारा विधाता है। अपने अपने कर्म का फल सब को मिलता है। हमने जीवन में जैसे बीज बोए हैं, या बोते हैं, वैसे फल हमें प्राप्त होंगे। प्रभु का कोई कसूर नहीं है। उसके दया की बरखा तो सब पर होती है। मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है किन्तु उसका फल भुगतने में स्वतंत्र नहीं है। इस लिए कभी भी ऐसा नहीं कहें कि परमात्मा ने इसको बलवान या धनवान बनाया है,उसने इस को निर्धन व अस्वस्थ बनाया है। ये सब कर्म की खेती है। परमात्मा सूली से कांटा करता है किन्तु कुछ फल भुगतना पड़ता है।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! आप सदैव शुभ संकल्प व शुभ कर्म करें। अपवित्र विचार, बुरे कर्म आपके लिए ही बाधक हैं। जब कोई दुख आता है, तो हम विधाता पर दोष देते हैं, यह उचित नहीं है। दुख-सुख, हानि लाभ अपने अपने कर्मों के अनुसार भुगतने पड़ते हैं।

२६ जनवरी साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हूए कहा कि आज भारतवासी प्रजावादी दिवस मना रहे हैं किन्तु स्वतंत्र भारत में लाखों लोग दुखी हैं। वे पेट भर खाना नहीं खा सकते ! देश में कितनी न गरीबी है। कई लोग निराश्रय हैं। हजारों लोगों को पहनने के लिए पूरे वस्त्र नहीं। प्राँतीयता व स्वार्थ के कारण भारत के टुकड़े टुकड़े हो रहे हैं ! स्वार्थ का त्याग कर, प्राँतीयता का भेद भाव छोड़ें, भारत का उत्थान करें, दुखी दरिद्रों को सुखी करने का प्रयत्न करें।चारों ओर यह अफवाह फैल गई कि ३ फरवरी से ५ फरवरी अष्टग्रह के कारण सृष्टि का भारी विनाश होगा। इस आने वाली विपदा के कारण लोग भयभीत व अशांत थे। यत्र,तत्र,पूजा,पाठ प्रार्थनाएं की गईं। सब धर्मों के अनुसार प्रभु को पुकार की गई, क्यों कि वह ही सुरक्षा के लिए समर्थ है। ऐसे अशांत वातावरण में प्रेमियों को सांतवना देते हुए दादा साधु वासवाणी ने २ फरवरी साँझ को मीरा सत्संग हाल में कहा कि विपदाएँ व दुख हमें जाग्रत् करने के लिए आती हैं। दुख में ही प्रभु याद आता है। गुरू महाराज फरमाते हैं -:

दुख में स्मरन सब करैं सुख में करे न कोइ।
जे सुख में स्मरन करै, तो दुख काहू ते होइ।।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! अष्टग्रह के कारण आप निराश व

चिन्तित नहीं हों। प्रभु से प्रार्थना करें, उसकी कृपा से सब विपदाएं टल जायेंगी। प्रभु जो कुछ करता है, हमारी भलाई के लिए करता है। वह सर्वशक्तिवान है, उसकी शरण लें, वह सूली से कांटा बना देगा।

आप अपना जीवन कुछ नियमों के अनुसार बिताएं। उनमें से एक यह नियम तो कल से ही अपनाएं, आप सबेरे उठकर नाम स्मरण करें, गुरूवाणी या संतों की वाणी का अभ्यास करें। राम नाम का मंत्र श्रद्धा व प्रेम से उच्चारण करें। आप टहलने जायें तो टहलते टहलते भी वह मंत्र उचारण करें। आपकी वृत्ति नाम से जुड़ी रहेगी तो मन विकारों में नहीं फंसेगा। आप अपना काम काज करते भी नाम का मंत्र जपते रहें तो आपका कठिन काम आसान हो जायेगा।

३ फरवरी सुबह को दस बजे मीरा सत्संग हाल में कई प्रेमी अष्ट ग्रह के भय से सम्मिलित हूए। शास्त्रों का पाठ किया गया और हवन यज्ञ हुआ। दादाजी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की, तत्पश्चात् प्रेमियों ने गायत्री मंत्र का उच्चारण करते आहुति अर्पित की। गरीबों व अपाहिजों को खाना खिलाया गया। उसी समय कई प्रेमियों ने कुछ माया की भेट दादाजी को अर्पण की। साधु वासवाणी ने तत्काल ही उन पैसों से कपड़ा व अनाज मंगवाकर गरीब घरों को भेजा। ४ फरवरी सुबह को भी मीरा सत्संग हाल में भगवत् गीता एवं अन्य शास्त्रों का पाठ व हवन यज्ञ किया गया। दादाजी मुस्कराते मुस्कराते सब प्रेमियों को आशीर्वाद देते गये। गरीबों को खाना खिलाया गया। उसी रात को करीबन ११ बजे दादाजी की कुटिया के द्वार हिलने लगे,तब दादाजी ने पूछा, क्या हो रहा है ? प्यारे श्री जशन ने कहा दादाजी ! दो क्षण भूकंप हुआ उसके कारण थोड़ासा झटका लगा। ५ फरवरी सुबह को भी शास्त्रों का पाठ व हवन यज्ञ हुआ, दरिद्र नारायण की सेवा की गई। ५ फरवरी के पश्चात् लोग अष्टग्रह की चिन्ता से मुक्त हो गये।

१८ मार्च साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप यदि प्रभु को प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने मन में उसके लिए तड़प,प्यास उत्पन्न करें। गोपियों के पास पैसा-पदार्थ नहीं था, वे विदुषियाँ भी नहीं थी। उन्हें योग साधना का भी ज्ञान नहीं था किन्तु

उनके मन में श्री श्यामसुंदर के प्रति अगाध श्रद्धा व प्यास थी, इस लिए भगवान श्री कृष्ण स्वयं उनके साथ रास लीला खेलते थे। रसेश्वर गोपियों के साथ रास लीला करते करते स्वयं गोपी बन जाता था और गोपियाँ श्री कृष्ण रूप हो जाती थीं। ऐसी प्यास व तनमयता प्रभु के प्रति होगी तब प्रभु हमें दर्शन देंगे। कल आप यहाँ होली का त्यौहार मना रहे हैं। सच्ची होली है, रसेश्वर के प्रेम के रंग में डूब जाएं ! डूब जाएं ! १९ मार्च होली के दिन सुबह ११ बजे दादाजी पालकी द्वारा नीचे आये और वे आमली के वृक्ष के नीचे बैठे। कुछ प्रेमियों ने दादाजी को गुलाल लगाया और दादाजी ने सब को आशीर्वाद दिया। २० मार्च साँझ को दादाजी ने प्रवचन करते हुए भक्त प्रहलाद का प्रेरणादायक प्रसंग सुनाया। दादाजी ने कहा कि छोटा बालक प्रहलाद भगवान का दर्शन कर सकता है, फिर हम क्यों नहीं ? प्रेमियो ! परमात्मा के प्रति अटूट श्रद्धा व विश्वास होना चाहिए। समर्पित भाव से जब हम उसकी शरण लेंगे तो प्रभु प्रसन्न होकर हमें अपना दिव्य दर्शन देंगे। भक्त प्रहलाद के मन में प्रभु के प्रति अडग विश्वास व श्रद्धा थी, प्रभु ने उसकी सुरक्षा की और अपना दर्शन दिया। भक्तों के वश में है भगवान! आप भी इस मार्ग पर चलेंगे तो किसी न किसी दिन भगवान अवश्य आपको दर्शन देंगे।

२२ मार्च साधु वासवाणी के अनन्य भक्त एवं मीरा विद्या हलचल के स्तंभ श्री गंगाराम साजनदास का जन्मदिन था। उस दिन सुबह को दादा वासवाणी कुछ प्रेमियों के साथ प्यारे गंगाराम के घर में पधारे। वे शिष्य व श्रद्धालु धन्य धन्य हैं जिनके घर गुरूदेव स्वयं पधारते हैं। श्री गंगाराम साधु वासवाणी के अचानक आगमन पर फूले नहीं समाये। दादा वासवाणी ने एक कार्ड पर श्री गंगाराम के सम्बंध में कुछ लिखकर दिया और वह कार्ड प्यारे जशन ने पढ़ा। उस पत्र में उन्होंने लिखा था, मेरे प्यारे गंगाराम, मैं तुम्हें किसी शब्द से सम्बोधित करूँ ? भाई कहूँ या मित्र कहूँ या एक यात्री जो जीवन मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। तुम्हें कई वर्षों से पहचानूँ, तुम अलक्ष धाम, निजधाम से आज के दिन पृथ्वी पर आया ! तुम तो युगों से मेरा सखा, साथी स्नेही हो। तुम्हें जन्मदिन की बधाइयाँ व शुभ मंगल कामनाएं देता हूँ।

काश ! तुम्हें वह सच्चा सुख प्राप्त हो, जो उसे मिलता है, जो अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करता है। ऐसा मनुष्य प्रभु कृपा का पात्र बनता है। मेरे प्यारे मुझे भी तुम ऐसा आशीर्वाद करो कि मैं भी इसी मार्ग पर चलूँ।

२२ मार्च संध्या को मीरा सत्संग हाल में दादा वासवाणी ने प्यारे जशनजी से कहा कि तुम प्यारे गंगाराम के सम्बंध में कुछ कहो। श्री जशन वासवाणी ने श्री गंगाराम के जीवन के सम्बंध में प्रकाश डालते हुए कहा कि उसने अपना समस्त जीवन दादा वासवाणीजी के श्रीचरणों में समर्पित किया है। वे दादा वासवाणी की संस्था ब्रदर हुड के सफल व परिश्रमी प्रंबधक हैं। गुरूदेव साधु वासवाणी के साहित्य के प्रचार के लिए भी वे प्रशंसनीय प्रयास कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि घर घर में पुस्तकों द्वारा दादा वासवाणी का संदेश सुनाऊँ। वे हमारे संस्था का सशक्त स्तंभ हैं।

श्री गंगाराम ने गुरूदेव साधु वासवाणी, प्यारे भाई जशन वासवाणी का आभार मानते हुए कहा कि जो कुछ मेरे लिए कहा गया, मैं उसके योग्य नहीं हूँ। उनकी अनुकम्पा से ही सब सेवा कार्य हो रहे हैं। उनकी ही आज्ञा व आशीर्वाद से जून से बालिकाओं के लिए मीरा कालेज प्रारंभ किया जायेगा।

१८ अप्रैल मीरा स्कूल में महर्षि कर्वे का जन्मदिन मनाया गया। महर्षि कर्वे मीरा स्कूल संस्था के अध्यक्ष थे। इस उत्सव में दो महापुरूषों साधु वासवाणी एवं महर्षि कर्वे का सुंदर संगम हुआ। श्री गंगाराम साजनदास ने कहा आज हम यहाँ महर्षि का जन्मदिन उनकी उपस्थिति में मना रहे हैं। उन्होंने स्त्री जाति के उत्थान के लिए अपना समस्त जीवन अर्पण किया है। उनका त्याग मय जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। शाम को संत कृपालसिंघ मीरा भूमि में पधारे। वे दादा वासवाणी से मिले। दोनों सत्पुरूषोंने आपस में ज्ञान गोष्ठी की।

९ मई सुबह को ९ बजे श्री किशोर बगोमल थधाणी के घर में सुपुत्री ने जन्म लिया। साधु वासवाणी ने उसका नाम रखा कृष्ण कुमारी। कृष्ण कुमारी बचपन से ही साधु वासवाणी की छत्र छाया में पनपी। उनके पश्चात् भाऊ जशन वासवाणी, एवं सती थधाणी ने

उसकी देखभाल की और वह मीरा भूमि के पवित्र वातावरण में पलवित पुष्पित हुई। आज कृष्णा कुमारी समर्पित भाव से साधु वासवाणी मिशन और दादा जशन वासवाणी की सेवा कर रही है ।

४ जून मीरा स्कूल का स्थापना दिवस मनाया गया। इस सम्बंध में दादा वासवाणी ने संदेश देते हुए कहा कि मेरे प्यारे विद्यार्थियो व अध्यापको ! आप मीरा विद्या हलचल के सिद्धांतों के अनुसार चलेंगे तो आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी। श्री गंगाराम साजनदासने आभार मानते हुए कहा कि दादा साधु वासवाणी की असीम कृपा से मीरा स्कूल प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है।

६ जून श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज के शहीदी दिवस सुबह को बूलचन्द झांग्याणी के घर में सत्संग हुआ। बहिनों ने कीर्तन किया। दादा वासवाणी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज सहनशीलता के रूप थे। दुष्टों ने उन्हें कष्ट दिये किन्तु फिर भी वे शान्त चित्त रहे और कहते रहे :

तेरा भाणा मीठा लागे,
नाम पदार्थ नानक मांगे।

उन्होंने हमें श्री सुखमनी में आश्वासन देते हुए कहा -:

जो कुछ करै भलो सो जान,
भूला काहे फिरौ अजान।

परम पिता परमात्मा जो कुछ भी करता है, उसमें हमारी भलाई समाहित है, हम भूले भटके अज्ञानी प्रभु के रहस्य को समझ नहीं सकते। हमारा ज्ञान सीमित है, वह ब्रह्म असीम है। उसकी लीला भी अनन्त व असीम है। श्री गुरू अर्जुनदेव की वाणी का अभ्यास करें और उनकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारें।

प्रो खुशीराम वासवाणी दिल्ली में रहता था । देश विभाजन के पूर्व उसने काशी एवं दयाराम गिदूमल कालेज कराची में अध्यापन कार्य किया था। साधु वासवाणी की इच्छानुसार उसे मीरा कालेज फार गर्लिस पुणे का प्राचार्य नियुक्त किया गया। १० जून वह दिल्ली से पुणे में आया। उसके रहने खाने पीने की व्यवस्था मीरा भूमि में की गई। दादा साधु वासवाणी ने संध्याकालीन सत्संग में प्यारे श्री के.

एन. वासवाणी के सम्बंध में कहा कि वह हमारे निमंत्रण पर यहाँ आया है। बालिकाओं के लिए जो मीरा कालेज आरंभ किया जा रहा है, उसका प्राचार्य श्री के.एन.वासवाणी होगा। श्री वासवाणी छात्राओं का मार्गदर्शन करेगा। वह एक आदर्शी प्राध्यापक है। उसका मैं हृदय से स्वागत करता हूँ।

२० जून सुबह को मीरा कालेज का श्रीगणेश हुआ। मीरा सत्संग हाल में भगवद् गीता एवं अन्य शास्त्रों का पाठ किया गया और नाम कीर्तन हुआ। इसी अवसर पर हवन यज्ञ भी किया गया। सुबह ९ बजे साधु वासवाणी सत्संग हाल में पधारे। तालियों से उनका स्वागत किया गया। एक कुर्सी पर दादा वासवाणी ब्राजमान थे और दूसरी कुर्सी पर महर्षि कर्वे बैठे थे। क्योवृद्ध शिक्षाशास्त्री महर्षि कर्वे ने मीरा कालेज के शुभारंभ के लिए मंगल कामनाएं प्रकट करते हूए आशीर्वाद वचन कहे। प्राचार्य के. एन वासवाणी ने स्वागत किया।

साधु वासवाणी ने इस अवसर पर मुस्कराते हुए सब को प्रणाम किया। उन्होंने कहा कि महर्षि कर्वे आज यहाँ आशीर्वाद देने के लिए पधारे हैं, उन्हें देखकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता हो रही है। वे स्त्री उत्थान का जो कार्य कर रहे हैं, हम भी यहाँ वही कार्य कर रहें हैं। मीरा कालेज में बालिकाओं को आदर्श नारी बनने की ही शिक्षा दी जायेगी। जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। हमारी बहिनें ही समाज का नव निर्माण कर सकेंगी।

'The Woman Soul Shall lead us on'

भारत की नारी हमें उन्नति की ओर ले चलेगी। भगवान श्री कृष्ण की कृपा से मीरा कालेज की छात्राओं को शुद्ध पवित्र, वातावरण में शिक्षा दी जायेगी। उन्हें न केवल पुस्तकीय ज्ञान, परन्तु जीवन उपयोगी शिक्षा भी दी जायेगी जैसे उनका भविष्य उज्ज्वल हो।श्री गंगाराम साजनदास ने अतिथियों व अन्य आगुंतकों का आभार प्रदर्शन किया।

मीरा कालेज के प्राचार्य श्री के.एन. वासवाणी किसी कारण वश कुछ समय के पश्चात् प्राचार्य के पद का त्याग कर दिल्ली लौट गये। आदर्श विद्यामंदिर के लिए एक आदर्शी प्राचार्य की आवश्यकता

थी। योग्य प्राचार्य के लिए प्रयास किया गया किन्तु प्रयास विफल गया। श्री गंगाराम साजनदास ने साधु वासवाणी से प्रार्थना की कि मीरा महाविद्यालय के प्राचार्य के पद के लिए प्यारे भाई जशन वासवाणी अत्यन्त उपयोगी और योग्य हैं। वे ही आपके आदर्शों के अनुसार मीरा महाविद्यालय की बाग डोर संभाल सकते हैं, वे ही बालिकाओं का सही मार्गदर्शन कर सकते हैं। आप कृपया भाई जशन से इस पद को स्वीकार करने की आज्ञा दें। पुणे विश्व विद्यालय से उनके लिए मैं स्वीकृति लेकर आता हूँ। पूज्य दादाजी मुस्कराए। वहाँ प्यारे श्री जशन भी बैठे थे। साधु वासवाणी ने अपने परम प्यारे जशन को संकेत किया कि वह प्राचार्य का पद स्वीकार करे। श्री जशन वासवाणी ने गुरूदेव की आज्ञा श्रोधार्य की।

मीरा कालेज के प्रार्थना हाल में साधु वासवाणी ने विद्यार्थियों व प्राध्यापिकाओं से कहा कि आज से मीरा कालेज के प्राचार्य का पद प्यारे जशन को सौंपा जाता है। सन् १९५६ ई में इनकी विद्वता व विचारों से प्रभावित होकर कैनाडा इन्टरनैश्नल अंतराष्ट्रीय अकादमी ने इसे पी एच्. डी की मानद उपाधि से सन्मानित किया और लिखा कि आप इस अकादमी के उपनिदेशक का पद स्वीकार करें। प्यारे जशन ने वह पद स्वीकार नहीं किया। अब हम सब का प्यारा जशन मीरा कालेज की सेवा करेगा। इस के मन में विद्यार्थियों के प्रति स्नेह व सदभावना है। आशा है कि इसके मार्गदर्शन में यह कालेज प्रगति के पथ पर चलेगा।

६ सितम्बर रविवार के दिन साधु वासवाणी ने उपदेश देते हूए कहा कि संत कबीर कहते हैं -:

रहना नहीं देस बिराना है,
यह संसार झार और झांखर आग लगै बरजाना है।
यह संसार कागद की पुड़िया बूंद पड़े घिल जाना है,
कहित कबीर सुनो भाई साधु सत्गुरू नाम ठिकाना है।

मेरे प्यारे, एक एक को निजधाम,अपने वतन लौट जाना है! यह सुंदर काया एक दिन भस्म हो जायेगी।यह जगत् एवं जगत् के पदार्थ अनित्य व नश्वर हैं। हम उनकी प्राप्ति के लिए व्यर्थ श्वास गंवा

रहे हैं। यह शरीर खाक की ढेरी है ! खाक खाक में मिल जायेगी ! फिर किस बात पर आप अभिमान करते हैं ? हम दर्पण में अपनी शबि देखकर कहते हैं कि कितने न सुंदर हैं ! किन्तु हम कितने न अज्ञानी हैं, हड्डियों व माँस से बने हुए शरीर को सत्य समझ बैठे हैं। कभी कभी अपने मन को समझायें कि एक दिन काल अवश्य आयेगा और तुम्हारे साथ तुम्हारे हाथ भी नहीं चलेगें। इस लिए जितना हो सके सब प्राणियों को प्यार करें, किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करें। एकांत में बैठकर स्वयं को टटोलें, दिल की खिड़की खोलें, श्वास, श्वास से हरिनाम बोलें।

७ अक्तूबर विजय दशमी के दिन साँझ को दादा वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के दिन भगवान श्री राम ने रावण पर विजय प्राप्त की। रावण महान तपस्वी व विद्वान था। उसने तपस्या द्वारा बड़ी शक्ति प्राप्त की किन्तु अहंकार के कारण उसे भुगतना पड़ा। घमंड मनुष्य को गिराता है। भ्राता विभीषण व रावण की पत्नी मंदोदरी ने उसे कितना समझाया किन्तु अभिमान वश उसने किसी की नहीं मानी। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप प्राति वर्ष विजयदशमी तो मनाते हैं किन्तु अपने अभिमान को, अपने मन को नहीं मारते हैं। भक्त विभीषण की भाँति प्रभु श्री राम की शरण लें तो प्रभु आपका कल्याण करेगा। मेरे प्यारे ! अभिमान का त्याग कर नम्रता अपनाएँ।

२६ अक्तूबर दिवाली के दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में प्रभु श्रीराम के गुण गीत गाये गये। साधु वासवाणी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। उन्होंने संध्याकालीन सत्संग में दिवाली के सम्बंध में प्रवचन करते हूए कहा कि हम अपने मन में ज्ञान की, प्रेम की ज्योति जगाएँ तो प्रभु श्रीराम हमारे मन मंदिर में पधारेंगे। शबरी की भाँति प्रभु श्री राम के दर्शन की प्यास पैदा करें। प्रभु को आपके धन पदार्थ नहीं चाहिए उसे तो प्यासी दिलें चाहिए प्रेम पदार्थ चाहिए। आज सारी रात दिल की गहराई से प्रभु श्री राम को पुकारें :-

आजा राम ! आजा राम !
अपना दर्शन दिखाजा राम !

५ नवम्बर गोपष्टमी के पावन दिन सुबह को दादा वासवाणी

ने गऊ माताओं की पूजा उपासना कर उन्हें गुड़ व फल खिलाए। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने गऊ माता की महिमा गाते हूए कहा कि गऊ माता की सेवा, पूजा व सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं गाय की पूजा उपसना की। वे स्वयं गैयों को चराने के लिए जाते थे। गाय का दूध अमृत तुल्य है, जिसके पान करने से शरीर सशक्त होता है , ऊर्जा का संचार होता है, बल बुद्धि की वृद्धि होती है। हमारे शास्त्रों में गाय, गंगा, गीता व गायत्री को माता की उपमा दी गई है, इस लिए गैयों की श्रद्धा के साथ सेवा करें, प्रति दिन उन्हें खिलाएं पिलाएं। उनकी आशीर्वाद से आपका भाग्योदय होगा।

१५ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज का जन्म दिन मीरा भूमि में मनाया गया। सुबह को मीरा सत्संग हाल में नाम कीर्तन हुआ। दादा वासवाणी ने मोदी खाना आरंभ किया। मुख से वाहिगुरू वाहिगुरू उच्चारण करते हुए उन्होंने गरीबों को गेहू, चावल, दाल एवं अन्य खाद्य पदार्थ दिये। उसी समय ऐसा लग रहा था कि श्री गुरू नानकदेव महाराज स्वयं दीन दुखियों की सेवा कर रहे हैं।

साँझ को श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति की गई। बहिनों ने श्री गुरू नानकदेव महाराज की अमृत वाणी मधुर स्वर में गाईं। साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्री गुरू नानक देव ने संसार को ज्ञान का प्रकाश दिया, लाखों लोगों को नाम का अमृत पिलाया। वे स्वयं अवतारी पुरुष थे, किन्तु कितने न विनम्र थे। उन्होंने स्वयं को दास कहलाया, अपनी वाणी में 'नानक दास' का प्रयोग किया, परन्तु आजकल अहम् की भावना बढ़ गई है। महान तो एक भगवान है जिसने इस सृष्टि की उत्पत्ति की है, हमारा कोई अस्तीत्व नहीं उस प्रभु का नाम ही महान है। श्री गुरू नानकदेव महाराज श्री जपुजी साहब में फरमाते है:

वडा साहिब वडी नाई, कीता जाका होवै।
नानक जेको आपै जाणै, अगै गइआ न सौहै।।

जो व्यक्ति स्वयं को कुछ समझता है वह अहंकारी परलोक में जाकर शोभा नहीं पाता।

श्री गुरू नानकदेव महाराज की वाणी व्यवहार एवं परमार्थ के लिए हमारा मार्ग दर्शन करती है। उनकी वाणी का पाठ, अभ्यास कर चिन्तन व मनन करें। वे हमें अज्ञान की नींद से जाग्रत् करते हुए कहते हैं:

भई प्राप्त मानुख देहुरीआ
गोविन्द मिलन की, यह तेरी बरीआ।
अवर काज तेरे कितै न काम,
मिल साध संगति भजु केवल नाम।।

सांसारिक कामों में व्यस्त रहकर अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ नहीं गंवाएं। यह दुर्लभ मानुष जन्म प्रभु से मिलने का अमूल्य अवसर मत गंवाएं, सतों का संग कर नाम स्मरण करें।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों आप सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते अनासक्त रहें और चित्त की वृति नाम से जोड़ें।

२५ नवम्बर साधु वासवाणी के जन्म दिन सम्बंध में, २३ नवम्बर से जन्म उत्सव मनाया गया। २३ नवम्बर सबेरे १० बजे मीरा कालेज की ओर से उनका जन्म दिन मनाया गया। दादाजी कालेज में पधारे। कालेज की बालिकाओं ने मधुर गीत गाये। इस अवसर प्राचार्य जशन वासवाणी ने साधु वासवाणी के सम्बंध में व्याख्यान देते हुए कहा कि उनकी असीम अनुकंपा हम पर सदैव रहेगी। महर्षि कर्वे ने महाराष्ट्र मे तो दादाजी ने सिन्ध में शिक्षा द्वारा नारी जागरण का प्रशंसनीय प्रयास किया है। दादाजी न केवल महान शिक्षा शास्त्री हैं, किन्तु वरिष्ठ विद्वान हैं, बड़े दार्शनिक हैं, साहित्यकार हैं, उच्च्व कोटि के संत कवि हैं, दीन दुखियों के मसीहा हैं। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हमें उनका सानिध्य प्राप्त हुआ है।

साधु वासवाणी ने मुस्कराते, हाथ जोड़कर सब को नमस्कार किया और कहा कि मुझे आशीर्वाद करें। आप अपने जीवन में प्रेम व दया की ज्योति जगाते रहें। सारे संसार को प्रेम व दया की अत्यन्त आवश्यकता है। जिसके मन में दया नहीं, प्रेम नहीं, वह मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है। आप अपनी दिनचर्या प्रार्थना से प्रारंभ करें, प्रभु को कभी नहीं भूलें।

२४ नवम्बर सुबह ५ बजे मीरा भूमि में मीरा स्कूल, मीरा प्राथमिक स्कूल, मीरा अंग्रजी माध्य स्कूल की ओर से साधु वासवाणी का जन्म दिन उत्सव मनाया गया। 'हरि बोल हरि बोल' के मधुर स्वर से वातावरण गूंज उठा। हजारों बालक-बालिकाएं दादा साधु वासवाणी का जन्म दिन बड़े उत्साह के साथ मना रहे थे। साधु वासवाणी उत्सव में पधारे, प्राथमिकशाला की एक बालिका ने उन्हें मस्तक पर तिलक लगाया, कुछ विद्यार्थियों ने उन्हें पुष्प गुच्छ एवं पुष्प मालाएं भेट की। दादाजी ने मुस्कारते मुस्कारते सब को प्यार व आशीर्वाद दिया।

२५ नवम्बर साधु वासवाणी के जन्म दिन सुबह ८ बजे मीरा सत्संग हाल में जन्म उत्सव प्रारंभ हुआ। श्री गुरू ग्रन्थ साहब के अंखड पाठ की समाप्ति की गई। तत्पश्चात् नाम कीर्तन हुआ। विभिन्न नगरों से प्रेमी जन्म उत्सव में सम्मिलित हुए थे। दादाजी ने हवन यज्ञ की ज्योति प्रज्वलित की और उसमें आहुति अपिर्त की। श्रीमद् भगवद् गीता के १२ अध्याय का पाठ किया गया। साधु वासवाणीजी अपने निर्मल नेत्रों से निहारते आगुंतको को आशीर्वाद दे रहे थे। चारों ओर जन्म दिन बधाई की आवाज गूंज उठी।

दादाजी की इच्छानुसार उन्हें काऊँसिंल हाल की ओर ले गये। वहाँ एक वृक्ष के नीचे दादाजी बैठे थे। वहाँ पहले ही कई फकीर, अपाहिज व कोढ़ी बैठे थे। दादाजी को उनकी सेवा करने में आनंद आता था। दादाजी ने उन्हें फल बिस्केट व खर्ची दी, सब से अधिक उन्हें प्यार दिया। तत्पश्चात् वे मीरा भूमि में आये, वहां जन्म दिन के सम्बंध में लंगर आरंभ हुआ।

साँझ को साधु वासवाणी मीरा सत्संग हाल में पधारे। डॉ सती मीरचन्दाणी, एवं अन्य बहिनों ने मधुर भजन गाये। श्री गांगाराम साजनदास ने साधु वासवाणी की सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि जन्म दिन ऊत्सव के सम्बंध में, देश विदेश के विभिन्न नगरों से प्रेमियों ने जो माया भेजी है वह कुल मिलाकर १,४४,६०९ रूपये हुए। यह माया अब दादाजी के श्री चरणों में अर्पित की जाती है।

साधु वासवाणी ने सब प्रेमियों का आभार मानते हुए कहा कि

आपका स्नेह व श्रद्धा देखकर मेरा सिर झुक जाता है। तीन दिन से आप लोगों ने उत्सव मनाया है, में स्वयं से बार बार पूछता हूँ,

ए सरीरा इस जग में आयके क्या तुध कर्म कमाया !

हम इस संसार में अमूल्य मनुष्य जन्म प्राप्त कर क्या करते हैं? अधिकतर लोग कांच के टुकड़े सग्रंह करने में ही जीवन व्यर्थ गंवाते हैं। यह पदार्थ, पद सब कांच के टुकड़े हैं। यदि आप इनका सद् उपयोग करें तो उस में उसकी सार्थकता है। आपके पास माया है तो वह दीन दुखियों को, बीमारों, गरीबों को सुखी करने में सफल करें। आपको कोई पद मिला है, तो उस पद पर रहते, आप औरों की जितनी भलाई कर सकें भलाई करें। आप अपने अमूल्य श्वास, नाम की पूंजी संग्रह करने में सफल करें। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज भी श्री सुखमनी में फरमाते हैं कि नाम स्मरण करना उत्तम कर्म है, वह काम करना हम भूल जाते हैं।

सरब धर्म महि स्रेष्ठ धर्म,
हरि को नाम जपि निर्मल कर्म।
सगल उदम महि उदम भला,
हरि का नाम जपहु जीअ सदा।

प्रेमियो, सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हूए नाम स्मरण का सर्वश्रेष्ट कर्म करते रहें। उसमें ही मानव जीवन की सार्थकता है। आज आप सब मुझे भी आशीर्वाद करें कि जीवन की शेष घड़िया स्मरण व सेवा में सफल हों।

नानक पत सेती घर जाइ।

३१ दिसम्बर सुबह को दादाजी टहलने के लिए गये। तत्पश्चात् वे मीरा सत्संग हाल म्रे आये। वहाॅ नाम कीर्तन हुआ और साधु वासवाणी ने ज्ञान गोष्ठी करते मार्गदर्शन किया। साँझ को भी दादाजी सत्संग हाल में आये। उन्होंने उपदेश देते हूए कहा कि आज वर्ष का अंतिम दिन है। आज हम सब एकांत में बैठकर आत्म निरीक्षण करें कि इस सारे वर्ष में हमने क्या क्या सत्कर्म किये और क्या कुकर्म किये ! अपने किये हुए बुरे कर्मों का पछतावा करें। पश्चानुत्ताप के आँसुओं द्वारा अपने मलीन मन को धोलें और प्रभु से प्रार्थना करें कि

भविष्य में हम एसा बुरा कर्म नहीं करेंगे। अब से हम नया बनने का प्रयास करेंगे। वर्ष की अंतिम रात को ११ बजे मीरा सत्संग हाल में नाम कीर्तन हुआ। सरदार संतसिंघ ने 'सत्स्री अकाल जो बोले सो निहाल' के नारे लगाये। १२ बजे आगुंतक प्रेमियों को मुस्कराते मुस्कराते दादाजी ने आशीर्वाद दिया।

१ जनवरी १९६३ सुबह को १० बजे दादा वासवाणी मीरा सत्संग हाल में पधारे, नाम कीर्तन और हवन यज्ञ हुआ। दादाजी ने सब प्रेमियों को हाथ जोड़ते अपनी निहार से निहाल किया। उन्होंने नव वर्ष के सम्बंध में संदेश देते हूए कहा कि आज से नूतन वर्ष प्रारंभ होता है। आज सबेरे मैंने विचार किया कि नया वर्ष क्या है। मेरे मन में उत्तर आया प्रभु हमें नये वर्ष रुपी पुस्तक देता है और कहता है झूनी पुरानी पुस्तकें भस्म कर दो। गुरू महाराज कहते हैं -:

'लेखे कबहूँ न छूटि हूँ, मैं खिन खिन भूलनहार'

हम पग पग पर गलतियाँ करते हैं , यदि परमात्मा हमारे की हूई गलतियाँ का लेखा करेगा तो हम कभी भी मुक्त नहीं हो सकते। क्षमा याचना द्वारा ही इन गलतियों से हम मुक्त हो सकते हैं। गत वर्षों में की हूई भूलों के लिए प्यारे प्रभु से हम क्षमा मांगे, पछतावा के आँसू बहॉए और जीवन में नये प्रयोग करें, सत्कर्म करने का संकल्प करें। नये वर्ष की नोटबुक पर आप नये विचार लिखें। आज मुझे एक मनुष्य की याद आई, उसके जीवन में अचानक परिवर्तन आ गया। एक दिन वह स्वयं से कहता है, कि आज से मैं प्रभु के श्री चरणों में बैठकर, उसका नाम गाऊँगा व उसके नाम का प्रचार करूँगा। मैं ने बहुत समय संसार की नौकरी की अब नाम की नौकरी करूँगा। जब वह नाम का प्रचार करता है तब कुछ लोग उससे सताते हैं, किन्तु वह व्यक्ति उन्हें अपना प्यार देता रहता है। उसकी पत्नी भी एक दिन उससे इस परिवर्तन के कारण अप्रसन्न होती है, वह उसे समझाते हुए कहता है, मैं तुम्हारी सेवा करुँगा किन्तु तुम्हारे लिए अर्थात् परिवार के लिए असत्य नहीं बोलूंगा, पाप कर्म नहीं करुँगा।उसकी पत्नी फिर उसे कहती है कि यदि तुम असत्य नहीं बोलोगे तो मैं दुनिया के ऐश कैसे करुंगी ! वह मनुष्य सत्य की राह पर चलते अपना अधिक समय प्रभु को देता है शेष

थोड़ा समय परिश्रम कर घर की पालना करता है। उसकी पत्नी अप्रसन्न होकर छोटे बेटे को साथ में लेकर, घर छोड़कर चली जाती है। वह बेचारा अब अकेला रहता है किन्तु वह अपने मन को सांतवना देता है कि तुम अकेले नहीं, जिस प्रभु के मार्ग पर तुम चल रहे हो वह तो सदैव तेरे साथ है। आसक्ति के कारण नये वर्ष के दिन उसे अपनी पत्नी व बालक की याद आती है और उसकी आँखों से मोह के आँसू टपकते हैं। आँसू आने के बाद उसके नेत्रों में नई चमक आ जाती है और कहता है कि हे प्रभु ! अब मैं तेरा हूँ तू मेरा है, फिर मैं क्यों चिन्ता करुँ ! तुम जो कुछ करता है उस में मेरी भलाई है। वह व्यक्ति फिर तो समर्पित भाव से प्रभु की शरण लेकर भक्ति करता है, दीन दुखियों की सेवा करता है, उसका जीवन नया हो जाता है। हम भी आज नूतन वर्ष के प्रथम दिन सत्य के मार्ग, प्रेम के पथ पर चलने का संकल्प करें, यही नूतन वर्ष का संदेश है।

११ मार्च होली के दिन सुबह को साधु वासवाणी मीरा भूमि में आमली के वृक्ष के नीचे बैठे थे। कई प्रेमियों ने उन्हें गुलाल लगाया और दादाजी ने उन्हें मुस्कराते मुस्कराते आशीर्वाद दिया। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने मुझे और एक दूसरे को गुलाल एवं रंग लगाकर होली उत्सव मनाया है। होली खुशी का त्यौहार है। आप अपने मन को राम नाम के रंग से रंग दें। भक्त प्रहलाद ने पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण बचपन में ही भगवान से प्रेम का नाता जोड़ा। उसके पिता हिरण्यकश्य ने उसे मारने के कई प्रयास किये किन्तु वह विफल गया। आज के दिन भगवान ने नरसिंह अवतार धारण कर हिरण्यकश्प का दमन कर बालक प्रहलाद की रक्षा की। हम भी भक्त प्रहलाद की भाँति अटूट श्रद्धा व विश्वास के साथ भगवद् भजन करें तो प्रभु हमारी देख भाल व सुरक्षा करेंगे।

१ अप्रैल रामनवमी के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में दादाजी ने हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की और तत्पश्चात् दरिद्रनारायण की सेवा की। दुपहर १२ बजे नाम कीर्तन हुआ। मीरा स्कूल के कुछ विद्यार्थी भी सम्मिलित हुए। दादा वासवाणी ने उन्हें सम्बोधित करते हूए कहा कि आप प्रभु श्री राम के गुणों को अपनाएं।

उन्होंने अपने गुरूदेव ऋषि वसिष्ठ के श्री चरणों में बैठ कर समर्पित भाव से शिक्षा ग्रहण की और उसके अनुरूप व्यवहार किया।

संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि दुष्टों का दमन करने के लिए और भक्तों की सुरक्षा करने के लिए प्रभु श्री राम ने आज के दिन अवतार धारण किया। वे मर्यादा पुरूषोत्तम थे, उन्होंने मर्यादाओं का कभी उलंघन नहीं किया, किन्तु आज के युग में लाखों लोग मर्यादा का उलंघन करते हैं। पूज्य पिताश्री की आज्ञा का पालन करने के लिए श्री राम ने १४ वर्ष के लिए राज्य का त्याग किया। आज यदि घरों में श्री राम जैसे आज्ञाकारी सुपुत्र हों तो हमारे घर स्वर्ग बन जाएं। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप प्रभु श्री राम की भाँति माता, पिता एवं बड़ों की आज्ञा का पालन करें और मर्यादाओं के अनुसार जीवन बिताएं। प्रभु श्री राम को नहीं भुलायें तो आपका जीवन आनंदमय हो जायेगा। आज मेरे अग्रज भाई पहिलाजराय वासवाणी की पुण्यतिथि भी है। वे रामभक्त थे और उन्होंने समर्पित भाव से दीन दुखियों व समाज की सेवा की, वे बड़े विद्वान थे, किन्तु उन्हें विद्वता का अभिमान नहीं था।

८ अप्रैल संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज श्री हनुमान जयन्ती है। उन्होंने समर्पित भाव से प्रभु श्री राम की सेवा की। वे भगवान श्री राम के परमभक्त थे। भक्ति व सेवा के कारण यत्र तत्र श्री हनुमान के मंदिर हैं, इतने मंदिर आप को किसी देव देवता के नहीं मिलेंगे। भगवान स्वयं को महत्व न देकर भक्तों को महत्व देता है। संत स्वामी तुलसीदास ने उनकी महिमा गाते हुए श्री 'हनुमान चालीसा' की रचना की। विश्वास व श्रद्धा के साथ श्री हनुमान चालीसा का पाठ करने से मानसिक व शारीरिक दुख दर्द दूर होते हैं। गोस्वामी तुलसीदास उनकी महिमा गाते प्रार्थना करते हैं -:

बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस विकार।।

प्रेमियो ! आप भी पवन सुत श्री हनुमान के जीवन से भक्ति व सेवा के गुण अपनाएं, अपना जीवन सफल बनाएं।

६ मई बुद्ध जयन्ती के उपलक्ष में सुबह १० बजे मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ किया गया। दादा वासवाणी ने गायत्री मंत्र उच्चारण करते हुए यज्ञ में आहुति अर्पित की। तत्पश्चात् उन्होंने दरिद्रनारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्री गौतम बुद्ध करुणा व अहिंसा के अवतार थे। उन्होंने हजारों लोगों के जीवन में मानसिक परिवर्तन लाया। अंगुलीमार डाकू जैसे व्यक्ति को अहिंसा व प्रेम की दिशा दिखाकर परिवर्तन लाया। उनके सिद्धांतों व आदर्शों का प्रचार भारत तक सीमित नहीं रहा, किन्तु कई देशों में उनकी विचार धारा का विस्तार हुआ। उन्होंने अष्टमार्ग का संदेश दिया। आज सारे विश्व को उनके संदेश को अपनाने की अत्यत आवश्यकता हैं। आप किसी को भी शारीरिक या मानसिक आघात नहीं पहुँचाएं, दया व प्रेम की ज्योति जगाएं।

१० जून साधु वासवाणी ने अपनी कुटिया में ज्ञान गोष्ठी करते हूए कहा कि आप अपनी इन्द्रयों पर नियन्त्रण रखें। इन्द्रयों पर नियन्त्रण न होने से मनुष्य बीमार, भोगी व पथ भृष्ट हो जाता है। रसना रस के कारण क्या क्या खाती है! फिर बीमारियाँ आ जाती हैं। रसना से अपशब्द निकल जाते हैं, तो उसका भयंकर परिणाम भुगतना पड़ता हैं। द्रोपदी के एक अपशब्द बोलने के कारण महाभारत का युद्ध हुआ। आँखे कभी कभी किसी की सुंदरता देखकर आसक्त हो जाती हैं, व्यक्ति पथ-भृष्ट हो जाता है, सारी साधना विफल हो जाती है। एक एक इन्द्री पर नियन्त्रण होना चाहिए, नहीं तो हमारी शारीरिक व मानसिक गिरावट होगी।

इन्द्रियों के साथ मन पर भी नियन्त्रण अत्यन्त आवश्यक है। मन बड़ा बांवला है, बंदर की भाँति कहीं कहीं भाग जाता है, आकर्षणों में अटक जाता है। इस लिए कहावत है 'मन जीते जग जीत' जिसने मन को जीत लिया उसने संसार को जीत लिया, किन्तु मन को जीतना इतना आसान नहीं है। साधना, वैराग्य व अभ्यास द्वारा मन को जीता जा सकता है।

बहिन सती थघाणी ने दादाजी से पूछा कि मन को कैसे वश में करें ?

दादाजी ने कहा कि जब तुम्हारे मन में कोई बुरा विचार या बुरा संकल्प उत्पन्न होता है उसी समय स्वयं को दंडित करो। मैं किसी समय अपने पास काँटे रखता था। मेरे मन में जब कभी कोई बुरा विचार उत्पन्न होता था, उसी समय शरीर को कांटे लगाकर मन को समझाता था। आप देखेंगे कि मेरी कुटिया में एक लाठी रखी है, किसी समय स्वयं को लाठी से मारकर मन को नियन्त्रित करता था।दादाजी का उत्तर सुनकर बहिन सतीने फिर उन्हें प्रार्थना की कि इन्द्रियों और मन पर नियन्त्रण रखने के लिए और कोई सरल साधन बताएं। साधु वासवाणी ने कहा कि संतों का संग करें, मन में वैराग्य वृत्ति धारण कर नाम स्मरण करें, हरि गुण गांऐ तो मन का भटकना बंद हो जायेगा।

संत बड़े परमाथी सीतल जाँके अंग।
तपति बुझावन और की देकर अपना संग॥

आप प्रभु से प्रार्थना करते रहें कि सदैव हमारी सुरक्षा करें। अह्म् की भावना भी मनुष्य को गिराती है। रश्या में एक बड़ा व्यक्ति था, वह समर्पित भाव से मानव मात्र की सेवा करता था। उसके मन में कोई भी लालसा नहीं थी। उसने अपने त्याग मय जीवन व निष्काम भावना के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त की, फिर भी वह सदैव विनम्र रहता था। जनता के मन में उसके प्रति बहुत ही श्रद्धा थी। वहाँ राजा की मृत्यु हो गई। जनता ने उस व्यक्ति को राज्य सौंप दिया। पहले तो उसने कहा कि मैं तो जनता का सेवक हूँ, यह शाही महल मैं क्या करुँगा ! मुझे केवल एक कमरा अपने रहने के लिए और एक कमरा अतिथियों के लिए आवश्यक है,यह विशाल राज महल मैं क्या करुँगा! मैं तो सबका सेवक हूँ। उसी व्यक्ति में धीरे-धीरे शासकीय पद की अहंकार वृत्ति बढ़ गई। वह विनम्र व्यक्ति घमंडी बन गया। पद, वैभव सन्मान भी मनुष्य को गिरा देते हैं। जीवन पथ पर सोच समझकर चलें। विकारों के वश में प्रभु को नहीं भुलाएं।

२० जून मीरा कालेज के नए वर्ष के प्रथम सत्र के प्रथम दिन सुबह को हाल में नाम कीर्तन हुआ। उसी अवसर पर प्राचार्य जशन वासवाणी ने प्रेरणादायक व्याखयान दिया, तत्पश्चात् साधु वासवाणी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि आप जीवन में ये आदर्श रखें,

मैं पवित्र जीवन रहूँगा, सत्य के मार्ग पर चलूंगा और मैं देना सीखूँगा। जीवन की सार्थकता पैसा पदार्थ संग्रह करने में नहीं है। प्रभु ने हमें यह अमूल्य मानव जीवन दिया है, उस के गुण गाएँ, और उसने जो कुछ दिया है,वह हम औरों को देते जाएँ। देने में ही आनंद है। बाँटने में ही सच्चा सुख है, और संग्रह करने में दुख है। दीन दुखियों की यथा शक्ति तन मन व धन से सेवा करें। आप के पास यदि कुछ भी नहीं तो अपना स्नेह व सहानुभूति औरों को दें।

४ जुलाई गुरू पुर्णिमा के पवित्र दिन सुबह को कई प्रेमी श्रद्धालु गुरूदेव साधु वासवाणी का आशीर्वाद लेने के लिए उनकी कुटिया में आए और उनके चरणों में श्रीफल मिश्री भेट किया। दादा वासवाणी ने मुस्कराते मुस्कराते सब को आशीर्वाद दिया। साँझ को उन्होंने गुरू महिमा के सम्बंध में प्रवचन करते हुए कहा कि आज व्यास पूजा गुरू पूर्णिमा का पावन दिन है। प्राचीन काल से यह दिन भारत भूमि में बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। भगवान श्री राम हो या भगवान श्री कृष्ण, उन्होंने भी गुरू के श्री चरणों में बैठकर शिक्षा ग्रहण की है और अपने गुरूजनों को सन्मान दिया है, उनकी सेवा की है। गुरू की कृपा द्वारा हम अवनि से अम्बर तक पहुँच सकते हैं। गुरू की बड़ी महिमा है। श्री गुरू अंगददेवजी महाराज सत्गुरू की महता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि सौ चाँद और हजारों सूर्यों का प्रकाश हो, फिर भी गुरू के बिना अंधकार है। गुरू के ज्ञान रुपी प्रकाश से ही अविद्या-अज्ञान का अंधेरा दूर होता है -:

जे सव चन्दा उगवहि, सुरज चढ़ह हजार ।
एते चान्ण होन्दिया, गुर बिन घोर अंधार।।

मेरे भाइयो व बहिनों ! श्रद्धा विश्वास व निष्ठा के साथ गुरू की शरण लें तो वे आपको नाम की नैया में बिठाकर भवसागर से पार लगा देंगे।

१४ जुलाइ साधु हीरानन्द की पुण्यतिथि के सम्बंध में सुबह १० बजे मीरा सत्संग हाल में श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के पश्चात् बहिनों ने नाम कीर्तन किया। साधु वासवाणी ने श्री सुखमनी साहब की निम्न पंक्तियों की व्याख्या की -

ब्रह्मज्ञानी सदा निरलेप,
जैसे जल महि कमल अलेप।
ब्रह्म ज्ञानी सदा निरदोख,
जैसे सूर सरब कउ सोख।

श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज फरमाते हैं कि ब्रह्मज्ञानी जगत् में कमल के सदृश रहता है। वह जगत् में रहते हुए भी अनासक्त भाव से रहता है। ब्रह्मज्ञानी सूर्य की भाँति सब को सुखता है, दुर्गंध हो या सुरभि हो, वह निर्लिप्त रहता है। साधु हीरानन्द भी घर गृहस्थ में रहते अनासक्त रहे। उन्होंने २९ वर्ष की आयु में कितने न परोपकार व सेवा के कार्य किये। जीवन की सार्थकता सेवा व स्मरण में है। मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! आप भी साधु हीरानन्द की भाँति सेवा भावी बनें। दूसरों का दुख दूर करने से आपको सुख की प्राप्ति होगी।

३० जुलाई साँझ को साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज भारत के महान राम भक्त कवि संत तुलसीदास का जन्मदिन है। उन्होंने राम चरित मानस लिखकर लाखों लोगों के मन में राम भक्ति की सरिता प्रवाहित की। उन्होंने सभी प्राणियों में प्रभु श्रीराम का दर्शन किया। उनकी यह अमूल्य कृति व्यवहार एवं परमार्थ के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है। उन्होंने अपने काव्य द्वारा जीवन उपयोगी शिक्षाएं दी हैं। वे राम नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं -:

राम को नाम कल्पतरु कलि कल्यान निवास।
जो सुमिरत भयो भॉगते तुलसी तुलसीदास॥

यदि हम अपने भीतर एवं बाहर ज्ञान का प्रकाश चाहते हैं तो राम नाम का दीप जगएं।

राम नाम मनि दीप धरू जीह दहेरी द्वार,
तुलसी भीतर बाहेरहु जौ चाहसि उज्यार॥

कवि तुलसीदास हमें रामनाम स्मरण एवं उपकार करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं -:

तुलसी इस संसार में कर लीजे दो काम।
देने को टुकड़ा भला, लेने का हरिनाम॥

२ अगस्त मीरा कालेज की छात्राओं ने अपने प्राचार्य प्यारे

जशन वासवाणी का जन्मदिन मनाया। इसी अवसर पर दादा वासवाणी ने आशीर्वाद देते हुए कहा, मेरी प्यारी बालिकाओ ! आप भाग्यशाली हैं, जो मेरा प्यारा प्राचार्य जशन आपका मार्गदर्शन कर रहा है। उसके जीवन में पवित्रता, प्रार्थना, सादगी, सत्य, संयम, स्नेह, सहानुभूति के गुणों रूपी फूल खिले हैं। वह विद्वान है किन्तु उसे विद्वता का अभिमान नहीं है। आप भी इसके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएं।

संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज मेरे प्यारे जशन का जन्मदिन है। उसने अपने आचरण द्वारा आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न की है। उसके मन में न केवल मानव मात्र के प्रति स्नेह व दया भावना है, किन्तु पशु-पक्षियों, सब ही प्राणियों के लिए सहानुभूति व दया भावना है। वह किसी का भी दुख देखकर द्रवित हो जाता है। उसका मन निर्मल व नरम है। प्रभु की प्राप्ति के लिए ऐसे ही मन की आवश्यकता है। उसका आचार विचार शुद्ध व पवित्र है। आप भी इसके गुणों को अपनाएं, प्रभु को नहीं भुलाएं, जीवन सफल बनाएं।

१२ अगस्त रक्षाबंधन के पावन दिन सुबह को कई भाई बहिनों ने दादा साधु वासवाणी को उनकी कुटिया में राखियाँ बांधी। दादाजी ने प्रत्येक को एक एक रुपया खर्ची देते हुए मुस्कराते आशीर्वाद दिया। उसी दिन दादाजी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि राखी प्रेम व रक्षा का प्रतीक है। पौराणिक कथा के अनुसार आज के दिन देवराज इन्द्र की पत्नी शची ने सभी देवताओं को रक्षासूत्र बांधा था और उससे देवताओं ने शक्ति प्राप्त कर असुरों पर विजय प्राप्त की थी। इसी दिन की और भी एक कथा है कि प्राचीन काल में श्रावणी पूर्णिमा के पावन दिन ऋषि-मुनि अपनी वार्षिक साधना की समाप्ति कर राजाओं के हाथ में राखियाँ बांधकर आशीर्वाद देते थे। जिस पवित्र भावना से राखी बांधी जाती है उसी उद्देश्य की पूर्ति करनी चाहिए। आजकल तो बाह्य आडम्बर बढ़ गया है। हम त्यौहारों के मूल महत्व को भूल गये हैं। आप ऐसा नहीं करें।

२० अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन सुबह को मीरा भूमि में

गीता मंदिर के निर्माण की नीव डालने के लिए पहले बहिनों ने नाम कीर्तन किया। साधु वासवाणी ने गीता मंदिर की नीव डालते हुए कहा कि यहाँ गीता मंदिर का निर्माण होगा। इस मंदिर में श्रीमद् भगवद् गीता के न केवल पाठ किये जायेंगे किन्तु गीता का गहन अभ्यास किया जायेगा। भगवद् गीता एक अमूल्य अमर ग्रन्थ है। अन्य ग्रन्थ-छास्त्र सत्पुरूषों, ऋषि मुनियों ने लिखे हैं। किन्तु भगवद् गीता भगवान श्री कृष्ण के मुख से प्रवाहित ज्ञान गर्भित वाणी है जो सदैव मानव मात्र का मार्गदर्शन करती रहेगी। गीता का ज्ञान न केवल श्री अर्जुन के लिए है किन्तु हम सब के लिए है। गीता हमें निष्काम कर्म करने के लिए, अपना अपना कर्तव्य पालन करने के लिए प्रेरित करती है।

संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज रसेश्वर श्री श्याम सुंदर के जन्मदिन आप प्रेम के सागर में डूब जायें। अर्थात् स्वयं को भूल कर श्री कृष्ण का ध्यान करें, उनकी मनोरम शबि अपने नयनों में समालें। श्री चैतन्य महाप्रभु की भाँति विस्मृत होकर श्री कृष्ण के गुण गान गाएं। गोपियों की भाँति रास करते करते कृष्ण रुप हो जाएं।

२ अक्तूबर संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज महात्मा गांधी की जयन्ती है। उन्होंने अपना सर्वस्व भारत माता के चरणों में समर्पित किया। वे निष्काम निष्ठावान निडर नेता के साथ साथ ईश्वर भक्त भी थे। उनका त्याग मय जीवन प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने भारतीय जनता को एकता के सूत्र में बाँधा। राष्ट्रीय एकता द्वारा ही आजादी सम्भव थी। उनके स्वतंत्र भारत का स्वप्न तो साकार हुआ है किन्तु भारत में कितनी न गरीबी है ! उनका राम राज्य का स्वप्न अब तक साकार नहीं हुआ है, क्यों कि स्वार्थ बढ़ गया है। जनता के पैसों का सद उपयोग नहीं हो रहा है। देश की एकता टूट रही है ! आज भारत को गाँधी जैसे निष्काम नेता की अत्यंत आवश्यकता है जो कौम की नैया पार लगाए।

२५ अक्तूबर संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज विजय दशमी के पावन दिन लोग अपने शुभ कार्यों का श्री गणेश करते हैं, नई दुकानों का शुभारंभ करते हैं। इसी

दिन कल कारखानों, वाहिनों व शस्त्रों की भी पूजा की जाती है। बंगाल में विशेषकर इस दिवस माता दुर्गा देवी की पूजा उपासना की जाती है। रावण पर प्रभु श्री राम की विजय का यह त्यौहार उल्हास के साथ मनाया जाता है। मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों आप भी राक्षसी वृत्तियों का दमन कर प्रभु श्रीराम की शरण लें, राम नाम का स्मरण श्रेष्ठ कर्म है। इसी उत्तम कर्म का आरंभ करें और बुरे विचार व बुरे संकल्पों को दमन करें।

१३ नवम्बर दिवाली के पावन दिन सुबह को दादा वासवाणी ने गरीबों को मिष्ठान के पाकेट व अन्न-धन की सहायता की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि चौदह वर्ष बन में रहने के पश्चात् आज के दिन प्रभु श्रीराम अयोध्या में पधारे। उनके आगमन की खुशी में दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है। चारों और दीपक जलाये जाते हैं, रात के समय लक्ष्मी की पूजा की जाती है। हम दीप जलाकर बाहर तो प्रकाश करते हैं किन्तु हमारे अन्तःकरण में अंधकार है। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप अपने मन में ज्ञान की, भक्ति की, प्रेम की ज्योति जगाएं तो प्रभु श्रीराम आपके मन मंदिर में प्रवेश कर आपको दिव्य दर्शन देंगे। शबरी जैसी प्यास अपने मन में पैदा करें। लक्ष्मी का भी सदुपयोग करें नहीं तो वह रुठ जायेगी। निर्धनों में धन बाँटें, अपनी खुशी बाँटने में ही आनंद है। २१ नवम्बर गोपष्टमी के दिन सुबह को दादा वासवाणी को कुर्सी पर बिठाकर टहलने के लिए ले गये और उन्हें काऊॅसिल हाल मैदान पर एक वृक्ष के नीचे बिठाया गया। दादाजी उसी समय गऊ माता के सम्बंध में बोल रहे थे तो अचानक वहाँ १०-१२ गैयाँ आ गईं। तत्काल ही दादाजी ने केले व गुड़ मंगवाकर अपने हाथों से गैयों को खिलाया और उन्हें प्रणाम किया।

संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि भगवान श्री कृष्ण को कई नामों से सम्बोधित किया जाता है, उन में से 'गोपाल' नाम का भी बड़ा महत्व है, गोपाल का अर्थ है गैयों की पालना करने वाला। आज के दिन ही श्री कृष्ण ने गैयाँ चराने का काम आरंभ किया। वे गुवालों के साथ गैयाँ चराने जाते थे। गाय में सब ही

देवताओं का निवास है। भगवान ने स्वयं गाय की सेवा की है, गाय के प्रति उनके मन में बड़ी श्रद्धा थी, किन्तु स्वतंत्र भारत में प्रति दिन हजारों गैयों को काटा मारा जाता है। महात्मा गांधी का गऊवध प्रतिबंध का स्वप्न अब तक साकार नहीं हुआ है।

२५ नवम्बर कार्तिक पूर्णिमा के पावन दिन साधु वासवाणी का जन्म दिन था। जन्मदिन के सम्बंध में २२ नवम्बर से उत्सव आरंभ हुए। २२ नवम्बर सुबह को मीरा सिन्धी माध्यम स्कूल द्वारा साधु वासवाणी का जन्मदिन उत्सव उनकी उपस्थिति में मनाया गया। श्री गंगाराम साजनदास ने कहा कि हम सब का सौभाग्य है कि प्रति दिन हमें दादा साधु वासवाणी का आशीर्वाद मिलता है, एवं उनका दर्शन होता है। उनकी ही प्रेरणा एवं आशीर्वाद से मीरा स्कूल आरंभ हुए। दो विद्यार्थियों ने भी साधु वासवाणी के सम्बंध में व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् साधु वासवाणी ने विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप प्रतिदिन अपनी दिनचर्या प्रभु प्रार्थना से प्रारंभ करें और सोते समय भी प्यारे प्रभु को याद करें। जैसे आप प्रेम से माता-पिता को पुकारते हैं, वैसे प्रभु को भी मधुर स्वर से पुकारें। माँ-बाप, घर के अन्य सम्बंधियों एवं अध्यापकों को सन्मान दें और उनकी आज्ञा का पालन करें तो उनके आशीर्वाद से आप उन्नति की शिखर पर पहुँच सकते हैं।

२३ नवम्बर सुबह को मीरा सत्संग हाल में जन्मदिन के उपलक्ष में श्री गुरू ग्रन्थ साहब का पाठ आरंभ किया गया। तत्पश्चात् मीरा प्राथमिक स्कूल के बच्चों ने जन्मदिन उत्सव मनाया। बालक - बालिकाओं ने तोतली मीठी भाषा में साधु वासवाणी को जन्मदिन बधाईयाँ दीं। दादा वासवाणीने उन्हें आशीर्वाद देते हुए चाकलेट एवं बिस्कूट के पाकेट दिये।

२४ नवम्बर मीरा कालेज की ओर से छात्राओं एवं प्राध्यापिकाओं ने दादाजी का जन्म दिन उत्सव मनाया। पहले कालेज के प्राचार्य श्री जशन वासवाणी ने व्याख्यान देते हुए कहा कि मेरी प्यारी छात्राएं ! आप सब का सौभाग्य है कि आप मीरा कालेज में अभ्यास करती हैं। यहाँ आपको न केवल पुस्तकीय ज्ञान दिया जाता

है किन्तु जीवन उपयोगी शिक्षा भी दी जाती है। प्यारे दादा साधु वासवाणी ने जिस महान उद्देश्य से यह विद्या मंदिर स्थापित किया, उसकी शान आपको रखनी है। दादाजी के आदर्शों व सिद्धांतों के अनुसार चलने से आपका और समाज का भविष्य उज्ज्वल होगा।

साधु वासवाणी ने छात्राओं एवं प्राध्यापिकाओं को मुस्कराते मुस्कराते आशीर्वाद दिया। उन्होंने सम्बोधित करते हुए कहा कि आपका जीवन और आप के पास जो कुछ भी है वह प्रभु की धरोहर है। इस लिए आप इस अमानत का सदुपयोग करें। मैं चाहता हूँ कि मीरा कालेज की एक एक छात्रा सीता, सती सावित्री, अनुसूया, माता मदालसा बनें। उसके जीवन में पवित्रा के सूर्य का उदय हो, ज्ञान का प्रकाश हो, चन्द्रमा की शीतलता हो, स्नेह, सहानुभूति, सेवा, सदाचार, सादगी सत्य संयम की सुरभि हो।

मीरा कालेज की छात्राओं एवं प्राध्यपिकाओं ने जन्मदिन सम्बंध जो कुछ माया एवं उपहार दादा वासवाणी को भेंट किये, दादाजी ने तत्काल वह माया एवं उपहार की वस्तुएं मीरा कालेज को लौटाते एक एक छात्रा और प्राध्यापिका को खर्ची दी।

२५ नवम्बर प्रभात को कुछ भक्तगण दादाजी को जन्मदिन बधाई देने के लिए उनकी कुटिया में आये। दादाजी ने मुस्कराते हुए सब को प्रणाम किया। सुबह १० बजे मीरा सत्संग हाल में वे पधारे, नाम कीर्तन के पश्चात् श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति हुई। साधु वासवाणी ने दरिद्रनारायण की सेवा की और लंगर प्रसादी हुई।

संध्याकालीन सत्संग में श्री गंगाराम साजनदास ने कहा कि दादाजी के आशीर्वाद से ब्रदर हुड की ओर से कई लोक-कल्याण के कार्य हो रहे हैं। दादा वासवाणी हमारे सच्चे मार्गदर्शक हैं। उनका जीवन अर्पणम् का जीवन है। उन्होंने लाखों लोगों के मन में दया व प्रेम की ज्योति जगाई है। देश-विदेश में प्रेमियों ने जन्मदिन के उपलक्ष में माया भेजी है। वह अब दादा वासवाणी को भेंट करते हैं।

दादा साधु वासवाणी ने तत्काल ही वह माया की भेंट ब्रदर हुड को सेवा कार्यों के लिए लौटा दी। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि गत तीन चार दिनों से आप लोगों ने मेरे जन्मदिन सम्बंध में विभिन्न

उत्सवों का आयोजन किया है, मेरी प्रशंसा की गई है। मैं तो तुच्छ हूँ यह सारी कृपा प्रभु की है। उस दीन-दयाल प्रभु के हम पर अन्नत उपकार हैं, किन्तु हम माया के परपँच में प्यारे प्रभु के उपकारों को भूल गये हैं , साँसारिक रसों के पीछे दौड़ दौड़ अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ व्यतीत करते हैं। गुरू महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं -:

जिन हरि हरि हरि रसु नाम न पाइआ ते भागहीण जम पासि।
जो सत्गुरू सरणि संगत नहीं आए, ध्रिग जीवे ध्रिग जीवासि ।।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! वह व्यक्ति भाग्यहीन है जिसने नाम का रसास्वादन नहीं किया। उसके जीवन व जीने की इच्छा को धिकार है जो नाम से विमुख है। मानव जीवन में ही नाम स्मरण सम्भव है। आप सत्गुरू की शरण लेकर, उसके द्वारा दिये हुए नाम का जाप करें। नाम चिन्तन में सच्चा आनंद है। रसेश्वर के रस में डूब जाएँ तो आपको अद्वितीय आनंद की उपलब्धि होगी, नहीं तो मृग की भाँति भटक भटक कर मर जायेंगे। जीवन उसका सफल है जो अपने अमूल्य श्वास स्मरण-सेवा में सफल करता है । दीन-दुखियों, बीमारों अपाहिजों, पशु पक्षियों की सेवा भी प्रभु की भक्ति है। आप सेवा व स्मरण में जीवन सफल बनाएँ प्रभु के गुण गाएं।

१० दिसम्बर गीता जयन्ती के पावन दिन सुबह को १० बजे मीरा सत्संग हाल में श्रीमद् भगवद् गीता का पाठ किया गया, तत्पश्चात् दादाजी ने हवनयज्ञ में आहुति अर्पित की। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्णने श्री अर्जुन को माध्यम बनाकर हम सब को जीवन उपयोगी और मोक्ष की प्राप्ति के लिए ज्ञान दिया है। किसी भी धर्म का व्यक्ति इसी महान ग्रन्थ का अभ्यास कर उसकी शिक्षाएं ग्रहण कर अपना जीवन सफल बना सकता है। विश्व के महान दार्शनिकों एवं विद्वानों ने इस अमूल्य कृति का अध्ययन कर अपनी अपनी भाषा में उसका अनुवाद कर या टीकाएँ लिखकर गीता में समाहित ज्ञान का प्रतिपादन किया है। यूनान के महान दार्शनिक अरस्तू ने भी गीता को बड़ा महत्व दिया। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप भी श्रद्धा के साथ भगवद् गीता का पाठ करें, अभ्यास करें और उसकी शिक्षाएं जीवन में

उतारें तो आपका कल्याण होगा। १ जनवरी १९६४ संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने नूतन वर्ष के सम्बंध में संदेश देते हुए कहा कि आप दूसरों के दोषों को नहीं देखें, आप दूसरों के गुण ग्रहण करें। संत तुलसीदासजी महाराज भी फरमाते हैं -:

जड़ चेतन गुन दोषमय विस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥

हंस को यदि दूध व पानी मिलाकर पीने के लिए दिया जाये तो वह उसमें से दूध पी लेगा और पानी छोड़ देगा। हम भी सभी प्राणियों से कोई न कोई गुण ग्रहण करें। अवगुण व्यक्ति की अपनी जायदाद है, हमारा उससे कोई सम्बंध नहीं। किसी की निजी संपति या जायदाद में हस्तक्षेप करना उचित नहीं है। हम किसी व्यक्ति के निजी बगीचे में प्रवेश नहीं कर सकते, किन्तु जनता के बगीचे में टहल सकते हैं। गुण भी सर्व साधारण जनता रूपी फुलवाड़ी के फूल हैं, उनकी सुरभि आसानी से ले सकते हैं। ऐसे तो प्रत्येक में गुण व अवगुण हैं। आप गुण-ग्राही बनें। आप प्रकृति की पुस्तक पढ़कर कई गुण प्राप्त कर सकते हैं, वृक्षों से, फूलों से, नदी से, चाँद व सूर्य से भी शिक्षा प्राप्त कर जीवन बना सकते हैं।

१२ जनवरी दादा वासवाणी ने प्रवचन करते हूए कहा कि हम सांसारिक आकर्षणों में इतने खो जाते हैं कि अपने मूल कर्तव्य को भूल जाते हैं। हम सत् मार्ग को छोड़कर असत्य के मार्ग पर चलकर जीवन व्यर्थ गंवाते हैं। अनित्य पदार्थों व पदके पीछे श्वास गंवाते हैं! सिकन्दर बादशाह ने ईरान पर विजय प्राप्त की, युद्ध में ईरान के बादशाह व उसका बेटा भी मर गया। एक दिन सिकन्दर शान्ति में बैठे थे, उसी समय उसके मन में विचार उत्पन्न होता है, कि ईरान का राज्य लौटा दूँ, किन्तु यह राज्य किसे लौटा दूँ ? बादशाह व उसका बेटा तो मर गया। सिकन्दर ईरान के बादशाह के निकटतम वारिस की तलाश करता है, जिसे वह ईरान का राज्य लौटा दे। उसे पता पड़ता है कि बादशाह का एक निकट का सम्बंधी क़बरस्तान में रहता है। सिकन्दर उसके पास आकर कहता है, कि तुम ईरान के बादशाह के निकटतम सम्बंधी हो, मैं तुम्हें ईरान के तखत पर बिठाना चाहता हूँ। उस व्यक्ति ने कहा,

बादशाह सलामत ! मैं यहाँ धनवानों व निर्धनों, बड़े लोगों और निम्न लोगों की हड्डियों की खोज कर रहा हूँ, कि उन में क्या अंतर है। दोनों की हड्डियाँ एक सरीकी हैं, उन में कोई फर्क़ नहीं है। कोई छोटा बड़ा नहीं।

यहाँ मैं देखता हूँ कि अमीर हो या फकीर, गरीब हो या शाहूकार सब मिट्टी में मिट्टी हो जाते हैं, घमंड किस बात का ! मैं ईरान के राज्य को क्या करुँगा !

यह दुनिया सारी है फानी !
राह रुहानी है लासानी।

बादशाह सलामत ! आप मुझे ईरान का शासन लौटा देना चाहते हैं, मैं उसे क्या करुँगा !

मेरे भाइयो व बहिनों ! हम रात दीन साँसारिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए भटकते हैं, सत्य की खोजना करना भूल गये हैं ! माया के आकर्षणों में मालिक विसर गया है। ऐसा नहीं करें जिस परमात्मा ने हमें यह अमूल्य जीवन दिया है, उसको कभी न भूलें, सदैव उसका स्मरण करें।

स्मर स्मर सुख पावउ
नाम स्मरण से ही आपको सुख की प्राप्ति होगी।

२० जनवरी सुबह को साधु वासवाणी मीरा भूमि में आमली के वृक्ष के नीचे बैठे थे। कुछ प्रेमी भी वहाँ बैठे थे। दादा वासवाणी उसी समय ज्ञान गोष्ठी कर रहे थे। मैं भी उसी समय उनके दर्शन व आशीर्वाद के लिए वहाँ गया। दादाजी को नतमस्तक प्रणाम किया। दादा वासवाणी ने एक हरे कार्ड पर मुझे निम्न संदेश सिन्धी भाषा में लिखकर दिया। प्रस्तुत है उसका हिन्दी अनुवाद -

मैं कौन जो लिखकर दूँ ? तुम दयाल आशा !
करो दया इस गरीब पर ,
तेरे गीतों में गाती है आत्मा, जिसकी आवाज़ है आशा !
सुनकर तेरे शब्द मधु से मधुर
होते हैं दुख दूर क्लेश सब विनाशा !
जाते हो, फिर लौट के आना, शीघ्र लौटना !

दिल याद करता है याद तुम कौन हो ? प्रिय मेरे प्रियतम !
आकर दो दुखी दिलों को सांतवना ! तुम्हें क्या दूँ !
तुम्हें पहनाऊँ नम्रता की माला !
तुम पर आशीर्वाद चमक रहा है !
जाग्रत् करो सोए भारत को, देकर स्नेह निर्मल निहार !

२ फरवरी दादा वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भगवान भक्त वत्सल है। वह समर्पित भक्तों के लिए क्या क्या नहीं करता ! आप भी एक बार प्रभु के होके देखें। भगवान स्वयं कहते हैं -:

जहाँ भक्त मेरो पग धरे, तहाँ धरुँ मैं हाथ।
आगे पीछे मैं फिरुँ कभी न छोड़ूं साथ।

संसार के सगे सम्बंधी स्वार्थ के होते हैं और वे सदैव के लिए साथ भी नहीं दे सकते किन्तु परमपिता परमात्मा यत्र तत्र, इस मृत्युलोक और परलोक में हमारा साथ देता है। ऐसे दयालु दीनानाथ प्रभु को हम भुलाकर माया के पीछे और साँसारिक सम्बंधियों के लिए नाना प्रकार के पाप कर्म करते हैं। उनकी आसक्ति में फंस कर हम प्रभु को भुला बैठे हैं। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप सर्व शक्तिवान प्रभु की समर्पित भाव से शरण लें, तो वह सदैव आपकी संभाल व सुरक्षा करेगा।

८ मार्च मीरा स्कूल के विद्यार्थी एस. एस. सी. की परीक्षा देने के पूर्व साधु वासवाणी का आशीर्वाद लेने के लिए उनके पास आये। उन्होंने विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हूए कहा कि आजकल अधिकतर विद्यार्थियों में अपने शिक्षकों के प्रति श्रद्धा नहीं है। 'आचार्य देवो भव।' आचार्य को, अपने माता पिता और बड़ों को जो सन्मान देना चाहिए, आजकल नई पीढ़ी वह सन्मान नहीं देती।

'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्'

जिसके मन में प्रभु के प्रति, अपने अध्यापकों, माता पिता व बड़ो के प्रति श्रद्धा है, वह व्यक्ति सच्चा ज्ञान प्राप्त कर उन्नति कर सकता है। मेरे प्यारे विद्यार्थियो ! आप अपने गुरूजनों, माता पिता, भगवान व बड़ों के प्रति श्रद्धा धारण करें तो आपको अवश्य सफलता मिलेगी।

१० मार्च होली के दिन साधु वासवाणी ने उपदेश देते हुए

कहा कि होली भक्त प्रहलाद की याद दिलाती है। भक्त प्रहलाद के पिता हिरण्यकशिप ने उसे नष्ट करने के लिए कई प्रयास किए किन्तु वह विफल हुआ। भक्त प्रहलाद भगवान विष्णु का भक्त था, इस लिए उसके पिताश्री उसे खत्म करना चाहते थे। यद्यपि भक्त प्रहलाद बालक था किन्तु उसका प्रभु में पूर्ण विश्वास था। असहनीय कष्ट झेलते हुए भी उसका विश्वास नहीं डगमगाया। प्रभु ने नरसिंह अवतार धारण कर उसकी सुरक्षा की। हम भी भक्त प्रहलाद की भाँति परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखकर उसकी भक्ति करें तो वे हमारी सदैव रक्षा करेंगे।

४ अप्रैल राम नवमी के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ और नाम कीर्तन हुआ। दादा वासवाणी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की। संध्या को उन्होंने रामनवमी के सम्बंध में उपदेश देते हुए कहा कि आज के दिन प्रभु श्रीराम ने अवतार धारण किया। उसने आसुरी शक्तियों का विनाश कर राम राज्य की स्थापना की। वे मर्यादा पुरूषोत्तम थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उसने पूज्य पिताश्री की आज्ञा श्रोधार्य कर १४ वर्ष जंगल में बिताये। आज कल संतान माता पिता की आज्ञा का पालन तो नहीं करती किन्तु उलंघन करती है। मेरे प्यारे भाईयो व बहिनों ! आप भी प्रभु श्रीराम के आदर्शों को अपनाएं, अपना जीवन राममय बनाएं।

२० मई सुबह को साधु टी.एल वासवाणी प्यारे श्री जशन, बहिन शान्ति एवं अन्य प्रेमियों के साथ बंद गार्डन की ओर टहलने गये। वे कुछ समय नदी के किनारे लहरों का दृश्य देखकर ध्यान मुद्रा में आ गए। वहाँ उन्होंने नावकों को खर्ची व प्रसाद दिया।

२१ मई बुद्ध पूर्णिमा के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में बुद्ध जयन्ती के उपलक्ष में हवन यज्ञ किया गया। दादा वासवाणी ने उस में आहुर्ति अर्पित की। तत्पश्चात् उन्होंने दीन दुखियों की सेवा की और कुछ पक्षयों को मुक्त कर आकाश में उड़ा दिया। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने उपदेश देते हुए कहा कि श्री गौतम बुद्ध करुणा व अहिंसा के अवतार थे। उन्होंने प्रेम द्वारा हार्दिक परिवर्तन लाया। जो शासक तलवार के बल पर अपने राज्य का विस्तार करने के लिए दूसरे शासकों पर आक्रमण करते थे, श्री गौतम बुद्ध ने उन्हें नई

दिशा दिखाकर अहिंसा व दया का वातावरण उत्पन्न किया। अंगुलीमार डाकू जिसने कई लोगों की अंगुलियाँ काटकर लूट मार व आतंक उत्पन्न किया था, श्री बुद्ध ने ऐसे दुष्ट प्रवृति वाले व्यक्ति को सत् उपदेश देकर उसके जीवन में परिवर्तन लाया। जिस अंगुलीमार डाकू ने कई लोगों का खून किया वह श्री गौतम बुद्ध के उपदेश से सत्मार्ग पर चलने लगा।

आज हम गौतम बुद्ध के मूल सिद्धांतों को भूल गये हैं। उनके अष्ट मार्ग को अपनाएं जीवन सफल बनाएं।

२७ मई दु:खद समाचार मिला कि भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने जीवन लीला समाप्त की। यह समाचार सुनकर दादा वासवाणी ने उनकी आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की। २८ मई संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने पंडित जवाहरलाल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हूए कहा कि जीवन नश्वर है, किसी को पता नहीं कि काल का बुलावा कब आता है, परसों वे देहरादून से लौटे, स्वस्थ थे, कल उनकी मृत्यु हो गई। वे महात्मा गांधी के अनुयाई एवं समर्पित सेवक थे। उन्होंने भारत के नवनिर्माण के लिए पंच वर्षीय योजनाएं बनाई विश्व को पंचशील का संदेश दिया, विश्व-शान्ति के लिए प्रयास किया। राष्ट्र की उन्नति के लिए उन्होंने दिन-रात निष्ठा से काम किया। देश के आजादी के आंदोलन में भी उन्होंने सक्रय भाग लिया। कष्टों का सामना करते वे फूलों की भाँति मुस्कराते रहे। वे नहीं केवल भारत के निष्काम, निष्ठावान नेता थे किन्तु उन्होंने विश्व को नई दिशा दिखाई। वे सदैव अमर रहेंगे।

पुणे विश्व विद्यालय की ओर से मीरा कालेज को एक पत्र आया कि शीघ्र ही २५ हजार रुपये कालेज फंड के लिए जमा करवाएं ?श्री गंगाराम ने यह बात दादा वासवाणी को बताते हुए वह पत्र उन्हें दिया। दादाजी ने पत्र पढ़कर श्री जशन को दिया। दूसरे दिन एक अज्ञात व्यक्ति साधु वासवाणी से मिलने के लिए आया, वह उनसे अकेला मिलना चाहता था। श्री जशनजी उसे दादाजी की कुटिया में ले गये। उसी मनुष्य ने दादाजी को प्रणाम कर नोटों के बंडल उनके चरणों में अर्पित किये। दादाजी ने कहा "प्यारे ! इतने पैसे मैं क्या

करूँगा ?" उस प्रेमी ने कहा कि आप जिस कार्य में ये पैसे खर्च करें आप की इच्छा, मैंने आपको यह माया अर्पित की है। दादाजी ने उसे आशीर्वाद व प्रसाद दिया। दादा वासवाणी ने तत्काल ही वे पैसे प्यारे श्री जशन को गिनती करने के लिए दे दिये। श्री जशन ने पैसे गिनती करके कहा, दादाजी २५ हजार रूपये हैं। उसी समय दादा वासवाणी ने मुस्कराते हुए श्री जशन से कहा कि कल पुणे विश्व विद्यालय से २५ हजार रूपये भरने के लिए पत्र आया। प्रभु ने वह व्यवस्था कर दी। तुम ये पैसे कालेज फंड के लिए रखो। परमात्मा कितने न दयालु हैं!

२० जून मीरा कालेज के नये सत्र का प्रारंभ हुआ। सुबह को दादा वासवाणी प्रार्थना हाल में पधारे, सभी छात्राओं व प्राध्यापिकाओं ने उन्हें प्रणाम किया और उन्होंने सब को मुस्कराते मुस्कराते आशीर्वाद दिया और कहा कि आप बड़ी बड़ी उपाधियाँ प्राप्त करें किन्तु कभी घमंड नहीं करें। विद्या विनम्रता सिखाती है। जो भी महापुरूष, बुद्धिमान होते हैं वे अपनी विद्वता, पद व वैभव का अभिमान नहीं करते। कवि रहीम भी फरमाते हैं -:

रहिमन कबहूँ बड़ेन के, नांहि गर्व कर लेस।
भार धरे संसार को, तऊ कहावत सेस॥

जो सचमुच बड़े लोग हैं, उन्हें घमंड नहीं होता। सारी धरती का बोझ उठाने वाले शेषनांग ने अपना नाम शेष अर्थात् बचा हुआ रखा। मेरी प्यारी बालिकाओ आप सदैव विनम्र बनें।

प्यारे भाई जशन का भ्राता श्री हरिचू वासवाणी प्रतिभाशाली प्रवीण इंजनेयर था। वह लारसनटोबो में उच्च पद पर था। चिंचवड-पिंपरी में इस कम्पनी की नई इमारत बन रही थी। २४ जून श्री हरिचू उस नई इमारत की उपर से देखरेख कर रहा था तब उपर से उसका पाँव खिसक गया और वह नीचे आकर गिर पड़ा उसकी स्थिति गंभीर हो गई। उपचार के लिए तत्काल ही उसे सासून अस्पताल पुणे में लाया गया, किन्तु प्राण पक्षी उड़ गया।यह दुःखद समाचार सुनकर दादा साधु वासवाणी, भाई जशन, बहिन हरी देवी, माता कृष्णा, एवं अन्य प्रेमी तत्काल ही सासून अस्पताल में आये। साधु वासवाणी ने आँखे मूंद कर परमात्मा से श्री हरिचू की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

२५ जून प्यारे हरिचु का स्थूल शरीर मीरा भूमि में लाया गया। साधु वासवाणी ने अश्रुयुक्त आँखों से प्रभु को प्रार्थना की। संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने हृदय स्पर्शी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! हम सब का प्यारा हरिचू अचानक ही इस संसार से चल बसा। प्यारा हरिचू बड़ा इंजनेयर था, किन्तु कितना न विनम्र था। वह प्यारे जशन व बहिन हरी के साथ मेरी कुटिया में आकर बातें करता था। वह बुद्धिमान था किन्तु सरलचित्त व सादगी की तस्वीर था। वह विदेश में सात वर्ष रहा फिर भी विदेशी वातावरण से मुक्त रहा। उसने उच्च आदर्शों के अनुसार जीवन बिताया। कल ही प्यारा हरिचू हमारे पास आया और मृत्यु से एक घंटा पूर्व उसने प्यारे भाई जशन से टेलीफोन पर बातचीत की, किसी को पता नहीं था कि हमारा प्यारा हरिचू ऐसा चला जायेगा। संत कबीर जीवन की नश्वरता का वर्णन करते हूए कहते हैं -:

पानी केरा बुद् बुदा इस मानुस की जात।
देखत ही छुप जायेगा तारा ज्यों प्रभात ।।

हम सब को भी अचानक एक दिन अपने वतन सचखंड चलना है। वहाँ चलने के पहले नाम की पूंजी संग्रह करें। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज भी फरमाते हैं कि इसी लंबी यात्रा में नाम की पूंजी काम आयेगी। उस अंधकारमय पथ पर नाम का प्रकाश ही रास्ता बतायेगा। अर्थात् नाम के बिना परलोक की यात्रा अति कठिन है।

जिह मार्ग के गने जाहि न कोसा ,
हरि का नाम ऊहा संग तो सा।
जिस पैडै महा अंध गुबारा ,
हरि का नाम संग उजीआरा।

२४ जुलाई गुरू पूणिर्मा के पावन दिन सबेरे कुछ प्रेमी दादा वासवाणी की कुटिया में आए और उन्हें प्रणाम करते उनके चरणों में श्रीफल व मिश्री भेट रखी। दादाजी ने सब को मुस्कराते मुस्कराते आशीर्वाद दिया। फिर सुबह दस बजे मीरा सत्संग हाल में बहिनों ने गुरू महिमा के गीत गाये, उसी समय दादा वासवाणी ध्यान मुद्रा में बैठे रहे। कई प्रेमियों ने उनके श्री चरणों में गुरू दक्षणा अर्पित की। उन्होंने

उसी समय आशीर्वाद वचन बोलते हुए कहा कि जीवन में गुरू की अत्यत आवश्यकता है। गुरू निष्काम व ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए। गुरू-कृपा द्वारा ही आप भवसागर से पार हो सकते हैं। सत्गुरू प्रसन्न तो प्रभु प्रसन्न। हमारे धार्मिक शास्त्रों में भी गुरू का बड़ा महत्व बताया गया हैं। संत ज्ञानेश्वर गुरू की महिमा प्रतिपादित करते हुए कहते हैं -:

दुनिया तजकर खाक रमाई जाकर बैठे वन में ।
खेचर मुदिरा वज्रासन मां ध्यान धरत है मन में ।
तीर्थ करके उम्मर खोई जागे जुगति मो सारी
हुक्म निवृत्ति को तिनके ऊपर जाना ।
सत्गुरू की कृपा भई जब तब आपहि आप पछाना ।।

ध्यान,आसन,तीर्थ और पुस्तकीय ज्ञान से आत्म स्वरूप की पहचान नहीं होगी । जब सत्गुरु की अनुकम्पा होगी तब जीव को आत्म साक्षात्कार होगा।

प्रेमियो! श्रद्धा व विश्वास से गुरू की सेवा करें। उनकी आज्ञा श्रोधार्य करें तो आपका कल्याण होगा, आपकी जीवन यात्रा सुखद व सफल होगी।

२ अगस्त भाऊ श्री जशन वासवाणी का जन्मदिन था, किन्तु पाँच सप्ताह पूर्व अपने अनुज श्री हरिचू के दुःखद देहांत के कारण श्रीजशनजी शान्ति में रहे। सुबह या दुपहर को कोई कार्यक्रम नहीं रखा गया। संध्याकालीन सत्संग में केवल दादा साधु टी-एल वासवाणी ने श्री जशन वासवाणी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि प्यारे जशन के मन में दया व सेवा की भावना भरी हुई है। वह दूसरों की पीड़ा अपनी पीड़ा समझकर उसे दूर करने का प्रयास करता है। वह ठंडी की मौसम में अर्ध रात्री को कंबल लेकर रास्ते में सोए निराश्रय लोगों के ऊपर कंबल डालता है। एक बार मैं टहलते टहलते बंद गार्डन गया। मैं वहाँ नदी के किनारे लहरों के दृश्य देख रहा था। उसी समय प्यारे जशन ने देखा कि एक मछुआ के हाथ में जाल था और उसी जाल में कई मछलियाँ फंसी हुई थीं। प्यारा जशन यह दृश्य देखकर द्रवित हुआ। उसने मछुए को पैसे देकर मछलियों को मुक्त कर नदी में डाल दिया। मछलियों को नया जीवन मिल गया। इसके मन में सभी प्राणियों के

प्रति सहानुभूति, स्नेह व करुणा की भावना है। काश हम भी दीन दुखियों पशु पक्षियों के सहायक व सेवक बनें।

२२ अगस्त जन्मष्टमी के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में नाम कीर्तन व हवन यज्ञ हुआ। साधु वासवाणी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की। तत्पश्चात् उन्होंने दरिद्रनारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने भगवान श्री कृष्ण की अद्‌भुत लीलाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि दुष्टों का दमन करने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने आज के दिन जेल में जन्म लिया। उन्होंने कंस एवं राक्षसी प्रवृत्ति वाले अन्य अत्याचारियों को मिट्टी में मिला दिया, धर्म की रक्षा की। उन्होंने स्वयं गीता में कहा है -:

परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

हम भी प्रभु से प्रार्थना करें कि हमारे मन में जो आसुरी विचार धारा है, उसका आकर दमन करें। हम तेरा ही निरंत्र ध्यान करें। आप रसेश्वर हैं, हमारे मन में भी भक्तिरस का संचार करें। आपने जैसे श्री अर्जुन के मोह रुपी अज्ञान - अंधकार को दूर किया वैसे हमारे मन में जो अविद्या-अभिमान का अंधकार है, उसका विनाश कर मन मंदिर में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करें। मेरे भाइयो व बहिनों आज सारी रात भगवान श्याम सुंदर का ध्यान करें, कीर्तन करें।

८ सितम्बर श्री गणेश उत्सव आरंभ हुआ। उसी दिन दादाजी ने उपदेश देते हुए कहा कि श्री गणेश देवता भगवान शंकर व माता पार्वती की संतान हैं। प्रत्येक शुभ मंगल कार्यारंभ करने के पूर्व उसकी पूजा उपासना की जाती है। आज के दिन न केवल महाराष्ट्र में किन्तु भारत के विभिन्न प्राँतों में श्री गणेश की मूर्तियाँ स्थापित कर उसकी श्रद्धा व प्रेम के साथ पूजा उपासना की जाती है। अथर्ववेद में श्री गणेश की महिमा गाई गई है -:

'ॐ नमस्ते गणपतये' ॐ श्री गणेशाय नम : मंत्र उच्चारण करने से लाभ प्राप्त होता है, कष्ट क्लेश दुख-दर्द दूर होते हैं। अथर्ववेद में श्री गणेश को ब्रह्म स्वरूप माना गया हैं -:

'त्वमेवं प्रत्यक्षं ब्रह्मसि'

भगवान श्री गणेश की पूजा उपासना करने से कार्य निर्विघ्न समाप्त होते हैं। आप श्रद्धा व विश्वास से इन दिनों श्री गणेश भगवान के गुण-गान गाँए, पूजा व उपासना करें तो आप को फल की प्राप्ति होगी।

१० अक्तूबर विजयदशमी के दिन सुबह १० बजे मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ हुआ। दादा वासवाणी ने यज्ञ में आहुति अर्पित करते हुए कहा कि आज के दिन प्रभु श्री राम ने रावण एवं अन्य आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त की। हम भी अपने अहंकार को यज्ञ अग्नि में अर्पित कर मन रूपी सीता को प्राप्त करें। प्रति वर्ष आज के संध्या को रावण का दहन किया जाता है , फटाकड़े जलाए जाते हैं, शस्त्रों की पूजा की जाती है, किन्तु हम विकारों, बुरे विचारों व बुरे संकल्पों को भस्म करने का कोई प्रयास नहीं करते हैं। सच्ची विजय दशमी तो तब होगी जब हम अपने मन को जीत लें।

मन जीते जग जीत।

३ नवम्बर दिवाली के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में बहिनों ने प्रभु श्री राम के महिमा के गीत गाए, तत्पश्चात् साधु वासवाणी ने दीन-दुखियों को मिठाई के पाकेट एवं आर्थिक सहायता देते स्नेह दिया। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि दिवाली का त्यौहार खुशी का त्यौहार है। प्रभु श्रीराम चौदह वर्ष जंगल में बिताकर रावण एवं अन्य राक्षसी प्रवृत्ति वाले दुष्टों-अत्याचारियों का दमन कर जिस दिन अपनी राज्यधानी अयोध्या में लौटकर आये उसी दिन उनके आगमन के उपलक्ष में अयोध्या को दीपों से जगमगाया गया। इस लिए उस दिन को दिवाली के दिन से सम्बोधित किया जाता है। अयोध्या की जनता के लिए वह दिन बड़े उल्हास का था। उन्होंने एक दूसरों में मिठाइयाँ बाँटी। यह दिन अब न केवल भारत में किन्तु जहाँ भी भारतवासी रहते हैं, वहाँ यह त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। सच्ची दिवाली तो तब है जब हमारे मन मंदिर में प्रभु श्री राम पधारेंगे। अब हमारे मन में अज्ञान का अंधेरा है,घृणा का राज्य है, प्रभु हमारे पास कैसे आयेंगे? प्रभु श्रीराम तो वहाँ पधारेंगे जहाँ ज्ञान व प्रेम के दीप प्रज्वलित होंगे। मेरे

प्यारे, आप अपने भीतर प्रेम की, ज्ञान की ज्योति जगाएं तो आपको सर्वत्र सदैव प्रभु श्रीराम के दर्शन होंगे। दीन-दुखी भी प्रभु के रूप हैं, आप उनके साथ दिवाली मनाएं। दिवाली के दिन आप किसी अनाथ आश्रम, अस्पताल,अपाहिज घर में चले जाइये, वहाँ अपाहिजों, अनाथों, बीमारों को अपने हाथों से मिठाई खिलाएं, फिर आप विचत्र आनंद का अनुभव करेंगे। आपको ये त्यौहार केवल मित्रों के साथ नहीं किन्तु दीन-दुखियों के साथ मनाने चाहिए। देने में ही, खुशी है बाँटने में ही त्यौहार की सार्थकता है।

१२ नवम्बर गोपष्टमी के पावन दिन सुबह को १० बजे साधु वासवाणी को कुर्सी पर बिठाकर नीचे लाया गया। मीरा भूमि में पहले ही गऊ माताओं की व्यवस्था की गई थी। दादा वासवाणी ने उन्हें अपने हाथों से गुड़ केले एवं अन्य फल खिलाए और उन्हें नम्रता पूर्वक प्रणाम किया। दादाजी श्री कृष्ण भक्त थे। उनके मन में गाय के प्रति अगाध श्रद्धा थी।

संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आज गोपष्टमी के दिन हम लोग गाय की पूजा उपासना करते हैं, यह पूजा उपासना हमें न केवल गोपष्टमी के दिन करनी चाहिए किन्तु सदैव गाय की श्रद्धा से पूजा उपासना करनी चाहिए। गाय को श्री कृष्ण रुप समझकर उसकी पूजा व सेवा करें। गाय का निरादर भगवान श्याम का निरादर है। हमारे धार्मिक शास्त्रों में गाय की बड़ी महिमा गाई गई है। गऊ सेवा से बल-बुद्धि, अन्न-धन की वृद्धि होती है, शारीरिक व मानसिक कष्टों का निवारण होता है। आप श्रद्धा से गाय की सेवा व पूजा करें।

१५ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन हिन्दू तिथि के अनुसार दादा साधु वासवाणी का जन्मदिन था। उसी दिन उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, इस लिए उनकी कुटिया में ही प्रेमियों ने उनका जन्मदिन मनाया। बहिनों ने गुरूवाणी का निम्न भजन बड़े उत्साह के साथ गाया।

गाउ गाउ री दुल्हनी मंगला चार ,
मेरे गृह आये राजा राम भतार।

दादाजी ने कृष्ण कुमारी के साथ जन्मदिन केक काटा और प्रेमियों ने तालियाँ बजाते बजाते उन्हें जन्मदिन बधाईयाँ दी। उन्होंने मुस्कराते मुस्कराते आगुंतक प्रेमियों को आशीर्वाद दिया। १९ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज के जन्मदिन सम्बंध में सुबह को मीरा सत्संग हाल में सुबह को बहिनों ने नाम कीर्तन किया। दादाजी भी सत्संग में पधारे। श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के पश्चात् साधु वासवाणी ने मोदी खाना आरंभ किया। उन्होंने गरीबों को चावल दाल, गेहू एवं अन्य खाद्य पदार्थ मुफ्त दिये। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने श्री गुरू नानकदेव महाराज के जीवन एवं वाणी के सम्बंध में प्रवचन करते हुए कहा कि उन्होंने लाखों लोगों को अज्ञान की नींद से जाग्रत् करते हुए नाम का अमृत पिलाया। उनकी अमृतवाणी का अभ्यास व मनन करने से आनंद की उपलब्धि होती है। श्री गुरू नानकदेव महाराज ने नाम का प्रचार व प्रसार करने के लिए भाई बालो व मरदाना के साथ कितना न भ्रमण किया। वे स्वयं भी एकांत में बैठकर नामचिन्तन करते थे। उन्होंने अपनी वाणी में एक ब्रह्म की सत्ता प्रतिपादित की है -:

सोई साई सदा सच साहिब साचा साची नाई।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिन रचाई।।

श्री गुरू नानकजी फरमाते हैं कि केवल एक ब्रह्म ही सदैव सत्य है, उसका नाम ही साचा है। जिस परम पिता परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना की है। वह अब भी है और सदैव रहेगा। मेरे भाइयो व बहिनों ऐसे परमात्मा से स्नेह के सम्बंध जोड़े जगत् के नश्वर पदार्थों में असक्ति नहीं रखें।

२३ नवम्बर मीरा कालेज की ओर से साधु वासवाणी का जन्मदिन मनाया गया। प्राचार्य श्री जे.पी.वासवाणी ने दादा साधु वासवाणी के गुणों का वर्णन करते हुआ कहा कि वे महान संत, आध्यात्मिक मार्गदर्शक उच्च कोटि के वरिष्ठ विद्वान, शिक्षा शास्त्री, दीन दुखियों के सेवक हैं। उनके आशीर्वाद से ही मीरा विद्यालय एवं मीरा कालेज आरंभ हुए। मेरे प्यारी छात्राओ ! जिस आदर्श से दादाजी ने ये विद्यामंदिर स्थापित किये हैं, आप उस आदर्श को अपनाएँ।

पुस्तकों की शिक्षा के साथ साथ मानवीय गुण अपनाएं, अपने जीवन में दया व प्रेम की ज्योति जगाएं।

मीरा कालेज की छात्राओं व प्राध्यापिकाओं ने दादा वासवाणी से जन्मदिन केक कटवाया। दादाजी ने मुस्कराते, हाथ जोड़ते सब को आशीर्वाद दिया। २४ नवम्बर मीरा स्कूल की ओर से दादाजी का जन्मदिन मनाया गया। दादा वासवाणी ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए प्रसाद दिया। विद्यार्थियों ने दादाजी को जन्मदिन बधाईयाँ देते हुए ख़ूब तालियाँ बजाई।

२५ नवम्बर साधु वासवाणी के जन्मदिन सम्बंध में सबेरे कई प्रेमी उनकी कुटिया में आये। उन्होंने दादाजी को नतमस्तक होकर प्रणाम किया और उन्हें जन्मदिन उपलक्ष में बधाईयाँ दी। सुबह १० बजे मीरा सत्संग हाल में शास्त्रों से पाठ किया गया और श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति की गई। तत्पश्चात् दादा वासवाणी ने दरिद्रनारायण की सेवा की।

संध्याकालीन सत्संग में श्री गंगाराम साजनदास ने कहा कि दादा साधु वासवाणी की असीम अनुकम्पा से अनेक लोक कल्याण के कार्य हो रहे हैं। वे करुणा व नम्रता के अवतार हैं। श्री होतचन्द आडवाणी ने दादा साधु वासवाणी को पुष्पांजलि अर्पित की। दयाल आशा ने साधु वासवाणी के सम्बंध में लिखी कविता सचित्र उन्हें भेट की। देश-विदेश से प्रेमियों ने जन्मदिन के सम्बंध में जो माया की भेट भेजी थी, वह दादाजी के चरणों में समर्पित की गई। दादा वासवाणी ने तत्काल ही वह माया की भेट सेवा कार्यों के लिए श्री गंगाराम को लौटा दी।

साधु वासवाणी ने उपदेश करते हुए कहा कि मेरे भाइयो व बहिनों ! आप मुझे जो स्नेह व सन्मान दे रहे हैं, यह आपकी योग्यता है। आप गत् तीन दिनों से मेरा जन्मदिन उत्सव उत्साह के साथ मना रहे हैं, इसके लिए मैं सब का आभारी हूँ। मैं बड़ा आभारी उस प्रभु का हूँ जिसने मुझे यह मानुषतन दिया है। हमें यह मनुष्य जीवन नाम स्मरण व दीन दुखियों की सेवा करने के लिए मिला है। हम साँसारिक रसों में इतने रसासक्त हो गये हैं कि प्यारे प्रभु को भूल गये हैं। श्री गुरू

नानकदेव महाराज फरमाते हैं -:

जिस मुखि नाम न उचरहि बिन नावै रस खाहि।
नानक एवै जाणए, तितु मुखि थुकाँ पाहि।।

जो मनुष्य नाम का उच्चारण नहीं करता है, विना नाम लिए रसमय पदार्थ खाता है, वह व्यक्ति समझो थूकें खा रहा है, उसकी निंदा होती है। जिसने नाम रस लिया उसने सब कुछ किया। जगत् के पदार्थ व सम्बंधियों को भूलें किन्तु नाम को कभी नहीं भूलें।

राम नाम गाइ गाइ जाना है अकेला।
राम नाम नूरी गाइ, यह घड़ी है वेला।।

१३ दिसम्बर मीरा अंग्रेजी माध्यम स्कूल का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। श्री वुडलैंड कीलर इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे। वे अंतर्राष्ट्रीय निरामिष कांग्रेस के अध्यक्ष थे। इसी उत्सव में पहले श्री गंगाराम साजनदास ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। प्रधानाध्यपिका ईश्वरी मलाणी ने स्वागत किया। दादा साधु वासवाणी ने आशीर्वाद वचन कहते हुए कहा कि श्री कीलर पशु पक्षियों के संरक्षक हैं। वे विश्व के विभिन्न देशों में स्वयं जाकर जीवदया की ज्योति जगाते हैं। मेरे प्यारे विद्यार्थियो, अध्यापक, अध्यापिकाएं और भाई बहिनों आप भी अपने जीवन में करुणा व प्रेम की ज्योति जगाएं। ये पशु पक्षी भी प्रभु की मूक संतान हैं। आप उन पर दया करेंगे तो परमात्मा आप पर दया दृष्टि करेंगे। हिंसा का खाना मत खाएँ। प्रति दिन लाखों पशु पक्षियों को काटा मारा जाता है। सब प्राणियों को जीने का अधिकार है। जैसे मनुष्यों की सुरक्षा के लिए सरकारी कायदा है वैसे पशु पक्षियों की रक्षा के लिए सरकारी कानून होना चाहिए। जैसे किसी व्यक्ति को मारना गुनाह है वैसे किसी पशु-पक्षी का वध करना गुनाह होना चाहिए, ऐसा कानून सरकार को बनाना चाहिए।

२० दिसम्बर साँझ को दादा वासवाणी ने उपदेश देते हुए कहा, प्रेमियो ! आप स्वयं में अच्छी आदत डालें, जिससे आपका भी भला हो और दूसरों का भी भला हो । कई लोगों को गप्पे हाँकने की, बक्वास करने की आदत पड़ जाती है। वे व्यर्थ अमूल्य श्वास गंवाते हैं। कुछ लोगों को शराब व सिग्रेट पीना की आदत पड़ गई, इस

आदत के कारण स्वास्थ्य भी बिगड़ता है तो पैसे भी व्यर्थ जाते हैं। पीना है तो नाम रस पीओ। कुछ लोग कहीं भी बैठते हैं तो अपनी टांगे हिलाते रहते हैं। एक संत ट्रेन में यात्रा कर रहा था, उसके निकट एक व्यक्ति अपनी टाँगे हिला रहा था। संत ने उसे कहा कि टाँगे हिलाने से तुम्हारी हानि होगी। उस व्यक्ति ने उत्तर देते हुए कहा कि मुझे टाँगे हिलाने की आदत पड़ गई है। संत ने मुस्कराते मुस्कराते उसे कहा कि तुम अपनी रसना से राम का नाम जपने की आदत डालो, उससे तुम्हारा भला होगा। हमारी रसना व्यर्थ की बातें करने में अपनी अमूल्य शक्ति खो देती है, उसी ही रसना से हम राम नाम रटते रहें तो हमारा यह लोक व परलोक सुधर जाये। हमारी रसना स्वादिष्ट वस्तुएँ खाने के लिए भटकती है। ऐसे खाद्य्य पदार्थ खाने से हमारा स्वस्थ्य बिगड़ता है, किन्तु उसी रसना से राम नाम का जाप करने से हमारी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती है।

रसना ! जपो हरि का नाम,
तू छोड़ जगत् के काम।
काम जगत् के हैं दुखदाई,
नाम प्रभु का है सुखदाई
स्मर स्मर पाओ विश्राम।

२५ दिसम्बर श्री ईषा के जन्मदिन सम्बंध में दादाजी ने सुबह को दीन दुखियों की सेवा की। साँझ को उन्होंने श्री ईषा की दया भावना का उल्लेख किया।

३१ दिसम्बर वर्ष के अंतिम दिन संध्या के सत्संग में साधु वासवाणी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज वर्ष के अन्तिम दिन आप मन का मंथन करें कि बीते हुए सारे वर्ष में आपने कौन कौन से सत्कर्म किये। मानव जीवन की सार्थकता शुभ य सत्कर्म करने में है। मनुष्य अपने शुभ कर्मों से ही सद्गति प्राप्त करता है। एक संत के पास एक व्यक्ति आया उसने आकर कहा कि मेरे पूज्य पिताजी स्वर्गवास हो गये हैं, आप उसकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करें। संत ने मुस्कराते हुए कहा कि जब तुम्हारे पिताश्री स्वर्ग में निवास करते हैं तो वे आनंद में होगें। अब तुम बताओ। कि तुम्हारे पिताजी के साथ तो

कोई नहीं गया न उसने स्वर्ग से आपका कोई पत्र लिखा है, तो तुम कैसे कहते हो कि वे स्वर्गवास हुए हैं या नर्कवास हुए हैं ? तुम मुझे बताओ कि उसकी मृत्यु कब व कैसी हुई तो मैं बताता हूँ कि वह स्वर्ग में है या नर्क में।

उस व्यक्ति ने कहा एकादशी के दिन उसने अचानक इच्छा प्रकट की, "मेरे लिए शराब व माँस लेकर आओ। पूज्य पिताकी आज्ञानुसार माँस व शराब की व्यवस्था की गई। उसने खूब शराब पी और माँस भक्षण किया। कुछ समय के पश्चात् उसे पेट में असहनीय पेट की पीड़ा हुई। वह संडास में गया, एकादशी मंगलवार के दिन रात को ही उसकी मृत्यु हो गई।

संत उस व्यक्ति का उत्तर सुनकर हंसने लगे। उन्होंने उसे कहा कि तुम्हारे पिताजी का स्वर्गवास नही नर्कवास हुआ है।

मंगलवार एकादशी के पावन दिन राक्षसी भोजन खाकर संडास में काल का बुलावा, न उसके मुख में न राम न तुलसी का पत्ता, ! वह कैसे स्वर्ग में होगा ! वह तो अवश्य ही नर्कवासी होगा। मेरे भाइयो व बहिनों। अशुभ कर्म करने से कोई भी स्वर्ग नहीं जा सकता, उसके लिए नर्क का द्वार खुला रहता है। इस लिए आप सदैव शुभ कर्म करें और किये हुए अशुभ कर्मों का पछतावा करें। पश्चानुत्ताप के आँसू आपके अन्तःकरण को निर्मल व पवित्र करेंगे। जब अन्तःकरण निर्मल, पवित्र व शुद्ध हो जायेगा तब आप अपने मन मंदिर में ही आप प्रभु का दिव्य दर्शन कर सकेंगे।

१ जनवरी १९६५ सुबह १० बजे नूतन वर्ष के उपलक्ष में दादाजी मीरा सत्संग हाल में पधारे। श्रीमद् भगवद् गीता एवं अन्य शास्त्रों के पाठ के पश्चात् हवन-यज्ञ हुआ, दादाजी ने हवन-यज्ञ में आहुति अर्पित की। तत्पश्चात् उन्होंने बालक-बालिकाओं को खर्ची दी और सभी प्रेमियों को आशीर्वाद करते शुभ मंगल कामनाएं दी। उन्होंने एक कार्ड पर नव वर्ष के सम्बंध में संदेश लिखा था, साँझ के सत्संग में भाई जशन वासवाणी ने वह संदेश पढ़ कर सुनाया।

३ जनवरी मीरा सत्संग हाल में संत कृपालसिंघजी महाराज दादाजी से मिलने के लिए पधारे। दोनों महापुरूषों ने कुछ समय आपस

में ज्ञान गोष्ठी की।

संत कृपालसिंघ ने नाम का संदेश दिया, श्री गंगाराम साजनदास ने उनके आभार मानें।

१३ जनवरी रात को मीरा भूमि में लाललोई का उत्सव मनाया गया। दादाजी ने अग्नि प्रज्वलित की। १४ जनवरी मकर संक्रांति के उपलक्ष में सुबह को साधु वासवाणी ने दरिद्रनारायण की सेवा की।

शहीद हमूँ कालाणी मंडल की ओर से चेम्बूर मुम्बई में २१ जनवरी वीर हेमूँ का शहादत दिवस मनाने का आयोजन किया गया। दयाल आशा ने दादा वासवाणी से प्रार्थना की कि इस उत्सव के लिए संदेश लिखकर दें। १५ जनवरी सुबह को साधु वासवाणी ने इस उत्सव के लिए संदेश लिखते हुए कहा कि शहीद हेमूँ कालाणी पर सिन्धी समाज को गौरव है। उस युवक ने भारत की स्वतंत्रता संग्राम के यज्ञ में अपने जीवन की आहुति अर्पित की। उसके माता पिता भी धन्य धन्य हैं। जिन्होंने हेमूँ जैसे वीर निडर को जन्म दिया। न्यायाधीश ने जब बहादुर हेमूँ के लिए फाँसी के दंड का निर्णय किया तब मैंने उसका विरोध करते हुए अंग्रेज सरकार को अनुरोध किया कि युवा वीर देश भक्त हेमूँ को फाँसी की सजा नहीं दी जाये, किन्तु सरकार नहीं मानी। ऐसे वीरों के बलिदानों के कारण हम अंग्रेजों के शासन से मुक्त तो हुए हैं किन्तु पूर्णत: हम स्वतंत्र नहीं हैं। हम विदेशी वेश भूषा व संसकृति सभ्यता की ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं। देश वासियों में देश भक्ति की भावना कम होती जा रही है। आज की नई पीढ़ी में वीरता व देश भक्ति का संचार करें।

३०-३१ जनवरी और १ फरवरी पुणे में अखिल भारतीय सिख शैक्षणिक सम्मेलन आयोजित किया गया। लोक सभा के स्पीकर सरदार हुक्मसिंघ इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे। ३१ जनवरी साँझ ६ बजे वे दादा साधु वासवाणी से मिलने के लिए मीरा भूमि में पधारे। उनके मन में दादाजी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ दादाजी के साथ मिले। उन्होंने दादाजी से वार्तालाप क़रते हुए कहा मैं आप की पुस्तकों से बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ और आपके प्रवचन भी श्रवण किये हैं। सन् १९६९ ई में हम श्री गुरूनानकदेव महाराज की

जन्मशताब्दी सम्बंध में सम्मेलन आयोजित करना चाहते हैं, मेरी प्रार्थना हैं कि आप इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि हों, आपका नाम प्रथम लिखना चाहते हैं। आप भी श्री गुरू नानकदेव महाराज के अनन्य भक्त, विद्वान व दार्शनिक हैं। आपने श्री गुरू ग्रन्थ साहब का गहन अध्ययन किया है। कृपया,आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।

उसी समय दादा वासवाणी ने मुस्कराते हुए सरदार हुक्मसिंघ से कहा "मैं तो श्री गुरू नानकदेवजी महाराज का दास हूँ, बालक हूँ। मेरा नाम प्रथम नहीं अन्तिम लिखें।

१फरवरी सुबह सरदार हुक्मसिंघ मीरा कालेज में पधारे। प्राचार्य जशन वासवाणी ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि मान्यवर श्री हुक्मसिंघ गुरू भक्त हैं, विनम्र हैं, इनके जीवन में सादगी की सुरभि हैं। हमारा सौभाग्य है कि आज यहाँ सरदार हुक्मसिंघ पधारे हैं। इनके मन में साधु वासवाणी के प्रति श्रद्धा है, इस कालेज में दादा वासवाणी के आदर्शों के अनुसार बालिकाओं को शिक्षा दी जाती है, जीवन उपयोगी बातें सिखाई जाती हैं।

साधु वासवाणी ने इसी अवसर पर मधुर वचनों की बरखा करते हुए कहा कि हम सब एक हैं। सिन्धी, पंजाबी महाराष्ट्रीयन, गुजराती, तेलगू, तामिल आदि सब भारत माता की संतान हैं। सरदार हुक्मसिंघ को मैं अपना मित्र, भाई समझता हूँ। आज उन्होंने यहाँ आकर हमें अपना आशीर्वाद व प्यार दिया है। मीरा कालेज के आदर्श हैं, स्नेह व संघठन, काश ! मीरा कालेज श्री गुरू नानकदेव महाराज, श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज, श्री गुरू गुबिन्दसिंघ महाराज एवं भारत के ऋषि मुनियों की शिक्षा अनुसार प्रगति के पथ पर आगे बढ़े।

सरदार हुक्मसिंघ ने व्याख्यान देते हूए कहा, " मैंने वर्षों से साधु वासवाणी की पुस्तकें पढ़ी हैं, उनके प्रवचन श्रवण किये हैं। आज उनके चरणों में बैठकर मैं स्वयं को भाग्यवान समझता हूँ। मेरी बालिकाएँ व प्राध्यापिकाएं ! जीवन में सत्पुरुखों का संग एवं उनकी वाणी का अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है। आप भाग्यशाली हैं कि आपको यहाँ संतों का संग व उनकी वाणी का अभ्यास करने का अवसर प्राप्त हुआ है। मेरी भी इच्छा होती है कि मैं भी आपके समान

विद्यार्थी बनकर इस पवित्र वातावरण में शिक्षा ग्रहण करुँ। विद्या केवल उपधियाँ प्राप्त करने के लिए नहीं है। सच्ची विद्या हमें मानवता, उपकार पवित्रता, प्रेम, सहानुभूति स्मरण का मार्ग दिखाती है और बहुत कुछ सिखाती है। आप भाग्यवान हैं कि आप को प्रति दिन साधु वासवाणी, एवं प्राचार्य जे.पी.वासवाणी के आशीर्वाद लेने का अवसर मिलता है। आज मुझे भी उनके आशीर्वाद और प्यार प्राप्त करने का अवसर मिला है।

१० फरवरी संत रविदास के जन्मदिन साँझ को साधु वासवाणी ने उपदेश देते हुए कहा कि संत रविदास का जन्म साधारण परिवार में हुआ किन्तु वह भक्ति भावना के कारण महान बना। प्रभु भक्त की जाति पाति नहीं देखता, वह तो भाव का भूखा है। संत कबीर भी फरमाते हैं -:

जाति न पूछे साध की पूछ लीजे ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान।।

प्रभु नहीं पूछे जात पात, प्रभु पूछे प्रेम की बात। बालक रविदास के मन में संतों के प्रति स्नेह व सद्भावना थी। उसने संतो की टोली देखी, वह उनके साथ जाकर कीर्तन करता है, अपनी दुकान से नये जूते उठाकर संतों को मुफ्त देता है। यह देखकर उसके पिताश्री उस पर क्रोधित व अप्रसन्न होते हैं। कुछ समय के पश्चात् पिताश्री ने उसका विवाह करवाया जैसे वह घर व्यवहार की ओर ध्यान दे, परन्तु रविदास के मन में तो प्रभु मिलन की प्यास थी। एक दिन संतों की टोली वहाँ से गुज़रती है, संत रविदास सभी संतो को मुफ्त जूते दे देता है, पिताश्री आते हैं, दुकान खाली देखकर पुत्र को धन्यवाद देते हुए कहते हैं कि तुमने सब जूते बेच दिये, ऐसा व्यवसाय करो। अब इनके पैसे मुझे दे दो। बेटा रविदास कहता है, 'पिताश्री ! मैंने संतों में सब जूते बांट दिये। पिताश्री क्रोधित होकर उसे घर से निकाल देते हैं। बेचारे रविदास अपनी पत्नी सहित एक झोपड़ी में जाकर रहता है। संत रविदास की थोड़ी सी वाणी श्री गुरू ग्रन्थ साहब में भी है। वे अपने एक भजन में कहते हैं कि यद्यपि उनकी जाति चमार की है, किन्तु संतो के संग व राम नाम के रंग से वे पवित्र बन गये हैं -:

नागर जनो ! मेरी जाति बिख्यात चमारिन।
रिदै राम गोबिन्द गुण सारनि॥

मेरे भाइयो, एवं बहिनों आप भी संतों का संग करें, राम नाम के रंग में रंग जायें तो आपका जीवन सार्थक होगा।

५ मार्च साँझ को साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत माया एवं साँसारिक पदार्थों में आसक्ति नहीं रखते। वे माया को प्रभु के पथ में बाधा समझते हैं। एक बार एक धनवान स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी के पास पाँच सौ रूपये की थैली लेकर आया और उनके श्री चरणों में अर्पित की। स्वामी रामकृष्ण ने कहा, "बेटा! अब पैसों की आवश्यकता नहीं।" धनवान ने कहा, "स्वामीजी कृपया आप इन पैसों को किसी बैंक में जमा करें या किसी और के पास धरोहर रखें। जब आपको पैसों की आवश्यकता हो तब ले लीजिए।"

स्वामीजी ने कहा, "बेटा ! यह माया हमारे पास दुर्गन्ध फैलाएगी, दुर्गध से दूर रहना चाहिए। दुर्गंध से स्वास्थ्य बिगड़ता है संतों को माया अपने पास नहीं रखनी चाहिए और गृहस्थियों को माया परोपकार के कार्यों में सफल करनी चाहिए, नहीं तो माया से दुर्गध उत्पन्न होगी। यदि संत होकर माया में फंस गया तो फिर वह संत कैसा! साधक कैसा ! साधक को, सर्वस्व प्रभु के श्रीचरणों में समर्पित करना चाहिए।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! आप भी अपनी माया दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें।

१७ मार्च होली के दिन सुबह को १० बजे मीरा सत्संग हाल में हवन यज्ञ हुआ। नाम कीर्तन के पश्चात् साधु वासवाणी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। प्रेमियों ने दादाजी को गुलाल लगाया। संध्याकालीन सत्संग में दादा वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के दिन ब्रज में होली का त्यौहार बड़े उत्साह उमंग के साथ विशेष रूप में मनाया जाता है। गोपियों ने श्री कृष्ण के साथ होली खेली। प्रभु को प्रेम के रंग में रंग दिया। हम केवल बाह्य रंग लगाने में होली समझते हैं किन्तु प्रेम का रंग नहीं लगाते।

प्यारे प्रभु के प्यार में डूबकर होली मनाएं। श्री चैतन्य महा प्रभु

की भाँति श्री श्याम सुंदर की मस्ती में उसकी महिमा गाते, नृत्य करते स्वयं को भूल कर तद् रूप हो जायें। आप प्रेमा भक्ति द्वारा प्रभु को शीघ्र प्राप्त कर सकते हैं।

१० अप्रैल साधु वासवाणी ने संध्याकालीन सत्संग में प्रवचन करते हुए कहा कि आज श्री वर्धमन महावीर की जयन्ती है। उन्होंने अपने विचारों व व्यवहार से अपने आदर्शों एवं सिद्धांतों से लाखों अशांत लोगों को शान्ति प्रदान की। उन्होंने अहिंसा व दया का संदेश देकर लाखों प्राणियों को जीवनदान दिया। वे त्याग तपस्या व संयम के रूप थे। वे गृहास्थ में अनासक्त भाव से रहे। मेरे भाइयो व बहिनों ! आज भी विश्व को महावीर वर्धमन की शिक्षाओं को अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। जैन या बुद्ध, धर्म नहीं, ये तो पंथ हैं। आदि धर्म तो हिन्दू सनातन धर्म है। आप किसी भी सम्प्रदाय या पंथ के आदर्शों को अपनाएँ परन्तु अपना धर्म परिवर्तन नहीं करें।

धर्मो रक्षति धर्म

आप अपने धर्म पर अटल रहें, धर्म आप की रक्षा करेगा। सभी धर्मों व अवतारी पुरूषों, संतों को सन्मान दें किन्तु आप सनातन हिन्दू धर्म के सिद्धांतों के अनुसार जीवन बिताएं।

२० अप्रैल दादाजी ने ज्ञानगोष्ठी करते हुए कहा कि परम पिता परमात्मा से सदैव उसकी कृपा मांगे। माया, माया के पदार्थ व पद पर कोई भरोसा नहीं है। किसी बात पर भी घमंड नहीं करें, घमंड गिराता हैं। औरंगजेब कितना घमंडी व मर्यादाहीन हो गया कि तखत पर बैठे अपने बाप शाहजहाँ को तखत से उठाकर कैदी बना दिया और स्वयं बाप के तखत पर बैठ गया। एक बड़ा बादशाह कैदी बन गया, वह भी अपने बेटे द्वारा ! गुरू महाराज फरमाते हैं -:

'नज़र पुठी जे करै सुलताना गाह करायंदा'

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! आप सदैव प्रभु से उसकी अनुकम्पा की याचना करें और मन में प्रभु से डरें। प्रभु के भय की भावना आपको पाप कर्म से बचायेगी।

जिना मन भय तिना मन भाव

प्रभु का भय आपको भक्ति मार्ग पर ले चलेगा। आप कोई

भी शुभ कर्म करें फिर भी घमंड नहीं करें। दादा वासवाणी सुबह को १०-११ बजे कभी मीरा हाल में या कभी बाहर वृक्ष के नीचे बैठकर ज्ञान गोष्ठी करते थे। प्रेमियों के आग्रह पर उन्हें कार्ड पर कुछ न कुछ संदेश लिखकर देते थे। भाई श्री जशनजी या कभी बहिन शान्ति वह संदेश पढ़कर सुनाते थे। दादाजी प्रेमियों को अपनी नज़र से निहाल कर देते थे।

कभी कभी वे अचानक कहते थे संगतरे लाओ, सेव लाओ। दादाजी ये फल बच्चों, बालिकाओं में बाँटते थे। उन्हें बाँटने में ही आनंद आता था। अदृष्ट रूप में आज भी वे हमें यह बाँटने के संदेश देते हैं। मैंने भी जो गरीबों की सेवा व बाँटने की भावना सीखी उसका अधिक श्रेय उनका है। वे मेरी प्रेरणा के स्रोत रहे। एकदिन मैंने स्वप्न में देखा कि साधु वासवाणी फरमाते हैं कि मेसू की मिठाई ले आओ। एक प्रेमी मेसू मिष्ठान शीघ्र ही बाजार से ले आता है। दादाजी वह मेसू मिष्ठान गरीबों में बाँटते हैं। यह स्वप्न की बात मैंने एक पत्र में दादा जशन को लिखकर भेजी। उन्होंने तत्काल ही मुझे पॉच सौ रूपये भेजे कि मेसू मिष्ठान खरीद कर गरीबों को खिलाओ। दादा जशन ने मेरे स्वप्न को साकार कर दिया। पैसे की बात नहीं, भावना की बात है। दीन दुखियों में, बच्चों में बॉटने की भावना का बड़ा महत्व है। सगे सम्बंधियों, मित्रों व परिवार में बाँटने का इतना महत्व नहीं है। मैंने दादा जशन को लिखे हुए पत्र में केवल साधु वासवाणी के स्वप्न का उल्लेख किया था। मैंने स्वप्न के अनुसार तय किया था कि गरीब बहिनों को मेसू मिष्ठान खिलाया जायेगा, किन्तु दादा जशनने पत्र पढ़ते ही मेसू खरीद करने के लिए पैसे भेज दिये।

२४ अप्रैल मीरा स्कूल के शैक्षणिक वर्ष का अंतिम दिन था, प्रधानाध्यापिका बहिन विंदुरी हीरानदाणी ने दादा वासवाणी से विनती कि आप इसी दिन मीरा स्कूल के विद्यार्थियों को आशीर्वाद व अपना संदेश दें। विद्यार्थी एवं अध्यापक गण मीरा प्रार्थना हाल में आ गये। साधु वासवाणी ने मुस्कराते मुस्कराते सब को प्रणाम किया और आशीर्वाद दिया। उन्होंने एक कार्ड पर संदेश लिखकर, वह कार्ड प्यारे जशन को पढ़कर सुनाने के लिए दिया।

प्यारे भाई जशन ने वह कार्ड पढ़कर कहा कि आज प्यारे दादाजी संदेश देते हैं कि सच्ची सुंदरता उसको मिलती है जो धीरज से सब कुछ सहन करता है, ग़म खाता है। आप से कोई अच्छा व्यवहार नहीं करता है, आपको अपशब्द बोलता है, तो शान्ति से सुनें, उसका उत्तर नहीं दें। जो कुछ जिसके पास होता है, वह वही दूसरों को देता है। आप सहनशील हैं, मधुर भाषी हैं, यदि कोई कड़वा बोलता है तो आप कड़वा नहीं बोलें, आप उससे भी मधुरता व धीरज से बोलें। आप अपनी जबान व मन पर नियन्त्रण रखें। जिसके पास जो होता है, वही देता है, फूलों की दुकान पर आप जायेंगे तो आपको गुलाब की सुरभि आयेगी, दुर्गंध नहीं। सत्पुरूषों के पास सद्‌गुणों की सुरभि होती है, इस लिए उनके पास जाने में हम आनंद का अनुभव करते हैं। दुख में सुख में मन का संतुलन रखें।

१७ मई सुबह को गौतम बुद्ध जयन्ती के उपलक्ष में साधु वासवाणी ने दरिद्र नारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि श्री बुद्ध ने अपने ज्ञान व प्रेम भावना द्वारा कई लोगों का जीवन सुख मय बनाया। एक बार गौतम बुद्ध भिक्षा लेने के लिए निकल पड़े, रास्ते में दूर से उन्होंने एक स्त्री की करुण आवाज़ सुनी। वे शीघ्र ही उस स्त्री के निकट आये। उसका नाम किसा गौतमी था। साँप के काटने से उसके इकलोते बेटे की मृत्यु हो गई थी इस लिए वह फूट फूट कर रो रही थी। उसने गौतम बुद्ध को देखकर उसे प्रार्थना की कि उसके बालक को जीवन दान देकर, पुन:जीवत कर दें। श्री गौतम ने उसे कहा कि तू एसे घर से थोड़ा सा सरसूं ले आओ, जिस घर के किसी भी सदस्य की कभी मृत्यु न हुई हो। बेचारी गौतमी जिस घर में सरसूँ मांगने जाती, वहाँ से निराश होकर लौटती, क्यों कि उसे एक भी ऐसा घर नहीं मिला जहाँ किसी की मृत्यु नहीं हूई हो। वह लौटकर गौतम बुद्ध के पास आई और उन्हें कहा, “मुझे एक भी घर ऐसा नही मिला जहाँ किसी की मृत्यु नहीं हुई हो।”

गौतम बुद्ध ने उसे समझाया कि जिस का भी जन्म हुआ है। उसकी मृत्यु भी अवश्य होती हैं। यह प्रकृति का नियम है। तुम्हारा बेटा प्रभु की धरोहर था, यदि परमात्मा अपनी धरोहर वापस ले लेता

है तो तुम्हें दुखी होना नहीं चाहिए। श्री बुद्ध ने किसा गौतमी को ज्ञान देकर, भिक्षुणीसंग में स्वीकार किया। उसी दुखी निराश माता के जीवन में उसने परिवर्तन लाया।

संतों का काम है, भूले भटकों को सत् मार्ग बताना। श्री गौतम बुद्ध ने सत्मार्ग बताकर कई अज्ञानियों का मार्गदर्शन किया।

५ जून दादाजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु प्राप्ति के लिए संतो के संग, पवित्र शुद्ध वातावरण की आवश्यकता है। जैसा आप संग करेंगे वैसा आपको रंग लगेगा। लंडन में किसी समय लोग भारत के आम खाने के लिए बड़े इच्छुक रहते थे। लंडन में ऐसे आमों के बीज बोए गये किन्तु प्रयास विफल गया। लंडन में बहुत ही ठंडी रहती है। आम के लिए गर्मी चाहिए। इस लिए लंडन में आम के पेड़ नहीं हैं। आजकलतो हवाई जहाज द्वारा शीघ्र ही आप लंडन में पहुँच जाते हैं। जैसे प्रतिकूल वातावरण के कारण आम के पेड़ लंडन में उत्पन्न नहीं हो सकते तो वैसे पवित्र वातावरण एवं संतों के संग के बिना हमारे मन में भक्ति के बीज बोए नहीं जा सकते। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप मानसिक प्रदूषण को दूर करें, संतों का संग करें तो आपके मन में भक्ति के बीज विकसित होकर आनंद रुपी आम देंगे।

दादा साधु वासवाणी न केवल दया के सागर थे परन्तु उन्होंने कई दिलों में करुणा के बीज बोए। १८ जून उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि दया के बिना सिद्ध पुरुष भी कसाई है। दया ही धर्म की नींव है। जिसके मन में दया भावना नहीं उसे मनुष्य कहलाने का अधिकार नहीं है। प्रेमियो ! आप भी अपने दिलों में दया के दीपक जगाएं। एक व्यक्ति अपने धन्धे के लिए दूसरे गांव जा रहा था। दोपहर का खाना साथ में था। चलते चलते वह थक गया और एक कूंए के निकट वृक्ष के नीचे खाना खाने एवं थोड़ासा विश्राम करने के लिए बैठ गया। उसने देखा कि उसी पेड़ के निकट एक प्रसूति कुतिया बच्चों के साथ बैठी थी और भूख के कारण तड़प रही थी। उस व्यक्ति के मन में दया भावना पैदा हुई। उसने अपना सारा खाना उस कुतिया को खिलाया, और पानी भरकर पिलाया। उसने कुतिया के बच्चों को भी पानी पिलाया। उसने स्वयं कुछ भी नहीं खाकर प्रसूती कुतिया को खिलाया,

उसी समय उसने आनंद का अनुभव किया। वह व्यक्ति बिना खाना खाए आगे बढ़ा। रास्ते में उसे परम शक्ति का दर्शन हुआ। प्रेमियो ! आप भी यदि दूसरों पर दया दृष्टि करेंगे तो आनंद का अनुभव करेंगे। दीन-दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा भी प्रभु की पूजा है।

१३ जुलाई साधु वासवाणी को शोक समाचार मिला कि डॉ. नारायण रुघूमल मोटवाणी लंडन में ब्रह्मलीन हुए। साधु वासवाणी ने उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि हमारे प्यारे डॉक्टर मोटवाणी संसार की यात्रा समाप्त कर चल बसे। हम सब कौ किसी न किसी दिन अवश्य सचखंड चलना है। सब नश्वर है, जो व्यक्ति सत्गुरू की शरण लेता है, उसका नाम में निवास होता है। डॉं मोटवाणी निष्काम भावना से, सहानुभूति व स्नेह के साथ बीमारों का उपचार करते थे। समय समय पर यहाँ आकर मेरी भी सेवा करते थे। वे भक्तजन थे। उन्हें दूसरों को सुखी करने में ही आनंद आता था। ऐसे ही डाक्टरों की आवश्यकता है।

१४ जुलाइ साधु हीरानन्द की पुण्यतिथि थी। इस सम्बंध में प्रभात् को श्री सुखमनी का पाठ किया गया। सुबह को साधु वासवाणी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि साधु हीरानन्द ने मानव मात्र की अस्मरणीय सेवा की। उनका जीवन अर्पणम् का जीवन था , त्याग तपस्या का जीवन था। वे मेरे अध्यापक थे, किन्तु वे मुझे पुत्र की भाँति प्यार करते थे। उनके जीवन व कार्य का बचपन में ही मुझ पर प्रभाव हुआ । वे दीन दुखियों के मसीहा थे। वे दया व प्रेम की प्रतिमूर्ति थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। श्री सुखमनी साहिब की निम्न पंक्तियों में उनका जीवन चित्रति है -

ब्रह्म ज्ञानी एक ऊपर आस,
ब्रह्मज्ञानी का नहीं बिनास।
ब्रह्मज्ञानी कै गरीबी समाहा,
ब्रह्मज्ञानी पर उपकार उमाहा।

साधु हीरानन्द सच्चे ब्रह्मज्ञानी थे। हम सब उनके जीवन से

गुण ग्रहण कर जीवन सफल बनाएं।

२ अगस्त साधु वासवाणी के अनन्य भक्त, श्री हनुमान जैसे परम सेवक प्यारे भाई जशन वासवाणी का जन्मदिन था। इसी सम्बंध में दुपहर १२ बजे साधु वासवाणी मीरा सत्संग हाल में पधारे। बहिनों ने भक्ति संगीत सरिता प्रवाहित की। साधु वासवाणी ने अपने प्यारे बालक जशन को आशीर्वाद दिया। सभी भाई बहिनों ने प्यारे जशनजी को बधाइयाँ दी। कुछ भाई बहिने जन्मदिन केक लेकर आये थे, दादा वासवाणी ने ज्योति जगाकर प्यारे जशन के हाथ से केक कटवाया। तत्पश्चात् सभी आगुंतक प्रेमियों ने प्रति भोज किया। साँझ को साधु वासवाणी ने प्रवचन करते हूए कहा कि श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज श्री सुखमनी में फरमाते हैं -:

चार पदार्थ जे को मांगै,
साध जना की सेवा लागै।

संतों साधुओं की सेवा व संग करने से धर्म-अर्थ काम, मोक्ष चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। प्यारे, मेरे आँखों के तारे जशन ने अपना समस्त जीवन सेवा-स्मरण में सफल किया है। वह मेरे आँसुओं का बालक है। वह निर्मल व पवित्र है। उसके मन में प्रेम व दया की भावना है। दूसरे का दुख दर्द देखकर प्यारे जशन का दिल पिघल जाता है। वह समर्पित भाव से मेरी सेवा करता है, मधुर भाषी है। वह बड़ा विद्वान है किन्तु उसे विद्वता का अभिमान नहीं है। छोटा हो या बड़ा हो, बहिन हो या भाई हो, वह सब के साथ प्रेम से बोलता है। मेरे भाइयो व बहिनों ! आप उसके जीवन से गुण ग्रहण करें। प्रभु से प्रार्थना है कि वह जगत् में चाँद की तरह चमकता रहे, अपने प्रकाश से दूसरों को आलोकित करे।

८ जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन कई श्रद्धालु प्रेमियों ने साधु वासवाणी के श्री चरणों में श्रीफल व मिश्री भेट रखी। साँझ को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि सत् गुण आपके सदैव संरक्षक हैं। आप जीवन रूपी फुलवाड़ी को सत्य, स्मरण, स्नेह, सहानुभूति, सेवा, सादगी, संतोष, सरलता, दया, अहिंसा, क्षमा, त्याग, प्रार्थना पवित्रता इत्यादी गुणों रूपी पुष्पों से महकाएं तो आपको आनन्द व उल्हास की

उपलब्धि होगी, कोई भी आपकी हानि नहीं कर सकेगा। प्रतिवर्ष आप अपने अपने जन्मदिन पर केवल एक एक गुण को ग्रहण करें तो आपका जीवन आनंदमय व मंगलमय हो जायेगा।

आज आपने गुरु पूर्णिमा का उत्सव उत्साह के साथ मनाया। गुरू ही आपका मार्गदर्शन कर आध्यत्मिक उन्नति की ओर ले जायेगा। जिसके उपर सत्गुरु की कृपा है वह भाग्यवान है। श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज सत्गुरू से प्रार्थना करते हैं -:

काम क्रोध अरु लोभ मोह बिन सिजाइ अंहमेव।
नानक प्रभ शरणागती करि प्रसाद गुरुदेव ।।

आज हम भी सत्गुरू से ऐसी विनय करें।

११ अगस्त साधु वासवाणी की बहिन पपुरबाई (किकी) का देहावसन हुआ। उन्होंने बहिन की आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की फिर वे शमशान भूमि में गये। वहाँ भी उन्होंने प्रार्थना करते गुरूवाणी का उच्चारण किया -

तुम ठाकुर तुम पहि अरदास,
जीउ पिंड सभु तेरी रास।
तुम मात पिता हम बालक तेरे,
तुमरी कृपा महि सूख घनेरे।
कोई न जाणे तुमरा अंत,
ऊचे ते ऊचा भगवंत ।
सगल समग्री तुमरै सुत्रधारी,
तुम ते होइ सु आज्ञाकारी।
तुमरी गति मित तुम ही जानी,
नानक दास सदा कुरबानी।।

१२ अगस्त साँझ को दादा वासवाणी ने सत्संग में प्रवचन करते हुए कहा कि कल बहिन किकी की जीवन लीला समाप्त हुई। वह कई दिनों से अपनी मस्ती में मग्न रहती थी। वह संसार के परपंच में नहीं पड़ी, सदैव गुरूवाणी का उच्चारण करती रहती थी, उसे नाम की भूख थी। वह धन्य है जिसे नाम की प्यास है। अब वह नाम में लीन हो गई, बूंद सागर में मिल गई।

१९ अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में प्रो ईश्वरी जोतवाणी ने भगवद् गीता के १२ अध्याय का सस्वर पाठ किया। उसके बाद बहिनों ने कृष्ण भक्ति के गीत गाये और हवन यज्ञ हुआ। साधु वासवाणी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की। उन्होंने दरिद्रनारायण की सेवा की।

संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज भगवान श्री कृष्णचन्द्र आनंदकंद ब्रजबिहारी का जन्मदिन है। उन्होंने पापियों का दमन करने व धर्म की रक्षा के लिए अवतार धारण किया। हम भी अपने मन की आसुरी वृत्तियों का दमन कर अपने चित्त की वृत्ति श्री कृष्ण से जोड़ें।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! भगवान की भक्ति समर्पित भाव से करें और घमंड का त्याग करें। एक बार भगवान श्री कृष्ण ने देखा कि श्री नारदजी के मन में घमंड की मात्रा बढ़ गई है। भगवान ने उसे कहा मुझे पेट में बहुत ही दर्द है। श्री नारद ने पूछा 'भगवान इसके लिए मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बताएं।' भगवान श्री कृष्ण बोले किसी भक्त के चरणें की रज लाओ तो वह रज पेट पर लगाने से दर्द दूर होगी।' श्री नारद किसी भक्त के चरणों की रज लाने के लिए गये। उसने कई भक्तों से उनकी चरण रज मांगी किन्तु सब ही ने रज देने से इन्कार किया और कहा कि ऐसा पाप हम नहीं करेंगे। भगवान स्वयं समर्थ हैं। हमारी रज का वे सेवन करें यह पाप हम से नहीं होगा। बहुत समय के बाद श्री नारद को एक भक्त ने अपने चरणों की रज दी। उसने पाप कर्म का कोई विचार नहीं किया। वह समर्पित भाव से भक्ति करता था। श्री नारद भगवान श्री कृष्ण के पास आये और उन्हें रज दी। भगवान ने पूछा इतनी देरी क्यों लगाई ? नारद ने सारा समाचार सुनाया। भगवान बोले तुम भी मेरा अनन्य भक्त हो फिर तूने क्यों नहीं रज दी ? नारद समझ गये कि उसका अभिमान नष्ट करने के लिए ही भगवान ने उसकी परीक्षा ली। श्री नारद ने क्षमा मांगी। प्रियतम जो कुछ मांगे उसे दे देना चाहिए। समर्पित भक्त सर्वस्व प्रभु के चरणों में समर्पित करता है।

२९ अक्तूबर दिवाली के दिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में

हवन यज्ञ हुआ। साधु वासवाणी ने यज्ञ में आहुति अर्पित की। बहिनों ने प्रभु श्रीराम की महिमा मधुर स्वर में गाई, तत्पश्चात् साधु वासवाणी ने दरिद्रनारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में साधु वासवाणी ने उपदेश देते हुए कहा कि प्रभु श्री राम की समर्पित भाव से शरण लें। रघुनाथ एक सच्चा सिपाही था। वह श्री राम भक्त था। वह एक अंग्रेज अफसर कर्नल के बंगले के प्रहरी के रुप में नौकरी करता था। एक रात को उसी रास्ते से राम भक्तों की टोली रघुपति राघव राजाराम की धुनी लगाती जा रही थी। रघुनाथ भी अपनी बंदूक वहाँ छोड़कर और सिपाही की वर्दी उतारकर संकीर्तन में सम्मिलित होता है।

सारी रात मंदिर में भगवान श्री राम के कीर्तन में मग्न हो जाता है। सबेरे वह स्वयं को दोषी समझता है और अपने मन में कहता है, "आज मैंने कर्तव्य की पालना नहीं की"। दूसरी रात को भी वह संकीर्तन में सम्मिलित हुआ, तीसरी रात को भी उसने ऐसा किया।

उस प्रहरी की यह दशा देखकर कुछ लोग उसके अफसर के कान भरते हैं कि तुम्हारा प्रहरी प्रतिदिन रात को नाम संकीर्तन में सम्मिलित होकर राम मंदिर में बैठता है। चौथे दिन वह कर्नल रघुनाथ से पूछताछ करता है। रघुनाथ अपनी गलती मानते हुए क्षमा याचना करता है। कर्नल कहता है 'तुम्हें यह मालूम है कि इस गलती के लिए क्या दंड है ?' रघुनाथ कहता है, 'शीघ्र ही शूट किया जाता है।' कर्नल बोला 'तुमने सत्य बोला है, इस लिए क्षमा करता हूँ, इसके बाद ऐसा नहीं करना।' फिर रात जब रघुनाथ पहरा दे रहा था तो प्रतिदिन की भाँति नाम संकीर्तन की टोली वहाँ से गुज़री, रघुनाथ भावावेश में उस में सम्मिलित हो गया। वह सुबह को अपने कर्नल अफसर के पास जाकर विनय करता है 'आज रात को भी मैंने अपने कर्तव्य की पालना नहीं कि है, कृपया मेरा त्याग पत्र स्वीकार करें।' कर्नल कहता है 'कल रात को मैंने स्वयं आकर देखा कि तू बड़ी खबरदारी से पहरा दे रहा था, मैंने तुम से बात चीत भी की, तूने मेरे प्रश्न का उत्तर भी दिया। तुम कैसे कहते हो कि तूने रात को पहरा नहीं दिया ! यह सुनकर रघुनाथ के आँखों से आँसूओं की धारा बह आई और उंसने कर्नल से विनय पूर्वक कहा 'मालिक ! प्रभु श्री राम ने स्वयं आकर पहरा दिया है।

ऐसे प्रभु राम पर मैं बलि बलि जाऊँ।' रघुनाथ अपना त्याग पत्र देकर गंगा नदी के किनारे बैठकर प्रभु श्री राम की भक्ति में तल्लीन हो जाता है। वह भक्ति के साथ वहाँ दीन दुखियों की सेवा भी करता है। वह प्रतिदिन गरीबों को खाना खिलाता है। एक दिन मोदी आकर उसे कहता है कि तुमने तीन महीने का बिल नहीं दिया। रघुनाथ पूछता है 'तुम्हारा बिल कितने का है ?' मोदी कहता है 'तीन हजार रुपये का बिल है।' रघुनाथ उसे कहता है, 'घबराओ नहीं, प्रभु श्रीराम तुम्हें तीन हजार रुपये दे जायेंगे। दो दिन के पश्चात् एक प्रेमी उस मोदी को तीन हजार रूपये देकर जाता है। मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों आप भी प्रभु में पूर्ण विश्वास के साथ जीवन के मार्ग पर कदम बढ़ाएं तो प्रभु तुम्हें अवश्य सफलता देगा। आप सब संकल्प करें कि इस जीवन में कुछ न कुछ कर जायेंगे।

९ नवम्बर श्री गुरू नानकदेव महाराज के जन्मदिन सुबह को मीरा सत्संग हाल में श्री गुरु ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति की गई व नाम कीर्तन हुआ। तत्पश्चात् साधु वासवाणी ने मोदी खाना आरंभ किया। वे मुस्कराते मुस्कराते अपने हाथों से गरीबों को खाद्य पदार्थ देते गये। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि श्री गुरू नानकदेव महाराज ने देश विदेश में भ्रमण कर अज्ञान की नींद में सोए हुए लोगों को जगाया। एक बार श्री गुरू नानकदेव महाराज अमीनाबाद में लालू बढ़ई के घर के बाहर आकर उसके घर का द्वार खट खटाते हैं। तीसरी बार द्वार खट खटाने के पश्चात् लालू द्वार खोलता है और लज्जित होकर गुरू नानक के चरणों में गिर पड़ता है। गुरु नानकदेव उस से पूछते हैं कि तूने द्वार खोलने में देरी क्यों की ? लालू कहता है, गुरूजी ! दीवार में कीले ठोक रहा था। गुरू नानकदेव महाराज बोले, प्यारे ! तू कब तक दीवार में कीले लगाते रहोगे ! अब जागो। नव जीवन प्राप्त करो ! हम भी कीले ठोंकने में व्यस्त हैं। संत आकर हमारे दिल के द्वार को खट खटाते हैं और सजग करते हैं कि कब तक हम सांसारिक व्यवहारों में फंसे रहेंगे ! हम नाम को भूल गए हैं ! मेरे भाइयो व बहिनों ! जीवन बीता जा रहा है ! आप कब सजग होकर नाम स्मरण करेंगे ! जागकर नाम निधि संग्रह करें।

२५ नवम्बर साधु वासवाणी का जन्मदिन था। २१ नवम्बरर से उनका जन्मदिन मनाया गया। २१ नवम्बर सुबह को मीरा हाइस्कूल की ओर से जन्मदिन उत्सव मनाया गया। विद्यार्थियों ने साधु वासवाणी एवं उनकी वाणी के सम्बंध में व्याख्यान दिये। उन्हें स्कूल की ओर से पुरस्कार दिये गये। २२ नवम्बर प्रभात को जन्मदिन सम्बंध में श्री गुरू ग्रन्थ साहब का पाठ आरंभ किया गया। उसी दिन सुबह को मीरा कालेज की ओर से दादाजी का जन्मदिन मनाया गया। हाल में दादा साधु वासवाणी के बचपन से लेकर फोटो, चित्र रखे गये। साधु वासवाणी की उपस्थिति में उनका जन्मदिन मनाया गया। मीरा कालेज की छात्राओं एवं प्राध्यापिकाओं ने आपस में धन संग्रह कर चार हज़ार रूपये पूज्य साधु वासवाणी के श्री चरणों में भेंट किए। उन्हें एक चाँदी की थाली सिक्कों से भर कर उपहार दी। कालेज की दो छात्राओं ने साधु वासवाणी के सम्बंध मे अपने अनुभव सुनाए। प्राचार्य जशन वासवाणी एवं श्री गंगाराम साजनदास ने भी साधु वासवाणी के जीवन कार्य के सम्बंध में विचार व्यक्त किये।

दादा साधु वासवाणी ने चार हजार रूपये एवं चाँदी की थाली मीरा कालेज को लौट दी। संत रूपयों, चाँदी या स्वर्ण के बर्तनों को क्या करेंगे ! शेष सिक्के भी उन्होंने छात्राओं में बांट दिये। दादा वासवाणी ने छात्राओं व प्राध्यापिकाओं को धन्यवाद देते हूए कहा कि आप मीरा विद्या हलचल के आदर्शों के अनुसार चलेंगी तो आपका भविष्य उज्ज्वल होगा। प्रगति के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान काफी नहीं। आप पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास के साथ साथ श्रीमद् भगवद् गीता, रामायण, गुरूवाणी एवं संतों के जीवन चरित्र एवं उनकी वाणी का भी अभ्यास करें और उनकी शिक्षा जीवन में अपनाएं, जीवन सफल बनाएं।

२४ नवम्बर सुबह ११ बजे मीरा प्राथमिक स्कूल की ओर से दादाजीका जन्मदिन मनाया गया। दादाजी पधारे तब सभी बालक-बालिकाओं ने 'जय दादा की' 'जय दादा की' नारे लगाये और तालियों से उनका स्वागत किया। दादा वासवाणी ने उन्हें चाकलेट व खर्ची देते हुए कहा कि आज मुझे अपने बचपन की याद आ रही है।

जब मैं सुबह को नींद से जाग्रत होता था तो पूज्य माता-पिता को प्रणाम करता था। नहाने के बाद श्री जप साहब की पाँच पौड़ियाँ श्रद्धा के साथ पढ़कर श्री गुरू नानकदेव महाराज की मूर्ति को प्रणाम कर फिर नाश्ता खाता था। पूज्य माता पिता को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद लेकर फिर स्कूल के लिए प्रस्थान करत था। मेरे प्यारे बालक-बालिकाएँ! आप भी ऐसा नियम बनाएँ। माँ-बाप के आशीर्वाद द्वारा आप उन्नति की ओर अग्रस हो सकते हैं।

२५ नवम्बर प्रभात को दादा वासवाणी की कुटिया में जन्मदिन के सम्बंध में गुरू वाणी का पाठ किया गया। कुछ प्रेमियों ने उन्हें जन्मदिन बधाइयाँ दी। दादाजी ने अपनी निहार से सब को निहाल किया। सुबह १० बजे दादा वासवाणी मीरा सत्संग हाल में पधारे। कई प्रेमी उनके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे। हवन यज्ञ हुआ, दादाजी ने उस में आहुति अर्पित की। तत्पश्चात् श्री गुरू ग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति हुई और बहिनों ने नाम कीर्तन किया। दादा वासवाणी जैसे जन्मदिन केक काट रहे थे तो प्रेमियों ने गुरू वाणी की निम्न पंक्तियाँ गाई -:

गाउ गाउ री दुलहनी मंगलाचार।
मेरे गृह आए राजा राम भतार।।

बाहर बैंड बजाई गई और सारा सत्संग हाल तालियों से गूंज उठा। कुछ प्रेमियों ने दादा वासवाणी को जन्मदिन सम्बंध में उपहार भेट किये।

संध्याकालीन सत्संग में श्री होतचन्द आडवाणी ने साधु वासवाणी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि दादा साधु वासवाणी हमारे सच्चे मार्गदर्शक हैं। मेरा स्वयं का अनुभव है कि जब कभी मेरे मन में उलझन होती है तब मैं मुम्बई से यहाँ दादाजी के पास आता हूँ, उनका दर्शन करने से ही उलझन दूर हो जाती है, मेरी समस्या का समाधान हो जाता है।

संत घट घट की जानत।

साधु वासवाणी का प्यार पाकर हम प्रफुलित हो जाते हैं। वे वृष्ठ विद्वान, हमारे सिन्धी समाज के धार्मिक नेता हैं, आध्यात्मिक

मार्गदर्शक हैं - दार्शनिक हैं। उनका मन दया से ओत प्रोत है।

श्री गंगाराम साजनदास ने कहा कि दादा वासवाणी के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से ब्रदर हुड की ओर से कई सेवा कार्य हो रहे हैं। आज उनके जन्मदिन सम्बंध में जो कुछ माया की भेट आई है, वह अब उनके श्री चरणों में अर्पित करते हैं। साधु वासवाणी ने वह माया की भेट स्वीकार करते तत्काल ही प्यारे श्री गंगाराम को सेवा कार्यों के लिए लौटा दी । उन्होंने मुस्कराते मुस्कराते सब को नमस्कार किया और कहा कि आप लोगों ने कितने न उत्साह के साथ दास का जन्मदिन मनाया है । जन्मदिन तो इस शरीर का है। वस्तुतः इस शरीर में जो आत्मा है, जिसके कारण शरीर का अस्तीत्व है, उस आत्मा का न तो जन्म होता है न मरण होता है। वह चेतन आत्मा सदैव अजर अमर है। आप उस आत्मा का चिन्तन करें। वह आत्मा परमात्मा का ही अंश है। मन मंदिर के भीतर जाकर आत्म साक्षात्कार करें कई जन्म भटक भटक कर आपने गंवाए हैं। इस जीवन की अमूल्य घड़ियाँ व्यर्थ मत गंवाएं, श्वास श्वास से नामस्मरण कर जीवन सफल बनाएं। माया के परपंच में फंस कर प्रभु को नहीं भुलाएँ।

५ दिसम्बर गीता जयन्ती के पावन दिन सुबह १० बजे दादा वासवाणी मीरा सत्संग हाल में पधारे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण की ध्वनि से सत्संग हाल गूंज उठा । बहिन ईश्वरी जोतवाणी ने श्रीमद् भगवद् गीता के १२ अध्याय का पाठ किया, तत्पश्चात् हवन यज्ञ हुआ। दादा वासवाणी ने गायत्री मंत्र उचारण करते हुए यज्ञ में आहुति अर्पित की। उन्होंने उसी समय दरिद्र नारायण की सेवा की। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता एक विचत्र शास्त्र है, जिसकी रचना स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने की है। गीता का ज्ञान न केवल श्री अर्जुन के लिए है किन्तु हम सब के लिए है। गीता ज्ञान का सागर है। देश-विदेश के कई विद्वानों एवं दार्शनिकों ने इस अमूल्य कृति की अपने अपने ढंग से विभिन्न भाषाओं में व्याख्या की है। गीता में सभी वेदों व शास्त्रों का ज्ञान समाहित है। भगवान श्री कृष्ण ने भगवद् गीता में भक्ति-कर्म एवं ज्ञान का सुंदर समन्वय किया है, उनकी आवश्यकता प्रति पादित की है। बिना ज्ञान के भक्ति अधूरी

है और बिना भक्ति ज्ञान अधूरा है। यदि हम भगवान के प्रिय भक्त बनना चाहते हैं तो उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। वे गीता में कहते हैं -:

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभ परित्यागी भक्तिमान्य: स में प्रिय: ।।

जो मनुष्य कभी हर्षित नहीं होता, नहीं दुखी होता है, जो न कभी पश्चानुत्ताप और न कोई इच्छा करता है, जो शुभा व अशुभ सभी प्रकार की वस्तुओं का त्याग करता है , वह भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय है।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! भगवान की प्राप्ति के लिए भक्ति मार्ग सर्ल मार्ग है, स्वयं को केवल प्रभु के श्री चरणों में समर्पित करें, सब में एक ब्रह्म को देखें। मित्र व शत्रु को समान दृष्टि से देखें। गीता का पठन, श्रवण, चिन्तन व मनन करें तो आप संसार में रहते जीवन मुक्त हो जायेंगे।

१६ दिसम्बर साँझ को साधु वासवाणी ने श्री गुरू गोबिदसिंघ महाराज के सम्बंध में प्रवचन करते हुए कहा कि वे भक्ति व शक्ति के अवतार थे। उन्होंने आदि शक्ति जगदम्बा माँ की उपासना की। वे हिन्दू धर्म के संरक्षक थे। उन्होंने हिन्दू धर्म की सुरक्षा के लिए खालसा पंथ आरंभ किया। उन्होंने अपनी संतान का बलिदान दिया। आज हम उनके सिद्धांतों व शिक्षा को भूल गये हैं।

२५ दिसम्बर साधु वासवाणी ने श्री ईषा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उसके गुणों का उल्लेख किया। ३१ दिसम्बर वर्ष के अंतिम दिन साँझ के सत्संग में मीरा सत्संग हाल में साधु वासवाणी पधारे। उसी समय दयाल आशा भी सत्संग में सम्मिलित हुआ। दादा वासवाणी ने दयाल आशा से एक गीत गाने के लिए कहा। दयाल आशा ने उसी समय श्री परसराम ज़िया द्वारा रचित दहेज सम्बंधी गीत करुण स्वर में गाया। उस गीत का विषय था कि एक लड़की दहेज के कारण जहर खाकर अपना अंत करने के पूर्व पूज्य पिताश्री को पत्र लिखती है कि वह दहेज की कुप्रथा के कारण आत्म हत्या करती है और बिदाकर रही है। दयाल आशा के इस गीत गाने के पश्चात् फिर दादा वासवाणी ने दयाल से कहा कि फिर यही गीत गाओ ' मैं जा रही

हूँ, विदा कर रही हूँ।' दयाल आशा ने फिर वह गीत करुण स्वर में गाया। उसी समय पता नहीं पड़ा कि साधु वासवाणी भी हमें अपनी बिदाई की ओर संकेत दे रहे हैं।

रात को ११ बजे मीरा हाल में नामकीर्तन हुआ, १२ बजे सरदार संतसिंघ ने 'सत्स्री अकाल' के नारे लगाए। उसी समय दादा वासवाणी ने आगुंतक प्रेमियों को आशीर्वाद दिया।

१ जनवरी सन् १९६६ सुबह दादा वासवाणी ने कहा कि आज नये वर्ष का प्रथम दिन है, गरीबों, अपाहिजों में कंबल, बिस्कुट व कुछ पैसे भी बांटे जायें। दादा जशन ने आज्ञानुसार व्यवस्था की। जब दादा साधु वासवाणी नीचे आये तो वहां कई दीन दुखी अपाहिज भाई बहिनें बैठी थी। उन्होंने प्रति एक को पैसे, कंबल व बिस्कुट के पैकेट दिये, किन्तु इन वस्तुओं से अधिक उन्हें प्यार दिया। साँझ के सत्संग में साधु वासवाणी ने संदेश देते हुए कहा कि प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें। प्रेमी अपना सर्वस्व प्रियतम को समर्पित करता है। श्री अर्जुन ने अपनी बाग डोर भगवान श्री कृष्ण को दे दी, तो उसकी विजय हुई। अधिकतर लोग दु:ख के समय प्रभु को करुण पुकार करते हैं, विनय करते हैं कि आप ही हमारे सर्वस्व हैं। जो व्यक्ति दु:ख में या सुख में सदैव के लिए अपने जीवन की बाग डोर प्रभु को सौंप देता है, प्यारे प्रभु उसकी सहायता व सुरक्षा करता है। एक कवि ने कहा हैं -:

तेरे हाथों सौंप दी जिसने अपनी डोर।
कभी उलझ सकती नहीं, उसका नंद किशोर।।

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनों ! आप भी अहं का परित्याग कर अपने जीवन की बाग डोर प्रभु को, सत्गुरू या किसी परिपूर्ण संत को सौंप दें। वे आपका मार्गदर्शन करेंगे, सहायता व सुरक्षा करेंगे, सूली से कांटा करेंगे। आपकी बुद्धि व शक्ति सीमित है, उसकी बुद्धि व शक्ति असीम है।

६ जनवरी साँझ को साधु वासवाणी ने उपदेश देते हुए कहा कि इस संसार में कोई भी दुख से मुक्त नहीं। सब को कोई न कोई दुख रहता है। संत डॉक्टर हैं, यदि हम दुखों से मुक्त होना चाहते हैं तो डॉक्टरों अर्थात् संतों की शिक्षा के अनुरुप चलें तो आपके मानसिक

दुख दूर हो जायेंगे। संत हमें दुख दूर करने के लिए दवाई देना चाहते हैं, परन्तु हम उनकी दवाई लेना नहीं चाहते। संतों की आज्ञा के अनुसार चलेंगे तो दुखों से मुक्त हो जायेंगे। संत बार बार पुकारते हैं प्यारे ! आवागमन से मुक्त होने के लिए नाम की सुई लगवाएं। अभी श्री सुखमनी साहब से वचन निकला :-

छूटत नाहीं कोट लख बाही,
नाम जपत, तिह पार पराही,
अनिक विघन जिह आइ संघारै,
हरि का नाम तत्काल उधारै
अनिक जोनि जनमै मर जाम
नाम जपत पावै बिस्राम,
हउँ मैला मल कबहु न धोवै,
हरि का नाम, कोट पाप खोवै।
ऐसा नामु जपहु मन रंगि,
नानक पाईए साध के संगि।

गुरू श्री अर्जुनदेवजी महाराज कहते हैं कि लाखों करोड़ो बाँहें हों फिर भी मनुष्य मुक्त नहीं हो सकता। प्रभु का नाम ही जीव को भवसागर से पार लगा सकता है। अनेक कष्ट क्लेशों, विपत्तियों से नाम ही मुक्त करा सकता है। जीव कई योनियों में भटकता है, नाम द्वारा ही उसे आनंद की प्राप्ति होगी। अहंकार की मैल के कारण मनुष्य मैला हो जाता है, उसे वह स्वयं साफ नहीं कर सकता, नाम द्वारा ही वह स्वच्छ हो सकता है। हरि का नाम जन्मों के पापों से मुक्ति दिलाता है। इस लिए नाम को नहीं भूलें। हमारे ऊपर कई जन्मों के पापों का बोझा है। कुछ पाप हम जान बूझकर करते हैं, कुछ पाप जाने अनजाने हो जाते हैं, उनसे छूटने का उपाय है, आप नाम स्मरण करें, नाम की नदी में नहायें, तो आपके सब पाप क्षय हो जायेंगे।

इस संसार में आया की भाँति रहें। आया हमारे घर में हमारे बच्चों का प्यार से पालन पोषण करती है, हमारे बच्चों में उसकी आसक्ति नहीं रहती है। उसकी आसक्ति अपनी संतान में रहती है। आप भी इस जगत् में आया की भाँति रहें। आप भी अपनी संतान का

प्रेम से पालन पोषण करें किन्तु अनासक्त भाव से करें। मन की तार प्रभु परमात्मा के साथ जोड़ें। सगे सम्बंधियों में मोह न रखकर उनके साथ प्रेम से चलें। आसक्ति ही दुख को जन्म देती है। आप संसार में अनासक्त होकर रहें।

११ जनवरी सुबह साधु वासवाणी को भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के देहान्त का दुखद समाचार सुनाया गया, तब वे आश्चर्य में पड़ गये कि कल तो वे समझौता के लिए ताश्क़न्द गये। उसी समय दादा वासवाणी ने गंभीर मुद्रा में आँखें मूंद कर परमात्मा से प्रार्थना की। उनके मन में निडर, निष्काम, निष्ठावान नेता श्री लालबहादुर शास्त्री के प्रति सन्मान की भावना थी।

१३ जनवरी लाल्लोइ के दिन सुबह दादा वासवाणी को पालकी में नीचे लाया गया। उसी दिन भी बहुत ही गरीब, अनाथ लोग वहां आये थे। दादा वासवाणी ने उनको प्यार करते हुए खर्ची दी। उसी समय उन्होंने श्री जशन से कहा कि आज ठंडी है ! मेरे वस्त्रों में से केवल दो दो वस्त्र तुम रखो, शेष मेरे वस्त्र ऊपर से लेकर आओ तो गरीबों में बाँटें। उन्हें गरीबों के प्रति कितनी न सहानुभूति एवं आत्मीयता थी ! शीघ्र ही आज्ञानुसार भैया जशनजी दादाजी के वस्त्र लेकर आये और दादा जी ने वस्त्र गरीबों में बांट दिये। किसी को यह पता नहीं था कि दो दिन के बाद दादा वासवाणी इस दुनिया से चल बसेंगे ! उन्होंने इस लिए ही स्वयं के लिए केवल दो दो वस्त्र रखकर शेष वस्त्र बांट दिये !

१४ जनवरी मकर संक्रान्ति के पावन दिन, भैया जशन ने दादा वासवाणी से विनय की कि आज ठंडी अधिक है, बाहर टहलने के लिए नहीं चलें, यहां ही बैठे रहें। परन्तु दादा वासवाणी ने कहा कि मुझे नीचे ले चलें। संतों की लीला विचित्र होती है ! पूज्य दादाजी की पालकी नीचे लाई गई। वहाँ कई दीन दुखी बैठे थे। पूज्य दादाजी दया के सागर, उन्होंने शीघ्र ही प्याज, आलू, दाल व चाय के पैकेट मंगवाये और गरीबों में बाँटे।

१५ जनवरी पूज्य दादा जी ने प्यारे जशन से कहा कि स्वास्थ्य ठीक नहीं लगता, मस्तक में चक्कर आ रहे हैं, तुम मेरे निकट रहो। दादाजी का प्यारे जशनजी के लिए यह अंतिम आदेश था। भैया जशन नें उन्हें ऑक्सीजन दिया और उनके मस्तक की मालिश की,

उनके पाँव दबाये परन्तु उनकी स्थिति गंभीर बनती गई। १६ जनवरी आधी रात को डाँ. नारायण हाथीरामाणी को बुलाया गया। डा हाथीरामाणी ने पूज्य दादाजी की स्थिति अत्यंत गंभीर देखकर शीघ्र ही वहाँ डा. ग्रांट को बुलाया। डा.ग्रांट ने दादाजी को देखकर कहा कि दिमाग की तंतु टूट गई है। फिर उसी समय डाँ. वारिमावर को बुलाया गया। उसने पूज्य दादाजी को सुई लगाई और भैया जशन से कहा कि स्थिति अत्यंत गंभीर है ! उसी समय भैया जशन, बहिन शान्ति, बहिन सती एवं अन्य प्रेमियों ने दादाजी के स्वास्थ्य के लिए प्रभु से प्रार्थना की, परन्तु प्रभु के आगे किसी की नहीं चलती !

१६ जनवरी सबेरे सवा आठ बजे महान विभूति लाखों लोगों के सहारे, सिन्धी समाज के सर्वश्रेष्ठ संत, समाज सुधारक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक, शिक्षा शास्त्री, पुण्यआत्मा पूज्य दादा साधु टी एल वासवाणी इस दुनिया से चल बसे ! चारों ओर गम की घटाएं छा गईं। आँखों से गंगा यमुना बह आई, दीन दुखियों यतीमों अनाथों के मसीहा चले गये ! यह दुःखद समाचार आकाशवाणी से प्रसारित किया गया। न केवल पुणे परन्तु विभिन्न नगरों से कई प्रेमी पूज्य दादा वासवाणी का अंतिम दर्शन करने के लिए आये। मीरा हाल में उनका पार्थिव शरीर रखा गया। १६ जनवरी सारी रात एवं १७ जनवरी सुबह को हज़ारों प्रेमी, पत्रकार दादा जी का अंतिम दर्शन करने के लिए आये। १७ जनवरी सबेरे से श्रीमद् भगवद् गीता एवं अन्य शास्त्रो का पाठ होता रहा । सुबह ११ बजे शोकमय वातावरण में भाऊ श्री जशन एवं श्री गंगाराम ने साधु वासवाणी के गुणों का वर्णन करते हुए हृदय स्पर्शी श्रद्धाँजलि अर्पित की। उसी समय श्रोताओं की आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी।

१७ जनवरी दुपहर पूज्य दादाजी का पार्थिव शरीर ट्रक में दर्शनार्थ रखा गया। हज़ारों प्रेमी दादा वासवाणी की अंतिम यात्रा में दादाजी की जय जय कार मनाते, 'दादाजी अमर रहे' के नारे लगाते पुणे के विभिन्न क्षेत्रों में परिक्रमा देकर पार्थिव शरीर को मीरा भूमि में लेकर लौट आये। वहाँ, गीता मंदिर के निकट चित्ता बनाई गई। दादाजी का पर्थिव शरीर चन्दन की लकड़ियों पर रखा गया। वेद मंत्रों

के उच्चारण के पश्चात् भैया जशन ने चिता को परिक्रमा दी। सभी प्रेमियों की आँखों मे आँसू थे। भैया जशन ने गंभीर मुद्रा में प्रार्थना की। अग्नि संस्कार किया गया !

भैया जशनजी का दादा साधु वासवाणी से अटूट सम्बंध था वे न केवल उनके चाचाजी थे किन्तु आध्यात्मिक मार्गदर्शक एवं प्राणों से प्रिय प्रियतम थे, इस लिए उनके विरह में उनके मुख से विरह के गीतों की धारा प्रवाहित हुई।

जादूगर चले गये जादू लगाकर,
वैरागी चले गये, वैरागी बनाकर।

२० जनवरी रात्रि को पूज्य दादाजी के समाधि स्थल पर भैया जशनजी ने हृदय स्पर्शी प्रार्थना करते हुए कहा कि 'मेरे प्रियतम ! मेरे ठाकुर ! मेरे गुरूदेव आप चले गये ! आशीर्वाद करें कि मैं स्वयं को आप से कभी दूर नहीं समझूं। यह सारा जीवन तुम्हें समर्पित करूँ। आप कमल की भाँति निर्मल थे। आपके जीवन में ज्योति मंडल की ज्योत प्रज्वलित हुई। उस आत्मिक ज्योति ने हज़ारों लोगों को हैरान किया, आपकी मधुर मुस्कान ने मस्ताना किया। आओ ! फिर जगाओ वह ज्योति ! आप त्यागी थे, वैरागी थे, किन्तु आपका वैराग्य दूसरे प्रकार का था। आपने कभी गेरूए वस्त्र नहीं पहने, आपका मन राम रंग, श्याम रंग, नाम रंग, प्रेम रंग में रंगा हुआ था, आप सदैव प्रभु के संग में थे। आशीर्वाद करें एक क्षण भी स्वयं को आपसे दूर नहीं समझूं !

अपने बालक की प्रार्थना, अपने अयोग्य दास की बिनती स्वीकार करें। आप समर्थ हैं, दीन दयाल हैं, ऐसी आशीर्वाद करें कि मैं अपने को आप से एक क्षण भी दूर नहीं समझूं, एक एक श्वास आपके लिए निछावर करूँ।'

२३ जनवरी सुबह को वेद मंत्रों के उच्चारण एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ के पश्चात् भैया जशन, दादी हरीदेवी, श्री गंगाराम साजनदास, बहिन शान्ति बहिन सती, श्री आतम वासवाणी और अन्य प्रेमियोंने पूज्य साधु वासवाणी की अस्तियाँ फूल संग्रह कर बरिनियों में और भस्म अलग अलग क्लशों में रखी। भैया जशन फूलों की बरनी सर पर रखकर और अन्य प्रेमी भस्म के क्लश माथे पर रखकर ब्रह्मलीन

पूज्य साधु वासवाणी की कुटिया में आये और वह बरनी व क्लश दादाजी के पलंग पर रखे। भैया जशन वासवाणी ने अखंड ज्योति प्रज्वलित कर हृदय स्पर्शी प्रार्थना की।

२८ जनवरी साँझ को भैया जशन वासवाणी ने गुरूदेव साधु वासवाणी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे मेरे सच्चे मार्गदर्शक थे, सर्वस्व थे। माँ-बाप की भाँति उन्होंने मेरी देख भाल की, मुझे स्नेह दिया। उनकी असीम कृपा मुझ पर रहीं। मैं उनके उपकार कभी भूल नहीं सकता। वे स्नेह व सेवा के सागर थे। दया व प्रेम के अवतार थे। वे दीन दुखियों के मसीहा थे। वे महान शिक्षा शास्त्री, दार्शनिक और उच्च कोटि के संत कवि व साहित्यकार थे। वे जीवन के अंतिम दिनों में भी सेवा करते रहे। उन्हें दीन दुखियों, अपाहिजों वृद्धों की सेवा करने में प्रसन्नता होती थी। वे गीता भवन के बाहर जब कुर्सी पर आकर बैठते थे तो गरीबों व फकीरों की पंक्ति लग जाती थी। दादाजी शीघ्र ही खान पान की कुछ वस्तुएं मंगवाकर उन्हें खिलाते पिलाते थे और उन्हें अपना स्नेह देते थे। वे कहते थे कि द्वार पर आये हूए को खाली मत लौटाएं उसे कुछ न कुछ दें, पता नहीं किस वेश में नारायण मिल जाये। सांसारिक यात्रा समाप्त होने के दो दिन पूर्व भी उन्होंने कहा कि मेरे पहनने के लिए दो दिन के वस्त्र रख कर शेष मेरे वस्त्र आप लायें तो गरीबों में बांट दें। हमें पता नहीं था कि हमारे प्रियतम गुरूदेव दादाजी दो दिन के पश्चात् इस संसार से चल बसेंगे ! दादाजी अब भी हमें अदृष्ट रुप में देख रहे हैं। हम उनकी शिक्षाओं का अनुसरण करें।

साधु वासवाणी महान आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे, फिर भी वे दुनिया से दूर नहीं रहे। उन्होंने जनता में जनार्दन का दर्शन किया और दीन दुखियों की सेवा की। मैंने एक स्वप्न में देखा कि स्वर्ग के द्वार पर देवता दादा वासवाणी का स्वागत कर रहे हैं और कह रहे हैं 'श्री श्याम सुंदर आपकी राह देख रहे हैं, सुस्वागतम् !' जैसे ही वे स्वर्ग पुरी में प्रवेश करते हैं तो वे पृथ्वी से एक करुण पुकार सुनते हैं। उसी समय दादा वासवाणी कहते हैं, 'मैं स्वर्गपुरी में नहीं जाऊँगा। जब तक धरती पर एक भी प्राणी दुखी है, तब तक मैं पृथ्वी पर दुखियों की सेवा

करुँगा।'

वे स्वर्ग के सुखों व ऐश्वर्य के चाहक नहीं थे। उन्हें मुक्ति की भी आवश्यकता नहीं थी। कई बार उनसे मुक्ति के सम्बंध में पूछा गया। वे कहते थे, मुक्ति की जरूरत नहीं। मेरी तो यह अभिलाषा है कि मैं बार बार मनुष्य जन्म लेकर दीन दुखियों व पशु पक्षियों की सेवा करुँ।

साधु वासवाणी का संदेश है, 'सेवा करें, सेवा करें।' सेवा के साथ नामस्मरण भी अत्यन्त आवश्यक है। राम स्मर राम स्मर यही तेरो काज ! आज कल लोग, धन वैभव, भोग के चक्रव्युह में फंस गये हैं। दुनियाँ में कितनी न गरीबी है ! लोग दुखों से त्रस्त हैं ! महंगाई बढ़ गई है ! लाखों लोग रोटी, कपड़ा और मकान से भी वंचित हैं। इस लिए दादा वासवाणी बार बार कहते थे कि आपके पास जो कुछ है वह गरीबों में बांटें। मेरे भाइयो और बहिनों ! आप भी दीन दुखियों अपाहिजों की सेवा करें और नाम स्मरण करें।

दादाजी एक महानतम एवं दैवीय विभूति तुल्य युगपुरूष थे। वे नव विश्वके ऋषि थे। उन्होंने पाश्चात्य एवं पूर्वात्य दार्शनिक सिद्धांतों का समन्वय कर इस दिग्भ्रांत विश्व का पथ-प्रदर्शन किया। १६ जनवरी को नश्वर एवं क्षणभंगुर संसारकी जीवन-यात्रा पूर्ण कर अमर-पद प्राप्त किया। दीप बुझ गया परंतु नित्य नवीनतम प्रकाशपुंज अडिग है।उनकी आवाज क्षीण हो गयी, लेकिन उनका संदेश अब भी पीड़ित हृदयोंमें नव उमंग एवं आनंद का संचार कर रहा है। उनका कुसुमवत् पूर्ण विकसित मुख हमारे हृदयों में और उनके अमृतवचनों की सुरभि सदैव सुरभित है, जो हृदयस्थ करेगा वही लाभान्वित होगा।

श्री होतचन्द गोपालदास आडवाणी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दादा वासवाणी विनम्रता एवं शालीनता की साक्षात् मूर्ति थे। कतिपय अवसरों पर जो आस्था एवं श्रद्धायुक्त भक्तजन आपके पास आशीर्वाद प्राप्ति के लिए आते थे, वे उन्हीं के चरणस्पर्श कर आशीर्वाद की याचना करते थे। सर्व सुख-साधन-संपन्न होते हुए भी दादाजीने साधुवृत्ति को ही वरीयता दी। सर्वज्ञ होते हुए भी अपने को अनभिज्ञ एवं दास शब्दों से संबोधित किया। बार बार दादाजी ने

कहा कि मेरे जीवन की सब से बड़ी अभीप्सा है कि मैं लघुतम् दासानुदास बनूं। छोटे-छोटे कार्य करने में दादाजी को अत्यंत आनंद की उपलब्धि होती थी। हमने स्वयं दादाजी को किसी क्षुधित को भोजन खिलाते हुए, किसी भिक्षुक का शरीर साफ करते हुए और उन्हें वस्त्र धारन कराते हुए, किसी हरिजन के घर में सफाई करते हूए, किसी असहाय अबला विधवा की सहायता करते, रोगी की शुश्रूषा करते, पक्षियों को अन्न-कण खिलाते हुए देखा। साक्षीभाव से यदि कहा जाय ती अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दादाजी इन विभिन्न सेवा-कार्यों में कितने तल्लीन हो जाते थे। फलस्वरूप उन्हें अत्यानंद का अनुभव होता था। दादाजी अपने प्रवचन में सदैव स्मरण कराते थे: "प्रेम के छोटे अंकुरों को अंकुरित करो तो तुम्हें आनंद की प्राप्ति होगी। विनम्र बनो तो प्रभु-प्रेम सदृश दिव्यज्योति की अपलब्धि हो जाय."

बहुजन हिताय शिक्षा के बहुमुखी विकास के लिए दादाजीने जो संत मीरा विद्यालय एवं महाविद्यालय पुणे में प्रस्थापित किया, इनका भी उद्देश्य है; 'ज्योति प्रज्वलित करो' प्रेम की ज्योति, सेवा एवं करुणा की ज्योति। करुणा की ज्योति प्रभु-प्राप्ति का आदिस्रोत, जिस के हृदय में करुणा है, उनके हृदय में नवशक्ति का संचार है। जैसे पुष्पित पुष्प में होता है, सौंदर्य, कोमलता और सुगंध, वैसे मनुष्य में विनम्रता, करुणा एवं सेवा का विद्यमान होना अत्यावश्यक हैं।

इन शिक्षाओं से न केवल सिंधी समुदाय लाभान्वित हुआ है अपितु देश-विदेश में भी दादाजी की पुस्तकें-मानवमात्र का प्रकाशस्तंभ सदृश पथ-प्रशस्त कर रही हैं।

द्वितीय महायुद्ध एवं देश विभाजन के समय जो हृदयद्रावक बीभत्व उपद्रव हुए और सिंधियों को सिंध से प्रस्थान करना पड़ा, इस घटना ने मेरे विश्वास को विकसित कर दिया। दादाजीने अपनी असीमानुकम्पा का वरदहस्त मेरे शीष पर धर कर मेरे संतप्त व्यवधानयुक्त मन में असीम शान्ति का प्रादुर्भाव किया एवं नवआशा का अविर्भाव किया।

श्री गंगाराम साजनदास, बहिन हरीदेवी वासवाणी, बहिन सती थघाणी ने दादा वासवाणी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। बहिन

शान्ति जो सदैव मुस्कराती रहती थी, उसने मूक श्रद्धांजलि अर्पित की। उसने प्रियतम गुरूदेव के विरह में गीत मन में गुन गुनाये। दयाल आशा ने करुण स्वर में कविता के रूप में साधु वासवाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारत के राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन, महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री, शिक्षा मंत्री, स्वामी लीलाशाह महाराज, संत दलीप कुमार राय, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज,प्राचार्य के. एम. कुंदनाणी, प्राचार्य एल. एच्छ. अजवाणी, प्रो राम पंजवाणी पुणे विश्व विद्यालय के उपकुलपति, श्री नारी गुरसहाणी, न्यायाधीश श्री मोतीलाल बुटाणी, श्री अतुर संगताणी, श्री नथुर रामचन्दाणी, विश्नु सदारंगाणी, एवं अन्य कई प्रेमियों ने पुणे व अन्य स्थानों पर साधु वासवाणी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हूए कहा उनके गुणों का वर्णन किया।

कवि कृष्णलाल बजाज प्रदीप ने निम्न काव्यजंलि अर्पित की :-

अदिभारत में
आदिकवि वाल्मीकि ने
एक महापुरूष की कल्पना की थी
वह महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम थे।
महाभारत में महर्षि व्यास ने
एक पूर्णपुरुष कल्पना की थी
वह पूर्ण पुरुष श्रीकृष्ण थे।
आधुनिक स्वतंत्र एवं
आसेतुहिमाचल इस नवभारत में
शारदा के सहस्त्रों सुतों ने
साधुपुरूष की कल्पना की
तदनुरूप त्याग-सेवा प्रेमपूर्ण
साधु टी. एल. वासवाणी थें।

आयरलंड के प्रसिद्ध कवि डॉ. कजन्स ने विदेश में श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि साधु वासवाणी वर्तमान युग के आध्यात्मिक मार्गदर्शक व निर्माता थे।

दादा वासवाणी विनम्रता की मूर्ति थे। बच्चों, बूढ़ो, जाने, अनजाने, हिंदु, मुसलमान, ईसाई, पारसी, छोटे, बड़े किसी के साथ भी मिलते थे तो बड़ी नम्रता के साथ मिलते थे। अगर कोई उन्हें पाँव पड़ता था तो दादाजी भी वही क्रिया करते थे। उनकी नम्रता एवं प्यार देखकर दिल भर आता था। दादा सब से कहते थे, "मुझे आशीर्वाद करना।" ऐसे शब्दों से उनकी विनम्रता प्रकट होती है।

दादाजी ने आपना उपनाम 'नूरी' रखा था। उन्होंने हज़ारो गीत लिखे उन गीतों में "नूरी" का ही प्रयोग किया। नूरी एक गरीब मछुए की लड़की थी। वह अत्यंत सुंदर परंतु बड़ी विनम्र थी। वह कभी अपनी सुंदरता पर गर्व नहीं करती थी। राजा जाम तमाची विवाहित था। उसे कई रानियाँ थी, किन्तु उसने नूरी की नम्रता देखकर उस गरीब, हीन जाति की लड़की से शादी की, और साथ साथ उसे अपनी पट-रानी का पद दिया। सिन्ध के सर्वश्रेष्ठ कवि शाह लतीफ ने भी 'नूरी' को नायिका रूप में प्रस्तुत किया है और उसके गुणों की प्रशंसा की है। दादाजीने "नूरी" की नम्रता से प्रभावित होकर अपना उपनाम ही 'नूरी' रख दिया !

एक बार दादाजी मद्रास में थे, वहाँ उनका भव्य स्वागत किया गया। स्वागत करते समय उत्सव के संयोजक संन्यासी संत ने कहा दादाजी महान योगी हैं, दया के अवतार हैं, वर्चस्वी विद्वान हैं, महान संत हैं। तब दादाजी ने कहा, "भाइयोऔर बहनों ! जो कुछ मेरे लिए कहा गया उसके मैं योग्य भी नहीं। मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ। मुझे संत मत कहो, मैं तो संतों के दर का दास हूँ। मैं तो संतो की धूलि का इच्छुक हूँ।

साधु वासवाणी सिन्ध के गुरू नानक शाह थे। जैसे श्री गुरू नानकदेव ने बचपन से ही अपने मन में नाम की ज्योति जगाई, उसी प्रकार दादाजी भी बचपन से ही ईश्वर आराधना में तल्लीन हो जाते थे। कई घंटे शान्ति में बैठकर नाम का स्मरण करते थे। जैसे गुरू नानकदेव ने भ्रमण कर हर जगह नाम स्मरण का संदेश दिया, वैसे दादाजी ने भी भिन्न भिन्न नगरों और देशों में जाकर नाम-स्मरण एवं प्रभु-प्रेम का पैगाम दिया। श्री गुरू नानक देव विनम्रता और दया की मूर्ति थे,

तो दादाजी भी विनम्रता और दया की मूर्ति थे। दोनों में दास्य भावना थी। गुरू नानकदेव के पास जितने भी पैसे होते थे, वे पैसे संतों साधुओं गरीबों को खाना खिलाने में खर्च करते थे। दादाजी को भी लाखों रूपये मिलते थे, दादाजी वे पैसे गरीबों की सेवा में खर्च करते थे। श्री गुरू नानक की भाँति दादाजी भी गरीबों के लिए 'मोदी खाना' चलाते थे। दोनों अवतारी पुरूषों ने उच्च कोटि के संतकाव्य की रचना की। श्री गुरू ग्रंथसाहब में अन्य संतों और गुरूओं की वाणी के साथ श्री गुरू नानक देव की अमृतवाणी है, जिसके पढ़ने से ही आनंद की उपलब्धि होती है, और समस्याओं का समाधान हो जाता है। नूरी ग्रंथ में दादाजी की वाणी संग्रहीत है, जिसे पढ़ने से ही आनंद की प्राप्ति होती है। और अगर कोई शंका या समस्या होती है तो उसका समाधान हो जाता है। मेरा ये स्वयं का अनुभव है। मैं किसी ट्रस्ट का ट्रस्टी था। ट्रस्ट के मंत्री महोदय किसी धनवान को मेरी जगह ट्रस्टी बनाने के लिए प्रयत्नशील थे, और मुझे त्याग पत्र देने के लिए कह रहे थे। आजकल तो मैं ट्रस्टी होना बड़ा बंधन समझता हूँ और सब ही ट्रस्टों से त्यागपत्र देना चाहता हूँ परन्तु उन दिनों मैं ट्रस्टी होना बड़ी बात समझता था, इस लिए मैं दुबिधा में था। दादाजी के पुण्यतिथि अवसर पर मैं पूना की पूण्य भूमि में आया। मैं उस त्यागपत्र के सम्बंध माननीय दादा जशनजी से बातचीत करना चाहता था। संध्याकालीन सत्संग के समाप्ति के पश्चात मै गीता मंदिर में गया, जहाँ श्री नूरी ग्रंथ विराजमान था। मैं उस ग्रंथ का पाठ करने बैठ गया, जैसे ही मैंने प्रथम वचन पढ़ा तो मुझे प्रश्न का उत्तर मिल गया। थोड़े समय के बाद मैं जी.पी.ओ. में गया और अपना त्याग पत्र उसी समय ही वहाँ से भेज दिया। ऐसे महान भावों की वाणी भी हमारा मार्गदर्शन करती है।

श्री गुरू नानक देवजी एवं दादाजी के विचार, आचार, व्यवहार में समानता है। दोनों की यही शिक्षा है, कि "सर्व रोग का ओखद नाम," "स्मर स्मर सदा सुख पावउ" दोनों के दार्शनिक विचारों में भी समानता है। इस लिए हम दादाजी को सिन्ध का श्री गुरू नानक देव कह सकते हैं। श्री गुरू नानक देव को श्री गुरू नानकशाह के नाम से भी संबोधित किया जाता है, तो दादाजी को भी प्रेमी दादल शाह से

संबोधित करते हैं। दादाजी का दर्शन पाकर गुरू नानकजी की स्मृति आ जाती थी।

साधु वासवाणी एक ओजस्वी लेखक एवं उच्च कोटि के कवि भी थे। उन्होंने अंग्रेजी भाषा में दो सौ से अधिक आध्यात्मिक, भक्ति-परक राष्ट्रीय एवं जीवन उपयोगी विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। मद्रास की गणेश कंपनी और मीरा पबलीकेशन ने उनकी कई अंग्रेजी पुस्तकें प्रकाशित की। संत माला द्वारा उनकी अनेक सिन्धी पुस्तकें प्रकाशित हुई। उच्च कोटि की पत्रिकाओं में दादाजी के लेख प्रकाशित होते थे। न केवल भारतीय परन्तु विदेशी लोग भी दादाजी का साहित्य पढ़कर प्रशंसा करते थे। उनके साहित्य में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् त्तीनों गुण विद्यमान हैं। उनकी शैली भी अनोखी है।

साधु वासवाणी के अंग्रेजी साहित्य का विषेश अध्ययन कर प्रो रेवाचन्द गोदवाणी ने उनके साहित्यिक योगदान के सम्बंध में शोघ प्रबंध लिखकर पी. एच्छ डी की उपाधि प्राप्त की है।

साधु वासवाणी संत कवि के रूप में :-

सिन्धी काव्य में दादाजी का "नूरी ग्रंथ" एक अमूल्य कृति है। उनका सारा सिन्धी काव्य इस ग्रंथ में संग्रहीत है। किसी भी सिन्धी कवि ने इतना सिन्धी काव्य नहीं लिखा है, जितना दादाजी ने लिखा है। बीसवीं शती सिन्धी भक्ति साहित्य के वे मूर्भन्य कवि हैं। वे जब प्रभु के प्रेम में तल्लीन होकर गुनगुनाते थे तो काव्य मंदाकनी उनके मुख से प्रवाहित होती थी, उनके काव्य पर भी श्रीमद् भगवद् गीता, श्री गुरू ग्रन्थ साहब, संत कबीर, सूर एवं मीरा के काव्य का प्रभाव परिलक्षित है। उन्होंने हिन्दी में भी कुछ फुटकर पद लिखे हैं, जो नूरी ग्रंथ में संग्रहीत हैं। प्रस्तुत है उन के सिन्धी व हिन्दी काव्य का विवेचन।

साधना के निदेशक गुरू :

संत कवियों की भाँति साधु वासवाणी भी गुरू की स्तुति गाते हुए कहते हैं कि मेरे परिपूर्ण गुरू ने ही मुझे ज्ञान की दीक्षा दी। उन्होंने ही मुझे शरीर और आत्मा, ब्रह्म और जीव का भेद बताया और तत्पश्चात् मैंने अपने आत्मस्वरूप को पहचाना :-

पूरे गुरू ने भेद बताया,
खोले सरूप सहज समझाया,
आतम रूप मैंने पाया।

गुरू ने ही मुझपर दया दृष्टि कर मेरे मन में ज्ञान का दीपक जगाया, जिसके कारण अज्ञान-तम दूर हो गया।

उसने दिल में दीपक जलाया,
अज्ञान अंधेरा अंदर भगाया।

कवि कहते हैं कि मैं ऐसे गुरू पर अपना सर्वस्व न्योछावर करूँ जिन्होंने सदैव मेरा अज्ञान अंधेरा दूर किया :-

दम दम गुर पर मैं बलहारी,
जिन दम में दूर की अंधकारी।

कवि गुरू के चरणों की रज से नहाने की इच्छा प्रकट करते हैं -:

गुरू चरनों धुली करूं इश्नान।

कवि कहते हैं गुरूदेव ने ही उन्हें अगम पंथ की राह बताई -:

पंथ अगम की राह बताई।

दादाजी के अनुसार सत्गुरू सर्वत्र विद्यमान हैं, वे नि:कलंक निष्पाप एवं निर्मल हैं।

सत्गुरू मोरे हैं सर्वव्याप,
नि:कलंक, निर्मल निषपाप।

दार्शनिक विचार

साधु वासवाणी संत एवं कवि के साथ साथ दार्शनिक भी थे। उन्होंने अपने काव्य में कुछ दार्शनिक विचार भी व्यक्त किये हैं।

ब्रह्म :- दादाजी ब्रह्म सम्बंधी विचार व्यक्त करते हूए कहते हैं कि जल थल में, सूर्य और चांद में अर्थात् सर्वत्र एक ब्रह्म विद्यमान है। वह सर्वव्यापी ब्रह्म हमारे अंत:करण में भी व्यापक है। कवि ब्रह्म ज्योति का साक्षात्कार कर तद्रूप हो गये हैं, वे कहते हैं :-

जल थल सूरज चांद और तारा.
इक ज्योति जगे अलख आसमानी !
सोई आतश विच दिल मन्दिर,

देखत नूरी है मस्तानी।

कवि एक ब्रह्म की ही सत्ता को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि प्रकृति में जो विभिन्न वस्तुएं, एवं जीव दीख पड़ते हैं उन सब में एक लासानी सूरत (अतुलनीय रूप) ब्रह्म का ही साक्षात्कार करें :-

कुदिरत की यह कसरत किसकी ?
देखो देखो सूरत लासानी।

सब में एक ब्रह्म विद्यमान है :-

एक साहब सब में जान।

जगत् में जो कुछ दृश्यमान है वह अनित्य है, एक ब्रह्म ही सत्य है। कवि के मूल शब्दों में :-

सगल पसारा झूठ ही झूठ,
इक नाम साचो, इक नाम निहार।

जीव :- दादा वासवाणी जीव को ब्रह्म रूप मानते हुए कहते हैं, कि ब्रह्म जगत् में जीवात्मा के रूप में अवतरित हुआ है -:

आदम आदम बनके आया,
पाए पाए चोलो इन्सानी।

जीव स्वयं को भूल कर, जगत् को, और देह को सत् समझकर भटकता रहता है, इस लिए साधु वासवाणी उसे कहते हैं कि मिथ्या में मोह रखकर तू बहुत जन्म भटके हो, अब जाग्रत् होकर साक्षात्कार करो :-

भटक रहे क्यों जन्म जन्म तू,
अब छोड़ प्यारे ! इह परेशानी।

जीव स्वयं को देह समझकर बैठा है। देह तो नश्वर है। यह कंचन जैसी काया माया का खेल है, यह क्षणभंगुर है। छाया की तरह बेवका है। जैसा तंबूरा बजते बजते अचानक टूट जाता है, वैसे ही यह देह भी नश्वर है। जीव को अपनी बुद्धिमता, विद्वता पांडित्य पर कितना गर्व रहता है, परन्तु जैसे ही वह आत्मा की सत्ता चली जाती है, तो उस देह का कुछ भी मूल्य नहीं होता। रुपया सोना चांदी सब यहीं पर रह जाता है। दादाजी के मूल शब्द में :-

कंचन काया सभ इह माया,

आया गंवाया सब यह छाया।
साधो इह देह ठाट तंबूरे का !
बाजत बाजत तूटे तार,
कहां बुद्धि गई कहाँ विचार।

जगत् : दादाजी के विचारों के अनुसार यह जगत् असार है, मिथ्या है, झूठा हे। वे कहते हैं -:

सगल पसारा कूड़ ही कूड़।

जो कुछ दृश्यमान है वह असत्य एवं अनित्य है। यह जगत् माया का खेल है। जिसे अपना कुछ अस्तित्व नहीं।

जग झूठा, झूठा माया का खेल।

यह जगत् नश्वर है और जीव इस नश्वर जगत् में आसक्ति रखता है, यह स्वयं दो दिन का महिमान है। दादाजी के शब्दों में :-

जग सारा फानी फानी,
दो दिन की है मज़िमानी।

दादाजी के अनुसार यह जगत् क्षण का खेल है, जो कुछ है वह नश्वर है, आत्मा रूपी पंछी उड़ जायेगा।

जग सारा प्यारे इक खिन का खेला,
फानी सब फानी पंखी जाइ अकेला।

जीव-जगत व जगत् के पदार्थों की नश्वरता प्रतिपादित करते हुए कवि कहते हैं -

मुसाफिर तू तो दो दिन का,
नज़ारा ! यह मुसाफरखाना है !
यह तखत ताऊसी ताजमहल,
दो दिन का खिलौना है !

माया : कवि के विचारानुसार कंचन काया जो कुछ जगत् में दृश्यमान है वह सब माया है। कवि ने मायावी पदार्थों की तुलना छाया से की है। कवि के मूल शब्दों में :-

कंचन काया सब है माया,
आया गंवाया सब यह छाया,
रुपया रोपा, इह बर्तन सोना,

सब तज कर इक दिन रोना,
साधो सगल पसारा कूड़े का।

मुक्ति : दादा वासवाणी के अनुसार प्रियतम का दर्झन ही मुक्ति है। जब जीव को ब्रह्म का साक्षात्कार होता है। तब वह यम की फांसी से मुक्त हो जाता है। कवि का यह दृढ़ विश्वास है कि जब उन्हें मन मंदिर से प्रभु के दर्शन होंगे तब यम की फांसी कट जायेगी।

काटी काटी जम की फासी, जब घर मोरे साजन आइ।

साधना के तत्त्व :

नाम स्मरण :

नाम स्मरण द्वारा जीव को आनंद की प्राप्ति होती है और सभी संकट टल जाते हैं, इस लिए दादाजी नाम स्मरण पर बल देते हुए कहते हैं :

स्मर स्मर पाइ सुख साचा,
स्मर स्मर सब संकट जाइ,
नूरी गोबिंद गाइ मना,
स्मर स्मर सचखंड तू पाइ।

नाम स्मरण की महत्ता प्रतिपादित करते हुए दादाजी कहते हैं:-

गंगा जमुना तीर्थ इश्नान,
सब वृथा कर तू जान,
नूरी गोंबिद गाइ मना!
बिन स्मरण न-फल तपस्या दान।

जो नाम का स्मरण करता है, वह प्रियतम को प्राप्त करता है-

इक नाम जो जो जपीए,
सो सो पावइ प्रीतम रूप।
राम नाम ही नौं निधि है,
राम नाम नव निधान।

राम नाम के बिना जीवन अंधकारमय है, वह ही जीवन की ज्योति है -

रामनाम जीवन ज्योति

मनुष्य जगत् के नाना पदार्थों में आसक्ति रखकर प्रभु को भूल जाता है, दादाजी मनुष्य को परामर्श देते हुए कहते हैं कि जगत् के झूठे पदार्थों का परित्याग कर एक ब्रह्म से नाता जोड़ो, उसका नाम स्मरण करो, कवि के मूल शब्दों में -

झूठा झूठा नाता छोड़, इक नाम से लिव लगाइ।
साहब साचा याद कर, स्मर स्मर सुख पाइ।

प्रेग तत्व :- साधु वासवाणी प्रेम की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि प्रेम और प्रियतम में कोई अंतर नहीं, प्रेम ही परमात्मा है। प्रेम ही उपासना है।

प्रेम ई प्रियतम, प्रेम ई पूजा
प्रेम बिना ना को ठाकुर दूजा।

प्रेम ही सारे विश्व का प्रकाश है, प्रेम ही ज्ञान है, प्रेम ही पुरान है। सबही शास्त्रों ग्रंथों का मूल तत्त्व प्रेम ही है -

प्रेम ही ज्योति सारे जहान,
प्रेम ही ज्ञान, प्रेम ही पुरान।
प्रेम ही वेद अंजील कुरान,
प्रेम ही शास्त्र गीता ज्ञान।

दादाजी प्रेम रूपी पुष्पों द्वारा भगवान श्री कृष्ण की पूजा करना चाहते हैं। साधु वासवाणी ज्ञान की अपेक्षा प्रेम को अधिक महत्त्व देते हैं। वे श्री कृष्ण कन्हैया को सम्बोधित करते हुए कहते हैं -:

कैसी करूं मोरे कनैया तेरी पूजा ?
प्रेम बिना ना पुष्प को दूजा।
ना कोई पोथी, नँ कोई पुस्तक जानूं
प्रेम बिना ना कोई ग्रंथ पछानूं।

कवि प्रेम को कृष्ण स्वरूप समझते हैं, वे प्रेम को ही भक्ति मानते हैं -:

प्यार ई कन्हैया कृष्ण मुरारी,
प्यार ई ज्योति धाम अवतारी।
प्यार ई परमेश्वर जी भक्ति,
प्यार ई जीवन निर्मल शक्ति।

अन्तः साधना: दादाजी साधक से कहते हैं कि बाह्य साधना का परित्याग कर अन्तः साधना करो। भीतर जाओ प्यारे, भीतर जाओ तो तुम्हें दिव्य ज्योति का दर्शन मिले। दादाजी के शब्दों में -

नूरी निमाणी, कर कुरबानी, तू अंदर जा,
जानब जल्वो, साजन तजिलो, तू भीतर पा।

एक दूसरी कविता में दादाजी साधक से कहते हैं कि अपने दिल का किवाड़ खोलकर स्वयं का साक्षात्कार करो। बाह्य जगत् में भटकने की कोई आवश्यकता नहीं है, तेरे अंदर में ही मका मदीना है, काशी, गंगा-यमुना, हरिद्वार एवं अमृतसर भी तेरे ही अन्तःकरण में है, श्याम और राम भी तेरे अन्तःकरण में हैं। द्वैत की दीवार को तोड़ो, अज्ञान की खिड़की खोलो, तो तुम्हें सत् चित्त आनंद स्वरूप का साक्षात्कार हो। दादाजी के मूल शब्दों में -

खिड़की खोल देख दीदार,
अंदर मका, अंदर काशी,
क्यों तू भटको तीर्थ वासी ?
अंदर गंगा अंदर जमुना,
अंदर राधा, अंदर श्यामा !
अंदर ग्रन्था, अंदर बानी,
अंदर अमृतसर का पानी,
अंदर सिन्धु, है हरिद्वार,
अंदर ठाकुर का दरबार।

मन मंदिर में ही बाँके बिहारी श्याम सुन्दर ब्राजमान हैं, इस लिए कवि कहते हैं कि अन्तःसाधना द्वारा अनहद नाद सुनो, मुरली मनोहर की बाँसुरी की आवाज सुनो -

गुप्त गुफा में मोरे साजन राजे,
मोरे मोहन सोहन बीना बाजे।

संतों का संग

जैसा संग तैसा रंग। संतों महात्माओं का संग करने से मन पवित्र होता है, आनंद की प्राप्ति होती है, यही मानव जीवन का मूल ध्येय है। दादाजी साधक को संतों का संग करने का उपदेश देते हुए

कहते हैं -:

संत जना का पकड़ा पैरा
संतनि चरनन पाओ विसराम;
संत जना के संग निवास,
गाओ गाओ निर्मल नाम।

साधक को न केवल संतों का संग करना चाहिए परन्तु उनकी सेवा भी करनी चाहिए :

संत जना की सेवा सेवा,
यह है जीवन का मुख्य काम।

दादाजी कहते है कि संत जन तो उनके जीवन का प्रकाश हैं :

संत जना मेरी जीवन ज्योति।

संत प्रभु के प्रतिनिधि हैं, उनकी शरण लेने से साधक संसार के सागर से पार हो जायेगा। इस लिए दादाजी कहते हैं :

जागो ! जागो ! मोरे प्यारे जागो !
संत जना की शरना लागो।

सुन समाधि :

जब साधक सुन समाधि में तल्लीन हो जाता है, तब उसे पूर्ण गुरू अथवा ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता। सब सांसारिक व्यवहार प्रकृति के दृश्य इत्यादि पदार्थों से मन हट जाता है, सुरति गुरू मंत्र अर्थात् शब्द के साथ मिल जाती है; दादाजी कहते हैं :-

सुन देस में ना कोई वहंवार,
न मेरा तेरा, ना कोई कम कार,
उति चमके चमके इक प्यार,
गुरू पूरा मिलिया सुन में।
ना उति कुदिरत का निजारा,
उति चन्ड न चमके ना कोई तारा,
उति आहे आहे शब्द की धारा:
गुर पूरा मिलिया सुन में।

मनुष्य देह :

मनुष्य-देह दुर्लभ है, इस लिए जीव को परमात्मा के गुण गा

कर उसका स्मरण और ध्यान कर मानव जीवन सफल करना चाहिये। दादाजी के मूल शब्दों में -

गोबिन्द गुन गुन गाओ,
मानुख देही दुर्लभ देही,
चरन कमल ध्याओ ! ध्याओ !

कृष्ण काव्य :

मीरा और सूर की भाँति दादा वासवाणी के मन में भी भगवान श्री कृष्णचन्द्र आनंदकंद के प्रति अनन्य एवं उत्कट, भक्ति-भावना थी। उन्हें किसी सांसारिक पदार्थ की इच्छा नहीं थी वे कृष्ण के दर्शन के प्यासी थे। वे बांके बिहारी से विनय करते हुए कहते हैं -

बार बार करूं वेनती, मेरे घर मोहन आइ।
धन दौलत कछु न माँगू, अपनी भक्ति लाइ।

दादाजी भगवान श्री कृष्ण को प्रेम का अवतार मानते हुए कहते हैं :-

प्रेम ही श्याम मोहन मुरारी,
प्रेम ही ज्योति धाम अवतारी।

दादाजी भगवान श्री कृष्ण के पधारने पर फूले नहीं समाते हैं, उनकी आँखों में प्यार के आँसू आ जाते हैं। वे स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली समझते हैं क्यों कि, यमुना की ज्योति आज उनके घर में आ गई है।

आज मोरे घर घनश्याम आय्रो।
मैं तो सभागी साजन दर्शन पायो।
अखिड़ियां आली, मुख विच मुरली,
जमना ज्योति मोरे घर आई।

दादाजी श्यामसुन्दर से विनय करते हुए कहते हैं -

श्याम सुन्दर तू बेड़ीअ चाढ़ि
चरननि विहारे तू पार उकार।

(हे गोपाल गिरधारी ! आप मुझे अपनी कृपा की नाव में चढ़ाकर अपनी शरण में बैठाकर इस भवसागर से पार करो।)

तुंहिंजी वीना आहे मुंहिंजी जीवन-शक्ति।

तो दर मरण में आहे नूरी मुंहिंजी मुक्ति ।।

(हे श्याम ! आपकी बांसुरी मेरी जीवन-ऊर्जा है और तेरे द्वार पर मरने में मेरी मुक्ति है । इसी लिए अपनी शरण में ले लो लीलाधर ।

दादाजी भगवान श्रीकृष्ण के वियोग में व्यथित होकर पुकार रहे हैं -

सुडिका भरे थी हीअ दिल अबु पीआ बोल बाझ बोली ।
प्रभात परदे में ड्रियां इक प्रेम पींघे तोखे लोली ।।

(हे प्रियतम तेरी प्यास में मैं सिसक सिसक कर आँसू बहा रहा हूँ । आप आकर अपनी अनुकम्पा की बोली बोलकर अर्थात् मुझे अपना स्नेह देकर मेरी प्यास पूरी करें । मैं प्रभात के समय भी तुम्हें अपने प्यार के पलने में लोरी देता हूं अर्थात् तेरा ही स्मरण करता हूँ ।)

निमाशाम आई मुंहिंजा गुल कोमाणा
पेई आऊं पुकारियां तोखे मुंहिंजा राणा ।

(मेरे प्रियतम ! तेरी प्रतीक्षा करते करते संध्या-काल हो गया है । आपकी पूजा के लिए मैं ने फूल लाए थे वे भी मुरझा गए हैं । मेरे राजन ! मैं तुम्हें ही पुकार रही हूँ । आओ बाँके बिहारी गोवर्धन गिरिधारी श्याम मुरारी)

मिठा खोल पंहिंजे दया जी दरी ।
सिक में सजना आ वञा शल मरी ।

(मेरे प्यारे ! मैं आपके दया की इच्छुक हूं । आप अपने दया की दरी मेरे लिए खोलो । मेरी अंतिम इच्छा यही है कि मैं तेरे प्यार में प्राण दे दूं, तेरी प्यास में मर जाऊं ।)

भगवान राम से विनय :- दादाजी भगवान राम से विनय करते हुए कहते हैं कि मुझे ऐसी आशीर्वाद दें कि तेरा ही निरंतर ध्यान रहे । मैं तिर्लेप और निष्काम रहूं । दुखियों की सेवा में विश्राम प्राप्त करूं । शान्ति से कष्टों को झेलता रहूं और मेरे मुख पर मुस्कान हो ।

हे राम ! तुंहिंजो शल ध्यान रहे,
निर्लेप रहूं निष्काम रहूं ।
विश्व शेवा शल त विश्राम बिहूं ।
सटका तो लइ सबुर में सहूं ।

श्री गुरु नानक का उल्लेख :- दादाजी श्री गुरु नानकदेव के दीदार का उल्लेख करते हुए कहते हैं।

अजब तमाशा देखा, उन पाक प्यारे दा,
अखड़ियाँ ज्योति देखा, उन पाक प्यारे दा,
नूर खुदा का नानक शाह।
सूरत उनकी, साफ सुबहानी,
देखत देखत हूं हैरानी,
नूर खुदा का नानक शाह।

चेतावनी :- दादाजी मनुष्य को आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करने के लिए प्रेरणा देते हैं, और साथ साथ कुछ चेतावनियाँ भी देते हैं कि अगर वह अज्ञान की नीद में सोया रहेगा तो उसका मानव जीवन नि:फल होगा। जो अज्ञान की नोंद से जाग्रत् होते हैं वे ही आत्म धन को प्राप्त कर सकते हैं।

जिन सोया तिन खोया खोया,
जिन जागिया तिन पाया पाया।

जीव को इस नश्वर जगत् में आसक्ति रखनी नहीं चाहिए, वह यहाँ दो दिन का महिमान है -:

जग सारा फानी फानी,
दो दिन की अथेईं मजिमानी,
तजि काया माया का तू मोह।
तन में, मन में, जपि हरिनाम।

दादाजी जीव को सचेत करते हुए कहते हैं कि तू व्यर्थ जीवन गंवा रहे हो। क्या हुआ अगर तुम्हें संसार की मान-शान प्राप्त हुई। तुम्हारे महल मकान सब मिट्टी के हैं, तू इस संसार में महिमान हो। अभिमान का त्याग कर स्वयं को पहचानो :-

इहनि डींहनि जो आंहीं महिमान,
कोट किला तुंहिंजा भिटीअ मकान,
मिल्यो छाहे तोखे विच मान शान,
नूरी निमाणी तू आपो टोड़ि।

दरिद्रों में दाता है : दादाजी रवि बाबू की तरह दीन दुखियों में

परमात्मा का दर्शन करते हैं। वे साधक से कहते हैं कि तुम गरीबों को, दीन-दुखियों को नमस्कार करो, उनके चरनों की रज अपने मस्तक को लगाओ, उन में प्रभु विद्यमान है, वे प्रभु के रूप हैं :-

तालिब न थी दुन्या जो मस्कीननि अगियां सिरु झुकाइ,
गरीबनि में डि़सु गाइब आहे, खाक तिनादी लिङनि लगाइ।

दादाजी ने दीन दुखियों की सेवा, प्रेम व एकता का पैग़ाम भी अपनी रचनाभों में दिया। श्री भवानी प्रसाद मिश्र ने उनकी कुछ कविताओं का अनुवाद हिन्दी में किया है। उदाहरणार्थ दो पद्यांश प्रस्तुत हैं -

तृष्णा कोई भी नहीं मुझे,
मिल गयी मुझे उसकी करुणा,
जो त्यक्त, बुभुक्षित पीड़ित हैं
तू प्रेम और निष्ठा से
उनकी सेवा कर,
वे चरण कमल हैं
उनकी धूलि शीश पर धर।
प्रेम सेवा एकता
बलिदान -
धर्म इससे बड़ा क्या है ?
सोचता हूँ, पर न आता ध्यान
वाद और विवाद
दल, फरके,
किस तरह संस्कृति बचे
इस रोग से घिर के,
एक पूर्ण विराट का दर्शन
बचा सकता है इसे
ओ मन !

मातृभूमि सिन्ध के लिये प्रेम :

देश के विभाजन के कारण परिस्थितियों से बाध्य होकर दादाजी को अपनी मातृभूमि सिन्ध को छोड़ना पड़ा। दादाजी के मन में सिन्ध

के प्रति उत्कट प्रेम था। वे कहते हैं, ए सिन्ध भूमि मैं तेरा वियोग सहन नहीं कर सकता। आज भी तेरी तस्वीर मेरी आँखों के सामने घूम रही है। वह पावन पवित्र भूमि हो जहाँ ऋषियों ने ऋग् वेद की रचना की। जहाँ भर्तृहरि ने आश्रम स्थापित किया, तेरे गांवों में सूफी दरवेशों के स्थान हैं। तू ने शाह लतीफ, सचल, सामी, बेदिल बेकस जैसे संत एवं सूफी कवियों को जन्म दिया। मैं तेरे विछोह में आँसू बहा रहा हूं। मेरी इच्छा है कि मैं फिर तुम्हारा दर्शन पाकर दरवेशों, संतों की रज अपने मस्तक पर लगा कर पवित्र बन जाऊं। दादा के शब्दों में -

ऐ सिन्धड़ी। सही नासघां आऊं जुदाई,
तस्वीर तुंहिंजी अखियुनि, आज आई।
भर्तृहरि आश्रम अची जित बनायो,
ऋग् वेद ऋषियुनि राम गीत गायो।
गॊठन तुंहिंजनि में सूफियुनि जा देरा,
हिन दिल जे अंदर घुमनि तनि जा पेरा!
करियां यादि वर वर सुहिणो शाहु सामी,
हिति गोड़हा थी गारियाँ, अथमि बेआरामी।
वरी शल वठां, तुंहिंजे चरननि जी खाक,
चुमी धूड़ि दरवेशनि जी, थियां पाक।

देश का चित्र :

दादाजी राष्ट्रीय एकता के समर्थक थे। वे भारत का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि देश के बटवारे के कारण भारत खंडित हुआ है! फिर देश में बढ़ती हुई प्रांतीयता के कारण भी देश का वातावरण दुखमय है। दादाजी परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु तू भारत के भिन्न भिन्न प्रांतों को एकता के सूत्र में बांधो और सारे देश का कल्याण एवं उत्थान करो -

भगल आहि भारत, पर तुंहिंजो खुदा।
दुख दर्द में आ पियो भारत भजे।
सिंध, गुजरात, पंजाब, बंगाल,
देस प्यारो करि निहाल नूरी निहारे सांत में।

दास्य भावना :- दादा वासवाणी के काव्य में दास्य भावना है। वे

प्रभु परमात्मा से विनय करते हुए कहते है कि आप एक महासागर हैं और मैं एक मछली हूं, आपकी कृपा से ही मैं जी रही हूं। एक क्षण भी आपके बिना मैं जी नहीं सकता। मैं आपके चरणों की रज की भिक्षायाचना कर रहा हूँ, कृपया अपने दास को चरणों की रज दें। दादाजी के मूल शब्दों में :-

तू दरियाह, मैं जल मीना,
इक रहम तुम्हारे, मोरे पल पल जीना,
दीजे चरणा रीना, मांगे दर पर नूरी निमाणी।

कवि प्रभु से प्रार्थना करते हुए कहते हैं 'हे प्रभु मैं अधम हूँ, नीच हूँ अब आपके द्वार पर आया हूँ, मेरी लाज राखो। सागर में जितनी लहरें हैं, उतने विकार मेरे मन में हैं, आकाश में अगिनत तारे हैं, मुझ में भी अगिनत अवगुण हैं। हे कृपा, सिन्धु मेरे अवगुणों को न देखकर, मुझ पर दया दृष्टि कर अपना दर्शन दिखाओ। कवि के मूल शब्दों में :-

द्वार तुम्हारे आई आज,
निधर अधम की तू ई लाज।
मैं कामी, मैं अपराधी
जैसी हूँ मैं तैसी तुहार।
जितने लहरा सागरा, उतने मन का विकार
अगिनत मोरे अपराध गगन बीच जितने तार।
देख न मेरे अवगुण प्यारे, दर्शन दीजे दीदार!
अवगुण मोरे न कथिया जाइ, जैसे तारा बेशुमार।

उद्बोधन :

दादाजी अज्ञानी जीव को अविद्या की नींद से जाग्रत् करते हूए कहते है कि तू सुख सागर में आकर क्यों प्यासे रह जाता है? तू आध्यात्मिक आनंद रूपी अमृत का पान कर। अज्ञान की नींद से जाग्रत् होकर नाम का स्मरण कर। इस मानव योनि का उत्तम अवसर मत गंवा! कवि के मूल शब्दों में :-

सुख सागर में आयके, मत जाओ रे प्यासा प्यारे!
निज सुख निर्मल सोई पावे, जो मन को मारे मारे!

उठ जाग प्यारे ! जप नाम सवेला पी पी प्यारे !
यह अमृत बेला !
गफलत छोड़ ! देख संतन मेला जग से जावत
इक इक अकेला !

कवि हमें सचेत करते हूए कहते हैं कि पता हीं आत्मा रूपी हंस कब उड़ जायेगा ! फिर तू प्यासी रह जायेगा ! शीघ्र ही राम नाम रूपी अमृत पीलो -:

राम नाम का यह मेला, मेला !
जग सारा सारा क्षण का खेला !
उड़जाए हन्स अकेला,
मत जाओ नूरी प्यासी प्यासी !

नवजीवन का संदेश :

दादाजी ने नवजीवन का संदेश दिया। नवजीवन की आवाज है "सेवा करो, जागो स्वार्थ की नींद से, अविद्या की नींद से।"

दादा ने कहा, "अगर आप नए भारत का निर्माण करना चाहते हैं तो उठो ! जागो ! अपना जीवन गरीबों, दुखियों की सेवा में अर्पित करो। सेवा में जाति, धर्म रंग का भेद भुला दो। गरीबों के सेवक बनो, सहायक बनो। कौम की बुनियाद हैं, देश की बुनियाद हैं ये गरीब, किसान, ग्रामीण। उनकी सेवा में अपना जीवन दे दो। उनके चरनो में नतमस्तक हो, निर्भय बनो। सत्य, स्नेह, सेवा, सादगी-स्मरण के पथ पर चलकर मानव जीवन सफल करो।

काव्य-कला :

दादाजी संत कवि थे, उनका हृदय भक्ति-भावना से ओतप्रोत था। वे भक्ति में ही समपर्ति थे। काव्य के नियमों को विचार में रखकर उन्होंने काव्य साधना नहीं की। उनके मन में जो उद्‌गार उत्पन्न हुए वे काव्य रुपी सरिता के रूप में प्रवाहित हुए। फिर भी कुछ कलात्मिक विशेषताएं उनके काव्य में उपलब्ध हैं। वे संगीत के प्रेमी थे, स्वयं गुनगुनाते लिखते थे, इस लिए उनके काव्य में संगीतात्मकता है, लय है, नाद सौंदर्य है। उनके काव्य में अन्त्यानुप्रास का तो पूरा प्रयोग हुआ किन्तु मात्राएं कहीं कम कहीं ज्यादा आई हैं। ऐसे महानुभावों,

भक्तों की वाणी को छन्दों की कसौटी पर कसना ठीक नही हैं। यद्यपि इनके काव्य में वियोग श्रृंगार और करुण रस का संचार हुआ है परन्तु शान्त रस प्रधान है। इन्होंने कोई महाकाव्य या खंडकाव्य नहीं लिखा, हज़ारों फुटकर पद लिखे हैं, श्लोक लिखे हैं साथ श्रीमद् भगवत गीता, का पद्यानुवाद व श्रीजपसाहब, श्री सुखमनी साहब का गद्यानुवाद अत्यंत प्रभावोत्पादक सरल सिन्धी भाषा में किया है।

भाषा:

दादाजी के सिन्धी काव्य में कहीं कहीं, सराइकी, पंजाबी एवं हिन्दी शब्दों का प्रयोग हुआ है। उनके हिन्दी काव्य में कहीं कहीं सिन्धी, सराइकी तद्भव शब्दों का समावेश हुआ है। उनकी भाषा में प्रवाह है। पनुराक्ति तो उनके गद्य, पद्य एवं व्याखयान की विशेष विशेषता है।

दादाजी के काव्य में वर्ण मैत्री का भी अच्छा प्रयोग हुआ है, उदाहरणत:

उञायल बुखायल अथमि मेरा कपिड़ा।
छडे मानु शानु तजे आबरु।
तन मन तिन तां आउं वारियां।

वर्ण संगति :- कहीं कहीं वर्ण संगति का भी समावेश हुआ है।

उदाहरणत:

बीठी बीठी आहियां जमना किनारे।
जागी जागी इक तोखे पुकारियां।
धो धो धोकर कुर्ब में रोआं।
रोई रोई समूरी रात सजण शल गुजारियां।
पी पी पी इक प्रेम प्याली।

अतिशयोक्ति : कहीं कहीं अतशयोक्ति का भी प्रयोग हुआ है।

उदाहरणत:

मुंहिंजे महल जूँ दरियूं बि कन थियूं दांहूं।

मेरे महल की खिड़िकियां भी आपकी प्यास में पुकार रही हैं।

खिड़िकियां जड़ वस्तु होकर कैसे पुकार सकती हैं ? यहां अतिशयोक्ति का प्रयोग है।

दादाजी के काव्य में छेकानुप्रास का अच्छा प्रयोग हुआ है, उदाहरणत:

सिक सामूंडी सांढे सिर झुकायुमि साँति में।
प्रेम पर्दो पाण चाढ़े, नींहं नियारे में निहारियाई निर्मल
नूरानी नूर सीं।
मुहिंजूं मदायूं माफ कर।
रामा रहीमा ! रूह राणा।
सदिबार सदिके सूरत सुबहानी

दादाजी के काव्य में अधिकतर रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है कहीं कहीं उपमा का समावेष भी हुआ है।

रूपक:

इक नाम नदीअ में वञी तूं नाइ।

दादाजी साधक को नाम रूपी नदी में नहाने का आदेश देते हैं।

गंगा ज्ञान किनारे वञी कपड़ा लाहि।

दादाजी साधक से कहते हैं कि ज्ञान रूपी गंगा के किनारे जाकर विकारों रुपी वस्त्र उतार कर डुबकी लगाओ।

मिठा खोल पहिले दया जी दरी,

- मेरे प्रियतम आप अपनी दया रूपी किवाड़ मेरे लिए खोल दो।

सिक जूं सतारूं, आ ! खोले वजाईन।

- हे कृष्ण ! तेरे विरह में गोपियां प्रेम रूपी सतार बजा रही हैं।

-प्यास जे पींघे विच दिल मंदिर
तसवीर तुहिंजी डियां लोली लोली .. ...।

- प्यास रूपी पलने में दिल रूपी मंदिर में मैं तुम्हें लोरी दे रही हूँ।

गुनाहनि जे गंद में गिरफतार।

जीव गुनाहों रूपी विकारों में फंसा हुआ है।

डिसुः ही पत्थर मुंहिंजे गोड़हनि जे गंगा में पिया था गरनि।

मेरे विकारों रूपी पत्थर आसुओं रूपी गंगा में पिघल रहे हैं।

उपमा :

बुलबुल जीआं नूरी, बिरह गीत तूं गाइ।

दादाजी स्वयं को कहते हैं कि प्रभु की प्यास में बुलबुल की तरह गीत गाओ।

प्रतीक योजना : दादाजी के काव्य में कुछ प्रतीकों का भी सहज रूप से समावेश हुआ है।

उदाहरणत :-

इकु मींहुं वसे, ब॒यो बेड़ी पुरानी,
विच सीर आहियाँ ऐं अखियुनि में पाणी।

'मींहुं' विकारों की वर्षा का प्रतीक है, 'बेड़ी' जीवन का प्रतीक है।

छो तूं भटकीं लख चौरासी।

'लख चौरासी' चौरासी लाख यूनियों का प्रतीक है, जीव चौरासी के चक्कर में फिरता रहता है।

हितड़े त शीशन जो वापारु।

यहां कांच का व्यापार चलता है, कांच का प्रतीक, जूठे, असत्य पदार्थों के लिए है।

साधु टी.एल वासवाणी के आध्यात्मिक सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षणिक, एवं राष्ट्रीय सेवाओं एवं योगदान के कारण भारत सरकार ने उनके सन्मान में २५ नवम्बर १९६९ एक डाक टिकट प्रकाशित किया।

पुणे महानगरपालिका ने ब्रह्मलीन साधु टी.एल वासवाणी की पावन स्मृति में मीरा भूमि के बाहर मुख्य मार्ग का नाम 'साधु वासवाणी पथ' रखा, साथ साथ आयकर भवन के सामने विशाल चौक का नाम साधु वासवाणी चौक रखा है। वहाँ साधु वासवाणी की सुंदर प्रतिमा स्थापित की गई। इस प्रतिमा के नीचे तीन ओर साधु वासवाणी की तीन शिक्षाएं अंकित हैं। उनकी यह प्रतिमा प्रेरणा का स्तंभ है, उनकी अंकित शिक्षाएं भी हमारा मार्गदर्शन करती हैं।

दादा साधु टी. एल वासवाणी के उत्तर अधिकारी
दादा जशन वासवाणी

विश्व विख्यात संत, साहित्यकार, शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक, गरीबों के मसीहा दादा साधु टी. एल वासवाणी के उत्तराधिकारी दादा जशन वासवाणी पर भारत को गर्व है। वे नहीं केवल भारत के भिन्न भिन्न नगरों में परन्तु विश्व के विभिन्न देशों में भ्रमण कर शान्ति, स्नेह, सहानुभूति सहिष्णुता सत्य, सेवा, सादगी, स्मरण, सद्‌भावना व मानवता का संदेश देकर लाखों लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे प्रथम भारतीय हैं जिन्हें 'यूथांट शान्ति' पुरस्कार से विभूषित किया गया।

दादा जशन का जन्म २ अगस्त सन १९१८ ई.में सिन्ध प्रदेश के हैदराबाद नगर में श्री पहिलाजराय वासवाणी के घर में हुआ। श्री पहिलाजराय विद्वान, निष्ठावान निष्काम समाजसेवी थे। दादा जशन की माता का नाम कृष्णादेवी था, वह भी ईश्वर आराधिका थी। साधु टी. एल. वासवाणी उनके चाचा थे। भक्तिमय वातावरण में बालक जशन का पालन पोषण हुआ। प्यारे जशन के जन्म का नाम वीरू था। माँ-बाप को यह प्रथम पुत्र संतान हुई थी, इस लिए वे बालक वीरू को 'जशन' कह कर पुकारते थे। जशन का अर्थ है खुशी और वासवाणी का अर्थ है जिसकी वाणी में वास अर्थात् सुरभि हो। आगे चलकर श्री जशन वासवाणी ने अपने नाम को सार्थक किया। अब उनका दर्शन करने से, प्रवचन सुनने से भी प्रसन्नता होती है। वे जहाँ जाते हैं वहाँ जशन होते हैं। वे सभी प्राणियों को अपनी वाणी व कर्म से सुखी रखना चाहते हैं। दूसरों को सुखी करने में ही उन्हें आनंद आता है।

दादा जशन बचपन से ही प्रवीण प्रतिभा सम्पन्न, विनम्र स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। विद्यार्थी जीवन में वे सदैव प्रथम क्रम रहे। १३ वर्ष की छोटी आयु में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे बड़े अध्ययनशील रहे हैं। उन्होंने एम. एस. सी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। विद्यार्थी जीवन में ही उनके विद्वता के चिन्ह दिखाई देते

थे। एम. एस सी की उपाधि प्राप्त करने के बाद वे कालेज में अध्ययेता होकर रहे। सन् १९३९ से वे दादा साधु टी. एल वासवाणी के साथ रहे। वे समर्पित भाव से उनकी सेवा करते रहे। उन्होंने उन्हें गुरू रूप में स्वीकार किया और उनके सिद्धांतों व आदर्शों का अनुसरण वे निष्ठा व आस्था के साथ करते रहे। गुरूदेव साधु वासवाणी की कृपा से उन्हें आध्यात्मिक रंग चढ़ता गया।

देश विभाजन के पश्चात् वे गुरूदेव साधु वासवाणी के साथ पुणे में आये। वहाँ साधु वासवाणी ने भक्ति, सेवा व विद्या की ज्योति जगाई। दादा जशनजी भी इन सत्कर्मों में समर्पित थे। दादा वासवाणी की आज्ञा से वे मीरा कालेज के प्राचार्य हुए। प्राचार्य के पद पर होते हुए उन्होंने हजारों बालिकाओं के जीवन में परिवर्तन लाया, उन्हें नई दिशा दिखाई। उनकी विद्वता के कारण कैनाडा इंटरनैशनल अकादमी ने उन्हें पीएच्छ. डी. की मानद उपाधि प्रदान की।

साधु टी. एल. वासवाणी के ब्रह्मलीन होने के कुछ वर्ष पश्चात् उनकी पावन स्मृति में 'ब्रदर हुड संस्था' का नाम 'साधु वासवाणी मिशन' रखा गया। दादा जशन के मार्गदर्शन में ही यह मिशन शिक्षा व सेवा के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

दादा जशन वासवाणी भारतीय ऋषि मुनियों के प्रतीक हैं। वे देश-विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर भारतीय संस्कृति सभ्यता का संदेश देते हैं, स्मरण सेवा स्नेह सहानुभूति करुणा की ज्योति जगाते हैं। वे महान विद्वान, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्ग दर्शक कर्मयोगी संत, समाज सेवक, पशु पक्षियों के रक्षक, भक्त कवि, दया व विनम्रता की मूर्ति हैं। उनकी पेशानी से नूरानी नूर झलकता है। उनके वचनों वाणी में चुंबक से अधिक आकर्षण है। उनका दर्शन करने से और प्रवचन श्रवण करने से दुखदर्द दूर हो जाते हैं, तनाव खत्म हो जाता है। उनकी मधुर मुस्कान आत्मा को आनंद देती है। उनके आशीर्वाद की किरणें मुश्किल को आसान करती हैं।

दादा जशन वासवाणी वर्तमान युग के अंतर्राष्ट्रीय संत हैं। उन्होंने एकता, प्रेम, दया मैत्री का ऐसा तो प्रभावोत्पादक प्रचार किया है कि सब ही जातियों के लोगों के मन में उनके प्रति श्रद्धा व सन्मान

की भावना है। टी.वी पर उनका प्रवचन श्रवण करने के लिए लोग उत्सुक रहते हैं। उन्हें समय समय पर विश्व धर्म सम्मेलन, विश्व जीवदया सम्मेलन एवं स्वामी विवेकानंद शताब्दी समारोह एवं अन्य सम्मेलनों में विदेश में आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने ज्ञान गर्भित व्याख्यानों द्वारा श्रोताओं को स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद, साधु टी. एल वासवाणी की भाँति मंत्र मुग्ध कर दिया। ऐसी महान विभूति पर न केवल सिन्धी जाति को किन्तु भारत को गर्व है। उन्हें लाखों रुपये भेट स्वरूप मिलते हैं, वे वह माया दीन दुखियों, लोक कल्याण के कार्यों में तत्काल ही अर्पित करते हैं। वे त्याग तपस्या की तस्वीर हैं। वे पर पीड़ा को स्वपीड़ा समझकर शीघ्र ही उसे दूर करने का यत्न करते हैं। दूसरों का दुखदर्द देखकर उनका मन पिघल जाता है। साधु टी. एल वासवाणी की अदृष्ट कृपा एवं दादा जशन की प्रेरणा व पुरूषार्थ से मीरा भूमि पुणे में अनेक सेवा कार्य चल रहे हैं। अब मीरा भूमि कर्म भूमि बन गई है। प्रति दिन न केवल गरीबों को खाना खिलाया जाता है किन्तु पशु पक्षियों को भी खाना खिलाया जाता है।

दादा जशन ने बीमारों के उपचार एवं सुविधा के लिए पुणे में इन्लैक बुधराणी हास्पीटल की स्थापना की। वे स्वयं वहाँ जाकर बीमारों की देखरेख करते हैं, उन्हें सहानुभूति व स्नेह देते हैं। वे स्वयं मीरा स्कूलों और मीरा कालेज में जाकर विद्यार्थियों में पवित्रता, प्रेम, सत्य, सेवा, सादगी स्मरण सहानुभूति के बीज बोते हैं। उनकी प्रेरणा से विभिन्न नगरों में अनेक सेवा के कार्य आरंभ हुए हैं। वे एक व्यक्ति नहीं स्वयं एक संस्था हैं।

दादा जशन विदेश में थे, तब लातूर में भूकम्प हुआ। दादाजी यह दुःखद समाचार सुनकर पिघल गये। उन्होंने वहाँ प्रेमियों से भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए अनुरोध किया और लाखों रुपये सेवा कार्य के लिए संग्रह कर भारत में भेजे। साधु वासवाणी मिशन की ओर से उन पैसों से लातूर में पीड़ितों के निवास के लिए घर बनाये गये। भारत के किसी भी प्रांत में यदि कोई आपति आती है तो दादा जशन शीघ्र ही वहाँ पीड़ितों के लिए सहायता भेजते हैं। २६ जनवरी २००१ गुजरात में भयंकर भूकम्प हुआ, प्रकृति का तांडव नृत्य हुआ दादा

जशन शीघ्र ही भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए घटना स्थल पर पहुँच गये। उन्होंने भूकम्प में घायल, अपाहिजों के उपचार की तत्काल ही व्यवस्था की। उन्होंने साधु वासवाणी मिशन की ओर से निराश्रयों को आश्रय देने के लिए अदिपुर में अच्छे मकान बनवाकर समयानुकूल सेवा व सहायता की।

उनका जीवन अर्पणम् का जीवन है।दादा जशनजी ने सत् साहित्य का सृजन भी किया है। उनकी कई पुस्तकें सिन्धी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित हुई हैं। उनकी पुस्तकें भी व्यवहार एवं परमार्थ की प्रगति के लिए हमारा मार्गदर्शन करती हैं।

दादी हरीदेवी वासवाणी साधु टी. एल वासवाणी की भतीजी है, वह भी सतोगुणी ईश्वर आराधिका है, विदुषी है, सादगी व नम्रता की मूर्ति है। दादी हरिदेवी भी अपने प्रवचनों व रचनाओं द्वारा साधु वासवाणी की शिक्षा व विचारों का यत्र तत्र प्रचार कर रही है।

साधु टी. एल वासवाणी की मीरा भूमि आज भक्ति ज्ञान व कर्म की त्रिवेणी बन गई है। सच्चा सुपुत्र वह जो अपने पिताश्री की ज्योति जगाता रहे, सच्चा शिष्य वह जो अपने गुरू का नाम रोशन करे। दादा जशन वासवाणी भी अपने गुरूदेव साधु टी. एल वासवाणी की सुरभि व संदेश सारे विश्व में फैला रहे हैं। उनके ही मार्गदर्शन में साधु वासवाणी मिशन अनेक लोक कल्याण के कार्य कर रहा है।

युग पुरूष साधु टी. एल वासवाणी का यह पावन जीवन चरित्र पढ़ कर कई साधक, जिज्ञासु सुखद व सफल जीवन यात्रा कर सकेंगे, आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् भाग्भवेत्॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति !

दादा साधु वासवाणी

सिन्ध की पावन भूमि में दादाजी ने जन्म लिया,
किन्तु उन्होंने देश विदेश में ज्ञान-प्रेम प्रकाश दिया।
साधु वासवाणी थे विभूति, ज्ञानी ब्रह्म विज्ञानी थे,
शिक्षा शास्त्री, दार्शनिक दादा संत सच्चे लासानी थे।
मीरा विद्या हलचल द्वारा, सच्ची विद्या प्रचार किया,
मीरा विद्या मंदिर खोले सत् शिक्षा प्रसार किया।
दीन दुखियों की सेवा में ही, प्रभु का दर्शन पाया,
जो भी दर पर स्वाली आया, कभी न उसे लौटाया।
पशु पक्षियों को कभी न मारो, प्रभु की हैं वे संतान,
जीव दया की ज्योति जगाकर, दादा ने दिया जीवन दान।
त्याग तपस्या करुणा सेवा सादगी सत्य की मूरत थे।
करुणा भाव झलकता मुंह से करुणा की वे सूरत थे।
स्नेह के सागर दादा थे, सब को गले लगाते थे,
जात पांत का भेद भुलाकर, प्रेम की ज्योति जगाते थे।
आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे, मार्ग दर्शन करते थे,
स्मरण सेवा स्नेह सादगी सत्य के भाव वे भरते थे।
दादा जशन हैं उनके बालक, उनकी ज्योति जगाते हैं।
मधुर मधुर मुस्कान-वचन से, अपना सब को बनाते हैं।
आशा जीवन जब तक है, कभी न भूलूंगा उपकार,
उनकी अनुकम्पा है मुझ पर, देते थे कितना वे प्यार!

डॉ. दयाल 'आशा'

लेखक:
डॉ दयाल 'आशा'

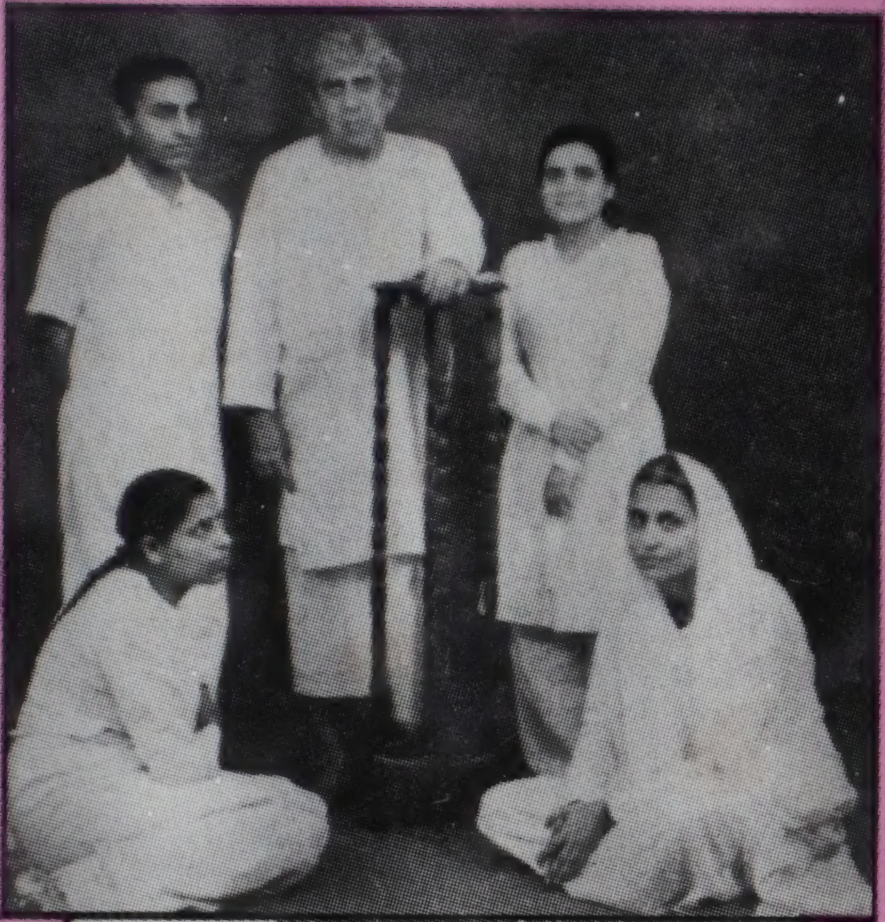


पुरस्कार योग्यता का एक पैमाना भी है और प्रसिद्धि की ओर एक डग भी। परन्तु योग्यता व प्रसिद्धि दोनों पाकर भी न इतराने वाले कम ही होते हैं। उल्हासनगर के चाँदीबाई हिम्मतमल मनसुखाणी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. दयाल 'आशा' भी इनमें एक हैं।

संस्कृत व सिन्धी के उद्‌भट् विद्वान भारतीय संत परम्परा के ध्वजवा-हक, प्रवचनकर्ता, लेखक, समाज-सेवी डॉ. 'आशा' के कई परिचय हैं। प्राचीन ऋषिकुल परम्परा में उनकी अदम्य निष्ठा उनके आचार-व्यवहार में अनुप्राणित है। वे जनता- जनार्दन परिषद के संस्था-पक सदस्य तथा देश भर की दानदात्री संस्थाओं में प्रमुख पदों से जुड़े हैं।

महानगर ही नहीं, देश भर में फैले सिन्धी समाज के स्नेह और सम्मान के पात्र डॉ. दयाल 'आशा' निर्धन विद्यार्थियों, बेसहारा महिलाओं व अनाथ बच्चों की आशा हैं।

(नवभारत टाइम्स, २८ मार्च १९९३ से)



१. दादा साधु टी. एल. वासवाणी अपने परम प्यारे श्री जशन वासवाणी व अपनी परम सेविका दीदी शान्ति वास-वाणी के साथ, नीचे बैठी हैं दादी हरी. पी. वासवाणी एवं दादी सती थधाणी.



२. गुरुदेव साधु टी. एल. वास-वाणी के श्री चरणों में बैठे हैं उनके परम प्यारे श्री जशन वासवाणी.



३. युग पुरुष साधु टी. एल वासवाणी व दादा जशन वासवाणी का आशीर्वाद एवं स्नेह प्राप्त करते हुए डॉ. दयाल 'आशा'.